सत्यमेव जयते

LOK SABHA DEBATES

(Part I — Proceedings with Questions and Answers)

The House met at Eleven of the Clock

Tuesday, July 29, 2025 / Sravana 07, 1947 (Saka)

HON'BLE SPEAKER

Shri Om Birla

PANEL OF CHAIRPERSONS

Shri Jagdambika Pal

Shri P. C. Mohan

Shrimati Sandhya Ray

Shri Dilip Saikia

Kumari Selja

Shri Raja A.

Dr. Kakoli Ghosh Dastidar

Shri Krishna Prasad Tenneti

Shri Awadhesh Prasad

LOK SABHA DEBATES

PART I – QUESTIONS AND ANSWERS

Tuesday, July 29, 2025 / Sravana 07, 1947 (Saka)

CONTENTS **PAGES**

CONGRATULATIONS TO MS. DIVYA DESHMUKH ON WINNING THE FIDE CHESS WOMEN'S WORLD CUP FINAL	**1**
ORAL ANSWERS TO STARRED QUESTIONS (S.Q. NO. 121 – 125)	**1A – 30**
WRITTEN ANSWERS TO STARRED QUESTIONS (S.Q. NO. 126 – 140)	**31 – 50**
WRITTEN ANSWERS TO UNSTARRED QUESTIONS (U.S.Q. NO. 1381 – 1610)	**51 – 280**

Uncorrected – Not for Publication **LSS-D-II**

सत्यमेव जयते

LOK SABHA DEBATES

(Part II - Proceedings other than Questions and Answers)

Tuesday, July 29, 2025 / Sravana 7, 1947 (Saka)

LOK SABHA DEBATES

PART II – PROCEEDINGS OTHER THAN QUESTIONS AND ANSWERS

Tuesday, July 29, 2025 / Sravana 7, 1947 (Saka)

C ON T E N T S **P A G E S**

RULING RE: NOTICES OF ADJOURNMENT MOTION	281
PAPERS LAID ON THE TABLE	282 - 91
COMMITTEE ON PUBLIC ACCOUNTS 26th to 28th Reports	291
STANDING COMMITTEE ON COMMUNICATIONS AND INFORMATION TECHNOLOGY Statements	291 - 92
STANDING COMMITTEE ON CONSUMER AFFAIRS, FOOD AND PUBLIC DISTRIBUTION 9th and 10th Reports	292
STANDING COMMITTEE ON RURAL DEVELOPMENT AND PANCHAYATI RAJ 15th Report	292
STATEMENT RE: STATUS OF IMPLEMENTATION OF RECOMMENDATIONS / OBSERVATIONS IN 189TH REPORT OF STANDING COMMITTEE ON COMMERCE – LAID Shri Jitin Prasada	293
STATEMENTS RE: STATUS OF IMPLEMENTATION OF RECOMMENDATIONS IN 2ND AND 6TH REPORTS OF STANDING COMMITTEE ON RURAL DEVELOPMENT AND PANCHAYATI RAJ – LAID Dr. Chandra Sekhar Pemmasani	293

STATEMENT RE: STATUS OF IMPLEMENTATION OF RECOMMENDATIONS IN 11TH REPORT OF STANDING COMMITTEE ON AGRICULTURE, ANIMAL HUSBANDRY AND FOOD PROCESSING – LAID	**293**
Prof. S.P. Singh Baghel	
MATTERS UNDER RULE 377 – LAID	**294 - 306**
Dr. Bhola Singh	**294**
Sushri Kangna Ranaut	**294**
Shri Ravindra Shukla *alias* Ravi Kishan	**295**
Shri Dulu Mahato	**295**
Dr. Manna Lal Rawat	**296**
Shrimati Manju Sharma	**296**
Shri Alok Sharma	**296**
Shrimati Smita Uday Wagh	**297**
Shrimati Bijuli Kalita Medhi	**297**
Shrimati Mahima Kumari Mewar	**298**
Shri Chandra Prakash Joshi	**298**
Shri Dilip Saikia	**299**
Shri Khagen Murmu	**299**
Shri Tanuj Punia	**300**
Shri Murari Lal Meena	**300**
Shri Kuldeep Indora	**301**
Dr. Shashi Tharoor	**301**
Shrimati Geniben Nagaji Thakor	**302**
Shri Neeraj Maurya	**302**
Shri Lalji Verma	**302**
Shrimati Pratima Mondal	**303**

Shri T.M. Selvaganapathi	303
Shri G. M. Harish Balayogi	304
Dr. Shrikant Eknath Shinde	304
Shri Arun Bharti	305
Shri Sudhakar Singh	305
Shri Maddila Gurumoorthy	306
Shri Hanuman Beniwal	306
Shri Rajesh Ranjan	306

SPECIAL DISCUSSION ON INDIA'S STRONG, SUCCESSFUL AND DECISIVE 'OPERATION SINDOOR' IN RESPONSE TO TERRORIST ATTACK IN PAHALGAM **307 - 421**

(Contd. -- Concluded)

Shri Amit Shah	307 - 22
Shrimati Kanimozhi Karunanidhi	323 - 29
Shri Akhilesh Yadav	330 - 37
Shrimati Priyanka Gandhi Vadra	338 - 43
Dr. Shrikant Eknath Shinde	344 - 50
Sushri Sayani Ghosh	351 - 56
Dr. Nishikant Dubey	357 - 64
Shri A. Raja	365 - 70
Shri E. T. Mohammed Basheer	371 - 73
Shri Abdul Rashid Sheikh	374 - 76
Shri K. C. Venugopal	377 - 81
Shrimati Harsimrat Kaur Badal	382 - 84
Shrimati Dimple Yadav	385 - 86

@ Shri Subbarayan K.	**387**
Shri Gurmeet Singh Meet Hayer	**388**
Shri Vijay Kumar Hansdak	**389**
Shrimati Anupriya Patel	**390 - 92**
Shri Rahul Gandhi	**393 - 400**
Dr. Sambit Patra	**401 - 03**
Dr. Sanjay Jaiswal	**404 - 05**
Shri Narendra Modi	**406 - 21**

@ For English translation of the speech made by the hon. Member, Shri Subbarayan K. in Tamil, please see the Supplement (PP 387A to 387B).

(1100/YSH/PS)
1100 बजे

(माननीय अध्यक्ष पीठासीन हुए)

सुश्री दिव्या देशमुख को फीडे शतरंज महिला विश्व कप फाइनल में विजय हासिल करने पर बधाई

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, मुझे आपको सूचित करना है कि भारत की सुश्री दिव्या देशमुख ने जॉर्जिया के बातुमी शहर में आयोजित फीडे शतरंज महिला विश्व कप फाइनल में विजय हासिल की है। वे इस प्रतियोगिता को जीतने वाली पहली भारतीय महिला हैं। इसके साथ ही वे भारत की चौथी महिला शतरंज ग्रैंडमास्टर भी बन गई हैं। सुश्री देशमुख ने फाइनल में अपनी भारतीय साथी खिलाड़ी श्रीमती कोनेरू हम्पी को पराजित कर चैंपियन बनने का गौरव प्राप्त किया। हमें खुशी है कि फाइनल में दोनों भारत के ही खिलाड़ी रहे। यह भारत के लिए बड़े हर्ष का विषय है। पूरे विश्व ने देखा कि इस विश्व स्तरीय प्रतियोगिता के फाइनल में पहुंचने वाली दोनों खिलाड़ी भारतीय थीं और उनका हम अभिनंदन करते हैं। इन दोनों भारतीय महिला खिलाड़ियों की इस उपलब्धि से पूरे देश में अपार खुशी और उमंग का वातावरण है। उनकी इस जीत से सभी भारतीयों को, विशेष रूप से हमारे युवाओं को बहुत बड़ी प्रेरणा मिली है।

यह सभा सुश्री दिव्या देशमुख एवं श्रीमती कोनेरू हम्पी को इस उत्कृष्ट उपलब्धि के लिए बधाई देती है एवं भावी सफलताओं के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करती है।

माननीय अध्यक्ष : क्वेश्चन नम्बर, 121.

श्री मणिक्कम टैगोर।

(Q. 121)

SHRI B. MANICKAM TAGORE (VIRUDHUNAGAR): The hon. Prime Minister publicly promised to double the farmers' income by 2022. It is now 2025. Can the hon. Minister present official data, not Budget allocation figures, on whether the farmers' real incomes adjusted for inflation, have actually doubled? If not, will the Government accept that this grand promise was a *jumla*, and clarify what accountability measures it has taken for misleading the farming community?

श्री शिवराज सिंह चौहान : माननीय अध्यक्ष महोदय, प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में किसानों की आय बढ़ाने का अभियान निरंतर जारी है। हमने छह उपाय किए हैं। नम्बर एक, सरकार ने उत्पादन बढ़ाने का फैसला किया, जिससे उत्पादन बढ़ सके। नम्बर दो, आय बढ़ाने के लिए लागत घटे। नम्बर तीन, उत्पादन के ठीक दाम मिलें। नम्बर चार, अगर नुकसान हो जाए तो उसकी भरपाई करें। नम्बर पांच, कृषि का विविधीकरण हो। केवल एक फसल की खेती न हो जैसे फलों की खेती, फूलों की खेती, सब्जियों की खेती, औषधि की खेती, बागवानी कृषि, मछलीपालन, पशुपालन, इस तरह के अलग-अलग अनेक प्रयत्न किए हैं।

(1105/MM/SRG)

माननीय अध्यक्ष महोदय, आज प्रसन्नतापूर्वक मैं आपको बताना चाहता हूं कि पिछले दस सालों में फसलों, फूड ग्रैन्स और खाद्यान्न का उत्पादन वर्ष 2013-14 में 246.42 मिलियन टन था। यह अब बढ़कर 353.96 मिलियन टन हो गया है। दलहन का उत्पादन 16.38 मिलियन टन से बढ़कर 25.24 मिलियन टन हो गया है। तिलहन का उत्पादन 27.51 मिलियन टन से बढ़कर 42.61 मिलियन टन हो गया है और बागवानी का उत्पादन 280.70 मिलियन टन से बढ़कर 367.72 मिलियन मीट्रिक टन हो गया है। किसान दूध का उत्पादन भी करता है और मैं माननीय ललन सिंह जी को भी बधाई दूंगा कि दूध का उत्पादन 137.7 मिलियन टन से बढ़कर 239.30 मिलियन टन हो गया है। चाहे मछली का उत्पान हो या दूध का उत्पादन हो, यह निरंतर बढ़ रहा है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, किसानों की आय का जहां तक सवाल है, मैं दावे के साथ कहता हूं कि कई किसानों की आय दोगुनी से भी ज्यादा बढ़ी है। हम लोग उपाय कर रहे हैं। माननीय सदस्य ने बजट की बात कही है। आपके समय में, जब आप यूपीए सरकार का हिस्सा थे, तब केवल 27 हजार करोड़ रुपये का बजट था। अब यह बढ़कर 1 लाख 27 हजार करोड़ रुपये का हो गया है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, एनडीए की सरकार से पहले किसान सम्मान निधि पहले कभी नहीं थी। दस करोड़ किसानों को किसान सम्मान निधि से लाभांवित किया जा रहा है। मुझे गर्व है कि मोदी है तो मुमकिन है। लगभग दो लाख करोड़ रुपये की सब्सिडी उर्वरकों पर देने का काम मोदी सरकार कर रही है। जब यूपीए की सरकार थी तब केसीसी और बाकी संस्थागत लोन केवल सात लाख करोड़ रुपये का मिलता था। आज वह लोन 25 लाख करोड़ रुपये का मिल रहा है।

फसल बीमा योजना के अंतर्गत, मुझे कहते हुए गर्व है कि एनडीए की सरकार ने 35 हजार करोड़ रुपये के प्रीमियम के मुकाबले 1 लाख 83 हजार करोड़ रुपये का क्लैम किसानों के खाते में डालने का काम किया है। यह एनडीए की सरकार है जो किसानों की आय बढ़ाने के लिए मैकेनाइजेशन पर सब्सिडी दे रही है। पर ड्रॉप, मोर क्रॉप में किसानों को ड्रिप और स्प्रिंकलर्स दिए जा रहे हैं। पॉली हाउस टेक्नोलॉजी, ग्रीन हाउस टेक्नोलॉजी, फलों और सब्जियों के उत्पादन से लेकर बाकी सभी चीजों का उत्पादन बढ़ाने का प्रयास और ठीक ढंग से खरीदने का प्रयास और किसानों की आय बढ़े, इसके लिए इसी सरकार ने फैसला किया है कि उत्पादन की लागत से कम से कम 50 प्रतिशत मुनाफा जोड़ कर किसान को एमएसपी प्रदान की जाएगी। जब इनकी सरकार थी तो 50 परसेंट उत्पादन की लागत से जोड़ने पर केबिनेट की बैठक में इन्होंने इंकार कर दिया था कि यह बाजार को विकृत कर देगा और यह संभव नहीं है। यह इनका कहना था। माननीय अध्यक्ष महोदय, एमएसपी पर रिकॉर्ड खरीदी हो रही है, नुकसान की भरपायी की जा रही है और यूरिया हो या डीएपी हो या बाकी उर्वरक भी सब्सिडी पर उपलबध करवाए जा रहे हैं। इससे किसानों की आय निरंतर बढ़ रही है।

श्री बी. मणिक्कम टैगोर (विरूधुनगर) : सर, मैंने इनकम डबलिंग की बात की थी, लेकिन ये सीनियर मंत्री हैं और उन्होंने दूसरी बात बतायी। लेकिन, कोई बात नहीं। मेरा दूसरा प्रश्न है, the reply celebrates PM Kisan and other schemes, but the harsh truth is, tenant farmers, sharecroppers and landless labourers for whom the Leader of Opposition, Shri Rahul Gandhi Ji has been concerned for many years, who form more than half the rural agricultural force, are still excluded from the benefits. What is stopping the Government from enacting a law or a scheme that recognizes cultivators without land titles or is the Government only for the land owning farmers?

(1110/MK/SRG)

श्री शिवराज सिंह चौहान : अध्यक्ष महोदय, कई योजनाएं उन किसानों के लिए चलाई जाती हैं, जिनके पास लैंड होल्डिंग होती है। अलग-अलग राज्य सरकारें, चूंकि कृषि राज्य का विषय है, माननीय विद्वान सदस्य ने पूछा है, जो टेनेंट फॉर्मर्स हैं, उनके लिए अलग-अलग योजनाएं चलाई जाती हैं। लेकिन, मैं यह भी बताना चाहता हूं कि पिछले दिनों केंद्र सरकार ने यह फैसला किया है कि प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में, जिसके पास स्वामित्व है, वह किसान है, लेकिन जो टेनेंट फॉर्मर खेती कर रहा है, अगर उसको अधिकृत कर देते हैं तो उनको फसल बीमा योजना का लाभ मिलता है।

अध्यक्ष महोदय, एमएसपी की खरीद के लिए भी अगर लैंड होल्डिंग वाला किसान राज्य की अनुमति से अधिकृत करे तो उसको एमएसपी पर खरीद की जाती है। एफपीओ में भी टेनेंट मेम्बर बन सकता है। मैं माननीय विद्वान सदस्य को बताना चाहता हूं कि पिछले दिनों हमारे जो टेनेंट फॉर्मर्स और शेयर क्रॉपर्स हैं जो बटाई पर खेती लेते हैं, उनको प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना

में टेनेंट और शेयर क्रॉपर दोनों को मिलाकर, शेयर क्रॉपर्स में 6 लाख 55 हजार 846 किसानों को लाभ दिया गया है और 41 लाख 62 हजार 814 टेनेंट किसानों को लाभ दिया गया है। टेनेंट किसानों को भी कई योजनाओं का लाभ देने का प्रयत्न किया जा रहा है।

SHRI SURESH KUMAR SHETKAR (ZAHIRABAD): Sir, I want to ask whether the Government of India is following Minimum Support Price fixation methodology as recommended by Dr. M.S. Swaminathan. If so, what is the C3 cost and MSP based on it fixed for the year 2025-26?

श्री शिवराज सिंह चौहान : अध्यक्ष महोदय, मुझे बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि प्रधानमंत्री श्रीमान नरेंद्र मोदी जी की नेतृत्व वाली एनडीए की सरकार ने सीधे फैसला किया कि उत्पादन की लागत पर 50 परसेंट मुनाफा जोड़कर एमएसपी तय की जाएगी। आज मुझे कहते हुए गर्व है कि 50 परसेंट जोड़कर ही उत्पादन की लागत पर एमएसपी तय की जाती है और व्यापक पैमाने पर एमएसपी पर फसलों की खरीद हो रही है।

अध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन करना चाहता हूं कि इससे पहले की जो सरकार थी, जब उसके पास मंत्रिमंडल की बैठक में कैबिनेट में यह मामला गया था कि एमएसपी उत्पादन की लागत पर 50 परसेंट तय किया जाए तो उधर की सरकार ने यह कहकर इन्कार कर दिया था कि यह बाजार को विकृत कर देगा। यह संभव नहीं है। लेकिन, मोदी जी की सरकार में हम लागत पर 50 परसेंट मुनाफा जोड़कर ही एमएसपी तय कर रहे हैं और खरीदने का काम भी कर रहे हैं। … (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: मैंने श्री बी. मणिक्कम टैगोर जी को दो प्रश्न पूछने का मौका दिया, फिर भी बैठे-बैठे टिप्पणी करते हैं। जय प्रकाश जी की तो आदत ही बैठे-बैठे टिप्पणी करने की है। आप सीनियर मेम्बर ऑफ पार्लियामेंट हैं। प्रश्न काल में यह शोभा नहीं देता है।

श्रीमती महिमा कुमारी जी।

… (व्यवधान)

श्रीमती महिमा कुमारी मेवाड़ (राजसमन्द) : धन्यवाद अध्यक्ष महोदय। बिचौलिया किसान और बाजार के बीच में मध्यस्थ की भूमिका निभाते हैं। हालांकि, वे किसानों की फसल बेचने में मदद करते हैं, लेकिन अक्सर मुनाफे का बड़ा हिस्सा वे खुद रख लेते हैं। उससे किसानों की कमाई बहुत कम हो जाती है। इससे किसानों की सौदेबाजी की शक्ति भी कम हो जाती है। किसानों को सीधे बाजार पहुंच या सहकारी समितियों के माध्यम से बिचौलियों पर निर्भरता कम करके उचित मूल्य दिलवाया जा सकता है। किसानों की बिचौलियों पर निर्भरता कम करने और उन्हें सीधे बाजार पहुंच या सरकार समर्थित मंचों के माध्यम से उचित मूल्य दिलाने के लिए क्या कदम उठाये जा रहे हैं? धन्यवाद।

श्री शिवराज सिंह चौहान : अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय किसान हितैषी सदस्या महिमा जी को यह बताना चाहता हूं कि सरकार ने एमएसपी पर खरीद का प्रावधान इसलिए किया कि राज्य सरकार की जो नामित एजेंसी है, उसके माध्यम से किसान की फसल खरीदी जा सके।

(1115/SK/SMN)

एमएसपी पर रिकॉर्ड खरीदी हो रही है, केवल इतना ही नहीं, दलहन और तिलहन की खरीद के लिए पीएम आशा योजना भी बनाई गई है। तुअर, उड़द और मसूर सौ प्रतिशत एमएसपी पर खरीदी

जाएगी, यह फैसला सरकार ने किया है। इसके अलावा बाकी फसलें, चाहे दलहन हो या तिलहन हो, खरीदने की उचित व्यवस्था की गई है। हम लगातार प्रयत्न कर रहे हैं कि बिचौलिए सफल न हो पाएं और किसानों को एमएसपी का रेट ठीक ढंग से मिले।

श्री लालजी वर्मा (अम्बेडकर नगर) : मैं माननीय मंत्री जी से आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि हर बार कहा जाता है कि किसान की आमदनी दोगुनी कर रहे हैं, लेकिन दोगुनी तभी होगी जब उसे लागत मूल्य का प्राफिट मिलेगा। विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों में और कृषि फार्मों पर जो लागत मूल्य आता है, क्या मानकर माननीय मंत्री जी उसे आधार 50 प्रतिशत ऊपर मुनाफा देते हुए एमएसपी तय करने का निर्णय करेंगे?

इसके साथ ही मैं कहना चाहता हूं कि इस समय फर्टीलाइजर यूरिया की कमी है। हर जगह यूरिया की बड़े पैमाने पर कमी है। हम लोगों के जिलों में ब्लैक मार्केटिंग हो रही है। क्या मंत्री जी यूरिया की किल्लत को दूर करने का प्रयास करेंगे?

माननीय अध्यक्ष: इसका जवाब फर्टीलाइजर मिनिस्टर देंगे।

… (व्यवधान)

श्री शिवराज सिंह चौहान : माननीय अध्यक्ष जी, मैंने पहले भी निवेदन किया और मैं फिर दोहराता हूं कि सीएसीपी राज्य सरकारों से चर्चा करती है, उत्पादन की जो विभिन्न लागतें होती हैं, चाहे लगने वाली मजदूरी हो, जो कृषि में इनपुट डालते हैं, उस इनपुट की कीमत हो या मशीन की कीमत हो, बाकी खर्चों को जोड़कर लागत निकालते हैं। सीएसीपी के माध्यम से उस पर 50 परसेंट मुनाफा देकर एमएसपी तय की जाती है।

माननीय अध्यक्ष जी, अगर आप देखें तो धान की एमएसपी वर्ष 2013-14 में 1310 रुपये थी और अब बढ़कर 2369 रुपये हो गई है। बाजरे की एमएसपी 1250 रुपये थी और अब बढ़कर 2775 रुपये हो गई। रागी की एमएसपी 1500 रुपये से बढ़ाकर 4886 रुपये कर दी गई। मक्के की एमएमसपी 1310 रुपये से बढ़ाकर 2400 रुपये कर दी गई। तुअर की एमएसपी 4300 रुपये बढ़ाकर 8000 रुपये कर दी गई। मूंग की एमएसपी 4500 रुपये से बढ़ाकर 8768 रुपये कर दी गई। उड़द की एमएसपी 4300 रुपये से बढ़ाकर 7800 रुपये कर दी गई। मूंगफली की एमएसपी 4000 रुपये से बढ़ाकर 7263 रुपये कर दी गई। सूरजमुखी की 3700 से बढ़ाकर 7721 रुपये कर दी गई। सोयाबीन की एमएसपी 2560 रुपये से बढ़ाकर 5328 रुपये कर दी गई। तिल की एमएसपी 4500 रुपये से बढ़ाकर 9846 रुपये कर दी गई। रामतिल की एमएसपी 3500 रुपये से बढ़ाकर 9537 रुपये कर दी गई। कपास की एमएसपी 3700 से बढ़ाकर 7710 रुपये कर दी गई। हमने एमएसपी दुगुनी की है और खरीद भी कई गुना ज्यादा की है।

मैं वर्मा जी को बताना चाहता हूं कि जब यूपीए सरकार थी तो दस सालों में केवल छ: लाख मीट्रिक टन दलहन खरीदी गई थी, हमने 1 करोड़ 82 लाख मीट्रिक टन खरीदकर दिखाई है और एमएसपी भी बढ़ाई है। हम खरीद ही नहीं रहे, बल्कि किसान सम्मान निधि भी दे रहे हैं, केसीसी पर सस्ता ब्याज भी दे रहे हैं। हम विभिन्न योजनाएं चला रहे हैं और किसानों की आय दुगुनी कर रहे हैं।

(इति)

(प्रश्न 122)

डॉ. संबित पात्रा (पुरी) : माननीय अध्यक्ष जी, आपने मुझे प्रश्न काल में पूरक प्रश्न पूछने की अनुमति प्रदान की है, इसके लिए मैं आपका हृदय से आभार व्यक्त करता हूं।

मैं आपके द्वारा समय-समय पर जारी निर्देशों के अनुपालन में समय की मर्यादा का ध्यान रखते हुए संक्षेप तथा प्रत्यक्ष पूरक प्रश्न के रूप में माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि नए आपराधिक कानूनों के लागू होने के पश्चात् एकेडमी ने उनके पाठ्यक्रम में क्या बदलाव किया है? क्या सरकार उनके प्रशिक्षुओं को आधुनिक शस्त्र विद्या के अतिरिक्त तकनीकी साइबर अपराध, शारीरिक एवं मानसिक रूप से सशक्त बनने के लिए पाठ्यक्रम में किसी प्रकार की अतिरिक्त समावेष्टी कर रही है?

(1120/VB/RP)

श्री नित्यानन्द राय : माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य ने कहा कि संक्षिप्त प्रश्न पूछूँगा, लेकिन उन्होंने पाँच-सात प्रश्न एक साथ शामिल कर दिया।

माननीय अध्यक्ष : लेकिन आप संक्षेप में उत्तर दें।

श्री नित्यानन्द राय : महोदय, अकादमी के प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में तीन नये कानून अर्थात् भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता और भारतीय साक्ष्य अधिनियम के विभिन्न प्रावधानों को उचित ढंग से शामिल किया गया है। ये तीनों नये कानून पुलिस की क्रियाकलापों से जुड़े हुए हैं। सरदार वल्लभभाई पटेल राष्ट्रीय अकादमी पुलिस ऑफिसर्स, विशेषकर आईपीएस ऑफिसर्स के प्रशिक्षण के लिए वैश्विक स्तर की अकादमी है। इसलिए इन तीनों कानूनों का प्रशिक्षण दिया जा रहा है और पाठ्यक्रम में इनके विषयों को शामिल किया गया है, उनका उचित समावेश इसमें किया गया है। प्रौद्योगिकी संचालित न्याय व्यवस्था पर इन तीनों कानूनों में जोर दी गई है। इसके लिए भारत सरकार द्वारा शुरू किये गये इंटरफेस- आईसीजेएस, सीसीटीएनएस, एनसीसीआरपी, ई-फोरेंसिक, ई-कोर्ट, ई-प्रॉसिक्यूशन, आदि पाठ्यक्रम के हिस्से हैं। इनके बारे में विस्तृत रूप से जानकारी दी जाती है।

महोदय, न्याय के लिए एक निश्चित समय सीमा निर्धारित की गई है। इस पर भी अकादमी ने बहुत जोर दिया है और प्रशिक्षण प्रक्रिया में समय-समय पर विषयों को कानून और जाँच एजेंसियों ने शामिल किया है।

सिमुलेशन और व्यावहारिक अभ्यास के दौरान इस पर जोर दिया जाता है। इन कानूनों का दृष्टिकोण पीड़ित-केन्द्रित है। इसलिए इन कानून के विषयों और जाँच के विषयों को पाठ्यक्रम में एकीकृत किया गया है। सिमुलेशन और व्यवहार अभ्यासों से इसको फुलफिल किया जा रहा है। नये अपराधों और परिभाषाओं को भी पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। इन कानूनों में जिन नये शब्दों और भावनाओं का उपयोग किया गया है, उनको परिभाषित करने के पश्चात ही प्रशिक्षण देना अकादमी ने उचित समझा है। फोरेंसिक और डिजिटल सुधार की कार्य-क्षमताओं से परीविक्षार्थियों को परिचित कराया जाता है। इसके साथ ही, उनको प्रक्रियात्मक नवाचार से भी परिचित कराया जाता है।

महोदय, चूंकि ये तीनों कानून दण्ड नहीं, बल्कि न्याय की भावना से प्रेरित हैं। इसलिए अकादमी ने पाठ्यक्रम और प्रशिक्षण में इसको सम्पूर्ण रूप से समाहित किया है।

माननीय सदस्य ने कई प्रश्न किये, जिनमें उन्होंने नये हथियारों के विषय में भी कहा। आप जानते हैं कि मोदी जी की सरकार ने सेना को तो सशक्त किया ही है, इसके साथ-साथ, राज्यों की पुलिस और पैरा-मिलिट्री फोर्सेज को भी सशक्त करने के लिए नये-नये हथियारों का देश में निर्माण भी किया है और जरूरत पड़ने पर हम उसे उपलब्ध भी कराते हैं।

मनोवैज्ञानिक स्तर से, हमारे पुलिस बल शारीरिक रूप से स्वस्थ रहें, आप जानते हैं कि इसके लिए योग का प्रचलन शुरू किया गया है। हम उनको अपने क्रियाकलापों के साथ-साथ व्यावहारिक आदतों में भी कुछ ऐसी चीजों का समावेश कराते हैं, जिसके तहत हम उनके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य का पूरा ख्याल रखकर उसका समन्वय करते हैं, जिसका पूरा लाभ मिल रहा है।

डॉ. संबित पात्रा (पुरी) : महोदय, मैं अपने दूसरे पूरक प्रश्न के रूप में, आपके माध्यम से, माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूँ कि अपराध के बदलते परिदृश्य को दृष्टिगत रखते हुए तथा नयी चुनौतियों के आलोक में, क्या अकादमी किसी प्रकार से प्रौद्योगिकी, इलेक्ट्रानिक साक्ष्य और फोरेंसिक साइंस का उपयोग कर रही है?

श्री नित्यानन्द राय : महोदय, निश्चित रूप से, अपराधों के स्वभाव में परिवर्तन आए हैं। अपराधियों के द्वारा नयी चुनौतियाँ भी खड़ी की जाती हैं। लेकिन मैं सदन को विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि चुनौतियाँ चाहे जो भी रूप लेकर आएं, मोदी सरकार उन समस्याओं के समाधान के लिए कारगर कदम उठाती है।

(1125/SJN/UB)

महोदय, जहां तक प्रौद्योगिकी का सवाल है, ड्रोन, कृत्रिम जांच, डार्क वेब निगरानी, नवीनतम फॉरेन्सिक उपकरण और तकनीकी का इस्तेमाल हो रहा है। प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु डिजिटल कक्षाएं जैसे केएमएस, ई-लाइब्रेरी, एलएमएस, शिक्षार्थी प्रबंधन प्रणाली, इंट्रैक्टिव टूल, डिजिटल वीडियो लाइब्रेरी, प्रशिक्षण सामग्री तैयार करने के लिए एआई टूल, फिटनेस सुधार की निगरानी के लिए आउटडोर डैशबोर्ड, स्मार्ट वॉच और ई-सामग्री का उपयोग हो रहा है।

महोदय, उन्होंने इलेक्ट्रॉनिक साक्ष्य के संबंध में सवाल पूछा है कि क्या हम उसका उपयोग करते हैं। कानून को न्यायसंगत बनाने के लिए साक्ष्य सबसे बड़ा आधार होता है। जो न्याय का आधार बनता है, वह इसमें बहुत ही उपयोगी होता है। ब्लॉकचेन और क्रिप्टो जांच, डिजिटल फॉरेन्सिक एनआईसी द्वारा विकसित ई-साक्ष्य मॉड्यूल का उपयोग हो रहा है।

भारत सरकार द्वारा विकसित एप्स ई-कोर्ट, ई-फॉरेन्सिक और ई-कारावास का भी उपयोग हो रहा है। डिजिटल भुगतान धोखाधड़ी की जांच, सोशल मीडिया फर्जी पहचान, डीपफेक, हनी ट्रैपिंग, डिजिटल गिरफ्तारी जांच और साक्ष्य संग्रह के लिए उपकरण और उसके तरीकों को भी पाठ्यक्रम में शामिल करके लोगों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इसमें सीसीटीवी फुटेज का उपयोग और सोशल मीडिया की भी जांच हो रही है।

उन्होंने फॉरेन्सिक के विषय पर जो प्रश्न पूछा है, तो आज फॉरेन्सिक का बहुत बड़ा महत्व है। अपराध स्थल उपकरण, एकीकृत मॉड्यूल, जैसे एसएईसीके और लेजर मापन इकाइयों, किटों, 360 डिग्री लेजर स्कैनिंग कैमरे, ड्रोन स्कैचिंग सॉफ्टवेयर इत्यादि का उपयोग किया जा रहा है। इसलिए

अकादमी इस पर भी प्रशिक्षण देने के लिए पुरजोर तरीके से काम रही है और इसको भी अपने पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। एकीकृत मॉड्यूल का भी काफी लाभ मिल रहा है।

बायोमेट्रिक प्रशिक्षण जैसे एएफआईएस सीसीटीवी फुटेज के माध्यम से चेहरे की पहचान, रेटिना स्कैन, चाल विश्लेषण इत्यादि फॉरेन्सिक का एक बड़ा हिस्सा है। अकादमी ने इसको भी अपने पाठ्यक्रम में शामिल किया है। विशिष्ट फॉरेन्सिक मॉड्यूल, उन्नत साक्ष्य प्रबंधन और इंट्रैक्टिव प्रणाली में व्यावहारिक अभ्यास, अपराध स्थल पहुंच, घायल या मृत व्यक्तियों की उचित देखभाल, प्रतिक्रिया, व्यवस्थित खोज, भौतिक साक्ष्यों को संभालना और फॉरेन्सिक फोटोग्राफी के माध्यम से घटना स्थल के दस्तावेजीकरण पर व्यावहारिक प्रशिक्षण अकादमी ने प्रारंभ किया है।

DR. M. K. VISHNU PRASAD (CUDDALORE): Sir, due to increasing unemployment, soaring prices of gold and property, and advancements in science and technology, the crime rate is increasing day by day. In order to combat the increasing crime rate, we also have to update ourselves second by second.

I went through the answers on the relevant topics covering drones, challenges in border management, terrorism, cyber security and cybercrime. Is the Government keen on expanding the curriculum in human trafficking especially in terms of flesh trade, domestic slavery and organ theft? Narcotics is also an important subject. Is the Government keen on expanding the curriculum in these subjects?

श्री नित्यानन्द राय : महोदय, जो मूल प्रश्न था, उसके उत्तर में इन सब बातों को बताया गया है। ये अपराध के जिस प्रकार के बारे में बता रहे हैं, चाहे वह किसी भी स्वभाव का अपराध हो, उसके लिए मैं यह पहले ही बता चुका हूं कि हम विभिन्न अपराधों के लिए विभिन्न प्रक्रियाओं से उस पर पूरी तरह से लगाम लगाने का प्रयास करते हैं। जिस अपराध के रूप के साथ कोई अपराधी पकड़ा जाता है, हम उसी हिसाब से उस पर कार्रवाई करते हैं।

महोदय, आईफोरसी और सीसीटीएनएस है, यह एक ऐसा प्लेटफॉर्म है, जिसके माध्यम से विभिन्न प्रकार के अपराधों की पहचान करनी हो या फिर उन अपराधों पर कानून के हिसाब से कार्रवाई करनी हो, तो हम उसका पूरा-पूरा ख्याल रखते हैं।

(1130/PC/NKL)

ह्यूमन ट्रैफिकिंग का एक मॉड्यूल है। हम एनजीओ के साथ समन्वय करके इसको करते हैं। ह्यूमन ट्रैफिकिंग पर आज यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि हमने सीमाओं को चौकस किया है और कानून का उपयोग करके हम पुलिस को ह्यूमन ट्रैफिकिंग के लिए या भारत सरकार की सभी एजेंसियों को जरूरत पड़ने पर उसमें लगाते हैं। … (व्यवधान) अत: आज ह्यूमन ट्रैफिकिंग में काफी कमी आई है। … (व्यवधान) आज हम यह दावे के साथ कह सकते हैं। … (व्यवधान)

(इति)

माननीय अध्यक्ष : क्वेश्चन नंबर – 123, माननीय सदस्य श्री ईश्वरस्वामी के.।

… (व्यवधान)

(Q. 123)

*SHRI ESWARASAMY K. (POLLACHI): Hon. Speaker Sir, Vanakkam. As per the reply provided to a question raised in Rajya Sabha during the year 2022, the Ministry Stated that Tamil Nadu had not received any funds relating to Pre-Matric Scholarship Schemes during the years 2019-21 for the Children of Parents/Guardians working in unclean and hazardous occupations. These Schemes were later merged with the Pre-Matric Scholarship for SC Students from the year 2021-22 onwards and renamed as “Pre-Matric Scholarship to the SC Students and others”. While replying to a question raised in Lok Sabha during the year 2024 about the merged Scheme, it was stated that the funds of the Scheme and data relating to the beneficiaries have duly been changed. On this basis, I want to know that why these two Schemes were merged? Whether this new Scheme will be covering the Children of Parents/Guardians working in unclean and hazardous occupations? What are the details? Whether there is any Scheme to introduce the Pre-Matric Scholarship Scheme for Children of Parents/Guardians working in hazardous and unclean occupations? If so the details, If not I want to know the reasons thereof.

डॉ. वीरेन्द्र कुमार : माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य के द्वारा जो प्रश्न उठाया गया है, वह खतरनाक कार्यों में लगे हुए जो श्रमिक हैं, उनके बच्चों के लिए छात्रावास योजना के बारे में है, उनकी छात्रवृत्ति के बारे में है।

माननीय अध्यक्ष जी, सरकार ऐसे सारे बच्चों के लिए और इसके साथ ही साथ कोविड काल के दौरान जिन बच्चों के माता या पिता का निधन हो गया था, दोनों का हो गया या दोनों में से किसी एक का हो गया, तो ऐसे बच्चों के लिए भी, जिन्होंने कोविड के दौरान अपने माता-पिता को खोया था, उन बच्चों की शिक्षा निरंतर रूप से जारी रखने के लिए प्रधानमंत्री चिल्ड्रन केयर फंड प्रारंभ किया गया।

जिस पोस्ट मैट्रिक और प्री मैट्रिक छात्रवृत्ति की चर्चा माननीय सदस्य के द्वारा की गई है, वह अनुसूचित जाति के सभी छात्रों को दी जाती है। इसके साथ ही साथ ओबीसी के छात्रों को भी दी जाती है। ईबीसी और डीएनटी जैसे गरीब परिवारों के बच्चों को भी छात्रवृत्ति प्रदान किए जाने का प्रावधान किया गया है।

तमिलनाडु में अनुसूचित जाति के जो छात्र हैं, उनके लिए पोस्ट मैट्रिक में वर्ष 2021-22 से वर्ष 2024-25 तक 26,57,123 छात्रों के लिए 2,899.8 करोड़ रुपए दिए गए। प्री मैट्रिक छात्रवृत्ति में वर्ष 2022-23 से वर्ष 2024-25 तक 10,40,619 छात्रों के लिए 219.42 करोड़ रुपए दिए गए।

* Original in Tamil

इसी तरह से पीएम यशस्वी योजना में हमारे ओबीसी, ईबीसी एवं डीएनटी के छात्रों के लिए प्री मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना से तमिलनाडु राज्य में वर्ष 2020-21 से वर्ष 2025-26 तक 151 करोड़ 57 लाख 32 हजार रुपए की राशि 21.79 लाख छात्रों को प्रदान की गई। पोस्ट मैट्रिक योजना में वर्ष 2020-21 से वर्ष 2025-26 तक 637.30 करोड़ रुपए की राशि 20.62 लाख छात्रों को प्रदान की गई।

*SHRI ESWARASAMY K. (POLLACHI): Hon Speaker Sir, Vanakkam. To a reply received for an application submitted under Right to Information, the Ministry stated that under the Prime Minister Adarsh Gram Yojana, Tamil Nadu had not received an amount of Rs 184.23 Crore. Moreover during the year 2021-22, under this Scheme, no fund has been provided to Tamil Nadu. Whether the Union Government is aware of the fact that Tamil Nadu has not received the complete funds allocated for the State? If so, I want to know the reasons thereof and measures undertaken by the Ministry to rectify this lacuna. Moreover, during the year 2025-26, the Union Government has given permission to four NGOs to set-up and manage Old Age homes. What is the fund allocated for this purpose? I also want to know the names of these four NGOs along with the places where they are proposed to be set-up. Thank you.

(1135/SPS/VR)

डॉ. वीरेन्द्र कुमार : माननीय अध्यक्ष महोदय, तमिलनाडु राज्य में 'प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम' के संबंध में माननीय सदस्य के द्वारा प्रश्न उठाया गया है। तमिलनाडु राज्य की कुल जनसंख्या 7 करोड़ 21 लाख 47 हजार 30 है, जिसमें से अनुसूचित जाति की संख्या 1 करोड़ 44 लाख 38 हजार 445 है, जो कुल जनसंख्या का 20.1 प्रतिशत है। तमिलनाडु देश के उन पांच टॉप राज्यों में से है, जहां पर 'प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम योजना' के अंतर्गत पूर्णत: राशि उठाई गई है।

मैं माननीय सदस्य को अवगत कराना चाहता हूं कि प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम योजना में तमिलनाडु में वर्ष 2021-22 से अब तक आदर्श ग्राम घटक के अंतर्गत 555.70 करोड़ रुपये की राशि जारी की गई और तमिलनाडु में 2,918 गावों में से 2,915 गांव 'आदर्श ग्राम' घोषित किए गए। वहां पर 6,821 कार्य किए गए और 32.81 लाख की आबादी लाभान्वित हुई है। उन्होंने जिन चार एनजीओज़ के संबंध में प्रश्न उठाया है, उन चार एनजीओज़ की सूची और स्थानों के बारे में उनको अवगत करा दिया जाएगा। 'प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम योजना' में अनुदान सहायता के अंतर्गत 2021-22 तक कृषि मृदा संरक्षण, खाद्य संस्करण, पशु पालन आदि योजनाओं के लिए तमिलनाडु सरकार को 358.44 करोड़ रुपये की राशि जारी की गई। इससे 22,700 लाभार्थी लाभान्वित हुए हैं। छात्रावास घटक में इसी 'आदर्श ग्राम योजना' में वर्ष 2021-22 से अब तक तमिलनाडु में 4.88

* Original in Tamil

करोड़ रुपये जारी किए गए। इसमें चार छात्रावास स्वीकृत हुए और 300 छात्रों को आवसीय सुविधा प्राप्त हो रही है।

डॉ. आलोक कुमार सुमन (गोपालगंज) : अध्यक्ष महोदय, तमिलनाडु राज्य में अनुसूचित जाति एवं पिछड़े वर्ग के व्यक्तियों को औद्योगिकरण के क्षेत्र में सशक्त बनाने के लिए वेंचर कैपिटल फण्ड से किस तरह की मदद दी जा रही है?

माननीय अध्यक्ष : क्या आप तमिलनाडु का प्रश्न पूछ रहे हैं या बिहार का प्रश्न पूछ रहे हैं?

डॉ. आलोक कुमार सुमन (गोपालगंज) : सर, मेरा प्रश्न अनुसूचति जाति और पिछड़े वर्गों से संबंधित है, तो पूरे देश की बात है।

डॉ. वीरेन्द्र कुमार : माननीय अध्यक्ष महोदय, मूलत: प्रश्न तमिलनाडु का है। वेंचर कैपिटल फण्ड योजना से तमिलनाडु में अनुसूचित जाति वर्ग के बंधुओं को आर्थिक रूप से सशक्त करने के लिए औद्योगिकरण के क्षेत्र में आगे बढ़ाने के लिए वर्ष 2020-21 से वर्ष 2025-26 तक कुल सात लाभार्थी कंपनियों को 29.86 करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत की गई, जिसमें 17.4 करोड़ रुपये की राशि वितरित भी की जा चुकी है। एसएएम के अंतर्गत तमिलनाडु राज्य में 2020-21 से 2025-26 तक 6 लाभार्थी कंपनियों को 1.8 करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत की गई, जिसमें से 0.36 करोड़ रुपये की राशि वितरित भी गई है। वेंचर कैपिटल फण्ड से ओबीसी के लिए तमिलनाडु राज्य की वर्ष 2020-21 से 2025-26 तक एक लाभार्थी कंपनी को 6.89 करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत की गई, जिसमें से 5.13 करोड़ रुपये की राशि वितरित भी की जा चुकी है।

एडवोकेट चन्द्र शेखर (नगीना) : अध्यक्ष जी, धन्यवाद, क्योंकि आपने मुझे इस महत्वपूर्ण प्रश्न पर अनुपूरक प्रश्न पूछने का अवसर दिया। मेरा सवाल माननीय मंत्री जी से है और तमिलनाडु से जुड़ा हुआ है। तमिलनाडु राज्य में दिव्यांगजनों के लिए सहायक यंत्रों को प्रदान करने के लिए चलाई जा रही 'एडिप योजना' के अंतर्गत तमिलनाडु राज्य में पिछले पांच वर्षों में कितने लाभार्थियों को सहायक यंत्र एवं उपकरण प्रदान किए गए हैं तथा कितनी राशि उपयोग की गई है? माननीय मंत्री जी इसको बताने की कृपा करें।

(1140/KN/SNT)

डॉ. वीरेन्द्र कुमार : अध्यक्ष महोदय, आज सदन के अंदर 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' का दृश्य दिखाई दे रहा है। प्रश्न तमिलनाडु से संबंधित है, लेकिन उसके संबंध में सप्लीमेंट्री बिहार के माननीय सदस्य के द्वारा और उत्तर प्रदेश के माननीय सदस्य चंद्रशेखर जी के द्वारा पूछी गई है। देश के प्रधान मंत्री आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी की उस परिकल्पना को मैं यहां साकार होते हुए देख रहा हूं। माननीय सदस्य ने तमिलनाडु में सामाजिक कल्याण के संबंध में प्रश्न उठाया। माननीय प्रधान मंत्री जी के नेतृत्व में काशी में काशी-तमिल संगमम की शुरुआत की गई थी। तमिल की संस्कृति को काशी की संस्कृति से जोड़ने की जो ऐतिहासिक पहल हुई थी, यह सामाजिक समरसता का सर्वव्यापी, सर्वस्पर्शी और सर्वभौमिकता का सबसे बड़ा प्रत्यक्ष उदाहरण है। आज तमिलनाडु के प्रश्न पर हमारे बाकी राज्यों के भी माननीय सदस्यों के द्वारा उसमें सहभागिता जोड़ी जा रही है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आज जिस सदन के अंदर आप और हम बैठे हुए हैं, इस सदन का जब भूमि पूजन का कार्यक्रम हुआ, इस सदन का जब लोकार्पण का कार्यक्रम किया गया तो उस कार्यक्रम में भी तमिलनाडु से संत यहां पर आए थे। उन संतों की गरिमामयी उपस्थिति में इस भवन का भूमि पूजन भी हुआ था और लोकार्पण का कार्यक्रम भी हुआ था।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय सदस्य का धन्यवाद करना चाहता हूं। हम तो सामाजिक समरसता के उस भाव को लेकर चल रहे हैं, जो तिरुवल्लुवर संत जी को उतने ही सम्मान के साथ केवल तमिलनाडु में ही नहीं, बल्कि उनके द्वारा रचित पुस्तकों के बारे में अध्ययन पूरे देश की जनता करती है। यह 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की उस परिकल्पना को साकार करने का सबसे बड़ा प्रत्यक्ष उदाहरण है।

माननीय चंद्रशेखर जी ने प्रश्न पूछा है कि तमिलनाडु राज्य में पिछले 5 वर्षों में एडिप योजना से कितने दिव्यांजनों के लिए सहायक उपकरणों का वितरण हुआ, उससे कितने लाभार्थी लाभान्वित हुए और कितनी राशि दी गई। दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग के द्वारा दिव्यांगजनों को सशक्त करने के लिए एडिप योजना के अंतर्गत जो सहायक उपकरण उपलब्ध करवाये जाते हैं, उनको टिकाऊ, परिष्कृत और वैज्ञानिक तरीके से यंत्र उपलब्ध कराये जाते हैं, जिससे वे अपनी दैनंदिन गतिविधियां ठीक ढंग से कर सकें। उनकी दिव्यांगताओं के प्रभाव को कम करके उनकी क्षमता को बढ़ाकर उनके अंदर स्वावलंबन का, स्वाभिमान का भाव जागृत करने के लिए यह योजना प्रारंभ की गई। तमिलनाडु राज्य में वर्ष 2020-21 से 2025-26 के दौरान 376 शिविरों का आयोजन किया गया और इन शिविरों के माध्यम से 45.68 करोड़ रुपये की लागत से 57773 लाभार्थियों को सहायक उपकरण प्रदान किए गए। वर्ष 2020-21 में 50 शिविर आयोजित किए गए, जिसमें 8407 लाभार्थी लाभान्वित हुए। … (व्यवधान) हनुमान जी, आप बैठिये। … (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : मंत्री जी, आप जवाब दीजिए।

डॉ. वीरेन्द्र कुमार : वर्ष 2021-22 में 50 शिविर आयोजित किए गए, वर्ष 2022-23 में 71, वर्ष 2023-24 में 86, वर्ष 2024-25 में 54 और वर्ष 2025-26 से अब तक 21 शिविर आयोजित किए जा चुके हैं। इन 376 शिविरों के माध्यम से 57773 लाभार्थी लाभान्वित हुए और 45.68 करोड़ रुपये की राशि से इन सब को लाभ प्रदान किया गया। इसके साथ ही साथ राष्ट्रीय वयोश्री योजना के माध्यम से भी हमारे ऐसे सीनियर वरिष्ठ नागरिक जो 60 वर्ष की आयु पूरी कर चुके हैं और गरीबी रेखा की सूची के नीचे रहते हैं, उनके लिए भी उनकी शारीरिक दुर्बलताओं को दूर करने के लिए सहायक उपकरण नि:शुल्क प्रदान किए जाते हैं। इस योजना के अंतर्गत पिछले 5 सालों में 1.14 करोड़ रुपये की लागत से 1559 वरिष्ठ नागरिकों को 4753 सहायक उपकरण प्रदान किए गए, जिनमें कैंप और वॉक-इन सेंटर से भी वितरण हुआ है।

(इति)

(Q. 124)

SHRIMATI KANIMOZHI KARUNANIDHI (THOOTHUKKUDI): Sir, the reply which the Minister has given shows that the funds for Tamil Nadu have been decreasing. In 2017-18, it was around Rs. 731 crore; the next year it was around Rs. 800 crore; but this year it is only around Rs. 400 crore.

I would like to know the reasons why the funds have been reduced and whether the Government is aware that States are not being fully given the allocated funds. In many States, the funds have been reduced; it is not just Tamil Nadu. What are the monitoring mechanisms in place to ensure that the States receive complete funds?

(1145/RAJ/SNT)

श्री राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह : अध्यक्ष महोदय, मूल प्रश्न ओन सोर्स ऑफ रेवेन्यू पंचायतों में कैसे बढ़ाया जाए, इससे संबंधित है, लेकिन माननीय सदस्या ने पूछा है कि पंचायतों को दी जाने वाली राशि घटी है। पंचायतों को दी जाने वाली राशि कभी नहीं घटी है। प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी के 11 सालों के शासनकाल में वित्त आयोग जितनी राशि देता है, हम उसको दो भागों में बांटते हैं। हम 90 प्रतिशत राशि आबादी के आधार पर देते हैं और राज्य के क्षेत्रफल के आधार पर 10 प्रतिशत राशि देते हैं।

अध्यक्ष महोदय, हम आपको यह बताना चाहते हैं कि 13वें वित्त आयोग का साइकल वर्ष 2010 से वर्ष 2015 तक था। 13वें वित्त आयोग की अनुशंसा पर 176 रुपए प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष की दर से दिया जाता था। 15वें वित्त आयोग द्वारा मोदी जी के शासन काल में 674 रुपए प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष दिया गया। यह चार गुना बढ़ोतरी है लेकिन माननीय सदस्या कह रही हैं कि यह नहीं बढ़ा है।

हां, राज्यों को जो सेकेंड इंस्टॉलमेंट दी जाती है, उसके कई क्राइटेरिया हैं। राज्य उन क्राइटेरिया को पालन नहीं करता है। हम लोग सेकेंड इंस्टॉलमेंट उसको नहीं देते हैं। जैसे पंचायतों में चुनाव होना चाहिए। अगर पंचायतों के चुनाव नहीं हुए तो हम राशि नहीं देंगे। संविधान के मुताबिक पंचायत के लिए अनुच्छेद 243(जी) में जो प्रावधान है, यह उसके मुताबिक है। जिन राज्यों में स्टेट फाइनैंस कमीशन नहीं बना है, वहां हम फंड रिलीज नहीं करते हैं। ये कई क्राइटेरिया हैं। हम सेकेंड इंस्टॉलमेंट उन क्राइटेरिया को फुल-फिल करने के बाद ही जारी करते हैं।

SHRIMATI KANIMOZHI KARUNANIDHI (THOOTHUKKUDI): Sir, I would just like to tell the Minister that we have held elections and we have a State Finance Commission in Tamil Nadu.

My second question is this. One of the conditions you have imposed is that the States shall receive grants only after the panchayats are fully digitised. The panchayats are already underfunded. This condition to give them funds is

putting pressure on the already underfunded panchayat bodies. You are actually adding something which they cannot deal with at the pace you expect. You should have some consideration about that.

श्री राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह : अध्यक्ष महोदय, माननीय प्रधान मंत्री जी की यह परिकल्पना है कि जब तक हमारा पंचायत आत्मनिर्भर नहीं बनेगा, स्वावलंबी नहीं बनेगा, तब तक हम आत्मनिर्भर भारत और विकसित भारत की कल्पना नहीं कर सकते है। इसलिए पंचायतों का सुदृढ़ करने के लिए उन्होंने कई योजनाएं चलाई है। पंचायतों को पारदर्शिता बरतनी होगी। भारत सरकार जो पैसा देती है, उसका जो एक्सपेंडिचर है, उसका यूटिलाइजेशन सर्टिफिकेट है, उसमें हम ट्रेनिंग के लिए पैसा देते हैं। अगर आप इन सारी चीजों पर पारदर्शिता नहीं बरतेंगे, केन्द्र सरकार को यूटिलाइजेशन सर्टिफिकेट प्राप्त नहीं होगा, तो हम राशि कैसे रिलीज कर सकते हैं। केन्द्र की सरकार भी कई वित्तीय बंधनों से जुड़ी है।

अभी फाइनैंस मिनिस्ट्री ने एक स्पर्श मॉडयूल बनाया है। आपको उस स्पर्श मॉडयूल के माध्यम से उसकी रिक्वायरमेंट्स को अपलोड करना है, तभी निधि जारी होगी। जैसे माननीय सदस्या ने तमिलनाडु की बात की है। हम इनको बताना चाहते हैं कि आपके राज्य से यूटिलाइजेशन सर्टिफिकेट इस जुलाई महीने में आया है, तो हम उसे एग्जामिन करेंगे।

DR. SHASHI THAROOR (THIRUVANANTHAPURAM): I have read the hon. Minister’s reply. He mentions about the Samarth Scheme, which is a dedicated digital platform for panchayats.

(1150/AK/NK)

According to the information that we have been able to collect, a large number of States do not have an online system for updating and recording land ownership. So, the first problem is that you expect them to benefit from a portal. There is not only Samarth, but there is also the SVAMITVA (Survey of Villages and Mapping with Improvised Technology in Village Areas).

Has the Ministry taken any steps to strengthen technology, to provide last mile connectivity to the gram panchayats, and to train the Panchayat officers in how to use this? In the absence of that, if you are counting on digitization to improve the Own-Source Revenue and they do not have the capacity to actually use the digital stuff, then how is it going to change? Your own answer says that the per-capita income generation in panchayats is only Rs. 59 in the country. We have 2.25 lakh gram panchayats in the country and that is literally half-a-lakh a year coming to these Panchayats.

Kindly make it easier for them by giving them systematic training from the Central Government as not every State is equal. We are okay in Kerala, but in many other States there are problems. Thank you, Mr. Speaker.

श्री राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह: अध्यक्ष महोदय, पंचायत का प्रबंधन राज्य का विषय है और यह पूर्णत: राज्य सरकार के अधीन है। केन्द्र सरकार वित्त आयोग की अनुशंसा पर राज्यों को राशि देती

है। राज्य अपनी राशि पंचायतों को देते हैं। पोर्टल की भी सुविधा है। क्षमता निर्माण के लिए राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान चलाया गया है। राष्ट्रीय ग्राम स्वराज के तहत हम लोगों ने कई ट्रेनिंग के प्रोग्राम्स कराए हैं ताकि जो पंचायत के प्रतिनिधि हैं, पंचायतों में जो अधिकारी और पदाधिकारी हैं, उनका भी कैपिसिटी बिल्डिंग कैसे हो, इसके लिए आईआईएम, अहमदाबाद के साथ एक मॉडल भी बनाया गया है। उस मॉडल को हम लोग राज्यों को भेज रहे हैं। हम मास्टर ट्रेनर्स को ट्रेंड कर चुके हैं, लेकिन ये सारा काम राज्यों को करना है। कैपिसिटी बिल्डिंग के लिए, पंचायतों को प्रोत्साहित करने के लिए हम लोग राष्ट्रीय पुरस्कार की भी योजना चला रहे हैं, जो पंचायत अच्छा काम करती है, जो पंचायत बेहतर काम करती है, वहां के पंचायत प्रतिनिधियों को राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित करते हैं। ये सारे कार्यक्रम हम लोग चला रहे हैं। पोर्टल के लिए भी आदरणीय प्रधानमंत्री जी ने सभी पंचायतों को ऑप्टिकल फाइबर के साथ जोड़ने का भी अभियान चलाया है। ऑप्टिकल फाइबर से जुड़ेगा तो स्वभाविक तौर पर सूचना प्रणाली मजबूत होगी।

*DR. KAKOLI GHOSH DASTIDAR (BARASAT): Namaskar, Honourable Speaker Sir. Thank you for letting me ask a question in the house. I want to ask the Honorable Minister, why is the Central Government not giving nearly 7,000 crore rupees to the poor people of West Bengal in various areas of the selected Panchayats, even though, according to his own statement, the poor people in West Bengal have been given proper utilization certificates and even though the monitoring team has visited them nearly 64 times and received adequate answers?

श्री राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह: अध्यक्ष महोदय, यह विषय पंचायती राज मंत्रालय से संबंधित नहीं है। यह विषय माननीय शिवराज जी के मंत्रालय से संबंधित है। बंगाल एक विशेष तौर का राज्य है, जहां कोई कायदा कानून नहीं चलता है। वहां सिर्फ बंगाल का कायदा कानून चलता है। देश का कायदा कानून वहां चलाइए, बंगाल को भी लाभ मिलेगा। प्रधानमंत्री मोदी जी बंगाल को भी इस देश का अंग मान कर चलते हैं। बंगाल के गरीबों की हितैषी बंगाल सरकार नहीं है।

(1155/IND/SM)

श्री अब्दुल रशीद शेख (बारामूला) : अध्यक्ष जी, मैं सुझाव देना चाहता हूं कि जो गांव हैं, खास कर जम्मू-कश्मीर के बार्डर एरियाज में हैं, वहां पंचायतें ही सारा काम देखती हैं। हमारे जंगलों में अरबों रुपयों की लकड़ी पड़ी हुई है। फारेस्ट डिपार्टमेंट वहां तक पहुंच नहीं पाता है क्योंकि वहां पहुंचने के लिए सड़कें नहीं हैं। क्या यह मुमकिन है कि इस विषय पर मंत्रालय विचार करे कि जंगलों में जो लकड़ी पड़ी है, उसे बाहर निकाल कर पंचायतों के डिस्पोजल पर रखा जाए ताकि पंचायतों को रिसोर्सेज मिलें और उनका अच्छे कामों के लिए इस्तेमाल हो सके।

श्री राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह : अध्यक्ष जी, माननीय सदस्य का सवाल पंचायत से जुड़ा हुआ है और वन विभाग से संबंधित है। वन विभाग के अपने अलग नियम कायदे हैं। मैं माननीय सदस्य से आग्रह करूंगा कि वे वन विभाग से सम्पर्क करें। वे इस प्रश्न का उचित उत्तर दे सकते हैं।

(इति)

* Original in Bengali

(pp. 16-30)

(प्रश्न 125)

श्री हनुमान बेनीवाल (नागौर) : अध्यक्ष जी, प्रधान मंत्री फसल बीमा से जुड़ा मामला है, इसलिए शायद मेरे बोलने का नम्बर आ गया। मुझे किसानों की भी दुआ लगेगी।

अध्यक्ष जी, पहले फसल बीमा पांच तरह से होता था। मेरा निवेदन है कि केंद्र सरकार और राज्य सरकारें बीमा क्लेम के लिए 50-50 प्रतिशत देती हैं। खरीफ की फसल हो या रबी की फसल हो, एक निश्चित तिथि पर बीमा राशि का प्रीमियम ले लेते हैं लेकिन जब वापस देना होता है तब आप कहते हैं कि राज्य सरकार की एजेंसियां देंगी। मेरा निवेदन है कि आप राज्य सरकारों और बैंकों को निर्देशित करें कि किसानों को समय पर क्लेम दिया जाए। इसके अलावा पटवार मंडल की जगह खेत को ईकाई माना जाए।

श्री शिवराज सिंह चौहान : माननीय अध्यक्ष जी, मोदी जी किसान हितैषी प्रधान मंत्री हैं। इसलिए पूर्व की फसल बीमा योजना जो नैस के नाम पर चलती थी, वह किसान हितैषी नहीं थी। उसमें अनेकों परिवर्तन करने का काम हुआ है। एक परिवर्तन उसमें यह हुआ है कि जो क्लेम बनता है, अगर बीमा कम्पनी उसका समय पर भुगतान नहीं करती है तो अब निर्धारित तिथि के 21 दिन के अंदर अगर उन्होंने भुगतान नहीं किया तो 12 परसेंट ब्याज बीमा कंपनी पर लगाया जाएगा जो किसान के खाते में डाला जाएगा। दूसरा, मैं यह भी निवेदन करना चाहता हूं कि कई बार राज्य सरकार का शेयर आने में देर होती है। कुछ राज्य सरकारें तो ऐसी हैं, जिन्होंने यह कह दिया कि हम किसान का शेयर देंगे और नहीं दिया। जैसे, आंध्र में जगन जी की सरकार थी तो मामला अटक गया था। अब हमने यह तय कर दिया है कि राज्य सरकार अपना शेयर दे या न दे, केन्द्र सरकार अपना शेयर डाल देगी और राज्य सरकार भी अगर अपना शेयर देने में देर करेगी तो 12 परसेंट ब्याज उस पर भी लगेगा और किसान के खाते में वह डाला जाएगा। यह व्यवस्था भी मोदी जी की सरकार ने करने का काम किया है।

माननीय अध्यक्ष जी, हमने यह भी तय कर दिया है कि जो राज्य सरकारें ऐसे लोकप्रिय निर्णय करती हैं कि हम किसान का पैसा देंगे, वह किसान का पैसा निर्धारित अवधि में देना पड़ेगा। कई बार देते ही नहीं हैं। जैसे, आंध्र प्रदेश में जगन की सरकार ने तीन साल तक नहीं दिया। इससे किसान फंस गया। लेकिन अब निश्चित समय सीमा में उनको देना होगा तभी बीमा माना जाएगा।

श्री हनुमान बेनीवाल (नागौर) : अध्यक्ष महोदय, मैं मंत्री जी से यह जानना चाहता हूं कि बीमा कंपनी ने सर्वेयर काफी कम संख्या में लगा रखे हैं और बिना सर्वेयर के अगर कहीं फसल खराब हो जाती है और पटवारी वगैरह कर देते हैं तो कह देते हैं कि सर्वेयर की अनुपस्थिति में हुआ। आप सर्वेयर हर गांव में नियुक्त करें। बहुत कम संख्या में सर्वेयर हैं। आप इसको क्लीयर करें।

श्री शिवराज सिंह चौहान : माननीय अध्यक्ष महोदय, यह मोदी जी की सरकार है। सर्वेयर क्रॉप कटिंग एक्सपैरिमेंट उनकी उपस्थिति में होता था तो दिक्कत आती थी, अब इस सरकार ने एस टैग प्रणाली अपनाने का फैसला किया। सेटेलाइट आधारित रिमोट सेंसिंग के माध्यम से हम फसल का आकलन करेंगे। कोई आदमी बीच में नहीं होगा, जो क्रॉप कटिंग एक्सपेरिमेंट में गड़बड़ कर देता था। अब हम डिजिटली फसल की क्षति का आकलन करेंगे और उसके आधार पर पूरी की पूरी भरपाई किसान की फसल बीमा योजना के अंतर्गत किया जाएगा। अगर जरूरत पड़ेगी, क्योंकि कई राज्य सरकारों ने यह व्यवस्था लागू कर दी है, वहां सर्वेयर बढ़ाने का भी कहेंगे।

(इति)

प्रश्न काल समाप्त

(1200/KDS/GM)

स्थगन प्रस्ताव की सूचनाओं के बारे में विनिर्णय

1200 बजे

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, मुझे कई माननीय सदस्यों द्वारा कुछ विषयों पर स्थगन प्रस्ताव की सूचनाएं प्राप्त हुई हैं। मैंने स्थगन प्रस्ताव की किसी भी सूचना के लिए आज अनुमति प्रदान नहीं की है।

… (व्यवधान)

सभा पटल पर रखे गए पत्र

1201 बजे

माननीय अध्यक्ष : अब पत्र सभा-पटल पर रखे जाएंगे।

आइटम नंबर 2, डॉ. जितिन प्रसाद।

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय में राज्य मंत्री; तथा इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री जितिन प्रसाद) : अध्यक्ष महोदय, मैं निम्नलिखित पत्र सभा-पटल पर रखता हूं:-

(1) विशेष आर्थिक क्षेत्र अधिनियम, 2005 की धारा 55 की उप-धारा (3) के अंतर्गत विशेष आर्थिक क्षेत्र (संशोधन) नियम, 2025, जो दिनांक 3 जून, 2025 के भारत के राजपत्र में अधिसूचना संख्या सा.का.नि.364(अ) में प्रकाशित हुए थे, की एक प्रति (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण)।

(2) विदेश व्यापार (विकास एवं विनियमन) अधिनियम, 1992 की धारा 19 की उपधारा (3) के अंतर्गत निम्नलिखित अधिसूचनाओं की एक-एक प्रति (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण):-

(एक) का.आ. 528(अ), जो 30 जनवरी, 2025 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जो आईटीसी (एचएस) 2022, अनुसूची-I (आयात नीति) के अध्याय 89 के सीटीएच 890690 के अंतर्गत आने वाली आयात नीति में संशोधन के बारे में है।

(दो) का.आ.614(अ), जो 4 फरवरी, 2025 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जो डी-ऑयल्ड राइस ब्रान की निर्यात नीति में संशोधन के बारे में है।

(तीन) का.आ.2848(अ), जो दिनांक 25 जून, 2025 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जो राष्ट्रीय सहकारी निर्यात लिमिटेड (एनसीईएल) के माध्यम से सेनेगल को टूटे हुए चावल के निर्यात के बारे में है।

(चार) का.आ.669(अ), जो दिनांक 7 फरवरी, 2025 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जो आईटीसी (एचएस), 2022, अनुसूची-I

(आयात नीति) के अध्याय 87 के अंतर्गत आयात नीति शर्त संख्या 1(तीन) में संशोधन के बारे में है।

(पाँच) का.आ.2847(अ), जो दिनांक 25 जून, 2025 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जो मानव कच्चे बाल की निर्यात नीति में संशोधन के बारे में है।

(छह) का.आ.1085(अ), जो दिनांक 5 मार्च, 2025 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जो आईटीसी (एचएस) 2022, अनुसूची-I (आयात नीति) के अध्याय 71 के एचएस कोड 7110 के अंतर्गत कवर किए गए प्लेटिनम की आयात नीति और नीतिगत शर्त में संशोधन के बारे में है।

(सात) का.आ.2849(अ), जो दिनांक 25 जून, 2025 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जो एचएस कोड 1006 40 00 के अंतर्गत टूटे हुए चावल की निर्यात नीति में संशोधन के बारे में है।

(आठ) का.आ.1110(अ), जो दिनांक 10 मार्च, 2025 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जो अनुसूची-II (निर्यात नीति), आईटीसी(एचएस) 2022 के एचएसएन के अंतर्गत निर्यात नीति शर्त में संशोधन के बारे में है।

(नौ) का.आ.1116(अ), जो दिनांक 11 मार्च, 2025 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जो आईटीसी (एचएस) 2022, अनुसूची-I (आयात नीति) के अध्याय 07 के आईटीसी (एचएस) कोड 07131010 के अंतर्गत पीली मटर के लिए आयात अवधि के विस्तार के बारे में है।

(दस) का.आ.1117(अ), जो दिनांक 11 मार्च, 2025 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जो आईटीसी (एचएस) 2022, अनुसूची-I (आयात नीति) के अंतर्गत उड़द ([एसपीपी विग्ना मुंगो (एल.) हेपर की फलियाँ]) [आईटीसी (एचएस) कोड 07133110] की "मुक्त" आयात नीति में विस्तार के बारे में है।।

(ग्यारह) का.आ.1251(अ), जो दिनांक 19 मार्च, 2025 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जो आईटीसी (एचएस) 2022, अनुसूची-I (आयात नीति) में यूरिया [एक्ज़िम कोड 31021010] की आयात नीति शर्त में संशोधन के बारे में है।

(बारह) का.आ.1340(अ), जो दिनांक 20 मार्च, 2025 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जो अग्रिम प्राधिकार (एए) धारकों, विशेष आर्थिक क्षेत्र (एसईजेड) और निर्यातोन्मुख इकाइयों (ईओयू) के लिए आरओडीटीईपी को 5.2.2025 तक बढ़ाए जाने के बारे में है।

(तेरह) का.आ.1562(अ), जो दिनांक 1 अप्रैल, 2025 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जो 2025-2026 के दौरान मालदीव गणराज्य को आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति के बारे में है।।

(चौदह) का.आ.1578(अ), जो दिनांक 3 अप्रैल, 2025 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जो आईटीसी (एचएस), 2022, अनुसूची-I (आयात नीति) के अध्याय-20 के आईटीसी (एचएस) कोड 20081920 के अंतर्गत आने वाली भुनी हुई सुपारी की आयात नीति और नीतिगत शर्त में संशोधन के बारे में है।

(पंद्रह) का.आ.1581(अ), जो दिनांक 3 अप्रैल, 2025 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जो प्रासंगिक एफएसएसएआई अधिसूचना के साथ अनुसूची-I (आयात नीति), आईटीसी (एचएस), 2022 के परिशिष्ट-V की सूची "क" में खाद्य आयात प्रवेश बिंदुओं के रूप में दरांग भूमि सीमा शुल्क स्टेशनों को शामिल किए जाने के बारे में है।

(सोलह) का.आ.1725(अ), जो दिनांक 15 अप्रैल, 2025 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जो आईटीसी (एचएस), 2022 की अनुसूची-I (आयात नीति) के अध्याय-27 की आयात नीति शर्त संख्या 07(i) में संशोधन के बारे में है।

(सत्रह) का.आ.2347(अ), जो दिनांक 26 मई, 2025 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जो पाकिस्तान में उदभूत या वहां से निर्यात किए जाने वाले सभी सामानों के आयात या पारगमन पर प्रतिबंध - विदेश व्यापार नीति (एफटीपी) 2023 के पैरा 2.20क के अंत:स्थापन के बारे में है।

(अठारह) का.आ.1839(अ), जो दिनांक 23 अप्रैल, 2025 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जो आईटीसी (एचएस), 2022 के अध्याय 60 के अंतर्गत आने वाले बुने हुए सिंथेटिक कपड़ों की आयात नीति शर्त में संशोधन के बारे में है।

(उन्नीस) का.आ.2235(अ), जो दिनांक 19 मई, 2025 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जो बांग्लादेश से भारत में कतिपय वस्तुओं के आयात पर बंदरगाह प्रतिबंध - आईटीसी (एचएस), 2022 अनुसूची 1 (आयात नीति) के अंतर्गत 'आयात नीति संबंधी सामान्य टिप्पण' के अंतर्गत एक नए पैरा 19 के अंत:स्थापन के बारे में है।

(बीस) का.आ.2237(अ), जो दिनांक 19 मई, 2025 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जो वित्त अधिनियम, 2025 के अनुरूप आईटीसी (एचएस) 2022 की अनुसूची-I (आयात नीति) के अध्याय 71

के अंतर्गत विशिष्ट आईटीसी (एचएस) कोड की आयात नीति और नीति शर्तों में संशोधन के बारे में है।

(इक्कीस) का.आ.2238(अ), जो दिनांक 19 मई, 2025 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जो वित्त अधिनियम, 2025 द्वारा किए गए प्रस्तुत संशोधनों के साथ अनुसूची-II (निर्यात नीति), आईटीसी (एचएस) 2022 के सामंजस्य के बारे में है।

(बाईस) का.आ. 2367(अ) जो दिनांक 28 मई, 2025 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जो दिनांक 01.05.2025 से सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम की पहली अनुसूची में परिवर्तन के परिणामस्वरूप आरओडीटीईपी अनुसूची के संरेखण के बारे में है।

(तेईस) का.आ. 2368(अ) जो दिनांक 28 मई, 2025 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जो 01.06.2025 से अग्रिम प्राधिकार (एए) धारकों, विशेष आर्थिक क्षेत्रों (एसईजेड) और निर्यातोन्मुख इकाइयों (ईओयू) के लिए आरओडीटीईपी की बहाली के बारे में है।

(चौबीस) का.आ. 2369(अ) जो दिनांक 28 मई, 2025 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जो एफटीपी-2023 के पैरा 4.41(5) में संशोधन के बारे में है।

(पच्चीस) का.आ.2348(अ) जो दिनांक 26 मई, 2025 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जो आईटीसी (एचएस), 2022, अनुसूची- I (आयात नीति) के अध्याय 73 के अंतर्गत आने वाले रोलर चेन और उसके पुर्जों की आयात नीति शर्त में संशोधन के बारे में है।

(छब्बीस) का.आ.2350(अ) जो दिनांक 26 मई, 2025 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जो तैयार चमड़े, गीले नीले चमड़े, ईएल टैन्ड चमड़े और क्रस्ट चमड़े के निर्यात के लिए बंदरगाह संबंधी प्रतिबंधों और परीक्षण आवश्यकताओं को हटाने के बारे में है।

(सत्ताईस) का.आ.2349(अ) जो दिनांक 26 मई, 2025 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जो आईटीसी (एचएस), 2022, अनुसूची- I (आयात नीति) के अध्याय 83 के अंतर्गत आने वाले कैबिनेट हिंजेस की आयात नीति शर्त में संशोधन के बारे में है।

(अट्ठाईस) का.आ.2449(अ) जो दिनांक 2 जून, 2025 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था, तथा जो आईटीसी (एचएस) 2022, अनुसूची-I (आयात नीति) के अध्याय 07 के आईटीसी (एचएस) कोड 07131010 के अंतर्गत पीली मटर के लिए आयात अवधि में विस्तार के बारे में है।

(उनतीस) का.आ.2846(अ) जो दिनांक 25 जून, 2025 के भारत के राजपत्र में

प्रकाशित हुथा था तथा जो फार्मा ग्रेड चीनी के लिए निर्यात नीति में संशोधन के बारे में है।

(तीस) का.आ.2777(अ) जो दिनांक 23 जून, 2025 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जो अनुसूची-I (आयात नीति) के आईटीसी (एचएस) 2022 के अध्याय 71 के अंतर्गत आने वाली विशिष्ट वस्तुओं की आयात नीति में संशोधन के बारे में है।

(इकतीस) का.आ.2774(अ) जो दिनांक 23 जून, 2025 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जो आईटीसी (एचएस) 2022, अनुसूची-I (आयात नीति) के अध्याय 28 के अंतर्गत सीटीएच 2843 के अंतर्गत आने वाली मदों की आयात नीति में संशोधन के बारे में है।

(बत्तीस) का.आ.2781(अ) जो दिनांक 23 जून, 2025 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जो विदेश व्यापार नीति, 2023 के पैरा 2.03(क)(i)(छ) में संशोधन के बारे में है तथा जिसमें अग्रिम प्राधिकार धारकों, ईओयू और एसईजेड द्वारा अनिवार्य गुणवत्ता नियंत्रण आदेशों (क्यूसीओ) के अधीन इनपुट के आयात के लिए समर्थकारी प्रावधान निर्धारित किए गए हैं।

(3) उपर्युक्त (2) की मद संख्या (एक से दस) में उल्लिखित पत्रों को सभा पटल पर रखने में हुए विलम्ब के कारण दर्शाने वाले दस विवरण (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण)।

(4) (एक) एमईपीजेड विशेष आर्थिक क्षेत्र, चेन्नई के वर्ष 2023-2024 के वार्षिक प्रतिवेदन की एक प्रति (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण) तथा लेखापरीक्षित लेखे।

(दो) एमईपीजेड विशेष आर्थिक क्षेत्र, चेन्नई के वर्ष 2023-2024 के कार्यकरण की सरकार द्वारा समीक्षा के बारे में विवरण (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण)।

(5) उपर्युक्त (4) में उल्लिखित पत्रों को सभा पटल पर रखने में हुए विलम्ब के कारण दर्शाने वाला विवरण (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण)।

कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री राम नाथ ठाकुर) : अध्यक्ष महोदय, मैं निम्नलिखित पत्र सभा-पटल पर रखता हूं:-

(1) का.आ. 1101(अ) जो दिनांक 6 मार्च, 2025 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था, तथा जिसके द्वारा दिनांक 2 सितम्बर, 2023 की अधिसूचना संख्या का.आ. 3723(अ) में कतिपय संशोधन किए गए हैं।

(2) का.आ.1102(अ) जो दिनांक 6 मार्च, 2025 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था, तथा जिसके द्वारा किण्वित जैविक खाद और तरल किण्वित जैविक खाद के विनिर्माताओं को और इसमें उल्लिखित उनके उत्पादों को राजपत्र में इस आदेश के

प्रकाशन की तारीख से तीन वर्ष की अवधि के लिए किसानों को सीधे थोक में बिक्री के लिए अधिकृत किया गया है।

(3) का.आ.3042(अ) जो दिनांक 8 जुलाई, 2025 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था, तथा जिसके द्वारा किण्वित जैविक खाद और तरल किण्वित जैविक खाद के विनिर्माताओं को और इसमें उल्लिखित उनके उत्पादों को राजपत्र में इस आदेश के प्रकाशन की तारीख से तीन वर्ष की अवधि के लिए किसानों को सीधे थोक में बिक्री के लिए अधिकृत किया गया है।

(4) उर्वरक (अकार्बनिक, कार्बनिक या मिश्रित) (नियंत्रण) (तीसरा) संशोधन आदेश, 2025 जो दिनांक 27 मार्च, 2025 के भारत के राजपत्र में अधिसूचना संख्या का.आ.1477(अ) में प्रकाशित हुआ था।

1201 बजे (श्रीमती संध्या राय पीठासीन हुई)

… (व्यवधान)

गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री नित्यानन्द राय) : महोदया, मैं निम्नलिखित पत्र सभा-पटल पर रखता हूं:-

(1) लद्दाख सिविल सेवा विकेंद्रीकरण और भर्ती (संशोधन) विनियम, 2025 की धारा 15 की उपधारा (2) के अंतर्गत लद्दाख सिविल सेवा विकेंद्रीकरण एवं भर्ती-अधिवास प्रमाण पत्र प्रदान करना (प्रक्रिया) नियम, 2025 जो दिनांक 3 जून, 2025 के भारत के राजपत्र में अधिसूचना संख्या सा.का.नि.363(अ) में प्रकाशित हुए थे, की एक प्रति (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण)।

(2) संविधान के अनुच्छेद 309 के अन्तर्गत गृह मंत्रालय, महानिदेशालय (अग्निशमन सेवा, नागरिक सुरक्षा और होमगार्ड), डिस्पैच राइडर (समूह 'ग' पद) भर्ती नियम, 2025, जो दिनांक 20 अप्रैल, 2025 के भारत के साप्ताहिक राजपत्र में अधिसूचना संख्या सा.का.नि.44 में प्रकाशित हुए थे, की एक प्रति (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण)।

(3) राष्ट्रीय रक्षा विश्वविद्यालय अधिनियम, 2020 की धारा 51 की उपधारा (2) के अंतर्गत राष्ट्रीय रक्षा विश्वविद्यालय माध्यस्थम् अधिकरण (कर्मचारी) परिनियम, 2025, जो दिनांक 20 मई, 2025 के भारत के राजपत्र में अधिसूचना संख्या एफ.सं. आरआरयू/ आरईजीआई /परिनियम /माध्यस्थम् अधिकरण/2025/513(अ) में प्रकाशित हुए थे, की एक प्रति (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण)।

(4) दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी राज्यक्षेत्र शासन अधिनियम, 1991 की धारा 45ट की उपधारा (2) के अंतर्गत दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी राज्यक्षेत्र शासन (अधिकारियों एवं अन्य कर्मचारियों की सेवा शर्तें) नियम, 2025, जो दिनांक 20 जुलाई, 2025 के भारत के राजपत्र में अधिसूचना संख्या सा.का.नि. 453(अ) में प्रकाशित हुए थे, की एक प्रति (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण)।

(5) केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल अधिनियम, 1968 की धारा 22 की उप-धारा (3) के अन्तर्गत केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल, सुरक्षा विंग, उप-निरीक्षक (कार्यकारी) भर्ती (संशोधन) नियम, 2025 जो दिनांक 11 जून, 2025 के भारत के राजपत्र में अधिसूचना संख्या सा.का.नि. 380(अ) में प्रकाशित हुए थे, की एक प्रति (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण)।

मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय में राज्य मंत्री; तथा पंचायती राज मंत्रालय में राज्य मंत्री (प्रो. एस. पी. सिंह बघेल) : महोदया, मैं निम्नलिखित पत्र सभा-पटल पर रखता हूं:-

(1) (एक) भारतीय पशु चिकित्सा परिषद, नई दिल्ली के वर्ष 2023-2024 के वार्षिक प्रतिवेदन की एक प्रति (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण) तथा लेखापरीक्षित लेखे।

(दो) भारतीय पशु चिकित्सा परिषद, नई दिल्ली के वर्ष 2023-2024 के कार्यकरण की सरकार द्वारा समीक्षा की एक प्रति (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण)।

(2) उपर्युक्त (1) में उल्लिखित पत्रों को सभा पटल पर रखने में हुए विलम्ब के कारण दर्शाने वाला विवरण (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण)।

उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय में राज्य मंत्री; तथा सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री बी. एल. वर्मा) : महोदया, मैं निम्नलिखित पत्र सभा-पटल पर रखता हूं:-

(1) (एक) कार्यालय मुख्य आयुक्त दिव्यांगजन, नई दिल्ली के वर्ष 2022-2023 के वार्षिक प्रतिवेदन की एक प्रति (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण)।

(दो) कार्यालय मुख्य आयुक्त दिव्यांगजन, नई दिल्ली के वर्ष 2022-2023 के वार्षिक प्रतिवेदन पर व्याख्यात्मक ज्ञापन की एक प्रति (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण)।

(2) उपर्युक्त (1) में उल्लिखित पत्रों को सभा पटल पर रखने में हुए विलम्ब के कारण दर्शाने वाला विवरण (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण)।

ग्रामीण विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री कमलेश पासवान) : महोदया, मैं महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम, 2005 के वर्ष 2023-2024 के वार्षिक प्रतिवेदन की एक प्रति (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण) सभा पटल पर रखता हूं।

कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री भागीरथ चौधरी) : महोदया, मैं निम्नलिखित पत्र सभा-पटल पर रखता हूं:-

(1) कंपनी अधिनियम, 2013 की धारा 394 की उपधारा 1(ख) के अंतर्गत निम्नलिखित पत्रों की एक-एक प्रति (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण):-

(एक) एग्रीनोवेट इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली के वर्ष 2023-2024 के कार्यकरण की सरकार द्वारा समीक्षा।

(दो) एग्रीनोवेट इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली का वर्ष 2023-2024 का वार्षिक प्रतिवेदन, लेखापरीक्षित लेखे तथा उन पर नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की टिप्पणियाँ।

(2) उपर्युक्त (1) में उल्लिखित पत्रों को सभा पटल पर रखने में हुए विलम्ब के कारण दर्शाने वाला विवरण (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण)।

(3) (एक) डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, समस्तीपुर के वर्ष 2022-2023 के वार्षिक प्रतिवेदन की एक प्रति (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण) तथा उन पर लेखापरीक्षा प्रतिवेदन।

(दो) डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, समस्तीपुर के वर्ष 2022-2023 के कार्यकरण की सरकार द्वारा समीक्षा की एक प्रति (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण)।

(4) उपर्युक्त (3) में उल्लिखित पत्रों को सभा पटल पर रखने में हुए विलम्ब के कारण दर्शाने वाला विवरण (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण)।

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HEAVY INDUSTRIES; AND MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF STEEL (SHRI BHUPATHI RAJU SRINIVASA VARMA): Madam, I beg to lay on the Table:-

(1) A copy of the Report of the Comptroller and Auditor General of India (Hindi and English versions) Report No. 10 of 2025 - Union Government on Inventory Management in Steel Authority of India Limited - Ministry of Steel - (Performance Audit-Commercial) under Article 151(1) of the Constitution.

(2) A copy of the Memorandum of Understanding (Hindi and English versions) between the MECON Limited and the Ministry of Steel, for the year 2024-2025.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS; AND MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF TEXTILES (SHRI PABITRA MARGHERITA): Madam, I beg to lay on the Table:-

(1) (i) A copy of the Annual Report (Hindi and English versions) of the Manmade and Technical Textiles Export Promotion Council (formerly SRTEPC), Mumbai, for the year 2023-2024, along with Audited Accounts.

(ii) A copy of the Review (Hindi and English versions) by the Government of the working of the Manmade and Technical Textiles Export Promotion Council, (formerly SRTEPC), Mumbai, for the year 2023-2024.

(2) Statement (Hindi and English versions) showing reasons for delay in laying the papers mentioned at (1) above.

(3) (i) A copy of the Annual Report (Hindi and English versions) of the Jute Products Development & Export Promotion Council, Kolkata, for the year 2023-2024, along with Audited Accounts.

(ii) A copy of the Review (Hindi and English versions) by the Government of the working of the Jute Products Development & Export Promotion Council, Kolkata, for the year 2023-2024.

(4) Statement (Hindi and English versions) showing reasons for delay in laying the papers mentioned at (3) above.

(5) A copy each of the following notifications (Hindi and English versions) under sub-section (2) of Section 3 of the Jute Packaging Materials (Compulsory Use in Packing Commodities) Act, 1987:-

(i) S.O.1830(E) published in Gazette of India dated 22nd April, 2025, directing that the Commodities specified in Column 2 of the notification, mentioned therein, shall be packed in jute packaging material for supply or distribution, in such minimum percentage as specified in column 3 of the notification with effect from the date of publication of this notification in the Official Gazette, up to 30th June, 2025.

(ii) S.O.2902(E) published in Gazette of India dated 30th June, 2025, making certain amendments in Notification No. S.O.1830(E) dated the 22nd April, 2025.

(6) A copy each of the following Notifications (Hindi and English versions) under Section 13B of the Central Silk Board Act, 1948:-

(i) S.O.2016(E) published in Gazette of India dated 5th May, 2025, nominating persons to serve as member, mentioned therein, of the Central Silk Board for a period of 3 years from the date of this notification, subject to Central Silk Board Act, 1948.

(ii) S.O.2039(E) published in Gazette of India dated 7th May, 2025, nominating Dr. K. Sreenivasulu, IAS, Director of Horticulture & Sericulture, Government of Andhra Pradesh to serve as member of the Central Silk Board for a period of three years from the date of this notification, subject to Central Silk Board Act, 1948.

(iii) S.O.2625(E) published in Gazette of India dated 13th June, 2025, nominating persons to serve as member, mentioned therein, of the Central Silk Board for a period of 3 years from the date of this notification, subject to Central Silk Board Act, 1948.

(7) A copy each of the following papers (Hindi and English versions) under sub-section 1(b) of Section 394 of the Companies Act, 2013:-

(a) (i) Review by the Government of the working of the Jute Corporation of India Limited, New Delhi, for the year 2023-2024.

(ii) Annual Report of the Jute Corporation of India Limited, New Delhi, for the year 2023-2024, along with Audited Accounts and comments of the Comptroller and Auditor General thereon.

(b) (i) Review by the Government of the working of the National Textile Corporation Limited, New Delhi, for

the year 2021-2022.

(ii) Annual Report of the National Textile Corporation Limited, New Delhi, for the year 2021-2022, along with Audited Accounts and comments of the Comptroller and Auditor General thereon.

(8) Two statements (Hindi and English versions) showing reasons for delay in laying the papers mentioned at (7) above.

लोक लेखा समिति
26वां से 28वां प्रतिवेदन

श्री जय प्रकाश (हरदोई) : महोदया, मैं लोक लेखा समिति (2025-26) के निम्नलिखित प्रतिवेदन (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण) प्रस्तुत करता हूं:-

(1) 'क्षतिपूर्ति की प्राप्ति और इसके उपयोग में अनियमितताएं तथा इंडिया हाउस, लंदन में बेसमेंट के नवीनीकरण से संबंधित कार्य की संविदा प्रदान करने और कार्य निष्पादन में घोर अनियमितता बरतना और हेराफेरी करना जिससे संविदाकार को अनुचित लाभ प्राप्त हुए' के बारे में लोक लेखा समिति के 87वें प्रतिवेदन (17वीं लोक सभा) में अंतर्विष्ट समिति की टिप्पणियों/सिफारिशों पर सरकार द्वारा की-गई-कार्रवाई संबंधी छब्बीसवां प्रतिवेदन।

(2) 'रेल भूमि विकास प्राधिकरण द्वारा **वा**णिज्यिक उपयोग हेतु रेलवे भूमि के विकास' के बारे में लोक सेखा समिति के 113वें प्रतिवेदन (17वीं लोक सभा) में अंतर्विष्ट समिति की टिप्पणि**यों**/सिफारिशों पर सरकार द्वारा की-गई-कार्रवाई संबंधी सत्ताईसवां प्रतिवेदन।

(3) 'पट्टा करार के गैर-पंजीकरण के कारण राजस्व को घाटा' के बारे में लोक लेखा समिति के 141वें प्रतिवेदन (17वीं लोक सभा) में अंतर्विष्ट समिति की टिप्पणियों/सिफारिशों पर सरकार द्वारा की-गई-कार्रवाई संबंधी अट्ठाईसवां प्रतिवेदन।

सूचना और प्रौद्योगिकी संबंधी स्थायी समिति
विवरण

डॉ. निशिकान्त दुबे (गोड्डा) : महोदया, मैं सूचना और प्रौद्योगिकी संबंधी स्थायी समिति (2024-25) के निम्नलिखित प्रतिवेदनों पर सरकार द्वारा आगे की-गई-कार्रवाई को दर्शाने वाले विवरण (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण) सभा पटल पर रखता हूं:-

(1) डाक विभाग (संचार मंत्रालय) से संबंधित 'डाक विभाग-पहल और चुनौतियां' के बारे में समिति के 57वें प्रतिवेदन (17वीं लोक सभा) में अंतर्विष्ट टिप्पणियों/सिफारिशों पर सरकार द्वारा की-गई-कार्रवाई संबंधी पहला प्रतिवेदन।

(2) सूचना और प्रसारण मंत्रालय से संबंधित 'भारत में केवल टेलीविजन का विनियमन' के बारे में समिति के 56वें प्रतिवेदन (17वीं लोक सभा) में अंतर्विष्ट टिप्पणियों/सिफारिशों पर सरकार द्वारा की-गई-कार्रवाई संबंधी छठा प्रतिवेदन।

(3) इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय से संबंधित 'डिजिटल भुगतान और डाटा सुरक्षा के लिए ऑनलाइन सुरक्षोपाय' के बारे में समिति के 54वें प्रतिवेदन (17वीं लोक सभा) में अंतर्विष्ट टिप्पणियों/सिफारिशों पर सरकार द्वारा की-गई-कार्रवाई संबंधी सातवां प्रतिवेदन।

STANDING COMMITTEE ON
CONSUMER AFFAIRS, FOOD AND PUBLIC DISTRIBUTION
9th and 10th Reports

SHRIMATI KANIMOZHI KARUNANIDHI (THOOTHUKKUDI): Madam, I rise to present the following Reports (Hindi and English versions) of the Standing Committee on Consumer Affairs, Food and Public Distribution (2024-2025):-

(1) Ninth Report on Action Taken by the Government on the Observations/ Recommendations contained in the Fifth Report of the Committee (Eighteenth Lok Sabha) on Demands for Grants (2024-25) of the Ministry of Consumer Affairs, Food and Public Distribution (Department of Consumer Affairs).

(2) Tenth Report on Action Taken by the Government on the Observations/ Recommendations contained in the Sixth Report of the Committee (Eighteenth Lok Sabha) on Demands for Grants (2024-25) of the Ministry of Consumer Affairs, Food and Public Distribution (Department of Food and Public Distribution.

(1205/RCP/CS)

STANDING COMMITTEE ON RURAL DEVELOPMENT
AND PANCHAYATI RAJ
15th Report

SHRI RAMASHANKAR VIDYARTHI RAJBHAR (SALEMPUR): Hon. Chairperson, I rise to present the Fifteenth Report (Hindi and English versions) of the Standing Committee on Rural Development & Panchayati Raj on 'Devolution of Funds under Panchayati Raj System' pertaining to the Ministry of Panchayati Raj.

वाणिज्य संबंधी स्थायी समिति के 189वें प्रतिवेदन में अंतर्विष्ट सिफारिशों/टिप्पणियों के कार्यान्वयन की स्थिति के बारे में वक्तव्य – सभा पटल पर रखा गया

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय में राज्य मंत्री; तथा इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री जितिन प्रसाद) : महोदया, मैं वाणिज्य विभाग, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय से संबंधित 'अनुदानों की मांगों (2025-2026) (मांग संख्या 10)' के संबंध में वाणिज्य संबंधी स्थायी समिति के 189वें प्रतिवेदन में अंतर्विष्ट सिफारिशों/टिप्पणियों के कार्यान्वयन की स्थिति के बारे में एक वक्तव्य सभा पटल पर रखता हूँ।

.....

STATEMENTS RE: STATUS OF IMPLEMENTATION OF RECOMMENDATIONS IN 2ND AND 6TH REPORTS OF STANDING COMMITTEE ON RURAL DEVELOPMENT AND PANCHAYATI RAJ – LAID

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF RURAL DEVELOPMENT; AND MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF COMMUNICATIONS (DR. CHANDRA SEKHAR PEMMASANI): Madam, I rise to lay the following statements regarding:-

(1) the status of implementation of the recommendations contained in the 2nd Report of the Standing Committee on Rural Development and Panchayati Raj on Demands for Grants (2024-2025) pertaining to the Department of Land Resources, Ministry of Rural Development.

(2) the status of implementation of the recommendations contained in the 6th Report of the Standing Committee on Rural Development and Panchayati Raj on Demands for Grants (2025-2026) pertaining to the Department of Land Resources, Ministry of Rural Development.

कृषि, पशुपालन और खाद्य प्रसंस्करण संबंधी स्थायी समिति के 11वें प्रतिवेदन में अंतर्विष्ट सिफारिशों के कार्यान्वयन की स्थिति के बारे में वक्तव्य - सभा पटल पर रखा गया

मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय में राज्य मंत्री; तथा पंचायती राज मंत्रालय में राज्य मंत्री (प्रो. एस. पी. सिंह बघेल) : महोदया, मैं पशुपालन और डेयरी विभाग, मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय से संबंधित अनुदानों की मांगों (2025-2026) के बारे में कृषि, पशुपालन और खाद्य प्रसंस्करण संबंधी स्थायी समिति के 11वें प्रतिवेदन में अंतर्विष्ट सिफारिशों के कार्यान्वयन की स्थिति के बारे में वक्तव्य सभा पटल पर रखता हूँ।

.....

1207 बजे (माननीय अध्यक्ष पीठासीन हुए)

नियम 377 के अधीन मामले- सभा पटल पर रखे गए

1207 बजे

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, जिन सदस्यों को आज नियम 377 के अधीन मामलों को उठाने की अनुमति दी है, वे मामले के अनुमोदित पाठ को व्यक्तिश: रूप से 20 मिनट के भीतर सभा पटल पर प्रस्तुत कर सकते हैं।

Re: Need to establish an ESIC hospital in Bulandshahr district, Uttar Pradesh

डॉ. भोला सिंह (बुलन्दशहर) : मैं सदन का ध्यान बुलंदशहर जनपद, उत्तर प्रदेश के लाखों श्रमिकों एवं उनके परिवारों से जुड़ी एक अत्यंत महत्वपूर्ण आवश्यकता की ओर आकृष्ट करना चाहता हूँ। बुलंदशहर में अनेक औद्योगिक इकाइयाँ, कारखाने तथा सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (MSME) सक्रिय हैं, जिनमें हजारों श्रमिक कार्यरत हैं। इन श्रमिकों में से अधिकांश कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ईएसआईसी) के अंतर्गत पंजीकृत हैं, परंतु उनके लिए जनपद में कोई समुचित ईएसआईसी अस्पताल उपलब्ध नहीं है। उन्हें गंभीर बीमारी या विशेष उपचार के लिए दिल्ली, गाजियाबाद या मेरठ जैसे शहरों पर निर्भर रहना पड़ता है, जिससे न केवल आर्थिक बोझ बढ़ता है, बल्कि जीवन-रक्षक उपचार में विलंब की आशंका भी रहती है। कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम, 1948 के उद्देश्य को सार्थक करते हुए मैं आग्रह करता हूँ कि बुलंदशहर में शीघ्र ही एक पूर्ण रूप से सुसज्जित ईएसआईसी अस्पताल की स्थापना की जाए, ताकि श्रमिकों एवं उनके परिवारों को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं स्थानीय स्तर पर सुलभ हो सकें।

(इति)

Re: Relief and rehabilitation measures in Mandi District, Himachal Pradesh affected by cloudburst

सुश्री कंगना रनौत (मंडी) : हाल ही में हिमाचल प्रदेश के मंडी ज़िले में एक विनाशकारी बादल फटने की घटना हुई, जिससे जान-माल का भारी नुकसान हुआ। कई घर बह गए, सड़कें और पुल ढह गए और सामान्य जनजीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ है। स्थानीय आबादी आश्रय, आजीविका और संपर्क के नुकसान के कारण अत्यधिक कठिनाइयों का सामना कर रही है। बचाव और राहत अभियान जारी हैं, लेकिन दुर्गम भूभाग और मौसम की स्थिति के कारण इसमें बाधा आ रही है।

मैं माननीय गृह मंत्री से जानना चाहती हूँ:

- प्रभावित क्षेत्रों में राहत और पुनर्वास के लिए केंद्र सरकार ने क्या विशिष्ट उपाय किए हैं?
- क्या क्षतिग्रस्त बुनियादी ढाँचे के पुनर्निर्माण और सार्वजनिक सेवाओं को बहाल करने के लिए अतिरिक्त केंद्रीय धनराशि स्वीकृत की गई है?
- दुर्गम क्षेत्रों में एनडीआरएफ/आईटीबीपी की अतिरिक्त सहायता तैनात करने की समय-सीमा क्या है?
- क्या ऐसी आपदाओं से बचने के लिए कोई रिपोर्ट और अनुशंसित दीर्घकालिक शमन रणनीतियाँ हैं?

इस क्षेत्र में तत्काल राहत और भविष्य की तैयारियों के लिए केंद्र की योजना पर स्पष्टता चाहती हूँ। मैं सरकार से आग्रह करती हूँ कि वह अत्यंत तत्परता और संवेदनशीलता के साथ कार्य करे।

(इति)

Re: Need to establish a Food Park in Gorakhpur, Uttar Pradesh

श्री रवीन्द्र शुक्ला उर्फ रवि किशन (गोरखपुर) : मेरा संसदीय निर्वाचन क्षेत्र गोरखपुर उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल का एक प्रमुख महानगर है। यहाँ की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि पर आधारित है। पूर्वांचल की भूमि उपजाऊ है। यहाँ सभी प्रमुख फसलों का उत्पादन बड़े पैमाने पर होता है। लेकिन गोरखपुर में फूड पार्क न होने के कारण इन कृषि उत्पादों का समुचित उपयोग नहीं हो पता है और ना ही किसानों को उसका उचित लाभकारी मूल्य ही मिल पता है। धान, गेंहू, दलहन और तिलहन के अलावा फल और सब्ज़ी कम समय में ही नष्ट हो जाते हैं। यदि गोरखपुर में फूड पार्क की स्थापना कर दी जाय तो शीघ्र नष्ट होने वाले कृषि उत्पादों का इष्टतम उपयोग किया जा सकेगा और किसानों को लाभकारी मूल्य भी मिल सकेगा। गोरखपुर में फूड पार्क स्थापित होने से बड़े पैमाने पर रोज़गार का सृजन होगा जिससे यहाँ के बेरोज़गार युवा लाभान्वित होंगे। गोरखपुर में फूड पार्क स्थापित करने के लिए जरूरी आधारभूत संरचना यथा भूमि एवं अन्य आवश्यक सहायता प्रदान करने के लिए राज्य सरकार तत्पर है। फूड पार्क की स्थापना से किसानों की आय में कई गुना वृद्धि होगी।

अतः में भारत सरकार से अनुरोध करता हूँ कि गोरखपुर में एक फूड पार्क की स्थापना करने हेतु यथाशीघ्र निर्णय लेने की कृपा करे।

(इति)

Re: Development of Ganga dam and City Park in Bokaro, Jharkhand as Tourist destination

श्री दुलू महतो (धनबाद) : मैं आपके माध्यम से मा. इस्पात मंत्री जी का ध्यान बोकारो के दो ऐतिहासिक स्थलों—गरगा डैम और सिटी पार्क—की उपेक्षित स्थिति की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। गरगा डैम, जो बोकारो स्टील प्लांट की जल आपूर्ति हेतु निर्मित हुआ था, प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर होने के बावजूद पर्यटन दृष्टि से विकसित नहीं हो पाया है। वहीं, सिटी पार्क, जिसकी पहचान म्यूज़िकल फाउंटेन रही है, देखरेख के अभाव में अपना आकर्षण खो चुका है। मामूली निवेश द्वारा गरगा डैम को एक प्रमुख पर्यटन स्थल और सिटी पार्क को एक जीवंत सार्वजनिक परिसर में परिवर्तित किया जा सकता है, जिससे न केवल स्थानीय जनों को मनोरंजन व विश्राम का अवसर मिलेगा, बल्कि क्षेत्रीय पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा। बोकारो स्टील प्लांट के सामाजिक उत्तरदायित्व के तहत इन स्थलों के पुनरुद्धार की पहल अत्यंत आवश्यक है। अतः आपसे निवेदन है कि इनके विकास हेतु शीघ्र दिशा-निर्देश प्रदान करें।

(इति)

Re: Need to enact law to curb forced religious conversion in the country

डॉ. मन्ना लाल रावत (उदयपुर) : आज देश के अनेक भागों में सुनियोजित रूप से उद्योग चलाकर अवैध धर्मांतरण की गतिविधियाँ चलाई जा रही हैं, जो न केवल राष्ट्रीय ताने-बाने को तोड़ने का कृत्य हैं, अपितु यह राष्ट्रांतरण की सुविचारित अराष्ट्रीय रचना भी कहलाती है। यह भारत की मूल सांस्कृतिक पहचान के लिए कल्चरल जेनोसाइड है। यह अवैधानिक कृत्य, धर्मनिरपेक्ष भावना की आड़ में राष्ट्रविरोधी एजेंडे बनता जा रहा है। वर्तमान में 12 राज्यों में कानून हैं परन्तु कमजोर है, साथ ही 16 राज्यों में अभी तक इस विषय में कोई कानून नहीं है। कुछ राज्य राजनीतिक कारणों से इस गंभीर विषय पर उदासीन बने हुए हैं। अवैध धर्मांतरण केवल अस्मिता ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा का भी प्रश्न है। इसमें कट्टरपंथी, एवांजलिकल व ग्लोबल आतंकी नेटवर्क की सुनियोजित आपराधिक संलिप्तता भी पाई जा रही है, जो देश की एकता और अखंडता के लिए गंभीर चिंता का विषय है। अतः सरकार से आग्रह है कि एक राष्ट्र, एक कानून की दृष्टि से अवैध धर्मांतरण पर रोक लगाने हेतु एक सख्त केंद्रीय कानून संसद में लाया जाए, ताकि इस राष्ट्रीय चुनौती का समाधान एकीकृत रूप में हो सके। यह भारत की सकल आम जनता की अनुभूति का रुदनात्मक आह्वान है।

(इति)

Re: Need to establish a Cooperative University in Jaipur Parliamentary Constituency

श्रीमती मंजू शर्मा (जयपुर) : यह अति प्रसन्नता की बात है कि एक सहकारी विश्वविधालय गुजरात के आणंद मे स्थापित होने जा रहा हैं। यह विश्वविधालय सहकारी क्षेत्र के लिए लाभकारी सिद्ध होगा । मैं केन्द्र सरकार से प्रार्थना करती हूँ कि आणद की तर्ज पर एक सहकारी विश्वविधालय मेरे संसदीय क्षेत्र जयपुर में भी खोला जाये ताकि यहां के सहकारी क्षेत्र का भी विकास हो सके। यह सहकारी विश्वविधालय सहकारी क्षेत्र में शिक्षा, प्रशिक्षण, अनुसंधान और विकास को बढावा देगा और इसका उद्देश्य ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करना और स्वरोजगार को बढावा देना होगा।

(इति)

Re: Need to make 'Bada Talab' of Bhopal free from encroachment and pollution and take measures to conserve the same

श्री आलोक शर्मा (भोपाल) : भोपाल का बड़ा तालाब लगभग एक हजार वर्ष पूर्व, राजाभोज ने बनवाया था। ऐसा बताया गया है 39 वर्ग किलोमीटर से भी ज्यादा क्षेत्र में फैले इस तालाब को राजाभोज ने 365 जल स्रोतों को मिलाकर इसे बनवाया था और इसके आसपास औषधीय पौधे लगवाये थे। बड़ा तालाब भोपाल शहर की लाइफलाइन है। इसका वेटलैंड एरिया सैकड़ों वर्ग किलोमीटर से अधिक है। सैकड़ों वर्ग किलोमीटर में फैले इसके कैचमेंट एरिया में हरियाली से आच्छादित वन, सैकड़ों प्रकार के जलीय जीव और अनेकों प्रजातियों के पक्षियों का घर है। इस कारण इसे रामसर साइट का दर्जा भी मिला है। लेकिन वर्तमान स्थिति में बड़ा तालाब चारों तरफ से अतिक्रमण और प्रदूषण की चपेट में है। भोपाल के बड़ा तालाब को अतिक्रमण और प्रदूषण से मुक्त करके इसे संरक्षित और सुरक्षित बचाने की भारत सरकार की क्या योजना है।

(इति)

Re: Services of Train Nos. 19005 (Surat- Bhusawal Express) and 11113 (Devlali-Bhusawal)

श्रीमती स्मिता उदय वाघ (जलगांव) : मैं मेरे जलगाँव लोकसभा क्षेत्र की जनता को हो रही गंभीर असुविधा की ओर आकर्षित करना चाहती हूँ। पहली—गाड़ी संख्या 19005 सूरत-भुसावल एक्सप्रेस, जो पूर्व में उधना से रात 11:27 बजे प्रस्थान कर सुबह 8:45 बजे जलगाँव पहुँचती थी, अब कोविड-19 के बाद सुबह 7:00 बजे पहुँच रही है। इस बदलाव से दोंडाईचा और धरणगाँव के विद्यार्थियों, सरकारी और निजी कर्मचारियों को अत्यधिक कठिनाई हो रही है। उन्हें रात 3 बजे उठकर यात्रा करनी पड़ती है, जिससे मानसिक तनाव और स्वास्थ्य पर असर पड़ता है। यदि यह ट्रेन उधना से 1:30 बजे चले तो पुनः 8:45 बजे जलगाँव पहुँचना संभव होगा। दूसरी—गाड़ी संख्या 11113 देवलाली-भुसावल एक्सप्रेस, जो पूर्व में चाळीसगांव और पाचोरा में क्रमशः सुबह 7:40 और 8:30 बजे पहुँचती थी, अब इसमें दो घंटे की देरी हो रही है। इस बदलाव से लगभग 5,000 दैनिक यात्री—कर्मचारी, छात्र, व्यापारी, मरीज, किसान—प्रभावित हो रहे हैं। वे अब मजबूरन निजी वाहन या असुरक्षित साधनों से यात्रा कर रहे हैं, जिससे आर्थिक और सामाजिक जोखिम बढ़ गया है। अतः मांग है कि उपरोक्त दोनों गाड़ियों की समयसारिणी पूर्ववत बहाल की जाए, ताकि मेरे क्षेत्र की जनता को राहत मिल सके और उनकी कार्यक्षमता व जीवन स्तर प्रभावित न हो।

(इति)

Re: Need to include Kamakhya Temple in Assam in the list of Iconic Tourist Destinations

SHRIMATI BIJULI KALITA MEDHI (GUWAHATI): The Kamakhya Temple, situated atop the Nilachal Hills in Guwahati, Assam, is one of the most ancient and sacred Shakti Peethas in India. Despite its prominence, the temple has not yet been included in the list of Iconic Tourist Destinations under the Ministry of Tourism's flagship development schemes. Inclusion of Kamakhya Temple in this list will ensure focused development of infrastructure, amenities, eco-friendly access, and will enhance the global visibility of Assam as a spiritual and cultural destination.

(ends)

Re: Need to establish a Division office of Department of Posts in Rajsamand headquarters, Rajasthan

श्रीमती महिमा कुमारी मेवाड़ (राजसमन्द) : मेरे संसदीय शेत्र राजसमन्द, राजस्थान में राजसमन्द मुख्यालय पर डाकघर के नवीन मण्डल कार्यालय को शीघ्रातिशीघ आरम्भ किये जाने की आवश्यकता है | अभी राजसमन्द डाककर्मचारियों को 75 कि.मी. व भीम व बरार उपडाकघर कर्मचरियों को 210 किमी दूर उदयपुर में स्थित मण्डल कार्यालय आना पड़ता है| डाकघर के नवीन मण्डल कार्यालय के राजसमन्द में प्रारम्भ होने से कर्मचारियों को तो राहत मिलेगी ही परिणामस्वरुप सेवा की गुणवत्ता में वृद्धि होने से उसका प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों लाभ स्थानीय जनता को प्राप्त हो सकेगें| परन्तु इस सन्दर्भ में स्थानीय स्तर के अधिकारियों द्वारा सहयोगपूर्ण व्यवहार न किया जाना अनपेक्षित होने के साथ जनहित के प्रति उदासीनतापूर्ण भी है| मण्डल कार्यालय को प्रारम्भ करने में यदि किसी प्रकार की प्रशासनिक बाध्यताएं हैं तो उनका युक्तिपूर्वक हल प्राप्त कर मण्डल कार्यालय की अनुशंसा करना अपेक्षित है| अत: मेरी आपके माध्यम से सरकार से मांग है कि राजसमन्द मुख्यालय पर डाकघर के नवीन मण्डल कार्यालय को शीघ्रातिशीघ प्रारम्भ करने की अनुमति प्रदान की जाये|

(इति)

Re: Need to introduce a new train from Chittorgarh to Mumbai via Udaipur and Ahmedabad

श्री चन्द्र प्रकाश जोशी (चित्तौड़गढ़) : मेरे संसदीय क्षेत्र चित्तौडगढ समेत सम्पूर्ण मेवाड क्षेत्र के निवासियों को रोजगार एवं व्यवसाय के लिये मुम्बई आना जाना लगातार बना रहता है। वर्तमान में उदयपुर से मुम्बई के लिये एक दिन छोड़ कर रेल चलती है. इस रेल में बहुत ज्यादा वेटींग रहती है जिस कारण से यहाँ के यात्रियों को काफी परेशानीयों का सामना करना पड़ता है।

वर्तमान में कुछ ट्रेनों के उदयपुर तक विस्तार से भी यहाँ की समस्यओं का समाधान संभव हैं जिसमे

1 22901-02 उदयपुर बान्द्रा को प्रतिदिन करना।
2 12901-02 गुजरात मेल को अहमदाबाद से आगे विस्तारित कर चित्तौडगढ़ करना।
3 22927-28 लोकशक्ति एक्सप्रेस को अहमदाबाद से आगे विस्तारित कर चित्तौड़गढ़ करना।
4 12933-34 कर्णावती एक्सप्रेस को अहमदाबाद से आगे विस्तारित कर चित्तौड़गढ़ करना।

इस संबंध में मेरा आपसे अनुरोध है कि चित्तौड़गढ़ से मुम्बई वाया उदयपुर-अहमदाबाद के लिये नई ट्रेन चलाये जाने की कृपा करावें।

(इति)

Re: Need to implement National Flood Management Policy and River Interlinking Project to prevent the devastation caused by annual floods in the rivers

श्री दिलीप शइकीया (दारंग-उदालगुड़ी) : भारत में बाढ़ और भू-कटाव एक गंभीर समस्या है। बाढ़ से जान-माल की भारी हानि होती है और इसका कृषि, बुनियादी ढांचे, और आजीविका पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। मानसून के समय पूर्वोत्तर भारत समेत देश के ज्यादातर हिस्से भीषण बाढ़ की चपेट में होते है । गंगा-ब्रह्मपुत्र नदी बेसिन के किनारे स्थित राज्यों जैसे हिमाचल प्रदेश, पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार, पूर्वोत्तर भारत में विशेष रूप से असम बाढ़ से सबसे ज्यादा प्रभावित होते है। राष्ट्रीय बाढ़ आयोग के अनुसार, भारत का लगभग 12.19 प्रतिशत भौगोलिक क्षेत्र बाढ़ की दृष्टि से अति-संवेदनशील है। असम राज्य में 5.6 लाख से ज़्यादा लोग बाढ़ से प्रभावित हैं और पोबितोरा वन्यजीव अभयारण्य जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्र जलमग्न हो गए हैं । पिछले वर्ष काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान में डूबने से 159 जंगली जानवरों की मौत हो गई थी। असम प्रदेश में हजारों सड़कों व पुलों, लाखों घरों और 10 से ज्यादा तटबंधों को नुकसान हुआ था। मेरा केंद्र सरकार से अनुरोध है कि देश को प्रत्येक वर्ष इस भीषण बाढ़ की तबाही और भू-कटाव के संकट से बचाने के लिए एक राष्ट्रीय बाढ़ प्रबंधन नीति और नदी जोड़ो परियोजना को लागू किया जाए, ताकि देश के सूखे क्षेत्रों में जल उपलब्ध करवाया जा सके।

(इति)

Re: Relief and rehabilitation of people in flood affected areas in West Bengal

श्री खगेन मुर्मु (माल्दहा उत्तर) : मैं पूरे सम्मान के साथ यह तथ्य सामने लाना चाहता हूं कि भारी बारिश और नदी की गहराई में कमी के कारण गंगा, फुलहर और कोशी का जलस्तर खतरे के निशान को पार कर गया है, जिससे अभूतपूर्व बाढ़ की स्थिति पैदा हो गई है और रतुआ-। ब्लॉक के अंतर्गत खासमोहोल, नसीरुद्दीन टोला, भाषा राम टोला , कानतु टोला, महानंदा टोला और भिलाई मारी पंचायतों के जैसे गांवों के नदी किनारे के आवासों पर विनाशकारी प्रभाव पड़ा है, जिसमें 300 से अधिक परिवार गंगा, फुलहर और कोशी कटाव से प्रभावित हुए हैं, जबकि हरिश्चंद्रपुर-।। ब्लॉक के उत्तर और दखिन भकुरिया, रशीद पुर जैसे गांव जिनमें लगभग 135 से अधिक परिवार फुलहर से प्रभावित हुए हैं। उपरोक्त सभी ग्रामीण दुर्भाग्यवश तीनों नदियों के कहर के कारण अपने घरों से विस्थापित होकर सड़कों पर आ गए हैं। इन सभी लोगों को यथाशीघ्र उचित राहत एवं मुआवजा देकर पुनर्वासित किया जाना चाहिए। ऐसी परिस्थितियों में मैं आपसे निवेदन करता हूं कि गंगा, फुलहर एवं कोशी के तटवर्ती बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों के मुद्दे पर तत्काल प्रभाव से माननीय जल शक्ति मंत्री जी से निवेदन है कि बाढ़ प्रभावित पीड़ितों के पुनर्वास की व्यवस्था तुरंत की जाए।

(इति)

Re: Need to set up an All India Judicial Service

श्री तनुज पुनिया (बाराबंकी) : जजों की कमी और मुकदमों की बढती संख्या के कारण जजों पर अधिक केस सुनने का दबाव है। हाई कोर्ट्स में 1,114 पदों में से 350 से अधिक पद रिक्त चल रहे हैं, जिला अदालतों में भी 5 हजार से अधिक जजों के पद रिक्त चल रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट में 60 हजार और हाई कोर्ट में 58 लाख और जिला अदालतों में 4 करोड 50 लाख से अधिक मामले लंबित हैं। इनमें बडी संख्या में गरीब दलित और आदिवासी हैं। ऐसे में शीघ्र न्याय देना बडी चुनौती बन गई है। संविधान के अनुच्छेद 312 के प्रावधानों के अनुसार अखिल भारतीय न्यायिक सेवा की स्थापना की जानी चाहिए जिससे राष्ट्रीय न्यायिक चयन प्रतियोगिता परीक्षा के माध्यम से भर्ती होने पर अनुसूचित जाति, जनजाति एवं अन्य पिछडा वर्ग के अभ्यर्थियों को भी लाभ प्राप्त हो सकेगा एवं न्यायिक सेवा में आरक्षित वर्गों की कमी को भी पूरा किया जा सकेगा। अतः आपके माध्यम से मेरा निवेदन है कि संविधान में दिए गए प्रावधानों के अनुसार अखिल भारतीय न्यायिक सेवा की स्थापना की जाए तथा अदालतों में रिक्त पदों को शीघ्र भरा जाए।

(इति)

Re: Need to provide fee-concession to SC/ST students in admission to MBBS Courses in private Medical and Dental Colleges

श्री मुरारी लाल मीना (दौसा) : मै सरकार का ध्यान देश के लाखों अनुसूचित जाति एवं जनजाति के उन प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ, जो NEET जैसी कठिन परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद भी भारी शुल्क के कारण डॉक्टर बनने का सपना पूरा नहीं कर पाते। देश में लगभग 549 सरकारी व 260 निजी मेडिकल कॉलेज, 313 सरकारी व 263 निजी डेंटल कॉलेज और कई डीम्ड विश्वविद्यालय हैं। NEET UG 2025 में 23 लाख से अधिक विद्यार्थी शामिल हुए, पर सरकारी कॉलेजों में सीटें सीमित हैं। मजबूरी में निजी संस्थानों में दाखिला लेना पड़ता है, जहाँ फीस राज्य कोटा हो या प्रबंधन कोटा सभी में बहुत अधिक है, जो कमजोर वर्गों के लिए असंभव है। IIT जैसे संस्थानों में फीस छूट दी जाती है, तो मेडिकल शिक्षा में क्यों नहीं? मेरा आग्रह है कि सभी निजी मेडिकल व डेंटल कॉलेजों तथा डीम्ड विश्वविद्यालयों में अनुसूचित जाति व जनजाति के छात्रों के लिए MBBS की फीस सीमित/छूट दी जाये। साथ ही पहले से जमा अतिरिक्त शुल्क वापस किया जाए। चिकित्सा शिक्षा विलासिता नहीं, बल्कि हर वर्ग का अधिकार है। सरकार से अनुरोध है कि तुरंत ठोस निर्णय लेकर अनुसूचित जनजाति एवं अनुसूचित जाति के युवाओं के सपनों को साकार करें।

(इति)

Re: Need to ensure minimum 150 days of employment with Rs. 500 per day wages under MGNREGS

श्री कुलदीप इंदौरा (गंगानगर) : मनरेगा योजना का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र के गरीब व जरूरतमंद परिवारों को गारंटी के साथ रोजगार देना था, लेकिन हाल के वर्षों, विशेष रूप से वित्तीय वर्ष 2023-24 व 2024-25 में बजट में भारी कटौती हुई है, जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि सरकार इसे धीरे-धीरे बंद करने की दिशा में बढ़ रही है। श्रीगंगानगर-हनुमानगढ़ सहित देशभर में मजदूरों को 100 दिन का भी कार्य नहीं मिल रहा है, पारिश्रमिक भी अत्यंत कम है और समय पर भुगतान नहीं हो रहा। मेटों व मटेरियल की भुगतान प्रक्रिया 1-2 वर्षों तक लंबित रहती है, जिससे पक्के कार्य व कृषि से संबंधित काम पूरी तरह ठप हैं और ग्रामीण गरीब पलायन को मजबूर हैं। ग्राम पंचायतों में फॉर्म 6 भरने के 15 दिनों के अंदर काम न मिलने पर भी बेरोजगारी भत्ता नहीं दिया जा रहा है। मैं सरकार से जानना चाहता हूं कि पिछले 10 वर्षों में श्रीगंगानगर सहित देशभर में कितने मजदूरों को 100 दिन का रोजगार मिला, कितनों को बेरोजगारी भत्ता मिला और कितने प्रतिशत पक्के कार्य हुए। मेरी मांग है कि मनरेगा में साल में कम से कम 150 दिन का रोजगार, ₹500 न्यूनतम मजदूरी तथा कृषि एवं अन्य विभागों से योजना को जोड़ा जाए।

(इति)

Re: Situation arising out of the decision to delink Brahmos Aerospace Thiruvananthapuram Limited (BATL) from Brahmos Aerospace Private Limited (BAPL)

DR. SHASHI THAROOR (THIRUVANANTHAPURAM): I wish to draw the attention of the Ministry of Defence House to a matter of urgent public importance concerning the employees and future of BrahMos Aerospace Thiruvananthapuram Limited (BATL), a key defence production unit located in my Parliamentary Constituency, Thiruvananthapuram. Established in 2008 as a wholly-owned subsidiary of BrahMos Aerospace Private Limited (BAPL), BATL manufactures precision components, engines, and other critical systems for the BrahMos missile programme. Its workforce has significantly bolstered India's strategic defence capabilities, most recently during military operations involving the BrahMos missile. It has now emerged—through recent BAPL Board and Annual General Meeting proceedings—that BATL is to be delinked from BAPL. This resolution was passed without prior consultation with the State Government, stakeholders, or the BrahMos Staff Association (INTUC) and BrahMos Employees' Union (AITUC), causing widespread anxiety among employees. I urge the Government to intervene and ensure either: That BATL remains under BAPL to secure employment and operational continuity; or that BATL is reconstituted as a Direct Production Centre under DRDO, with employment benefits equivalent to DRDO laboratory personnel. Given BATL's strategic importance, especially in the defence ecosystem, and the aforementioned concerns, I request the Hon'ble Minister of Defence and the Government to address this issue urgently.

(ends)

Re: Need to provide compensation to farmers who lost their crops due to heavy rains in Banaskantha district, Gujarat

श्रीमती गनीबेन नागाजी ठाकोर (बनासकांठा) : मैं आपके माध्यम से सरकार का ध्यान गुजरात राज्य के बनासकांठा जिले में हाल ही में हुई भारी बारिश के कारण किसानों को हुए भारी नुकसान की ओर आकर्षित करना चाहती हूँ। बनासकांठा जिले के कई गाँवों में अत्यधिक वर्षा के कारण फसलें पूरी तरह से बर्बाद हो गई हैं। जिससे कपास, मूंगफली, बाजरा, और अन्य खरीफ फसलें खेतों में ही सड़ गई। कई किसानों के खेतों में पानी भर गया, जिससे मिट्टी की उपजाऊ शक्ति पर भी असर पड़ा है। नहरों और नालों के टूटने से सिंचाई की व्यवस्था भी चरमरा गई है। कई स्थानों पर पशुधन को भी नुकसान हुआ है और कच्चे घर ढह गए हैं। किसानों के पास पहले से ही कर्ज का बोझ है और इस प्राकृतिक आपदा ने उनकी स्थिति और भी दयनीय बना दी है। मैं सरकार से निवेदन करती हूँ कि क्षेत्र का शीघ्र सर्वेक्षण कराकर नुकसान का आंकलन किया जाए। प्रभावित किसानों को तुरंत मुआवजा प्रदान किया जाए। कृषि ऋण में राहत और पुनर्गठन की व्यवस्था की जाए। ताकि किसानों को मदद मिल सके। (इति)

Re: Need to establish a Navodaya Vidyalaya in Aonla Parliamentary Constituency

श्री नीरज मौर्य (आंवला) : मेरे संसदीय क्षेत्र आंवला, उत्तर प्रदेश के अन्तर्गत ज्यादातर ग्रामीण क्षेत्र आता गाँव मे रहने वाले गरीब, कमजोर, दलित, पिछड़े, अल्पसंख्यक और खास कर बेटियां अच्छी शिक्षा न मिलने के कारण अपने जीवन में आगे बढ़ने से वंचित रह जाती है।

अत: मैं आपके माध्यम से सरकार से अनुरोध करता हूँ कि आंवला लोक सभा के अन्तर्गत जवाहर नवोदय विद्यालय की स्थापना की जाए।

(इति)

Re: Need to include Brick Soling Road for construction of roads under Pradhan Mantri Gram Sadak Yojna

श्री लालजी वर्मा (अम्बेडकर नगर) : प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के अन्तर्गत भारत सरकार द्वारा चतुर्थ फेस के मानक में बदलाव करके ईंट खडण्जा से निर्मित मार्ग को भी पात्रता से बाहर कर दिया गया है जिसके कारण जिला अम्बेडकरनगर एवं जिला अयोध्या में एक भी मार्ग का चयन नही हो सका है जबकि ईंट सोलिंग में निर्मित मार्ग आवागमन के लिए ठीक नही है । अतः इस लोक महत्व के तात्कालिक प्रश्न पर सदन के माध्यम से सरकार से मागं है कि जिला अम्बेडकनगर एवं जिला अयोध्या में मानक को शिथिल कर ईंट से सोलिंग से निर्मित मार्ग से अच्छादित सभी ग्रामों को प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना से जोड़ा जाय।

(इति)

Re: Need to renovate and preserve the house occasionally visited by Rabindranath Tagore located at Ramgarh in Nainital district, Uttrakhand as a heritage place

SHRIMATI PRATIMA MONDAL (JAYNAGAR): I would like to inform this august House that Kaviguru Rabindranath Tagore went to Ramgarh a hilly terrain in Nainital district, Uttarakhand with his terminally sick daughter in 1903 for change of weather as advised by her doctor. The house where Kaviguru stayed in Ramgarh, he named it 'Haimanti' and during his stay at Haimanti, Rabindranath Tagore penned parts of his epic 'Gitanjali' which helped him win the Nobel Prize a decade later in 1913. Though Kaviguru lost his daughter to tuberculosis, Rabindranath Tagore kept visiting the House Haimanti in 1914, 1927 and 1937. Rabindranath Tagore's son Rathindranath Tagore, nephew Dinendranath Tagore and Atul Prasand Sen a Bengali composer, lyricist, singer used to visit Ramgarh Haimanti house to enjoy Kaviguru's company. Today the hill top where the house is located known as Tagore Top in the poet's memory. Today Haimanti is left abandoned in dilapidated condition. My humble request to the Central Government and also the Ministry of Culture is to classify this house as a heritage place and take necessary steps to renovate it immediately. (ends)

Re: Need to resolve the problems being faced by the mango growers in Tamil Nadu and to implement the Market Intervention Scheme under the PM-AASHA for mangoes

SHRI T. M. SELVAGANAPATHI (SALEM): Tamil Nadu produces mangoes nearly ten lakh tonnes annually. Around 80% of Bangalora and 50% of Alphonso mango varieties cultivated in Tamil Nadu are used for pulp production. The price of these varieties has fallen drastically this year as compared to last year. The pulp making companies, which are the primary purchasers have either refused to buy or were offering a paltry price of Rs 5 per kg. To help mango growers, honourable Chief Minister of Tamil Nadu has sought Union Government's intervention on two other fronts to ease tensions between mango farmers and pulp manufacturers and urged the Centre to ensure strict adherence to Food Safety and Standards Authority of India norms. The State has also demanded a reduction in the Goods and Services Tax on mango pulp from 12% to 5%, the existing tax structure disincentivizes large scale production. The State has also urged the Union Government to implement the Market Intervention Scheme under Pradhan Mantri-Annadata Sanrakshan Abhiyan (PM-AASHA) for mangoes. The State Government is willing to share the losses faced by farmers with funds equally shared by Centre and State. Therefore, it is requested to take immediate action to help mango farmers as demanded by honourable Chief Minister of Tamil Nadu. (ends)

Re: Need to operationalise and promote the Coconut Farmer Producer Organisations in Konaseema and other districts of Andhra Pradesh

SHRI G. M. HARISH BALAYOGI (AMALAPURAM): Coconut cultivation is the backbone of rural livelihoods in many districts of Andhra Pradesh particularly Konaseema, which contributes nearly half of the State's total coconut production. Yet, despite this significant output, farmers continue to be deprived of the institutional support required to realise the full value of their produce. The Coconut Development Board envisions a three-tier structure: Coconut Producers Societies (CPS), Federations (CPF), and Companies (CPC), to promote collective marketing, cost efficiency, and value addition. But this model remains virtually absent in Andhra Pradesh. In the last five years, only nine CPSs have been registered, none of which are currently operational, and not a single CPF or CPC has been formed since 2019. This institutional vacuum has stunted the growth potential of high-yielding regions like Konaseema. While Andhra Pradesh leads the country in productivity per hectare, overall coconut production has stagnated. In the absence of such farmer-led organisations, cultivators are left vulnerable to price volatility, lack of processing infrastructure, and missed opportunities for collective bargaining. I urge the Government to urgently promote and operationalise Coconut Farmer Producer Organisations in Andhra Pradesh, especially in key regions like Konaseema, to strengthen the coconut value chain, and ensure fair and sustainable incomes for our farmers.

(ends)

Re: Establishment of Ex-servicemen Contributory Health Scheme (ECHS) polyclinic and Indian Naval Canteen Service (INCS) outlet at Ambernath in Kalyan Parliamentary Constituency

DR. SHRIKANT EKNATH SHINDE (KALYAN): I wish to draw the attention of the Government to a significant and long-pending demand of thousands of ex-servicemen residing in Ambernath, Badlapur, Ulhasnagar, and Kalyan in my Parliamentary Constituency, Kalyan. After proudly serving the nation, these ex-servicemen continue to contribute actively in the field of social service. During the COVID-19 pandemic, they actively assisted the local administration, from the immunization program to the distribution of food and essential items to the needy. Furthermore, they regularly conduct cleanliness drives under campaigns like 'Swachh Ambernath' and also provide guidance to the youth for their future. These national heroes have a long-standing demand for the establishment of an Ex-Servicemen Contributory Health Scheme (ECHS) Polyclinic for their health-related issues and an Indian Naval Canteen Service (INCS) outlet for daily use items in Ambernath. In their advancing age, they have to travel long distances to Colaba, Mumbai via crowded local trains to avail these facilities, which is not only extremely arduous and physically taxing but also involves considerable time and expense. Therefore, I urge the Hon'ble Minister of Defence to consider the immense contributions of these ex-servicemen, who are a valuable asset to our society. It is our solemn duty to ensure their well-being and fulfill their legitimate demand at the earliest by directing the concerned officials to establish an ECHS Polyclinic and an INCS Canteen in Ambernath.

(ends)

Re: Need to announce a special financial package to promote industrialisation in Bihar

श्री अरुण भारती (जमुई) : मैं सरकार का ध्यान एक बहुत ही महत्वपूर्ण और पुराने मुद्दे की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ, जिससे बिहार और अन्य पूर्वी राज्यों को ऐतिहासिक आर्थिक नुकसान हुआ है।यह मुद्दा 'मालभाड़ा समानीकरण नीति' (Freight Equalisation Policy) से जुड़ा है।1952 में लागू की गई इस अदूरदर्शी नीति के तहत, केंद्र सरकार देश में कहीं भी फैक्ट्री लगाने के लिए खनिजों के परिवहन पर सब्सिडी देती थी।इस नीति ने बिहार जैसे खनिज-संपन्न राज्यों का प्राकृतिक और प्रतिस्पर्धी लाभ छीन लिया।जहाँ उद्योग खनिजों के स्रोत के पास लगने चाहिए थे,वे बंदरगाहों और बाज़ारों के पास लगने लगे।इससे इन राज्यों में औद्योगिक विकास की गति पूरी तरह से रुक गई।इसका परिणाम यह हुआ कि प्रचुर खनिज संसाधन और उपजाऊ भूमि होने के बावजूद, बिहार और अब झारखंड भी,विकास की दौड़ में बहुत पीछे रह गए।यह एक ऐतिहासिक अन्याय है जिसने पूर्वी भारत की आर्थिक कमर तोड़ दी।मेरा केंद्र सरकार से आग्रह है कि इस नीति से हुए दशकों के आर्थिक नुकसान की भरपाई के लिए और यहाँ औद्योगिकीकरण को बढ़ावा देने के लिए बिहार के लिए एक विशेष वित्तीय पैकेज की घोषणा की जाए।यह पैकेज बिहार को न्याय देगा ताकि देश के बाकी हिस्सों के साथ कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ सके।

(इति)

Re: Need for conservation of Rohtasgah Fort in Rohtas district, Bihar under 'Apni Dharohar, Apni Pehchaan' scheme

श्री सुधाकर सिंह (बक्सर) : बिहार राज्य के रोहतास जिले में स्थित रोहतासगढ़ किला विंध्याचल पर्वत श्रृंखला की एक ऊँची पहाड़ी पर लगभग 1500 फीट की ऊँचाई पर बना हुआ है । इसका निर्माण 7वीं शताब्दी में त्रिकुट राजवंश के राजा हरिशचंद्र द्वारा करवाया गया था । रोहतासगढ़ किला एक प्राचीन और ऐतिहासिक किला है, जो अपनी रणनीतिक स्थिति, शिल्पकला और ऐतिहासिक घटनाओं के कारण बिहार के गौरवशाली अतीत का प्रतीक माना जाता है । लेकिन रखरखाव के अभाव में अभी यह किला चारागाह में तब्दील हो गया हैं। इतना ही नहीं इस क्षेत्र में "खरवार", "कुड़मी", "उरांव", "चेरो", और "सनताल" जैसी जनजातियाँ प्राकृतिक संसाधनों, सांस्कृतिक विरासत और पारंपरिक जीवनशैली के कारण निवास करती हैं । अतः मैं सदन के माध्यम से सरकार से अनुरोध करता हूँ कि रोहतासगढ़ किले का रखरखाव, मरम्मत कार्य एवं 'अपनी धरोहर, अपनी पहचान" योजना के तहत अपनाकर किले को संरक्षित करने का कार्य करे जिससे पर्यटन के साथ-साथ उक्त जनजातियों का भी विकास संभव हो सकेगा।

(इति)

Re: Alleged breakdown of law and order situation in Andhra Pradesh

SHRI MADDILA GURUMOORTHY (TIRUPATI): I wish to draw the urgent attention of this august House to the alarming breakdown of law and order in Andhra Pradesh. What we are witnessing is systematic erosion of democratic norms and constitutional safeguards.

A grave example of this decline is the recent arrest of our sitting Member of Parliament and Floor Leader who was meant to be present with us in this very session.

This incident is not isolated. It reflects a larger pattern wherein the police and administrative apparatus, is targeting opposition leaders, suppress dissent, and intimidate those who dare to question the Government. Such actions have no place in a constitutional democracy and run counter to the very principles of justice, fairness, and representative governance that this House stands for.

I urge this House to take serious note of these developments and ensure that the rule of law prevails over political expediency. (ends)

Re: Need to make public the report on Air crash in Ahmedabad and improve all the safety norms related to maintenance and operation of aircrafts

श्री हनुमान बेनीवाल (नागौर) : नागर विमानन मंत्री जी का ध्यान अहमदाबाद में हुए विमान हादसे के बाद नागरिक उड़यन क्षेत्र की सुरक्षा व्यवस्थाओं के संदर्भ में खड़े हुए सवालों की तरफ आकर्षित करते हुए बताना चाहता हूं कि स्टैंडिंग कमेटी द्वारा सुरक्षा से जुड़े मानकों को प्रभावी ढंग से लागू करने की क्षमताओं पर व्यक्त की गई चिंताओं के बावजूद डीजीसीए, बीसीएएस तथा भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण में क्रमश: स्वीकृत पदों की तुलना में 53%, 35% तथा 17% पद खाली है जिन्हें भरने हेतु कोई दीर्घकालीन योजना नहीं बनाई गई,जिसके कारण विमानन सुरक्षा मानक प्रभावी ढंग से लागू नहीं हो रहे है। हवाई अड्डों की सुरक्षा व्यवस्था को खतरा बना रहता है व परिचालन दक्षता व हवाई अड्डों का विस्तार प्रभावित होता है। हमारे देश में दुर्घटना जांच ब्यूरो के इस्तेमाल की जाने वाली पद्धति और तकनीक वैश्विक मानकों के अनुरूप नहीं है जिसके कारण भी हवाई दुर्घटनाओं के सही कारणों का पता नहीं चल पाता | अत: अहमदाबाद में हुए हादसे की जांच रिपोर्ट के कारणों की जांच रिपोर्ट बताई जाये तथा हवाई अड्डों पर डीजीसीए द्वारा निरीक्षण में पाई गई कमियों जैसे विमान परिचालन, रखरखाव, हवाई अड्डों की संरचानत्मक स्थिति और सुरक्षा मानकों में लापरवाही को तत्काल सुधारा जाये।

(इति)

Re: Loan disbursal by public sector banks in Bihar

श्री राजेश रंजन (पूर्णिया) : बिहार की प्रतिव्यक्ति आय 66,828 रूपये वर्ष 2023-24 में है, वही भारत की वर्ष 2023-24 में प्रति व्यक्ति आय 2 लाख 28 हजार रूपये है| बिहार राज्य के सरकारी और निजी क्षेत्र के बैंको में बिहार वासियों की एफ०डी० (फिक्स डिपोजिट) में सबसे अधिक धन राशि जमा है | सार्वजनिक बैंक ऋण अनुपात जमा यानी बैंकों का जो कर्ज देने की प्रवृति है वो 30 % है| जबकी 70% धनराशि बिहार के सार्वजनिक बैंक दूसरे राज्यों को ऋण देते है | ऐसा क्यों? एक किसान जब बिहार के किसी भी सरकारी बैंक में अपना के०सी०सी० कार्ड के लिए आवेदन करता है तो उसका किसान के०सी०सी० कार्ड काफी भागदौड़ करने के बाद बन पाता है। हमारे बिहार से खाड़ी देशों में लाखों-लाख की तादाद में कुशल और अकुशल कामगार काम करते है| देश की G.D.P. का तीन प्रतिशत अगर विदेशी मुद्रा की देन है तो इसमें बिहारी श्रमिकों का बहुत बड़ा योगदान है | जो अपनी कमाई प्रतिमाह खाड़ी देशों से भेजता रहता है | अत: मैं सरकार से माँग करता हूँ कि बिहार में सार्वजनिक बैंक ऋण देने के प्रवाह में वृद्धि करें।

(इति)

पहलगाम में आतंकवादी हमले के जवाब में भारत के मजबूत, सफल एवं निर्णायक 'ऑपरेशन सिंदूर' पर विशेष चर्चा – जारी

1207 बजे

माननीय अध्यक्ष : माननीय गृह मंत्री अमित शाह जी।

गृह मंत्री; तथा सहकारिता मंत्री (श्री अमित शाह) : सम्माननीय अध्यक्ष जी, मैं आज पहलगाम में जो निर्दोष यात्रियों की नृशंस हत्या पाकिस्तानी आतंकवादियों के द्वारा जो की गई और उसके जवाब में देश के प्रधानमंत्री जी ने दृढ़ इच्छाशक्ति का परिचय कराते हुए ऑपरेशन सिंदूर की सेना को परमीशन दी और हमारे वीर जवानों ने सटीकता, बहादुरी के साथ पाक स्थित आतंकवादी अड्डों को चूर-चूर करने का जो काम किया, उस घटना पर जो बहस हो रही है, इसमें हिस्सा लेने के लिए मैं खड़ा हुआ हूँ।

महोदय, सबसे पहले पहलगाम में निर्दोष नागरिकों की जो नृशंस हत्या की गई, धर्म पूछकर उनको मारा गया, उनके परिवार के सामने मारा गया और बड़ी बर्बरता के साथ ये हत्याएँ की गईं, इसकी मैं घोर निन्दा करता हूँ और जो मारे गए हैं, उनके परिजनों के प्रति हृदय की अत्यंत गहराइयों से संवेदना भी व्यक्त करना चाहता हूँ। ऑपरेशन सिंदूर के जवाब ने पाकिस्तान ने हमारे नागरिक ठिकानों पर गोलीबारी की, इसमें भी कुछ नागरिक हताहत हुए, गुरुद्वारा भी टूटा, मंदिर भी टूटा, जो भी नागरिक उसमें घायल हुए हैं और जो हताहत हुए हैं, उन सभी के प्रति मैं पूरे सदन की ओर से गहरी संवेदना व्यक्त करना चाहता हूँ।

(1210/RV/PS)

माननीय अध्यक्ष जी, कल से यहां पर पक्ष और विपक्ष, दोनों की चर्चा चल रही है और स्वाभाविक है कि देश में जब इस तरह की नृशंस घटना घटे, तब इस पर मुक्त चर्चा होनी चाहिए, चिंतन भी होना चाहिए और आगे ऐसा न हो, इसकी व्यवस्था की भी चिंता करनी चाहिए।

माननीय अध्यक्ष जी, विषय पर आने से पहले, मैं, आपके माध्यम से सदन को और सदन के माध्यम से पूरे देश को 'ऑपरेशन महादेव', जो कल हुआ है, इसकी जानकारी देना चाहता हूं।

माननीय अध्यक्ष जी, कल सुलेमान उर्फ फैज़ल जट्ट, अफगान और जिब्रान नामक तीन आतंकवादी, सेना, सीआरपीएफ और जम्मू-कश्मीर पुलिस के संयुक्त अभियान 'ऑपरेशन महादेव' में मारे गए। यह जो सुलेमान है, वह 'ए' श्रेणी का लश्कर-ए-तोएबा का कमांडर था। पहलगाम हमले और गगनगीर आतंकी हमले में वह लिप्त था। इसके ढेर सारे सबूत हमारी एजेंसियों के पास हैं। अफगान 'ए' श्रेणी का लश्कर-ए-तोएबा का आतंकवादी था और जिब्रान भी 'ए' ग्रेड का आतंकवादी था।

माननीय अध्यक्ष जी, मैं सदन को और सदन के माध्यम से पूरे देश को बताना चाहता हूं कि जिन्होंने बैसरन घाटी में हमारे प्रवासियों को, नागरिकों को मारा था, उनमें ये तीनों आतंकवादी थे और तीनों मारे गए।… (व्यवधान)

मान्यवर, आज मैं इस सदन के माध्यम से सेना के 'पैरा 4', सीआरपीएफ के सारे जवान, और जम्मू-कश्मीर पुलिस के जो जवान इसमें शामिल थे, उन सभी को सदन और पूरे देश की ओर से बहुत-बहुत साधुवाद देना चाहता हूं।

माननीय अध्यक्ष जी, मैं इस 'ऑपरेशन महादेव' के बारे में थोड़ा डिटेल में बताना चाहूंगा। 'ऑपरेशन महादेव' की शुरुआत 22 मई, 2025 को हुई थी। जिस दिन हत्या हुई थी, उसी दिन, रात को 22 अप्रैल, 2025 को जम्मू-कश्मीर में एक सुरक्षा मीटिंग की गयी थी। ये लोग यह पूछ रहे थे और कह रहे थे कि कोई गए नहीं, सिर्फ राहुल गांधी गए थे। अब आपकी आँख कौन-से चश्मे से देख रही है, यह मुझे मालूम नहीं है। पर, एक बजे हमला हुआ और साढ़े पाँच बजे मैं श्रीनगर में उतर चुका था।... (व्यवधान)

आप सुनिए। मैं आपको बताता हूं। धैर्य रखकर सुनिए। हमने आपको नहीं टोका। आपको सुनना पड़ेगा। ऐसे नहीं चलेगा।... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य, आप बैठे-बैठे मत बोलिए।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य, आप बैठे-बैठे टिप्पणी मत कीजिए।

... (व्यवधान)

श्री अमित शाह : माननीय अध्यक्ष जी, 23 अप्रैल को एक सुरक्षा मीटिंग की गयी, जिसमें सभी सुरक्षा बल, सेना, सीआरपीएफ, बीएसएफ, जम्मू-कश्मीर पुलिस के अधिकारी थे और उसमें सबसे पहले यह निर्णय किया गया कि जो नृशंस हत्यारे हैं, वे देश छोड़ कर पाकिस्तान भागने न पाए, इसकी हमने पुख्ता व्यवस्था की और उन्हें भागने नहीं दिया। 22 मई को आई.बी. के पास एक 'ह्यूमन इंटेल' आयी और दाचीगाम क्षेत्र के अन्दर आतंकवादियों की उपस्थिति की सूचना मिली। आई.बी. और सेना द्वारा दाचीगाम क्षेत्र में अल्ट्रा सिग्नल कैप्चर करने के लिए जो इंस्ट्रूमेंट्स हमारी एजेंसियों ने बनाए हैं, इसके द्वारा इस सूचना को पुख्ता करने के लिए मई से 22 जुलाई तक लगातार प्रयास किए गए।

(1215/MY/SMN)

ठंड में ऊंचाइयों पर हमारे सेना के अधिकारी इनके सिग्नल प्राप्त करने के लिए पैदल घूमते रहे, आईबी के ऑफिसर्स भी घूमते रहे और सीआरपीएफ भी घुमती रही।

मान्यवर, 22 जुलाई को हमें सफलता मिली और सेंसर्स के माध्यम से आतंकवादी होने की पुष्टि भी मिल गई। चार-पैरा हमारी सेना का एक हिस्सा है। उसके नेतृत्व में चार-पैरा के जवान, सीआरपीएफ के जवान और जम्मू-कश्मीर पुलिस के जवानों ने एक साथ इन आतंकवादियों को घेरने का काम किया। सेना, सीआरपीएफ और जम्मू-कश्मीर पुलिस की मीटिंग भी की गई। जो पांच ह्यूमन एसेट्स थे, उनको भी वहां भेजा गया। कुल मिलाकर कल जो ऑपरेशन हुआ, उसमें हमारे निर्दोष नागरिकों को मारने वाले तीनों आतंकी मौत के घाट उतार दिए गए।

मान्यवर, मैंने इन तीनों आतंकियों के नाम बताए हैं- सुलेमान उर्फ फैज़ल जट्ट, अफगान और जिब्रान। वह तो एक आशंका थी कि इन्हीं लोगों ने घटना की। मैं बाद में एनआईए की जांच पर भी आता हूं। एनआईए ने पहले से ही, जिन्होंने आश्रय दिया था, उन लोगों को गिरफ्तार करके रखा था। एनआईए ने खाना पहुंचाने वाले लोगों को अपने कब्जे में रखा था। आतंकवादियों के शव जब

श्रीनगर आए तो इनसे पहचान करायी गयी। चार लोगों ने पहचान लिया कि ये ही तीन लोगों ने पहलगाम में आतंकवादी घटना को अंजाम दिया था।

मान्यवर, हमने इस पर भी भरोसा नहीं किया। हमने कोई जल्दबाजी नहीं की। हमें आतंकी घटना स्थल से जो कारतूस मिले थे, उस कारतूस की एफएसएल रिपोर्ट पहले से ही कराकर रखी थी। चंडीगढ़ सेंट्रल एफएसएल के अंदर बैलेस्टिक रिपोर्ट के आधार पर उनकी रिपोर्ट तैयार थी। जब कल ये आतंकवादी मारे गए, तब इनकी तीन राइफलें पकड़ी गईं। इनमें से एक एम-4 अमेरिकन राइफल थी और दो एके-47 राइफल थी। जो कारतूस मिले थे, वे भी एम-4 और एके-47 के ही थे। मगर हमने इससे भी संतोष नहीं किया। इन राइफलों को एक विशेष विमान के द्वारा कल रात को 12 बजे चंडीगढ़ पहुंचाया गया। वहां पूरी रात फायरिंग करके इसके भी खाली खोखे जेनरेट किए गए। दो खोखे का मिलान किया गया। राइफल की नाली और निकले हुए खोखे का भी मिलान हो गया। तब यह तय हो गया कि इन्हीं तीन राइफलों से हमारे निर्दोष नागरिक मारे गए थे।

मान्यवर, आज मैं इस सदन को बताते हुए बहुत खुश हूं। मोदी जी ने 'ऑपरेशन सिन्दूर' करके, जिन्होंने आतंकवादियों को भेजा था, उनके आकाओं को जमीन में मिलाने का काम किया था। सेना और सीआरपीएफ ने उन आतंकवादियों को भी समाप्त कर दिया।… (व्यवधान)

श्री अखिलेश यादव (कन्नौज) : अध्यक्ष महोदय, आका तो पाकिस्तान है। इस आका के लिए इन्होंने क्या किया?… (व्यवधान)

श्री अमित शाह: क्या पाकिस्तान से आपकी बात होती है**?** … (व्यवधान) आप बैठ जाइए। मैं आपको बताता हूं कि कैसे इनके आका मारे गए। वह भी नाम और जगह के साथ बताता हूं। मैं आपको घंटे, मिनट और सेकेंड के साथ भी बताता हूं।… (व्यवधान)

(1220/GG/RP)

मान्यवर, मैं तो अपेक्षा करता था कि जब ये सूचना सुनेंगे, पक्ष-विपक्ष में खुशी की लहर दौड़ जाएगी। मगर इनके चेहरे पर सियाही पड़ गई है। … (व्यवधान) मान्यवर, यह क्या है? किस तरह की पॉलिटिक्स है? … (व्यवधान) आतंकवादी मारे गए, इनको इसका भी आनंद नहीं है? … (व्यवधान) अखिलेश जी, बैठ जाइए और मेरा पूरा भाषण सुनिए, आपके सब जवाब मिल जाएंगे। … (व्यवधान) आप आतंकवादियों का धर्म देख कर दु:खी मत होइए। … (व्यवधान) अखिलेश जी! बैठ जाइए। … (व्यवधान) अखिलेश जी, बैठ जाइए। … (व्यवधान)

मान्यवर, किसी को संशय रखने की ज़रूरत नहीं है। बैलेस्टिक रिपोर्ट मेरे पास है, मेरे हाथ में है और छह वैज्ञानिकों ने इसको क्रॉस चैक किया है और सुबह चार बज कर 46 मिनट पर मुझे सभी छह वैज्ञानिकों ने वीडियो कॉल पर कहा है कि 100 पर्सेंट वही गोलियां हैं, जो वहां चलाई गईं। … (व्यवधान)

मान्यवर, यह हमारे देश की सेना, सीआरपीएफ और जम्मू-कश्मीर पुलिस, इन तीनों की साझी तथा बहुत बड़ी कामयाबी है, जिस पर 140 करोड़ देशवासियों को नाज़ होना चाहिए, देश की जनता को नाज़ होना चाहिए।

मान्यवर, मैं तो वहां गया था, जब यह घटना हुई, दूसरे दिन मैं पीड़ितों के परिजनों से मिला था। छह दिन की शादी के बाद एक बच्ची विधवा हो कर मेरे सामने खड़ी थी। मैं आज तक वह दृश्य नहीं भूल सकता हूँ। मगर आज मैं सारे परिजनों को कहना चाहता हूँ कि मोदी जी ने ऑपरेशन सिंदूर से आतंकवादियों को भेजने वालों को भी मारा और हमारे सुरक्षा बलों ने उनको भी मारा, जिनको भेजा गया था। उनको एक ऐसा सबक सिखाया है कि आने वाले कई दिनों तक कोई ऐसी हिम्मत नहीं कर पाएगा।

मान्यवर, मैं थोड़ा सा एनआईए की जाँच के बारे में भी बताना चाहता हूँ। मान्यवर, जिस दिन लश्कर-ए-तैय्यबा ने और उसके आउटफिट टीआरएफ ने इसकी जिम्मेदारी ली, उसी दिन हमने तय कर लिया था कि यह जाँच एनआईए को सौंप दी जाएगी, क्योंकि एनआईए आतंकवाद के केसों की जाँच के लिए, वैज्ञानिक तरीके से जाँच करने के लिए और सजा कराने के लिए महारत हासिल की हुई विश्व मान्य एजेंसी है, जिसकी सजा कराने की दर 96 प्रतिशत से ज्यादा है। मान्यवर, हमने तुरंत ही इसकी जाँच एनआईए को दे दी। हमारी सेना, बीएसएफ, सीआरपीएफ और जम्मू-कश्मीर पुलिस ने यह पूरी व्यवस्था की कि ये लोग देश छोड़ कर भाग न जाएं। मान्यवर, इसकी जाँच एक थकाने वाली बहुत लंबी जांच हुई। जाँच के दौरान मृतक के परिजन जो साथ मे थे, उन सभी से चर्चा की गई। पर्यटकों, पोनीवालों, फोटोग्राफर, कर्मचारियों, विभिन्न दुकानों में काम करने वाले लोगों को मिला कर 1 हज़ार 55 लोगों की लंबी लिस्ट, तीन हज़ार घंटे से ज्यादा पूछताछ इनफॉर्मेशन के लिए की गई और इस सब को वीडियो पर रिकॉर्ड कर दिया गया। बाद में इसके आधार पर स्केच बनाया गया और ढूंढते-ढूंढते-ढूंढते 22.06.2025 को एक बशीर नामक व्यक्ति की पहचान की गई और परवेज़ की पहचान की गई, जिन्होंने आतंकवादी घटना के अगले दिन आतंकवादियों को शरण दी थी, उनको अपने ढोक में रखा था। उन दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया, अब वे हमारी कस्टडी में हैं। दोनों गिरफ्तार अपराधियों ने खुलासा किया कि 21.04.2025 की रात को आठ बजे तीन आतंकवादी बैसरन घाटी से लगभग दो किलोमीटर दूर स्थित परवेज के ढोक में आए थे। आतंकवादियों के पास एके-47 और एम-4 कार्बाइन थी। दो आतंकवादियों ने काली पोशाक पहनी थी। एक ने छद्म भेष लिया था। उन्होंने खाना खाया, चाय पी और ढोक से निकलते वक्त कुछ खाना, नमक, मिर्च और मसाले ले कर वे चले गए।

(1225/YSH/UB)

मान्यवर, उस वक्त हमने जिन खोखों को रिकवर किया था, उनको हमने चंडीगढ़ एफएसएल में टेस्टिंग के लिए भेज दिया था और जब उन्हें चंडीगढ़ एफएसएल में टेस्टिंग के लिए भेजा गया तो पता चला कि उन्हीं राइफल्स से 'एपको' आतंकी हमला हुआ था। वही निश्चित हुआ। आज इसके साथ-साथ 'एपको' आतंकी हत्या को अंजाम देने वाले आतंकियों की भी समाप्ति हुई है और उनको मार दिया गया है।

मान्यवर, उसके बाद उनका स्कैच बनाया गया। गिरफ्तार किए गए दोनों आरोपियों की जो माता थी, उसने उन तीनों आतंकियों के मृत देहों को पहचान लिया है। दोनों आतंकवादी घटना में

साथ देने वाले उनके साथियों ने भी उन्हें पहचान लिया है। उसकी एफएसएल की पुष्टि भी आज सुबह चार बजे हो गई है।

मान्यवर, अब मैं जांच का पूरा ब्यौरा बताना चाहता हूँ। इस हमले में तीन पाकिस्तानी आतंकवादी थे। हमले में दो एके-47 और एक एम-4 कार्बाइन का प्रयोग किया गया था। अब जो आतंकवादी पकड़े गए हैं, सुलेमान के कारण 'एपको' का मामला भी आज रिजॉल्व हो रहा है। आतंकवादियों को पनाह देने वाले दो स्थानीय लोगों को भी इस केस में पकड़ लिया गया है।

मान्यवर, ये कल पूछ रहे थे कि आतंकवादी कहां से आए, कहां गए, किसकी जिम्मेदारी है? जिम्मेदारी हमारी ही है। हम सरकार में हैं। हमारी ही जिम्मेदारी है, मगर मैं पूछता हूँ कि जब आप सरकार में थे, तब क्या-क्या हुआ था और उसकी जिम्मेदारी किसकी थी और उसका हल क्यों नहीं किया गया? मैं इसके बारे में भी बाद में पूछूंगा। आप धीरज से सुनिएगा।

मान्यवर, मुझे बहुत दुख हुआ है। कल इस देश के पूर्व गृह मंत्री चिदंबरम जी ने सवाल उठाया कि क्या प्रूफ है कि ये आतंकवादी पाकिस्तान से आए थे? यह सवाल तब उठा है, जब संसद में चर्चा होने वाली थी। चिदंबरम साहब क्या कहना चाहते हैं? वे किसको बचाना चाहते हैं? पाकिस्तान को बचाकर आपको क्या मिलेगा? … (व्यवधान)

मान्यवर, मैं आपके माध्यम से आज चिदंबरम साहब को कहना चाहता हूँ कि हमारे पास प्रूफ हैं, उनको भी मैं सदन के सामने रखना चाहता हूँ कि वे तीनों पाकिस्तानी थे। तीन में से दो के पाकिस्तान के वोटर नम्बर भी आज हमारे पास उपलब्ध हैं। ये राइफल्स भी हमारे पास उपलब्ध हैं। इनके पास से जो चॉकलेट्स मिली हैं, वे चॉकलेट्स ढोक में से मिली हैं। वे भी पाकिस्तान की बनाई हुई चॉकलेट्स हैं।

मान्यवर, ये कहते हैं कि वे पाकिस्तानी नहीं थे। इसका मतलब है कि पूरी दुनिया के सामने इस देश का एक पूर्व गृह मंत्री पाकिस्तान को क्लीन चिट दे रहा है। वे पाकिस्तानी आतंकवादी नहीं थे, ऐसा बोलकर श्री चिदम्बरम जी, पाकिस्तान पर हमला क्यों किया, यह सवाल भी खड़ा कर रहे हैं। पूरी दुनिया में हमारे संसद सदस्य गए थे। उन्होंने स्वीकारा था कि यह हमला पाकिस्तान ने किया है और इस देश का गृह मंत्री, जो कि कांग्रेस पार्टी से आता है, वह कहता है कि क्या सबूत है? आप मुझसे मांगते। मैं सबूत दे देता। ये मीडिया से मांगते हैं। ये पूरी दुनिया के सामने उजागर करते हैं। शक, शुबहा खड़ा करते हैं। पाकिस्तान को बचाने के इनके इस षड़यंत्र के बारे में 140 करोड़ लोग जान रहे हैं। आप लोग बच नहीं पाएंगे। आप बच नहीं पाएंगे।

(1230/MM/NKL)

मान्यवर, अब मैं पहलगाम आतंकी हमला और ऑपरेशन सिंदूर के बारे में पूरा घटनाक्रम बताना चाहता हूं। कल ढेर सारे सवाल उठाए गए। वैसे तो मुझे लगता था कि कल रक्षा मंत्री जी के भाषण के बाद शायद कांग्रेस पार्टी सपोर्ट में भाषण देना शुरू करेगी और अगर थोड़ी बहुत जनता की परख होती तो वह वही करते, मगर नहीं किया। क्योंकि रक्षा मंत्री जी ने बहुत बारीकी से 'ऑपरेशन सिंदूर' की सफलता, इसकी जरूरत, इसकी प्रासंगिता और इसके परिणाम बहुत अच्छे

तरीके से सदन के माध्यम से पूरे देश की जनता के सामने रखे थे। मगर फिर भी उन्होंने बहुत सारे सवाल किए। अगर सवाल किए हैं तो मुझे जवाब देना पड़ेगा और उन्हें सुनना भी पड़ेगा।

मान्यवर, मैं पूरा घटनाक्रम बताना चाहता हूं। 22 अप्रैल को पहलगाम में आतंकवादी हमला हुआ, जिसमें 26 लोग मारे गए। 25 भारतीय और एक नेपाली नागरिक था। हमने उसी वक्त मैं श्रीनगर जाने के लिए निकल गया, रात को ही सुरक्षा बलों की मीटिंग करके ताकि ये भाग न पाएं, इसकी व्यवस्था की। माननीय मोदी जी ने 23 और 30 अप्रैल को सीसीएस की मीटिंग चेयर की। ये कह रहे हैं, मैं आज बताना चाहता हूं कि सीसीएस की 23 अप्रैल की मीटिंग में क्या हुआ? सबसे पहला, कांग्रेस पार्टी का जो ब्लंडर था, उस सिंधु जल संधि को स्थगित करने का काम नरेन्द्र मोदी जी ने किया। हमने अटारी पर एकीकृत जांच चौकी को बंद कर दिया। पाकिस्तानी नागरिकों के सार्क वीजा को सस्पेंड करके, सभी को पाकिस्तान भेजने का काम शुरू किया। पाकिस्तान स्थित उच्चायोग के रक्षा, सैन्य, नौ सेना के सलाहकारों को अवांछनीय व्यक्ति घोषित किया। कर्मचारियों की संख्या को 55 से घटाकर 30 किया और सीसीएस ने यह संकल्प लिया कि जहां पर भी ये आतंकवादी छिपे हैं, उनको और उनको ट्रेनिंग देने वालों को सेना, पुलिस, सीआरपीएफ, बीएसएफ उचित जवाब देगी।

मान्यवर, जिस तारीख को यह हुआ, उसी दिन यह निर्णय हो चुका था। लेकिन गोगोई जी ने कहा कि मोदी जी पहलगाम जाने की बजाय बिहार गए। मान्यवर, जब पहलगाम की घटना हुई तो मोदी जी यहां नहीं थे, वे विदेश में थे। वहां से आने के बाद उन्होंने तुरंत सीसीएस की बैठक की। मोदी जी जिस दिन बिहार गए थे, उस दिन पहलगाम में कोई नहीं था, सिर्फ राहुल गांधी थे। सारे लोग चले गए थे।

(1235/MK/VR)

सभी लोग वहां से अपने-अपने ठिकाने पर चले गए थे। मगर, इन्होंने एक बात कही है, उस पर मुझे आपत्ति है। इन्होंने कहा कि 24 अप्रैल को चुनावी भाषण किया।

मान्यवर, देश का नेतृत्व करने वाले देश के प्रधानमंत्री का फर्ज होता है कि देश की संप्रभुता पर, देश के नागरिकों पर अगर ऐसा जघन्य हमला होता है, तो जनता की भावनाओं के अनुरूप जवाब देना चाहिए। … (व्यवधान)

मान्यवर, मैं आज आपकी परमिशन से मोदी जी के बिहार भाषण के कुछ अंश पढ़ना चाहता हूं। कोट अनकोट है।

"22 अप्रैल को पहलगाम का यह हमला केवल निहत्थे पर्यटकों पर नहीं, बल्कि पूरे भारत की आत्मा पर एक दुस्साहसपूर्ण प्रहार है। आतंकवाद के प्रति दृढ़ और कड़ा रुख आतंकियों और इस हमले की साजिश रचने वालों की कल्पना से भी बढ़कर उनको सजा दी जाएगी।"

मान्यवर, महत्वपूर्ण है "आतंकियों और इसकी साजिश रचने वालो दोनों को। आतंकियों की बची-खुची जमीन भी मिट्टी में मिलाने का समय आ गया है। 140 करोड़ भारतीय इस बात के लिए एकजुट हैं कि आतंकी आकाओं की कमर तोड़ दी जाएगी। भारत हरेक आतंकवादी और उनके समर्थकों की पहचान करेगा, उनका पता लगाएगा और उन्हें दंडित करेगा। आतंकवाद कभी भी भारत की आत्मा नहीं तोड़ पाएगा। न्याय सुनिश्चित करने का मैं हरसंभव प्रयास करूंगा।" अनकोट। अब इसमें किसी को चुनावी भाषण दिखाई पड़ता है, तो उसकी समझ शक्ति पर बहुत सारे सवालिया निशान लग जाते हैं। यह चुनावी भाषण नहीं है। ... (व्यवधान) आतंकवाद के खिलाफ लड़ने का 140 करोड़ भारतीयों का प्रतिघोष है, जो मोदी जी ने वहां दिया है। इनको चुनावी भाषण दिखाई पड़ता है। जैसे चश्मे होते हैं, वैसी ही दृष्टि होती है। ... (व्यवधान)

मान्यवर, इसके बाद 30 अप्रैल को सीसीएस की बैठक हुई। पहले 23 अप्रैल को हुई थी। इसमें सशस्त्र बलों को पूर्ण ऑपरेशन की फ्रीडम दे दी गई। प्रधानमंत्री मोदी जी ने सीसीएस की उपस्थिति में, रक्षा मंत्री एनएसए और सेनाओं के प्रमुख के साथ बैठकर पूर्ण ऑपरेशनल फ्रीडम देने का काम किया। इसके बाद यह 'ऑपरेशन सिंदूर' हुआ।

मान्यवर, 'ऑपरेशन सिंदूर' 7 मई की सुबह रात एक बजकर चार मिनट से एक बजकर चौबीस मिनट तक चला। उसमें पाकिस्तान के नौ आतंकी ठिकानों को ध्वस्त कर दिया गया। पूरी दुनिया ने इसका दृश्य देखा। साहब, इससे बड़ा संयमित हमला नहीं हो सकता है। आजकल दुनिया में युद्ध चल रहे हैं। हम देख रहे हैं बच्चे, महिलाएं और निर्दोष मर रहे हैं। हमने नौ आतंकी अड्डों को समाप्त किया, परन्तु एक भी सिविलियन नहीं मारा गया। केवल और केवल आतंकी मारे गए। ... (व्यवधान) वे नौ स्थान थे- मरकज़ सुब्हानअल्लाह, बहावलपुर; मरकज तैय्यबा, मुरीद के मेहमुना जाया कैंप, सियालकोट; ... (व्यवधान) नाम सुनिए, काम में आएंगे। सरजाल कैंप, सियालकोट; सवाई नाला कैंप, मुजफ्फराबाद; सैयदना बिलाल कैंप, मुजफ्फराबाद; गुलपुर कैंप, कोटली; बरनाला कैंप, भिम्बर और अब्बास कैंप, कोटली।

मान्यवर, सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक में हमने पाक आक्युपाइड कश्मीर में ही हमला किया। एक प्रकार से भारत के हिस्से पर ही हमला किया।

(1240/SK/SNT)

पाक आक्युपाइड कश्मीर हमारा ही है। हमने अपने हिस्से में हमला किया था, लेकिन इस बार सौ किलोमीटर अंदर घुसकर पाकिस्तान की भूमि पर आतंकवादियों को तबाह करने का काम किया।

मान्यवर, आतंकी ठिकानों पर हमला हुआ, इसमें मारा कौन गया? हाफिज मोहम्मद जमील, जैश-ए-मोहम्मद के प्रमुख मौलाना मसूद अजहर के बहनोई, मुद्दसर खादियान,

मरकज तैयबा मुरिदके का प्रमुख याकूब मलिक, जेम पदाधिकारी मोहम्मद हमसा जमील, जेम ऑपरेटिव मोहम्मद युसूफ अज़हर, गंभीर रूप से घायल था फिर मारा गया। जैश-ए-मोहम्मद का आमिर मोहम्मद हसन खान गंभीर रूप से घायल था फिर मारा गया। जेम ऑपरेटिव मोहम्मद हसन गंभीर रूप से घायल हुआ। अब्दुल मलिक, खालिद अबु अक्स और नोएम मलिक का कोई पता ठिकाना नहीं है।

मान्यवर, ये मुझे कल पूछ रहे थे कि पहलगाम के दोषी कहां गए? मैंने दस नाम पढ़े हैं, इनमें से आठ चिदंबरम एंड कंपनी के समय में आतंकवादी घटना करने वाले लोगों को नरेन्द्र मोदी जी ने मारा। यह हमें पूछते हैं कि कहां गए? अरे भाई, आपके समय में जो छुप गए थे, उनको चुन-चुनकर हमारी सेना ने समाप्त कर दिया है। ये दस नहीं हैं, कल राजनाथ जी घबराते-घबराते बोले - अब आंथेटिक शब्द तो मैं बता नहीं सकता लेकिन कम से कम सौ से ज्यादा लोगों को हमारी सेना ने समाप्त कर दिया। इस पर भी आप गर्व नहीं कर सकते? ... (व्यवधान)

मान्यवर, 7 मई को 1 बजकर 22 मिनट पर हमारा काम समाप्त हो गया। हमारे डीजीएमओ ने उनके डीजीएमओ को बता दिया कि हमने सिर्फ आतंकवादी स्थानों पर हमला किया है, हैडक्वार्टर पर हमला किया है जो हमारा आत्मरक्षा का अधिकार है। इसे पूरी दुनिया एक्नॉलेज करती है। मनमोहन सिंह जी के समय की तरह ऐसा नहीं हो सकता कि वे आकर मारेंगे, हम चुपचाप बैठे रहेंगे और जाकर चर्चा करेंगे। यह नरेन्द्र मोदी जी की सरकार है, ऐसा नहीं हो सकता कि डोजियर भेजते रहें। उरी में हमला हुआ, हमने सर्जिकल स्ट्राइक की, पुलवामा में हमला हुआ तो एयर स्ट्राइक की, पहलगाम में हमला हुआ तो सौ किलोमीटर अंदर जाकर नौ अड्डों और सौ से ज्यादा आतंकवादियों को समाप्त किया। हमने तो पाकिस्तान आतंकवादी ठिकानों पर हमला किया, लेकिन पाकिस्तान से गलती हो गई। हमने जिन आतंकवादी ठिकानों पर हमला किया था, उसे वे अपने ऊपर हमला मान रहे थे और पूरी दुनिया में कहते थे कि हमारा आतंकवाद से कोई लेना-देना नहीं है, ये तो ऐसे ही कहते हैं कि हम तो विक्टिम हैं। यह मनमोहन सिंह जी ने भी सर्टिफाई कर दिया था कि ये विक्टिम हैं। दूसरे दिन इनकी श्रद्धांजलि का कार्यक्रम हुआ। पाकिस्तान को मालूम नहीं था कि यह पूरी दुनिया देखेगी। सेना के आला अफसर, उनके नमाज-ए-जनाजा में उपस्थित थे, उनके जनाजे को कंधा दिया और सारी आतंकवादियों के जनाजे के जुलूस के अंदर पाकिस्तानी सेना, उनके अफसर, आईएसआई के अफसर, पुलिस के अफसर सुभीनी आंख के साथ जुड़े थे। ऑपरेशन सिंदूर ने पाकिस्तान को पूरी दुनिया में एक्सपोज कर दिया कि पाकिस्तान के अंदर स्टेट स्पांसर्ड टेररिज्म है। यह पूरी तरह से एक्सपोज हो गया।

(1245/VB/SNT)

8 मई को पाकिस्तान ने हमारे रिहायशी इलाकों में हमला किया, हमारे सेना के अड्डों पर हमला किया, लेकिन उनकी एक भी मिसाइल कुछ नुकसान नहीं कर पायी। बहुत नजदीक से की गई गोलाबारी के कारण हमारे यहाँ एक गुरुद्वारा टूटा, एक मन्दिर टूटा और हमारे कुछ नागरिक हताहत हुए। दूसरे दिन, 9 मई को मोदी जी ने सेना को हुक्म दिया, मीटिंग की गई, जिसमें मोदी जी, राजनाथ जी, सेना के सभी अध्यक्ष ने जवाब देने का तय किया और उनके 11 एयरबेसेज को क्षतिग्रस्त किया गया।

मान्यवर, 8 एयरबेसेज इतने सटीक तरीके से तोड़े गये कि पाकिस्तान की पूरी एयर डिफेंस सिस्टम धरी की धरी रह गई। वे कुछ नहीं कर पाए। नूरखान, चकलाला एयरबेसेज तोड़ दिए गए। मुरीद, सुर्गुधा, रफिकी, रहीमयार खान, जकोबाबाद एयरबेसेज को तोड़ दिए गए। इसके साथ ही, सुक्कुर और भोलारी एयरबेसेज भी तोड़ दिए गए। उनके रडार सिस्टम्स में से, सुक्कुर, लाहौर, अरिफवाला, चुनैन, जकोकाबाद और नयाचोर रडार सिस्टम्स पूरी तरह से ध्वस्त कर दिये गए। लाहौर और ओकारा में दो सरफेस-टू-एयर गाइडेड वेपन्स को समाप्त कर दिया गया।

मान्यवर, ये हर चीज में पॉलिटिक्स करते हैं। उन्होंने हमारे देश के रिहायशी इलाकों पर हमला किया, फिर भी हमने इनके रिहायशी इलाकों पर हमला नहीं किया। हमने सिर्फ इनके एयरबेसेज और एयर डिफेंस सिस्टम्स को ही निशाना बनाया और उनकी आक्रमण करने की क्षमता को पंगु बना दिया। हमारी सेना, वायु सेना और नौ सेना अक्षुण्ण थी और हमने उनकी हमला करने की क्षमता को छिन्न-विछिन्न कर दिया। पाकिस्तान के पास शरण में आने के अलावा और कोई चारा ही नहीं था। इसलिए 10 मई को पाकिस्तान के डीजीएमओ ने भारत के डीजीएमओ को फोन किया और हमने 5 बजे इस संघर्ष को विराम दिया।

मान्यवर, कल ये लोग सवाल उठा रहे थे कि आप इतनी अच्छी पोजिशन में थे, तो आपने युद्ध क्यों नहीं किया। युद्ध के कई परिणाम होते हैं। युद्ध करना है या न करना है, यह सोचकर करना पड़ता है। मगर मैं इस देश के इतिहास से ही कुछ घटनाएं बताना चाहूंगा। वर्ष 1948 में, कश्मीर में हमारी सेनाएं निर्णायक पड़ाव पर थी। सरदार पटेल ना बोलते रहे, लेकिन जवाहरलाल नेहरू जी ने एकतरफा युद्ध विराम कर दिया। मैं बड़ी जिम्मेदारी के साथ कहता हूँ, मैं इतिहास का विद्यार्थी हूँ, अगर पाक-ऑक्युपाइड कश्मीर का इतिहास है, तो जवाहरलाल नेहरू जी द्वारा किये गये युद्ध विराम के कारण हैं। इसके जिम्मेदार जवाहरलाल नेहरू हैं। … (व्यवधान)

सरदार पटेल ने विरोध किया था। वे गाड़ी लेकर आकाशवाणी तक गये थे, ये घोषणा न कर दें, इसलिए दरवाजे बंद कर दिये गये थे।

मान्यवर, वर्ष 1960 में, सिंधु जल पर भौगोलिक व रणनीतिक रूप से हम बहुत ही मजबूत थे। सिंधु जल समझौते में उन्होंने 80 प्रतिशत भारत का पानी पाकिस्तान को दे दिया।

मान्यवर, मैं वर्ष 1962 की लड़ाई की बात बाद में करूँगा। वर्ष 1965 की लड़ाई में हाज़ीपीर जैसे स्ट्रैटजिक जगह पर हमने कब्जा किया था, लेकिन वर्ष 1966 में उसको लौटा दिया गया।

मान्यवर, मैं वर्ष 1971 के युद्ध की भी बात करना चाहता हूँ।

(1250/SJN/AK)

मान्वयर, कल राज नाथ सिंह जी ने भी इसके बारे में बताया था। पूरे देश ने इंदिरा गांधी जी का समर्थन किया था। उन्होंने पाकिस्तान के दो टुकड़े कर दिए थे। यह भारत के लिए बहुत बड़ी विजय थी। सदियों तक भारत इस विजय पर गर्व करेगा और हम सब भी गर्व महसूस करते हैं। हमें कोई आपत्ति नहीं है। मगर हुआ क्या? युद्ध की विजय की चकाचौंध में क्या हुआ?

हमारे पास 93,000 युद्धबंदी थे। हमारे पास पाकिस्तान का 15,000 वर्ग किलोमीटर का क्षेत्र था। हमारे पास 93,000 युद्धबंदी थे, यानी उस वक्त की पाकिस्तान की सेना के 42 प्रतिशत सैनिक और 15,000 वर्ग किलोमीटर का क्षेत्र था। शिमला में समझौता हुआ, मगर ये पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर मांगना ही भूल गए। अगर उस वक्त पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर मांग लेते, तो 'न रहेगा बांस और न बजती बांसुरी'। हमको उन कैंप्स तोड़ने की जरूरत न पड़ती।

मान्यवर, इतना ही नहीं, इन्होंने पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर तो नहीं लिया, ये उसको मांगना ही भूल गए। इन्होंने 15,000 वर्ग किलोमीटर की जीती हुई भूमि भी वापस दे दी। यह तय हुआ था कि पाकिस्तानी नरसंहार के लिए युद्ध अपराध न्यायाधिकरण बनेगा, लेकिन वह नहीं बना। सेना ने पूर्वी पाकिस्तान में नरसंहार किया था। 195 पाकिस्तानी अधिकारियों पर मुकदमा चलना था, लेकिन इंदिरा जी के सामने से भुट्टो उनको छुड़ाकर अपने साथ ले गए थे।

मैं जनरल सैम मानेकशॉ के एक क्वोट के बारे में बताना चाहता हूं, जो एक प्रकार से बांग्लादेश विजय के आर्किटेक्ट माने जाते थे। उन्होंने कहा था कि भुट्टो ने भारत के नेतृत्व को मूर्ख बनाया है। मैं उन शब्दों को क्वोट करना चाहता हूं। मैंने कुछ नहीं कहा है, ये लोग गुस्सा न हो जाएं। "I told her (Indira Gandhi) that he (Bhutto) has made a monkey out of you!". आपको समझ में आता है? यह फील्ड मार्शल साहब ने कहा था।

मान्यवर, ये हमें सिखा रहे हैं कि ये नहीं किया, वो नहीं किया, फलाना नहीं किया, ढिकाना नहीं किया। अरे, आप तो पाकिस्तान को क्लीन चिट दे रहे हैं कि पाकिस्तान ने हमला ही नहीं किया है। आपको पूछने का क्या अधिकार है? कोई अधिकार नहीं है। मैं बताऊं कि क्या होता है। मैंने कहा कि आप पाकिस्तान को क्लीन चिट दे रहे हैं, तो कनिमोझी जी कह रही हैं कि हम क्लीन चिट नहीं दे रहे हैं।

माननीय अध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से माननीय सदस्या कनिमोझी जी को कुछ बताना चाहता हूं। वह कह रही हैं कि हमने क्लीन चिट नहीं दी है, मगर आप जिसके साथ बैठती हैं, उसका दोष तो आपके सिर पर आएगा ही। चिदम्बरम जी कह रहे हैं, वे आपके राज्य से ही हैं। वे कांग्रेस पार्टी के प्रमुख नेता है। देश के पूर्व गृह मंत्री कह रहे हैं कि पाकिस्तान ने आतंकवादी नहीं भेजे थे। आप क्या क्लीन चिट देना चाहते हैं? किसी को भी आतंकवाद पर बोलने का अधिकार नहीं है। … (व्यवधान) मैं उनको बताना चाहता हूं, अभी मेरी बात पूरी नहीं हुई है। जरा सुनिए। … (व्यवधान)

SUSHRI S. JOTHIMANI (KARUR): Sir, he is a Member of the Rajya Sabha. … (*Interruptions*) His name should not be taken here. … (*Interruptions*) Nobody has given a clean chit. … (*Interruptions*)

SHRI KARTI P. CHIDAMBARAM (SIVAGANGA): Yes, nobody has given a clean chit. … (*Interruptions*)

श्री अमित शाह : सन् 1962 के युद्ध में क्या हुआ था? कल कांग्रेस पार्टी के कुछ सदस्य चीन के विषय पर सवाल पूछ रहे थे। मैं आज उनसे पूछना चाहता हूं कि सन् 1962 के युद्ध में क्या हुआ था? पूरा सदन ध्यान से इस बात को सुने कि अक्साई चीन का 38,000 वर्ग किलोमीटर हिस्सा चीन को दे दिया गया था।

(1255/PC/SRG)

मान्यवर, ऐसी ही चर्चा उस वक्त भी सदन में हुई। … (व्यवधान) मैं तो बड़ी गंभीरता से जवाब दे रहा हूं, लेकिन मुझे बोलने नहीं दे रहे हैं। … (व्यवधान) जवाहर लाल नेहरू जी ने क्या कहा? … (व्यवधान) वहां घास का एक तिनका भी नहीं उगता है, उस जगह का क्या करोगे? … (व्यवधान) नेहरू जी का सिर मेरे जैसा था। … (व्यवधान) एक संसद सदस्य श्री महावीर प्रसाद त्यागी जी ने कहा कि आपके सिर पर भी एक बाल नहीं है, उसे भी चीन भेज दें क्या? … (व्यवधान)

मान्यवर, इस तरह से जवाब देते थे। … (व्यवधान) नॉन-सीरियस टाइप के जवाब देते थे। … (व्यवधान) कल गोगोई जी बड़ा उछल-उछल कर बोल रहे थे। … (व्यवधान) गोगोई जी, आपको मालूम है उन्होंने असम के बारे में क्या कहा था? … (व्यवधान) असम को आकाशवाणी पर बाय-बाय कह दिया था। … (व्यवधान)

श्री गौरव गोगोई (जोरहाट) : पूरे असम को पता है। … (व्यवधान) आप मिसलीडिंग मत कीजिए। … (व्यवधान)

श्री अमित शाह : इसकी रिकॉर्डिंग है। … (व्यवधान)

मान्यवर, मैं भी सहमत हूं कि पूरे असम को पता है। … (व्यवधान)

श्री गौरव गोगोई (जोरहाट) : गृह मंत्री जी, आप इसे ऑथेंटिकेट कीजिए। … (व्यवधान) आप sअपना पूरा भाषण ऑथेंटिकेट कीजिए। … (व्यवधान) आप अपना पूरा भाषण टेबल पर रखिए। … (व्यवधान)

श्री अमित शाह : मान्यवर, मुझे मालूम है कि पूरे असम को पता है। … (व्यवधान) इसीलिए, तो वे असम में विरोध पक्ष में बैठे हैं। … (व्यवधान) पूरे असम को पता है। … (व्यवधान)

मान्यवर, जोर से बोलने से सत्य को छिपाया नहीं जा सकता है। … (व्यवधान)

मान्यवर, मैं 'Selected Works of Jahawarlal Nehru, Series II, Volume 29' के पृष्ठ 231 से जवाहरलाल नेहरू जी के एक पत्र को क्वोट करना चाहता हूं। … (व्यवधान) "अनौपचारिक रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका ने यह सुझाव दिया कि चीन को संयुक्त राष्ट्र में तो ले लिया जाए, मगर सुरक्षा परिषद को नहीं, सुरक्षा परिषद में भारत को लेना चाहिए"। … (व्यवधान) यह अमेरिका का प्रस्ताव था। … (व्यवधान) नेहरू जी ने कहा "हम इसे स्वीकार नहीं करते, क्योंकि इससे चीन के साथ हमारे संबंध खराब होंगे और चीन जैसे महान देश को बुरा लगेगा"। … (व्यवधान)

मान्यवर, आज चीन सुरक्षा परिषद में है और भारत बाहर है। … (व्यवधान) मोदी जी भारत को अंदर ले जाने का प्रयास कर रहे हैं। … (व्यवधान) इसका कारण जवाहरलाल नेहरू जी का यह स्टैन्ड है। … (व्यवधान)

मान्यवर, यह तो पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलता आ रहा है। … (व्यवधान) राजीव गांधी फाउंडेशन ने चीन के साथ एमओयू कर लिया। … (व्यवधान) ये कहते नहीं हैं कि एमओयू में क्या था? … (व्यवधान) यह तो बताओ भाई कि राजीव गांधी फाउंडेशन ने क्या एमओयू किया था? … (व्यवधान) जब डोकलाम में हमारी सेना के जवान चीन की सेना के सामने उसकी आंख में आंख डालकर बैठे थे, तब चीन के राजदूत के साथ राहुल गांधी मीटिंग कर रहे थे। … (व्यवधान)

मान्यवर, ऐसा नहीं है, जवाहरलाल नेहरू, सोनिया गांधी, राहुल गांधी, तीन-तीन पीढ़ियों तक चीन का प्रेम उतरता जा रहा है। … (व्यवधान)

मान्यवर, मैं इस महान सदन के माध्यम से देश की जनता से एक बात कहना चाहता हूं, जो कि मेरी मान्यता है। … (व्यवधान) इस सारे आतंकवाद की जड़ पाकिस्तान है और पाकिस्तान कांग्रेस पार्टी की भूल है। … (व्यवधान) यदि ये पार्टिशन स्वीकार न करते, तो पाकिस्तान कभी न होता। … (व्यवधान) इन्होंने पार्टिशन को स्वीकार करके देश को तोड़ा है। … (व्यवधान)

मान्यवर, कल विदेश मंत्री जी शर्म अल-शेख सम्मेलन के बारे में बता रहे थे। … (व्यवधान) बलूचिस्तान ब्लंडर, जिसने पाकिस्तान को हमारे साथ चर्चा करने के लिए इक्वल फुटिंग पर ला दिया। … (व्यवधान)

(1300/SPS/SRG)

मान्यवर, अब ये टेररिज्म की बात करते हैं। मैं पूरे देश की जनता को टेररिज्म की विगत 20 साल की स्थिति से अवगत कराना चाहता हूं। अटल जी की सरकार थी और वर्ष 2002 में टेररिज्म को समाप्त करने के लिए अटल जी की सरकार, एनडीए की सरकार, भाजपा की सरकार पोटा का कानून लेकर आई। मैं सदन को याद करना चाहता हूं कि पोटा कानून का विरोध किसने किया? कांग्रेस पार्टी ने विरोध किया। हमारे पास राज्य सभा में बहुमत नहीं था और कानून गिर गया। हमें मजबूरन संयुक्त सत्र बुलाना पड़ा और पोटा कानून संयुक्त सत्र में पारित हुआ। यह देश नहीं भूल सकता है। आज भी कांग्रेस पार्टी के नेता जब बोलें, तब कहें कि पोटा कानून को रोककर आप किसको बचाना चाहते थे? पोटा कानून आतंकवादियों के खिलाफ था। पोटा कानून को रोककर अपनी वोट बैंक का उल्लू सीधा करने के लिए आप आतंकवादियों को बचाना चाहते थे।

मान्यवर, वर्ष 2004 में अटल जी की सरकार गई और मनमोहन सिंह तथा सोनिया गांधी की सरकार आई। उन्होंने आते ही पहला काम क्या किया, उन्होंने पहली ही कैबिनेट में पोटा कानून को रद्द कर दिया। मैं फिर से पूछता हूं कि किसके फायदे के लिए कांग्रेस पार्टी ने पोटा कानून रद्द किया? आप यहां पर जवाब दीजिए। इसके बाद क्या हुआ, दिसंबर, 2004 में पोटा कानून रद्द हुआ और वर्ष 2005 में अयोध्या में रामलला के टेंट पर हमला हुआ तथा आतंकवादी मारे गए। वर्ष 2005 में रामलला पर हमला, वर्ष 2006 में मुंबई ट्रेन धमाके हुए और 187 लोग मारे गए, वर्ष 2006 में डोडा-उधमपुर में हिंदुओं पर हमला हुआ और 34 लोग मारे गए, वर्ष 2007 में हैदराबाद में 44 लोग मारे गए, वर्ष 2007 में उत्तर प्रदेश के लखनऊ और वाराणसी में 13 लोग मारे गए, वर्ष 2008 में रामपुर सीआरपीएफ कैम्प पर हमला हुआ, वर्ष 2008 में श्रीनगर में आर्मी के काफिले पर हमला हुआ और 10 सुरक्षा बल मारे गए, वर्ष 2008 में मुंबई आतंकी हमला हुआ और 246 लोग मारे, जयपुर में 8 बम धमाके हुए और 64 लोग मारे गए, वर्ष 2008 में अहमदाबाद में 21 बम धमाके हुए और 57 लोग मारे गए, वर्ष 2008 में दिल्ली में पांच धमाके हुए और 22 लोग मारे गए, पुणे की जर्मन बेकरी में 17 लोग मारे गए, वर्ष 2010 में वाराणसी में धमाका, वर्ष 2011 में मुंबई में तीन धमाके हुए और 27 लोग मारे गए।

मान्यवर, आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई होती है और वे हमला करते हैं, लेकिन सवाल यह है कि उन्होंने वर्ष 2005 से वर्ष 2011 के बीच में 27 जघन्य हमले किए और करीब 1000 लोग मारे, लेकिन आपने क्या किया? … (व्यवधान) आप जवाब दीजिए कि आपने क्या किया? मैं राहुल गांधी जी को चैलेंज करना चाहता हूं कि इन आतंकवादी हमलों के खिलाफ उनकी सरकार ने जो कदम उठाए, वह देश की जनता को यहां खड़े होकर हिम्मत से बताएं। उन्होंने कुछ नहीं किया? ये यहां से आतंकवादियों की फोटो पाकिस्तान भेजते रहे, डोज़ियर भेजते रहे। ये कहते हैं कि आपके समय में भी हमले हुए हैं। मैं उनको अंतर समझाना चाहता हूं, क्योंकि वे देख नहीं पा रहे हैं। हमारे समय में जो भी आतंकवादी घटनाएं हुईं, वे पाक प्रेरित और कश्मीर-सेंट्रिक हुईं। देश के हिस्से में वर्ष 2014 से वर्ष 2025 तक एक भी घटना नहीं हुई है।

(1305/RHL/SM)

मान्यवर, यह नरेन्द्र मोदी सरकार है और कश्मीर में भी आज ऐसी स्थिति हुई है कि उनको पाकिस्तान से आतंकवादी भेजने पड़ते हैं, अब कश्मीर में आतंकवादी नहीं बन रहे हैं। मैं सलमान खुर्शीद जी को भी याद करना चाहता हूं। एक बार जब मैं सुबह नाश्ता कर रहा था तो टीवी पर उनको रोते हुए

देखा। मुझे लगा क्या हुआ? कोई बड़ी घटना हो गयी? वे रोते-रोते श्रीमती सोनिया गांधी जी के घर से बाहर आकर कह रहे थे कि बाटला हाउस की घटना देखकर सोनिया जी फूट-फूट कर रो पड़ीं। रोना था तो शहीद मोहन शर्मा के लिए रोते, क्या आपको बाटला हाउस के आतंकवादियों के लिए रोना आता है? … (व्यवधान) मान्यवर, ये हमसे पूछते हैं कि आपने क्या किया? इनको हमसे पूछने का कोई अधिकार नहीं है। … (व्यवधान) मान्यवर, अभी 25 प्रतिशत बाकी हैं। … (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : गृह मंत्री जी आपके प्रश्नों का जवाब दे रहे हैं। कृपया आप लोग बैठ जाएं। पहलगाम के बाद जो घटनाक्रम हुआ, उसका जवाब माननीय गृह मंत्री जी ने दे दिया है।

… (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आपने पूछा कि आतंकवादियों का क्या हुआ? उस प्रश्न का भी इन्होंने जवाब दे दिया है। अब आप क्या पूछना चाहते हैं? आपने जो सवाल पूछा है, उसका जवाब मिला। अब आगे का जवाब सुनिए।

… (व्यवधान)

श्री अमित शाह : मान्यवर, जो बैसरन के गुनहगार हैं, वे पाकिस्तान भाग गए। ये बड़ी ऊंची आवाज में पूछते थे कि 'भाग गए, भाग गए', गृह मंत्री क्या करते हैं, जिम्मेदारी नहीं लेते हैं। हमारी सेना ने तो आतंकवादियों को ठोंक दिया। सीआरपीएफ ने आतंकवादियों को ठोंक दिया। अब न तो मेरा जवाब देना बनता है और न उनका जवाब मांगना बनता है। … (व्यवधान) लेकिन मैं इनसे कुछ पूछना चाहता हूं। … (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आतंकवादियों को तो सेना ही मारेगी न, बीएसएफ ही तो उनको मारेगी। गृह मंत्री जी भी यही कह रहे हैं कि सेना और सीआरपीएफ ने मारा है।

… (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : कृपया बैठ जाइए। बैठिए।

… (व्यवधान)

श्री अमित शाह : मान्यवर, ये लोग मुद्दा उठाना चाहते हैं, तो जरूर उठाएं। मैं आज सुबह ही सलमान खुर्शीद जी का वह इंटरव्यू मेरे मोबाइल में सेव करके आया हूं। आप जब भी कहेंगे, मैं सदन में टीवी पर दिखाने के लिए तैयार हूं। … (व्यवधान) मैं इंटरव्यू सेव करके आया हूं। इनकी इच्छा है, तो कल एक समय तय करिए। आप यहां बता दीजिए और चारों टीवी पर देश की जनता भी देखे। … (व्यवधान)

मान्यवर, ये कह रहे हैं कि बताओ।… (व्यवधान) आप उनसे पूछिए कि बताना है या नहीं बताना है? … (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य कृपया बैठिए।

… (व्यवधान)

श्री अमित शाह : मान्यवर, इनसे पूछिये बताना है कि नहीं बताना… (व्यवधान)

(1310/KN/GM)

मान्यवर, ये पूछ रहे थे कि क्यों भाग गए? मेरा समय काफी जाया हो चुका है इसलिए मैं जरा संक्षिप्त में कहता हूं। मैं घटनाओं पर नहीं जाऊंगा। दाऊद इब्राहिम कासगर वर्ष 1986 में भागा, उस समय श्री राजीव गांधी की सरकार थी। सैयद सलाहुद्दीन वर्ष 1993 में भागा, उस समय कांग्रेस की सरकार थी। टाइगर मेमन वर्ष 1993 में भागा, उस समय कांग्रेस की सरकार थी। अनीस इब्राहिम कासकर वर्ष 1993 में भागा, उस समय इनकी सरकार थी। रियाज़ भटकल वर्ष 2007 में भागा, उस समय इनकी सरकार थी। इकबाल भटकल वर्ष 2010 में भागा, उस समय इनकी सरकार थी। मिर्जा शादाब बेग वर्ष 2009 में भागा,

उस समय इनकी सरकार थी। मान्यवर, मेरा तो जवाब मांग लिया, हमारे सुरक्षा बलों ने मेरा जवाब भी दे दिया, अब राहुल गांधी जी इसका जवाब दें। … (व्यवधान)

मान्यवर, अब मैं कश्मीर के विषय पर बात करना चाहता हूं। कल कहते थे कि गृह मंत्री ने भाषण दिया था कि 370 की कलम जाएगी तो आतंकवाद कम हो जाएगा। क्या हुआ? मान्यवर, मेरा हिसाब देना बनता है। हम भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता हैं। यह नरेन्द्र मोदी जी सरकार है। हम जनता के प्रति, संसद के प्रति और देश के हित में जवाबदेह हैं। मैं आज देश की जनता के सामने वर्ष 2004 से 2014 और वर्ष 2015 से 2025 – दस-दस साल का लेखा-जोखा रखना चाहता हूं। वर्ष 2004 से 2014 तक दस तक साल अखंड सोनिया-मनमोहन की सरकार थी। वर्ष 2015 से 2025 में अखंड रूप से नरेन्द्र मोदी जी सरकार है। वर्ष 2004 से 2014 के बीच कश्मीर में 7217 टेरर इंसिडेंट्स हुए थे। वर्ष 2015 से 2025 के बीच 70 प्रतिशत की कमी के साथ 2150 हो गए। वर्ष 2004 से 2014 के बीच 1770 नागरिकों की मृत्यु हुई और वर्ष 2015 से 2025 में कम होकर 357 हो गई, करीब 80 प्रतिशत की कमी हुई। उस वक्त सिक्योरिटी फोर्सेस की मृत्यु 1060 हुई और हमारे समय में 542 हुई। ये हमसे पूछ रहे हैं कि क्या हुआ? आप आंकड़ों से भाग नहीं सकते हैं। … (व्यवधान) अब मैं कहता हूं कि धारा 370 ने कश्मीर में आतंकवादी इको सिस्टम को नष्ट कर दिया है, जिस धारा 370 को आपने इतने सालों तक बचा कर रखा। हमने जीरो टेरर प्लान बनाया है, एरिया डोमिनेशन प्लान बनाया है, मल्टी लेवल डिप्लॉयमेंट किया है और सुरक्षा जेलें बनाई हैं। अब 98 परसेंट ट्रायल वीडियो पर हो रहे हैं। हमने संचार साधन बनाये हैं। हमने 702 फोन विक्रेताओं को जेल में डाला है और 2667 सिम कार्ड बंद किए हैं। एक जमाना था कि 10-10 हजार लोग जनाजे में निकलते थे। पूरे देश ने घटनाएं देखी होंगी। बुरहान वानी मर गए, फलां मर गए। अब जो मारा जाता है, उसको वहीं दफना दिया जाता है। किसी भी आतंकवादी को उसका महिमा मंडन करने के लिए जनाजे की इजाजत नरेन्द्र मोदी जी के शासन में नहीं है।

मान्यवर, हमने आतंकवादियों के सगे वाले और समर्थकों को चुन-चुन कर नौकरियों से निकाला है, पासपोर्ट रद्द कर दिए हैं, गवर्नमेंट कान्ट्रैक्ट रद्द कर दिए हैं, 75 से ज्यादा आतंकी समर्थकों को कोर्ट से ऑर्डर लेकर सरकार से बर्खास्त कर दिया गया है। बार काउंसिल उनके समर्थकों से भरी थी, हमने उसे संस्पैंड करके नया लोकप्रिय चुनाव कराया है।

(1315/ANK/GTJ)

मान्यवर, हमने कई संगठन बैन किए हैं, जिनके बारे में मैं बाद में बताऊंगा। हमने विशेष यूएपीए अदालतें बनाईं। हमने लगभग मार्च, 2022 से 2025 के बीच में यूएपीए के 2267 मामले दर्ज किए हैं और 374 मामले कुर्क किए हैं।

मान्यवर, ये पूछ रहे हैं कि इसका क्या परिणाम आया है। यदि शुतुर्मुर्ग वृत्ति से मिट्टी में सिर रखकर बैठोगे, तो सूर्य भी नहीं दिखेगा। मान्यवर, इसका परिणाम आया है। पहले, एक साल में 2654 ऑर्गेनाइज्ड स्टोन पेल्टिंग की घटनाएं होती थीं। वर्ष 2024 में इनकी संख्या जीरो हो गई है।

मान्यवर, ऑर्गेनाइज्ड हड़ताल के बारे में पहले पाकिस्तान से एलान किया जाता था और घाटी बंद रहती थी। अब पाकिस्तान की भी हिम्मत नहीं है। इनके समय में साल में 132 दिन घाटी बंद रहती थी। अब तीन सालों से ऑर्गेनाइज्ड हड़ताल की संख्या जीरो है।

मान्यवर, स्टोन पेल्टिंग में हर साल नागरिकों की मृत्यु 112 होती थी। अब तीन सालों से नागरिकों की मृत्यु की संख्या जीरो है। मान्यवर, स्टोन पेल्टिंग में पहले 6235 लोग जख्मी होते थे। आज उनकी संख्या जीरो है।

मान्यवर, आज मैं आपको बताता हूं कि यहां एक समय हुर्रियत के नेताओं को वीआईपी ट्रीटमेंट मिलता था। हुर्रियत के साथ चर्चा होती थी। जब ये हुर्रियत वाले आते थे, तो पूरा रोड खाली करके रेड कार्पेट पर सीधा आते थे और मनमोहन सरकार के दूत इनके साथ चर्चा करते थे। हमने हुर्रियत के सारे कंपोनेंट्स बैन कर दिए हैं। अब सारे जेल की सलाखों के पीछे हैं। हम हुर्रियत से कोई बात नहीं करना चाहते हैं। मैं सदन में श्री नरेंद्र मोदी जी की नीति दोहराना चाहता हूं। हुर्रियत टेररिस्ट संगठनों के आउटफिट हैं। हम इनसे बात नहीं करेंगे। यदि हम किसी से बात करेंगे, तो घाटी के युवाओं से बात करेंगे।

मान्यवर, चुनावों के दौरान डर का माहौल होता था। अब पंचायत चुनाव में 98.3 प्रतिशत मतदान हुआ है। कांग्रेस के बंद बहिष्कार का समय बंद हो गया है। पहले सेपरेटिस्ट्स बात करना चाहते थे। अब वे नहीं कर सकते। मान्यवर, वर्ष 2019 के बाद हमने जो संगठन बैन किए हैं, मैं उनके बारे में बोलना चाहता हूं। टीआरएफ, पीपुल्स एंटी फासिस्ट फ्रंट, तहरीक-उल-मुजाहिदीन, जमात-उल-मुजाहिदीन बांग्लादेश हिंदुस्तान, जम्मू-कश्मीर गजनवी फोर्स, खालिस्तान टाइगर फोर्स, हिज्ब-उत-तहरीर, जमात-ए-इस्लामी, जिस जमात-ए-इस्लामी ने पूरे पाकिस्तान के अंदर एक प्रकार से अलगाववाद का जहर घोला, वह जमात-ए-इस्लामी आज बंद कर दिया गया है। जम्मू-कश्मीर लिबरेशन फ्रंट, जम्मू-कश्मीर डेमोक्रेटिक फ्रीडम पार्टी, मुस्लिम लीग जम्मू कश्मीर, तहरीक-ए-हुर्रियत, मुस्लिम कॉन्फ्रेंस, मुस्लिम कॉन्फेंस (सुमजी गुट), जम्मू-कश्मीर नेशनल फ्रंट, जम्मू-कश्मीर पीपुल्स फ्रीडम लीग, जम्मू-कश्मीर पीपुल्स लीग, जम्मू-कश्मीर इत्तिहादुल मुस्लिमीन, अवामी एक्शन कमेटी, सीक फॉर जस्टिस और पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया को भी हमने बैन किया है। यह शांति ऐसे ही नहीं हुई है। ये कहते हैं कि एक भी घुसपैठ नहीं होती है। क्या आप वहां कभी गए हैं? गोगोई जी, आप पाकिस्तान को कई बार गए होंगे। क्या आप सीमा पर गए हैं? ... (व्यवधान) मैं फिर से बोलता हूं कि आप पाकिस्तान तो कई बार गए होंगे। क्या आप सीमा पर गए हैं? क्या आप सीमा के माध्यम से पाकिस्तान गए हैं? आप हमारे जवानों की कठिनाई देखिए कि माइनस 43 डिग्री में पहाड़ पर रहकर, नदी-नालों के बीच में चौकसी करते हैं। कोई घुस गया तो क्या हुआ? कोई घुस गया, तो वह बचेगा नहीं। हम उसको यहां या तो अरेस्ट करेंगे या फिर वह एनकाउंटर में मारा जाएगा, बचेगा कोई नहीं।

इनको सीमा की भौगोलिक कठिनाइयां नहीं मालूम हैं। मान्यवर, वहां कई नदी-नाले हैं। पानी वेग से आता है। माइनस 43 डिग्री तापमान है। वे नीचे सुरंगे बनाते हैं। ये ऐसे कह रहे हैं कि घुस गए-घुस गए। अरे भई, आपके समय में तो घुसने की जरूरत ही नहीं थी।

(1320/RAJ/RCP)

आप उनको वीजा देकर बुलाते थे, तो वे क्यों घुसेंगे? उनको घुसने की जरूरत ही नहीं थी। जैसे आप पाकिस्तान जाते हो, वैसे ही वे यहां आते थे। मान्यवर, अब ये हमें कैसे पूछ सकते हैं?…(व्यवधान)

मान्यवर, मैं समझ रहा हूं कि पोटा कानून का विरोध करने वाले को नरेन्द्र मोदी जी की आतंकवादी विरोधी नीति पसंद नहीं आई। मैं समझ रहा हूं कि पोटा कानून रद्द करने वाले को नरेन्द्र मोदी जी एंटी-टेरर नीति पसंद नहीं है। मैं समझ रहा हूं कि टेररिस्टों का बचाव कर वोट बैंक बनाने वालों को ये कोई नीति पसंद नहीं आएगी। मान्यवर, इसका विरोध ही होना है, परंतु मैं आज एक बात यहां सदन के सामने आपके माध्यम से सदन और दुनिया को बताना चाहता हूं कि यह नरेन्द्र मोदी सरकार है, टेररिज्म के खिलाफ हमारी जीरो टॉलरेंस की नीति है और हम विजयी होंगे।…(व्यवधान)

मान्यवर, मैं फिर से 'ऑपरेशन महादेव' में जुड़े हुए सेना, सीआरपीएफ और जम्मू-कश्मीर पुलिस के सभी जवानों को दोनों हाथ जोड़ कर प्रणाम करते हुए बहुत-बहुत साधुवाद देता हूं।

(इति)

1322 hours

SHRIMATI KANIMOZHI KARUNANIDHI (THOOTHUKKUDI): Thak you, Sir. … (*Interruptions*) The House is not in order. … (*Interruptions*)

माननीय अध्यक्ष : हाउस ऑर्डर में हो जाएगा। प्लीज, आप सभी अपनी-अपनी सीट्स पर बैठिए।

…(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : प्लीज, आप सभी अपनी-अपनी सीट्स पर बैठिए।

SHRIMATI KANIMOZHI KARUNANIDHI (THOOTHUKKUDI): Sir, I take this opportunity to thank my party for giving me this opportunity to speak on this very important issue. I would like to say that the Home Minister in his speech pointed out and made it sound as if we are less patriotic. We have never failed this nation. The DMK was the first party which took out a rally in support of our Defence Forces. Mr. Muthuvel Karunanidhi Stalin was the first Chief Minister to take out a rally in support of our Defence Forces. … (*Interruptions*)

1323 hours (Shri Dilip Saikia *in the Chair*)

I would like to bring to the attention of this House that when you called for an all-Party Leaders' Meeting, the leaders from the Opposition parties came to the meeting and said that 'we stand with you'. We stood with this country. You are against us. I think you go back, rewrite and reinvent history in all your speeches. I do not think that even the Congress people remember Jawaharlal Nehru ji as much as you do. But I should thank you for that. This is because of you so many young people in Tamil Nadu have gone back to read Periyar and Ambedkar. Today, all over the world, young people are finding out and wanting to know more about Jawaharlal Nehru ji because he was a person who had such a power to change history, to do everything. Imagine having such kind of a power till today. Whatever mistakes you commit is because of him. So, people are really so intrigued by that great leader that students are going and reading about him. So, I think, the Congress and the Opposition must be grateful to you.

(1325/HDK/NK)

Sir, I would also like to take this opportunity to thank the Government for sending the delegations out and giving the opportunity to me to lead a delegation. The Minister is here.

HON. CHAIRPERSON (SHRI DILIP SAIKIA): Hon. Members, please be seated.

… *(Interruptions)*

माननीय सभापति: माननीय सदस्यगण, प्लीज बैठ जाइए।

… (व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: No, you are not allowed.

… (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: You are not allowed, Tagore sahib. Please be seated.

Madam, please continue with your speech.

…*(Interruptions)*

SHRIMATI KANIMOZHI KARUNANIDHI (THOOTHUKKUDI): Sir, I think for the first time, the BJP has shown some confidence in the Opposition and they have sent us out as leaders of delegation, as part of delegation, to represent this country. I thank them. But also, I would like to say that if an opportunity to lead this delegation did not arise, we would have been happier and more grateful. Why did these delegations have to go? Why did this attack have to happen? Sir, some opportunities are not to be celebrated but to be mourned for they arrive, where peace has failed us and it stems from the deepest of pain. We had to go on these delegations because peace had failed us and you had failed the people of India.

Sir, today it has become a blame game. Even the Home Minister in his speech was only intending and concentrating on blaming the Opposition. You should understand that, as you proudly say, you are here in power in the third term. Yesterday, the Home Minister, in one of his interventions said that 'we are going to be here for another 20 years.' We do not mind being here for another 20 years. In democracy the people are the greatest and they have the supreme power. If people want to keep us here, we will bow our heads in front of them and stay here. But it should not be the Election Commission and SIR which is keeping us here. We need to protect democracy. I hope that the next discussion will be about protecting democracy and the election system in this country.

Sir, the Prime Minister was there in Tamil Nadu. Suddenly, they have discovered, before every election they discover, great love and pride in Tamil Culture. But just a few months before that, they do not want to accept the greatness of the Keeladi findings. You do not want us to talk about the

greatness of Tamil Nadu, whereas our Chief Minister says that from Tamil Nadu is where the history of India shall be written.

You came to Gangaikonda Cholapuram. Remember the name – 'Gangaikonda Cholapuram. *[He was the one who conquered the Ganges. He was the one who was victorious over the Ganges. Please do remember a Tamil can win Ganges.]

Sir, you keep saying that you are 'Vishwa Guru'. I want to know what the Vishwa Guru does every time there is an attack. It is not for the first time. Just this year, in May 2024, in Jaipur there was an attack on pilgrims; 33 were injured and nine people died because of that terrorist attack. Again in October, there was an attack. In November there was an attack in Srinagar, and in April, in Pahalgam. In Pulwama, they brought 240 kilograms of RDX. We do not have any answers. Every time there is an attack, you say it will not happen again. What has the Vishwa Guru learnt? The Vishwa Guru is not teaching anybody anything. But what have you learnt? You have not even learnt humility. When Mumbai attack happened, the Prime Minister of this country came out and apologised to the people of this country saying that the attack should not have happened and we should have prevented it.

(1330/PS/IND)

Learn humility from him. He is no more.

Who takes the responsibility for what happened to the people in Pahalgam? They were innocent tourists. They believed you and trusted you and came there thinking it is a safe place. But they lost their lives, their loved ones. Have you reached out to these victims actually? What compensation has the Union Government given them? The responsibility is shifted to the State Governments. It is the State Governments which have to take care of them. What has the Union Government done? Nothing!

When we went to Spain, it was so heartening to see that the Government was supporting the NGOs, the organisations, which were taking care of more than 4000 terror victims. These terror victims are not only the people who die or lose limbs, but it is their families and it is their children. The pain is there for generations. What have you done for the terror victims of this country? Do we have such organisations? Do we have such support groups?

* Original in Tamil

But even if there are support groups, you will say that the funding is coming from somewhere else, it is something else and it is for some religious conversion, and you will be arresting people. You will not be supporting it.

When the Home Minister spoke, he spoke about what great achievements they have made in Jammu and Kashmir. I would like know what the Department was doing when the RAW and IB said that there were suspicious activities there and there were terrorists who were trying to do recce to find out what is happening, and that there were movements. But nothing was taken seriously. Why did we let it slip?

A US-based company was getting repeated requests for maps of that place and one of the companies which was making the request was from Pakistan. That should have raised a red flag. How did you miss that? You cannot keep talking about Operation Sindoor and make us forget all these questions. This is a failure of your Government to protect the people. Do not go back and keep blaming something which happened 100 years ago, or 50 years ago, or 25 years ago. Talk about today. The Government is in your hands. You are responsible for the people of this country. Why did you not protect them? Why did you fail?

You made Kashmir into a Union Territory. But you have cut the budget for the policing there by Rs. 464 crore. It is a territory which has to be protected and for over eight years, there has been a delay in posting 4,000 constables. What kind of protection are we talking about? What kind of security are we talking about?

We all believe that Kashmir depends on tourism. The Chief Minister was so happy to see that again tourists are coming there. But people invested in hotels, in restaurants, in homestays so that tourists will come and they will have a better life. But today, 13 lakh bookings have been cancelled. What happens to the life of these people who have taken bank loans and who have borrowed and invested? How are you compensating them? Do you even care about them?

I would like to remind you that India stood together. I give you credit for sending us. You would not have thought which religion we belonged to; which language we spoke; and which Party we came from; we are from East, West, South, North. But we stood with you. The Opposition stood with you. We stood

with the soldiers. We stood with you. We stood with the country. We had Muslims in the Delegation. We had Christians in the Delegation. We had atheists in the Delegation. We have people from different parts of this country.

(1335/SNL/KDS)

We all went together and stood for India. You realised this when you had to convince the international community. But why is your politics in India so divisive? Why are you dividing this country by politics? Why are you basing it on religion? Hate speeches by your own leaders has gone up by 74 per cent. A Media which brings it to notice is “against India”. Anybody who asks questions against you are “anti-national”, “Naxals”. Any Media house outside the country or within the country questions you, raises a doubt, is “against this nation”. Why? Why do you want to divide this nation? We want this nation to be one. You should decide whether you want it to be one or not. Do not divide us. Unity is our strength and we shall stand together.

I want to know what you did to the Minister who shamed Col. Sophia Qureshi? A Minister from Madhya Pradesh said something atrocious against a person who has given her life to protect this country. Another member of the BJP shamed the victims, saying that they did not have the spirit of warriors. Who decides what is the spirit of a warrior? What action have you taken against these people? Nothing. Has any leader condemned them? No. Your own officer, Mr. Vikram Misri’s, family was trolled, condemned and insulted. Did somebody come out in support?

Sir, you should understand that dividing this country, not standing by its people, when they need them, is not what we expect out of our Government. We stand by you, yet you do not trust us, you do not believe us. Before “Operation Sindoor” everybody came together, said we stand by you. After that, we all rallied behind you and said, “We justify what the Government did, We stand by the Government of India.” Have you ever invited the leader from the Opposition after that and explained to us. what happened? I want to believe you, but I do not.

*I am not ready to accept you in any way. Whether it is your ideology or the poisonous seeds you sow in this country, they are to be uprooted. I do not have any second thought on this. But if it is our nation, I believe in the

* Original in Tamil

Sovereignty of our country. Head of some other country have time and again said this. Referring to himself he said this at least 25 times that it was “Me”, “Me”, “Me” who brought ceasefire between India and Pakistan.

I do not want to believe him; I want to believe you. But what narrative have you set for me to believe. I want to believe you. I want to believe my Government, but he has said it 25 times. What reply have you given? Why do have to just suffer in silence and take it? Is this your foreign policy? A Prime Minister has travelled to practically every country in the world. He is practically not here. Even when the Parliament is functioning, but he is not here. That is how it is and we have a person from foreign service, our External Affairs Minister.

(1340/SMN/CS)

He speaks very well but what have we achieved when it comes to diplomacy? Even Pakistan is getting support from two countries. Has anybody come out openly and condemned what Pakistan did on this soil? It continues to do the same. Is this your foreign policy? Do we have no friends? Why is it that we do not have any friendly neighbour? We do not have any friends. We do not have anybody to come out and openly support us and condemn a country which is sponsoring terrorism against India. Have you not failed in your diplomacy? I have examples from Tamil Nadu. I think you have the best relationship with Sri Lanka today. You even landed an amazing deal for one of your friends which the Congress, I think, sadly was not capable of doing when it was in power. But you have achieved that. But still our fishermen get arrested everyday and our Chief Minister has to write to you. Their boats are not released. Why can you not use your good offices for the people of this country, not only for your friends? Is this not a failure in your diplomacy?

You talk about technology; you talk about all our achievements. Are we actually prepared to face wars? Now, nobody wants war.

*War is against humans and humanity.

We do not want war but it does not mean we have to remain unprepared. You should understand. Your own defence officers have said that they have to upgrade. The Standing Committee has recommended three per cent of the Budget should be for Defence but where are we now. It is not even two per

* Original in Tamil

cent of the Budget. This world is not such a peaceful place that we do not have
to be protected, that we do not have to take care of our people or our security. You are not prepared.

Today, in war, drones are being used. Are you prepared for it? There were drones in the recent incident. Are you prepared? Have you upgraded for it? Our war was just not against Pakistan. Our war was much more than that. I hope and I am sure you will realise it. There was a bigger country fighting a proxy war and supporting them. Are we prepared to face them? Should we not upgrade, understand and be prepared to face them?

I would like to end my speech saying that the Vishwaguru has failed us; the Vishwaguru has not learnt any lessons; and the Vishwaguru has not taught any lessons. I can call this Government an extension Government because all the officers are on extension. You do not trust your own officers. If it is RAW, there is extension given; if it is IB, there is extension given; and if it is ED, there is extension given. What is the need? Do you not trust the second line of your officers? There is no point saying that I am the greatest in this world and I lead.

I would like to say valour is not a sword soaked in blood and bloodied victory but it is in the silence of our battlefield that never summoned. The fiercest leader is not the one who fights to win but the one in whose presence no war can begin.

*Gangaikonda Cholan was such a leader and such a King. You came to Tamil Nadu. I believe you have learnt your lesson from your visit. Thank you. Vanakkam.

(ends)

(1345/MNS/RP)

माननीय सभापति (श्री दिलीप सैकिया) : माननीय सदस्य श्री अखिलेश यादव जी।

* Original in Tamil

1345 बजे

श्री अखिलेश यादव (कन्नौज) : माननीय सभापति जी, मैं आपको धन्यवाद देता हूं कि आपने मुझे बहुत महत्वपूर्ण विषय पर बोलने का मौका दिया। मैं अभी तमिलनाडु की डीएमके की माननीय सदस्या कनिमोझी जी को सुन रहा था। मैं उनको धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने कई महत्वपूर्ण बातें रखी और उनकी अच्छी बातों के लिए उन्हें अभी भी बधाई मिल रही है। हमें इस बात की खुशी है कि विपक्ष के लोगों को बधाई मिल रही है, लेकिन सत्ता पक्ष के लोग जब बोलकर जा रहे हैं तो उनके सदस्य भी उनको बधाई नहीं दे रहे हैं।

1346 बजे (माननीय अध्यक्ष पीठासीन हुए)

अध्यक्ष महोदय, मैं आपको भी धन्यवाद देता हूं, क्योंकि मैं उनकी बात सुन रहा था। उनकी बात सुनने से मुझे कुछ याद आया। मैं दो लाइनों में कुछ कहना चाहता हूं। मैं ये लाइनें भारतीय जनता पार्टी के लिए कह रहा हूं कि मैं दुनिया को मनाने में लगा हूं, मेरा घर मुझसे रुठा जा रहा है।

अध्यक्ष महोदय, बात शुरू करने से पहले मैं सबसे पहले भारत की सेना को आभार और धन्यवाद देना चाहता हूं। अगर दुनिया में साहसी फौजों में किसी की गिनती होती है, तो हमारी भारत की सेना सबसे आगे दिखाई देगी। उनके पराक्रम, वीरता और अदम्य शौर्य पर हम सबको गर्व है। कोई ऐसा भारतीय नहीं होगा, जिसको गर्व न हो। हमें अपनी फौज पर गर्व है। हमें इस बात के लिए भी गर्व है कि जब सेना ने अपना ऑपरेशन शुरू किया तो पाकिस्तान के जितने भी आतंकी कैंप थे, उन पर अटैक किया गया। उन्होंने न केवल पाकिस्तानी कैंपों को नष्ट किया, बल्कि पाकिस्तानी एयर बेस तक पहुंच कर उनको भी नष्ट किया, ध्वस्त किया। हमारी फौज पाकिस्तान को हमेशा-हमेशा के लिए एक पाठ पढ़ा सकती थी, जिससे एक ऐसा संदेश जाता कि भविष्य में पाकिस्तान कभी यह हिम्मत नहीं जुटा पाता।

अध्यक्ष महोदय, जब हम बड़े-बड़े राष्ट्रीय चैनलों को देख रहे थे, तो हमें भी उन चैनलों से ऐसा लग रहा था कि कराची हमारा हो गया है, लाहौर हमारा हो गया है। किसी चैनल ने किसी को यह बताया कि हमने उनको पकड़ भी लिया है। कमेंट्री और विजुअल्स से ऐसा लग रहा था कि अब पीओके हमारा हो जाएगा। हालांकि मैं सरकार के इंजनों को टकराता हुआ देखता हूं। यह मेरा भ्रम भी हो सकता है, लेकिन पीओके के मामले में सभी इंजन हमें एक दिखाई देते हैं और जहां पीओके पर पहुंचने तक की बात थी, कुछ लोग तो यह कह रहे थे कि हमें छह महीने का मौका मिल जाए तो पीओके पर हमारा कब्जा हो जाएगा।

(1350/RV/RTU)

आखिरकार, सरकार पीछे कैसे हट गयी? क्या कारण था कि सरकार को सीजफायर का ऐलान करना पड़ा?

अध्यक्ष महोदय, हमें उम्मीद थी कि सरकार सीजफायर का ऐलान करेगी, लेकिन इनकी मित्रता बहुत गहरी है। उसका परिणाम यह है कि इन्होंने अपने मित्र से यह कहा कि आप ही सीजफायर को अनाउंस कर दीजिए, हमारी कोई जरूरत नहीं है, हम सीजफायर आपके कहने से ही स्वीकार कर लेंगे।… (व्यवधान) आखिरकार, किस दबाव में सरकार यह स्वीकार कर रही है?

अध्यक्ष महोदय, वैसे तो, आज जिस विषय पर बोलने के लिए मैं खड़ा हुआ हूं, दरअसल वह विषय होना ही नहीं चाहिए था। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि आज़ादी के इतने सालों के बाद भी ऐसे मुद्दे बने हुए हैं। यह बात पक्ष-विपक्ष की नहीं है, देश की सुरक्षा की है, जनता के जीवन और रक्षा की है। हम सब मिलकर कोई ऐसी नीति या रणनीति क्यों नहीं बनाते हैं, जिससे सीमाएं हमेशा-हमेशा शांत रहें? पहलगाम की घटना ने साबित कर दिया है कि लापरवाही देशवासियों की जानें ले सकती है।

अभी मैं सुन रहा था। बहुत ही उत्तेजित भाषा में जवाब मिल रहा था। उत्तेजित भाषा में इसलिए बोलते हैं कि जनता सम्मोहित हो जाए, जनता स्वीकार करने लगे। लेकिन, सच्चाई यह नहीं है। आप कितना भी उत्तेजित होकर बोलें, देश की जनता समझ रही है। यह सही है कि आप शासन करने के लिए जनता के इमोशंस का लाभ उठा रहे हैं। सरकार, जनता के इमोशंस का लाभ उठाती है।

मुझे याद है कि जिस दिन पहलगाम में हमला हुआ, उस दिन वहां के हर पर्यटक कह रहे थे कि खतरों के बीच मेरी रक्षा करने वाला वहां कोई क्यों नहीं था? आखिरकार, सबके मन में यही सवाल है कि जिस समय यह घटना हुई, उन्हें उस समय कोई बचाने वाला क्यों नहीं था। जो सरकार यह दावा करती है, अनुच्छेद 370 को हटाने के बाद सरकार ने यह कहा कि भविष्य में कोई आतंकवादी घटना नहीं होगी, वहां टूरिज्म बढ़ेगा। जितने लोग वहां गए, वे सरकार के भरोसे पर गए थे। वे सरकार के आश्वासन पर गए थे। आखिरकार, सिक्योरिटी लैप्स की जिम्मेदारी कौन लेगा?

अध्यक्ष महोदय, सबसे बड़ा सवाल यही है कि सिक्योरिटी लैप्स के लिए जिम्मेदार कौन होगा? इसकी जिम्मेदारी कौन लेगा? पहलगाम की घटना हमारे इंटेलिजेंस फेल्योर की वज़ह से है। उन्होंने वहां मैदान को खुला छोड़ दिया। वह तो सरकार जानती होगी कि फोर्सेज को वहां आने में कितना समय लगा होगा। आखिरकार, यह जिम्मेदारी किसकी है? फिर, सरकार को यह जरूर बताना चाहिए कि सरकार क्या-क्या कदम उठा रही है कि भविष्य में ऐसी घटना न हो, क्योंकि पहलगाम से पहले पुलवामा में भी घटना हुई। पुलवामा की घटना के समय भी यही बात रखी गयी थी कि यह इंटेलिजेंस फेल्योर है। उस समय इंटेलिजेंस फेल्योर की किसकी जिम्मेदारी थी, यह किसी को नहीं पता है। अगर इंटेलिजेंस फेल्योर पहले था, तो पहलगाम में भी वही इंटेलिजेंस फेल्योर था। यह पूरे देश की जनता जानती है। आखिरकार, इसमें किसकी जिम्मेदारी बनती है?

(1355/MY/UB)

जो लोग बड़ी-बड़ी बातें करके चले गए, आज देश के सामने एक महत्वपूर्ण सवाल है, कम से कम उसका जवाब सरकार की तरफ से आना चाहिए। हमारी सीमा पर जो सुरक्षा व्यवस्था है, देश की रक्षा करने वाले हमारे सेना के लोग हैं, वे हमारी सीमाएं सुरक्षित रखते हैं, लेकिन हमारे भारत का क्षेत्रफल क्या है? सरकार को कम से कम इस सदन और देश की जनता को जानकारी देनी चाहिए। जिस समय भारतीय जनता पार्टी सरकार में आई और आज जब हम इस सदन में चर्चा कर रहे हैं, तो हमारे भारत का क्षेत्रफल क्या है? कम से कम हमें क्षेत्रफल पता होना चाहिए।

जब हम सवाल पूछते हैं और जो सवाल पर्यटक पूछ रहे थे कि कुछ लोगों को सरकार की ओर से चारों तरफ से चाक-चौबंद सुरक्षा घेरा क्यों दिया जाता है? वे बाद में... (*Expunged as ordered by the Chair*) साबित होते हैं। वहां हमारी रक्षा क्यों नहीं की गई?

महोदय, पहलगाम घटना के दूसरे ही दिन जिस तरह से राजनीतिक कार्टून बनाया गया, उससे भारतीय जनता पार्टी के लोग लाभ लेना चाहते थे। हम सब ने देखा कि पहलगाम के दूसरे दिन ही जिस तरह का राजनीतिक कार्टून भाजपा के ऑफिशियल हैंडल से पब्लिश किया गया और हमारे द्वारा घोर आपत्ति किए जाने पर उसे हटाया गया। उसने साबित कर दिया कि भाजपा के लोग भी जानते हैं कि दुख की इस घड़ी में उन्होंने देश की भावनाओं के साथ बेहद शर्मनाक खिलवाड़ किया है। भाजपा बताए कि ऐसे संवेदनहीन लोगों के खिलाफ उन्होंने क्या कार्रवाई की है? यह अति गंभीर प्रश्न है। जिन्होंने अपने को खोया है, उन पर दबाव डाल कर बयान भले ही बदलवा दिया जाए, लेकिन भाजपाई याद रखे कि बयान बदलवाने से सच नहीं बदल जाता है। पहलगाम के शहीद सैनिक की पत्नी द्वारा देशहित में शांति और सौहार्द के अपील करने पर उनसे जिस तरह का दुर्व्यवहार किया गया और उनके लिए अशब्द कहे गए, उससे हर महिला और सच्चा देशप्रेमी बहुत दुखी है। इससे हम आहत और शर्मिंदा हुए हैं। ये सब जानते हैं कि यह किन लोगों की हरकत थी। इस संदर्भ में हमने महिला आयोग से भी पुरजोर अपील की थी कि वह नारी की गरिमा के विरूद्ध गलतबयानी करने वालों के खिलाफ केवल शाब्दिक औपचारिकता न निभाए, बल्कि सही तरह से कार्रवाई करें। लेकिन, उस पर भी सरकार ने कुछ नहीं किया। पहलगाव के पीड़ित महिलाओं के बारे में कहे गए बयान के लिए निंदनीय शब्द तक को भी आपत्ति होगी। नारी वंदन की जगह नारी का अपमान, निंदा और हर समय शोषण एवं उत्पीड़न करना ही ... (*Expunged as ordered by the Chair*) पहलगाव में हुए आतंकवादी हमले के जवाब में एलजी साहब ने कहा कि वह इंटेलीजेंस फेल्योर है, लेकिन उन्होंने यह नहीं बताया है कि यह फेल्योर क्यों हुआ है।

अध्यक्ष महोदय, मैं उम्मीद करता हूं कि सरकार का जवाब जरूर आए कि यह फेल्योर क्यों हुआ है। 'ऑपरेशन सिन्दूर' के नाम पर जो प्रचार किया गया, वह भी निंदनीय है। सच तो यह है कि 'ऑपरेशन सिन्दूर' का होना ही सरकार की विफलता का प्रतीक है। इससे बड़ी विफलता सरकार की कोई नहीं हो सकती।

अध्यक्ष महोदय, हम और आप, सब मिल कर तथा यहां बैठ कर 'ऑपरेशन सिन्दूर' पर बहस एवं चर्चा करें। 'ऑपरेशन सिन्दूर' के दौरान विदेशी लोगों ने दावा किया कि उन्होंने उसे रुकवाया है। यह बात कई बार माननीय सदस्यों की तरफ आई है। आखिरकार इसे कितने रुकवाया? आज हमारी संप्रभुता खंडित हुई है। संप्रभुता ही स्वतंत्रता को सुरक्षित करती है। इधर 'आजादी के अमृत काल' का ढ़िढोरा पीटा जा रहा है, उधर हमारी इंटीग्रिटी को चुनौती दी जा रही है।

(1400/GG/NKL)

देश की विदेश नीति पूरी तरह फेल है। ऑपरेशन सिंदूर और पहलगाम की घटना पर दुनिया के किसी भी देश ने हमारा साथ नहीं दिया। यह हमारी विदेश नीति का संकट काल है। हमारे पड़ोसी देश या तो अतिक्रमण कर रहे हैं या हमारे साथ नहीं खड़े हैं।

अध्यक्ष महोदय, यहां पर हमारे मंत्री जी बैठे हुए हैं, जिनका क्षेत्र बिल्कुल सीमा पर है। उनसे बेहतर कोई नहीं जानता होगा कि आखिरकार पड़ोसी देश हमारी सीमाओं पर कितना अतिक्रमण कर रहा है। समाजवादियों ने हमेशा देश की सरकारों को चेताया है कि असली चुनौती और प्रतिद्वंद्वता किस देश से है। कौन पूर्वोत्तर की सीमाओं पर एनक्रोचमेंट कर रहा है। सरकार को ऐसे मामलों में साहस और समझदारी से काम लेना होगा। सीमाओं से समझौता नहीं करना चाहिए। आज सरहदों के साथ देश के कारोबार को भी चुनौती मिल रही है। सरकार को आगे बढ़ कर उसका समाधान करना है। दो कदम पीछे करने नहीं हैं।

अध्यक्ष महोदय, जो हम लोगों को सुनने में मिलता है कि यह सरकार जवाब दे कि आखिरकार जो पाकिस्तान है, उसके पीछे कौन सा देश खड़ा है? आखिरकार हमें चीन से उतना ही खतरा है, जितना हमारे देश में आतंकवाद से खतरा है। सरकार की जो नीतियां हैं, सरकार के जो फैसले हैं, वे कहीं न कहीं ऐसे हैं कि जो हमारी सीमाओं का अतिक्रमण कर रहा है, उसी की व्यापारिक गतिविधियों में मदद करने का काम करते हैं। सरकार को अपनी आर्थिक नीतियों के लिए गंभीरता से पुनर्विचार करना होगा। हमारा व्यापार कारोबार मज़बूत होगा तो कोई हमें चुनौती नहीं दे पाएगा। बात केवल ट्रिलियन डॉलर की नहीं, बल्कि देश की सुरक्षा और आत्मनिर्भरता की होनी चाहिए। एक तरफ स्वदेशी की नीति को इस सरकार ने ताक पर रख कर फ्री ट्रेड की बात की है तो दूसरी तरफ मैन्युफेक्चरिंग की जगह देश को ट्रेडर कंट्री बना कर छोड़ दिया है। यही देश की बेरोज़गारी की वजह भी है। ट्रेडर्स की मुनाफाखोरी और चंदावसूली की वजह से मंहगाई बढ़ रही है। आर्थिक मामलों में यह सरकार पूरी तरह फेल हो चुकी है। भ्रष्टाचार के कारण हर जगह सड़कें और पुल ध्वस्त हो रहे हैं, टंकियां गिर रही हैं और करप्शन जगह-जगह लीक हो कर टपक रहा है। मैं इस समय पर यह ज़रूर कहना चाहूंगा कि सरकार को अपनी राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक नीतियों के लिए एसआईआर ज़रूर करवाना चाहिए। सरकार को अपनी राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक नीतियों के लिए एसआईआर लाने की ज़रूरत है। वह हर बार यह कह कर नहीं बच सकती है कि चूक हुई है। क्योंकि हर बार सरकार यह कोशिश करती है कि हम इन घटनाओं को केवल चूक कह कर बच जाएं। हमारी सीमाएं जो पाकिस्तान से जुड़ी हैं, वहां तो आतंकवाद का हमेशा खतरा ही रहता है, लेकिन जो दूसरी सीमाएं हमारे देश की जुड़ी हुई हैं, उनसे भी हमारे देश को लगातार खतरा बढ़ता चला जा रहा है। आज अपनी सीमा की स्थिति गलवान के पहले की स्थिति तक भी नहीं लौटी है। जो पहले स्थिति थी, वहां यह सरकार नहीं पहुंच पाई है। वास्तविक नियंत्रण रेखा के कई क्षेत्रों में महत्वपूर्ण बफर जोन जब भारतीय गश्ती के लिए उपलब्ध नहीं है, तो पूर्वी लद्दाख में अतिरिक्त भारतीय

तैनाती जारी है। जिससे सेना को सैनिकों की भारी कमी का सामना पड़ रहा है। हमें उम्मीद है कि जब इतने महत्वपूर्ण समय पर बहस हो रही है, तो सरकार अपनी अग्निवीर वाली योजना को वापस लेने का काम करेगी, जिससे कम से कम सेना की कमी पूरी हो सके और हमारी सेना को पूरी की पूरी सेना मिल सके। जनवरी में वार्षिक प्रेस वार्ता में जब सेना प्रमुख से यह पूछा गया तो उन्होंने जवाब देते हुए कहा कि गश्ती से जुड़े फैसले अब स्थानीय कमांडरों पर छोड़ दिए गए हैं।

(1405/YSH/VR)

भारत की सीमाओं की पवितत्रता अब राजनीतिक नेतृत्व का नहीं, बल्कि स्थानीय सेवा अधिकारियों का मामला रह गया है। इस पर भी सरकार को बहुत गंभीरता से सोचना पड़ेगा कि लगातार हमारी सीमाओं का एनक्रोचमेंट हो रहा है। चीन ने भारतीय वाहन निर्माताओं के लिए आवश्यक दुर्लभ खनिजों की आपूर्ति रोक दी है। हमने सुना है कि बुलेट ट्रेन प्रोजेक्ट के लिए सुरंग खोदने वाली मशीनें, डीएपी जैसे उर्वरक और यहां तक कि कई बड़ी कंपनियों को रणनीति के तहत उनकी सप्लाई रोकने का काम किया गया है। जहां हम एक तरफ आत्मनिर्भरता का नारा दे रहे हैं, वहीं हम किस पर निर्भर होते चले जा रहे हैं, यह भी विचार करने का सवाल है।

अभी सुनने में आ रहा है कि कुछ महीनों के बाद बीजिंग में मंत्रियों और अधिकारियों की बहुत बड़ी मीटिंग होने जा रही है। कहीं ऐसा तो नहीं है कि जो कूटनीतिक भागदौड़ चल रही है, उससे हमारी कमजोरी उजागर हो रही हो? इसलिए जहां हमें पाकिस्तान से खतरा है, उसकी सीमाओं से आतंकवाद आ रहा है, वहीं उसके पीछे खड़े हुए देश, चीन से भी हमें सावधान रहना पड़ेगा।

अध्यक्ष महोदय, हम सब समाजवादियों ने कई मौकों पर यह बात रखी है और कही है कि हमें खतरा पाकिस्तान से नहीं है, बल्कि चीन से है। वह समय-समय पर न केवल हमारी जमीन छीन रहा है, बल्कि हमारे बाजार को भी छीनने का काम कर रहा है। इस सरकार को कहीं न कहीं आतंकवाद पर और पाकिस्तान पर लगाम लगाने के लिए ,10 या 15 सालों के लिए ऐसा फैसला लेना चाहिए, जिससे वहां से हमारा कारोबार कम होता चला जाए और अगर हमारा कारोबार कम नहीं होगा तो हम अपने देश को आत्मनिर्भर नहीं बना पाएंगे।

यह जो आत्मनिर्भरता का नारा है, कहीं ऐसा तो नहीं है कि यह नारा कुछ व्यापारियों को लाभ पहुंचाने के लिए दिया जा रहा हो? क्या व्यापार और राजनीति का संबंध ऐसा हो सकता है कि दोनों एक-दूसरे का लाभ उठाएं? याद रखें कि अगर हमें पाकिस्तान से खतरा है तो चीन राक्षस है। वह हमारी जमीन और हमारा बाजार, दोनों छीन लेगा।

मैं अंत में अपनी बात खत्म करने से पहले सरकार को कुछ सुझाव देना चाहता हूँ। मुझे याद है कि जब पिछली बार चीन का सवाल खड़ा हुआ था, चूँकि यह सरकार पता नहीं कैसे फैसले लेती है और जब मैं विदेश मंत्री जी को सुन रहा था तो वे यह कह रहे थे कि जो इंफ्रास्ट्रक्चर बन रहा है, वह बहुत अच्छा बन रहा है। हम अच्छे पुल बना रहे हैं। हम अच्छी सड़कें बना रहे हैं। हम ब्रिजेस अच्छे बना रहे हैं। क्या यह सच्चाई है कि जिस तरह का चीन

अपनी सीमा पर इंफ्रास्ट्रक्चर बना रहा है, उससे बेहतर इंफ्रास्ट्रक्चर हमारा बन रहा है? सरकार इस पर जवाब जरूर दे।

हम हमारे डिफेंस सेक्टर को जितना मजबूत करेंगे, उतनी ही हमारी नेशनल सिक्योरिटी मजबूत होगी। यह जो बजट लगातार कम होता जा रहा है, उस बजट को बढ़ाना चाहिए और कम से कम जीडीपी का 3 परसेंट बजट डिफेंस का होना चाहिए। डिफेंस का जो बजट है, वह नोन लैप्सेबल हो, मोर्डेनाइजेशन के लिए हो, जिससे फंड लैप्स न हो और हमारा रिसर्च एंड डेवलपमेंट लगातार चलता रहे।

हमें कई बार आश्वासन मिलता है कि टेक्नोलॉजी ट्रांसफर हो जाएगी। आखिरकार टेक्नोलॉजी ट्रांसफर के लिए हमें वर्षों इंतजार क्यों करना पड़ता है? आखिरकार इसकी जिम्मेदारी कौन लेगा? हमारा जो डिफेंस प्रोक्योरमेंट है, वह क्यों नहीं होता है? सरकार समय-समय पर डिफेंस एक्सपो के नाम पर न केवल भारत बल्कि दुनिया से यह कहती है कि आप हमारे यहां पर इनवेस्टमेंट कीजिए।

(1410/STS/PBT)

आखिरकार डिफेंस एक्सपो इन्वेस्टमेंट के कार्यक्रम के बाद डिफेंस सेक्टर में कितना इन्वेस्टमेंट आया है? और साथ-ही-साथ जब आत्मनिर्भर की बात हो, तो हमारे देश की अपनी रक्षा करने के लिए हमारे अपने लोग क्यों नहीं तैयार हो रहे हैं? यह सरकार इतना जोखिम क्यों नहीं उठा रही है कि हम उन चीजों को बनाने के लिए खुद तैयार हों? इसलिए मैं एक बार फिर यह कहता हूं कि जहां पर सेना ने बहुत बहादुरी के साथ अपने पराक्रम के साथ (व्यावधान..) पराक्रम, वीरता और अदम्य शौर्य का जो परिचय उन्होंने दिया, उसके लिए मैं फौज को बधाई देता हूं। जो आतंकवादी अभी मारे गए हैं, उमसें अभी मैं सुन रहा था। अगर कोई आतंकवादी मारा जाता है, तो हम सब उसके पक्ष में हैं। लेकिन हर जगह राजनीतिक लाभ आखिर कौन उठा रहा है? मैं अपनी बात खत्म कर रहा था, लेकिन ये लोग पूछ रहे हैं कि मैं आज ऑपरेशन महादेव पर धन्यवाद क्यों नहीं दे रहा हूं।

अध्यक्ष महोदय, जिस समय समर्थन की बात आई, पूरे देश के जितने भी राजनीतिक दल हैं, वे आपके साथ थे। आखिरकार एनकाउंटर कल ही क्यों हुआ? मैं फिर उसी बात को दोहराऊ, जिसकी वजह से पहलगाम हुआ, जिसकी वजह से पुलवामा हुआ। अगर यह इतना ही टेक्नोलॉजी और इन सब चीजों को समझते और जानते हैं, तो पुलवामा में गाड़ी में जो आरडीएक्स आया, वह गाड़ी आज तक क्यों नहीं पकड़ी गयी? शायद भारतीय जनता पार्टी के लोग यह जानते होंगे कि बहुत सारे विभाग सरकार के पास होते हैं, जो सैटेलाइट इमेजेस देते हैं। अगर आज भी भारतीय जनता पार्टी चाहे, तो सैटेलाइट इमेजेस से यह पता कर सकती है कि किस रास्ते से वह गाड़ी पुलवामा में आई थी। आप उसके लिए हिम्मत क्यों नहीं जुटा पा रहे हैं? पहलगाम में किसी भी दल ने आपके साथ किसी भी तरह की राजनीतिक बातचीत नहीं की, लेकिन आपने कांग्रेस पार्टी से भी राजनीतिक लाभ उठाने की कोशिश की और हमारे दल से भी

उठाने की कोशिश की। अगर आपको डेलीगेशन भेजना ही था, तो उसे पॉलिटिकल पार्टीज तय करती, आप यह नहीं तय कर सकते हैं। यह राजनीति कौन कर रहा है? राजनीति करने वाले वे लोग अपने चुनावी भाषण में यह कह रहे थे कि हम छ: महीनों में पीओके ले लेंगे, अक्साई चिन ले लेंगे। इसीलिए मैंने सरकार से यह सवाल पूछा कि जिस समय भारतीय जनता पार्टी सरकार में आयी, उस समय भारत का क्षेत्रफल क्या था और भारत का क्षेत्रफल आज क्या है? फाइव फिंगर्स, पैंगोंग लेक, गलवान घाटी, रेजांग ला, इन सब का जवाब सरकार के पास है या नहीं है? मैं आज भी यह कहता हूं कि हम वॉर के खिलाफ हैं। हम वॉर नहीं चाहते हैं, लेकिन सीमा पर शांति रहे। हमारा कोई एंक्रोचमेंट न करे। मैं आज भी कहता हूं, जो लड़ाई हुई है, वह पाकिस्तान से आप नहीं लड़े हैं। आप कितना भी छिपना और छिपाना चाहोगे, कोई भी स्वीकार नहीं करेगा। यह जो लड़ाई लड़ी गयी है, यह आपको चीन से लड़नी पड़ी थी। जो समय आप बता रहे हैं कि इस समय से इस समय तक हमारी एयरफोर्स और हमारे लोगों ने हमला किया। टेररिस्ट लोगों के तमाम सेंटर्स को खत्म किया है।

(1415/MM/SNT)

हमारे मन में भी यह इच्छा आती है कि हमारे सबसे बेहतरीन एयरक्राफ्ट, जिनकी नींबू-मिर्च लगाकर पूजा की गयी थी, कितने उड़े थे? हम आपसे और सवाल नहीं पूछना चाहते हैं। मैं केवल इतना पूछना चाहता हूं कि जिन एयरक्राफ्ट्स को नींबू-मिर्च लगाकर पूजा की गयी थी, वे एयरक्राफ्ट्स कितने उड़े थे? हमें अपनी एयरफोर्स पर गर्व है। इतने बेहतरीन पायलट किसी के पास नहीं हैं, जितने बेहतरीन पायलट हमारे पास हैं। हम वह समाजवादी लोग हैं, जिन्होंने सड़कों का ऐसा इंफ्रास्ट्रक्चर बनाया था कि कभी अगर इमरजेंसी हो तो आपका एयरक्राफ्ट वहां उतर जाएगा। देश में पहली बार सुखोई, मिराज और हरक्यूलिस विमान अगर किसी ने सड़क पर उतारे थे तो वह समाजवादी पार्टी और हम लोगों ने सड़क पर उतारने का काम किया था।

अध्यक्ष महोदय, मैं जानकारी देना चाहता हूं कि आपके देश के प्रधान मंत्री जी... (व्यवधान) हमारे देश के … (व्यवधान) हमारे भी प्रधान मंत्री हैं … (व्यवधान) अध्यक्ष महोदय, मैं फिर बोलता हूं … (व्यवधान) मैं आपको बहुत अच्छा मान रहा था, क्योंकि आप ही मुझे बोलने के लिए बोलकर गए थे … (व्यवधान) मैं फिर बोलता हूं, यह प्रधान मंत्री जी की लाइनें हैं – ' मैं दुनिया को मनाने में लगा हूं, मेरा घर मुझ से रूठा जा रहा है।' आखिरकार, कौन रूठा हुआ है? इस देश में जो हमने इतने दिनों में देखा है, प्रधान मंत्री जी डिफेंस मिनिस्टर का भी रोल प्ले कर रहे थे। इसलिए जिस सड़क पर हमारे देश के प्रधान मंत्री हरक्यूलिस विमान से उतरे थे, वह हाईवे किसी ने डिजाइन किया था तो समाजवादी लोगों ने डिजाइन किया था। यूपी में तो एक और डिजाइन हो गया, लेकिन देश भर में ऐसी सड़कें क्यों नहीं बन रही हैं, जहां इमरजेंसी में एयरफोर्स उसका इस्तेमाल कर सके। मैं तो कहूंगा कि आप ऐसी सड़कें और बनाइए। जिस तरीके से हमारी सेना ने मुकाबला किया है, लेकिन सीज़फायर के बाद भी जिस प्रकार से ड्रोन्स आ रहे थे, वह भी सरकार को स्वीकार करना पड़ेगा। हमारा सवाल यह है कि

सीज़फायर किसके दबाव में किया और सीज़फायर क्यों किया जब हमारी फौज पीओके को भी ले लेती और पाकिस्तान के भी … (व्यवधान) सीज़ फायर आपके मंत्री जी ने नहीं किया। सीज़फायर आपके मंत्री जी की तरफ से नहीं आया है। हमारे मंत्री जी सोशल मीडिया को नहीं देखते हैं। सबसे पहले सोशल मीडिया पर यह बात आयी थी और आपको एक घंटे बाद किसी ने पढ़कर बताया होगा। इसलिए मैं अपनी बात खत्म करते हुए केवल इतना कहना चाहता हूं कि आखिरकार इंटेलिजेंस फेल्योर की जिम्मेदारी किसकी है? हमारे भारत का क्षेत्रफाल वर्ष 2014 में कितना था और आज कितना है? इनकी सरकार में लगातार आतंकवादी घटनाएं क्यों हो रही हैं? हमारे देश को पाकिस्तान से तो खतरा है ही, लेकिन उससे ज्यादा खतरा चीन से है। आखिरकार चीन से मुकाबले के लिए आपकी क्या तैयारी है? मुझे उम्मीद है कि जब सिंदूर ऑपरेशन पर सरकार की तरफ से जवाब आए तो इन सवालों पर भी जवाब आए। बहुत-बहुत धन्यवाद।

(इति)

(1420/MK/VPN)

संसदीय कार्य मंत्री; तथा अल्पसंख्यक कार्य मंत्री (श्री किरेन रिजिजू) : अध्यक्ष महोदय, मैं एक छोटा-सा क्लेरिफिकेशन देना चाहता हूं। अखिलेश जी ने जो बोला है, मैं उनके भाषण पर नहीं जा रहा हूं। एक करेक्शन करना बहुत जरूरी है, नहीं तो वह रिकॉर्ड में चला जाएगा, जो बाद में सही नहीं होगा। इन्होंने अपनी बात रखते समय कहा कि जिस प्रदेश से मैं आता हूं, वहां चीन अंदर तक घुसकर कब्जा करके बैठा है। मैं रिकॉर्ड को बहुत साफ करना चाहता हूं। 10 अक्टूबर, 1962 में जब चीन का आक्रमण हुआ था तो चीन की आर्मी मेरे गाँव से होते हुए एक महीने दस दिन में असम के मिसामारी तक पहुंचे थे। उसके बाद 21 नवम्बर को सीजफायर करके पूरी आर्मी विड्रॉल करके वापस चली गई थी। चीन ने असाफीला साइट में लांगजू आक्युपाई करके रखा है। उसको उसने वर्ष 1959 में कैप्चर किया था। उस समय वहां हमारा असम राइफल्स का कैंप था। उसके अतिरिक्त थोड़ा-सा एक्स्ट्रा जमीन वर्ष 1962 में लिया था। उस समय उनका कम्प्लीट विड्रॉल नहीं हुआ था। वर्ष 1962 के बाद वहां मैकमोहन रेखा नहीं है, उसको एलएसी, लाइन ऑफ एक्चुअल कंट्रोल कहा जाता है, उसके बाद कई सरकारें आईं, लेकिन वर्ष 1962 के बाद अरुणाचल प्रदेश में चीन न एक इंच एकस्ट्रा अंदर घुसा है और न जमीन ली है। यह रिकॉर्ड क्लियर होना चाहिए।

श्री अखिलेश यादव (कन्नौज) : माननीय मंत्री जी, आप एक बार पूरे देश का क्षेत्रफल बता दीजिए। … (व्यवधान)

1421 बजे

श्रीमती प्रियंका गांधी वाड्रा (वायनाड) : आदरणीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपको धन्यवाद देना चाहती हूं कि आपने मुझे इस महत्वपूर्ण मुद्दे पर बोलने का मौका दिया। यह अलग बात है कि सत्तापक्ष के लोग मेरे बोलने से पहले ही चले गए। सबसे पहले मैं उन सैनिकों, उन जवानों और उन अफसरों को नमन करना चाहती हूं, जो हमारे देश के रेगिस्तानों में, देश के घने जंगलों में और बर्फीले पहाड़ियों पर हमारे देश की रक्षा करते हैं। जो हर पल देश के लिए अपनी जान देने के लिए तैयार रहते हैं। वर्ष 1948 से लेकर अब तक, जब से पाकिस्तानी रेडर्स ने कश्मीर पर हमला किया, तब से लेकर अब तक हमारी देश की अखंडता की रक्षा करने में उनका बड़ा योगदान है। हमारी आजादी अहिंसा के आंदोलन से हासिल हुई है। लेकिन, जैसा मैंने कहा उसको कायम रखने के लिए हमारी सेना का बहुत बड़ा योगदान है।

अध्यक्ष महोदय, कल मैं सदन में बैठकर सबके भाषण सुन रही थी। आदरणीय रक्षा मंत्री महोदय ने बोला और सत्तापक्ष के कई मंत्रियों ने भी बोला। रक्षा मंत्री जी का एक घंटे का लंबा भाषण था। सुनते-सुनते मुझे एक बात बहुत खटक रही थी। उसके बाद जब सत्तापक्ष के मैंने दूसरे भाषण सुने, तब भी यह बात बार-बार मेरे मन में आ रही थी कि सारी बातें कर ली, 'ऑपरेशन सिंदूर' की बात कर ली, आतंकवाद की बात कर ली, देश की रक्षा की बात कर ली और इतिहास का पाठ भी पढ़ा दिया, लेकिन एक बात छूट गई । उस दिन 22 अप्रैल 2025 को, जब 26 देशवासियों को अपने परिवार के सदस्यों के सामने खुलेआम मारा गया, तो यह हमला कैसे हुआ और क्यों हुआ?

अध्यक्ष महोदय, ये लोग बैसरन वैली में पहलगाम के पास कश्मीर में क्या कर रहे थे? आजकल पब्लिसिटी का दौर है और प्रचार का जमाना है। कुछ समय से हमारी सरकार यह प्रचार कर रही थी कि कश्मीर में आतंकवाद खत्म हो गया है। कश्मीर में शांति और अमन-चैन है। प्रधानमंत्री जी ने खूब भाषण दिये। देशवासियों को कहा कि कश्मीर चलिए, सैर करिए।

(1425/ALK/AK)

कई बार मैंने मीडिया में और टेलीविजन पर देखा कि कश्मीर जाइए और जमीन खरीदिये क्योंकि अब वहां अमन है, चैन है और शांति का वातावरण है। इसी बीच कानपुर के नौजवान शुभम द्विवेदी और उनके पूरे परिवार ने तय किया कि वे कश्मीर जाएंगे। शुभम द्विवेदी की छह महीने पहले शादी हुई थी, उनकी पत्नी ने कहा कि उनके बीच प्रेम और दोस्ती का एक ऐसा रिश्ता था कि वह एक-दूसरे को बच्चों की तरह हंसाते थे। सोशल मीडिया पर एक वीडियो भी जारी है जिसमें पूरा परिवार एक साथ बैठा हुआ ताश खेल रहा है और सब हंस रहे हैं। अब उस विडियो को देखकर किसी का भी दिल टूट जाएगा कि इस परिवार को इस तरह से हमने उजड़ने क्यों दिया? बैसारन वैली में 22 अप्रैल, 2025 को मौसम का मिजाज अच्छा था। वहां जैसे हर रोज लगातार 1,000 से 1,500 लोग पहुंचते थे, उसी तरह से उस दिन भी तमाम पर्यटक पहुंचे। वहां का रास्ता आसान नहीं है, जंगल से जाना पड़ता है, पहाड़ों के बीच जाना पड़ता है, घोड़े से जाना पड़ता है। ये परिवार वहां पहुंचे, मौसम सुहाना था, बच्चे ट्रैंपोलिन पर खेल रहे थे, कोई जिपलाइन कर रहा था, कोई चाय पी रहा था तो कोई कश्मीर की सुंदर वादियों की ठण्डी हवा का मजा ले रहा था। शुभम अपनी पत्नी के साथ एक

स्टॉल पर खड़े थे तभी अचानक चार आतंकवादी जंगल से निकले और शुभम को वहीं उनकी पत्नी के सामने मार डाला। इसके बाद वे पूरी वैली में एक घंटे तक लोगों को चुन-चुनकर मारते रहे। उन्होंने किसी के पति को पत्नी की आंखों के सामने, किसी के पिता को बेटे के सामने चुन-चुनकर मार डाला, 26 लोगों को मार डाला। शुभम की पत्नी घबराकर वहां से भागने की कोशिश करती है, अपनी जान बचाने के लिए जंगल की तरफ दौड़ती है, लेकिन पता चलता है कि तमाम लोग जंगल की तरफ दौड़ रहे हैं और अपनी जान बचाने की कोशिश कर रहे हैं। कोई अपने बेटे का हाथ पकड़कर पहाड़ों पर घसीटता हुआ जा रहा है तो कोई कश्मीरी घोड़े वालों और गाइड की मदद ले रहा है। कोई रास्ता नहीं था, कोई तरीका नहीं था। शुभम की पत्नी के शब्द हैं - किसी ऐसी शक्ति ने किसी न किसी तरह से हमें बचाकर रखा और हम अकेले किसी न किसी तरह से नीचे पहुंचे। मैं उनके लफ्ज पढ़ना चाहती हूं, उन्होंने कहा - इस पूरे समय में जब एक घंटे के लिए चुन-चुनकर भारतीय नागरिकों को मारा जा रहा था, इस पूरे समय में एक भी सुरक्षाकर्मी नहीं दिखा, एक भी सैनिक नहीं दिखा। शुभम की पत्नी ने कहा - मैंने अपनी आंखों के सामने ही अपनी दुनिया को खत्म होते हुए देखा, वहां एक भी सिक्योरिटी गॉर्ड नहीं था, मैं यह कह सकती हूं कि देश ने, सरकार ने हमें वहां अनाथ छोड़ दिया। वहां सिक्योरिटी क्यों नहीं थी? वहां पर एक भी सैनिक क्यों नहीं दिखा? क्या सरकार को मालूम नहीं था कि यहां रोज 1,000 से 1,500 पर्यटक जाते हैं? क्या सरकार को मालूम नहीं था कि यहां पहुंचने के लिए जंगल के रास्ते से जाना पड़ता है? अगर कुछ हो जाएगा तो लोग वहां से निकल नहीं पाएंगे? वहां चिकित्सा का इंतजाम नहीं था, फर्स्ट एड का इंतजाम नहीं था, कोई भी इंतजाम नहीं था, न सुरक्षा का और न ही फर्स्ट एड का।

(1430/SK/SRG)

इन लोगों को भगवान भरोसे छोड़ दिया गया। ये लोग वहां पर इस सरकार के भरोसे गए और इस सरकार ने उन्हें भगवान के भरोसे छोड़ दिया। … (व्यवधान) मैं पूछना चाहती हूं कि ये किसकी जिम्मेदारी थी? इस देश के नागरिकों की सुरक्षा की जिम्मेदारी किसकी है? क्या इस देश के प्रधान मंत्री की नहीं है? क्या इस देश के गृह मंत्री की नहीं है? क्या इस देश के रक्षा मंत्री की नहीं है? क्या एनएसए की नहीं है?

अध्यक्ष जी, पहलगाम हमले से सिर्फ दो हफ्ते पहले गृह मंत्री महोदय कश्मीर गए थे। किसलिए गए थे? सुरक्षा व्यवस्था को देखने के लिए गए थे, रिव्यू करने के लिए गए थे। उन्होंने वहां कहा कि आतंकवाद पर विजय प्राप्त हुई है। यह दो हफ्ते पहले की ही बात है। तीन महीने बाद जम्मू-कश्मीर के गवर्नर साहब एक आम इंटरव्यू में ऐसे ही चलते-चलते कह देते हैं - हां, बैसरन वैली में बहुत लापरवाही हुई और इसके लिए मैं जिम्मेदारी लेता हूं। वह बात वहीं होती है और वहीं खत्म हो जाती है और उनसे जिम्मेदारी ली भी नहीं जाती है। कोई सवाल नहीं उठाता है, कोई जवाब नहीं देता है।

उस हमले की जिम्मेदारी एक आतंकवादी गुट, जिसका नाम टीआरएफ है, थोड़े दिनों बाद लेता है। कौन है टीआरएफ? वर्ष 2019 में यह गुट बना। वर्ष 2020 में इसने कश्मीर में आतंकवाद का काम करना शुरू कर दिया। इन्होंने अप्रैल, 2020 से लेकर 22 अप्रैल, 2025 तक 25

आतंकवादी हमले किए। गृह मंत्री महोदय ने अभी अपने भाषण में यूपीए सरकार के समय के लगभग 25 आतंकवादी हमले गिनवाए। इस गुट ने कश्मीर में 25 हमले वर्ष 2020 और वर्ष 2025 के अंदर किए। मेरे पास इन हमलों की पूरी लिस्ट है, लेकिन मेरे पास इतना समय नहीं है कि मैं एक-एक को पढ़ सकूं। मैं इतना ही कहूंगी कि इनमें वर्ष 2024 का रियासी का हमला भी था जिसमें नौ लोग मारे गए थे और 41 लोग घायल हुए थे। इस तरह से कुल मिलाकर वर्ष 2020 से लेकर 22 अप्रैल, 2025 तक टीआरएफ ने 41 सेना सुरक्षाकर्मियों की हत्या की, 27 सिविलियन्स की हत्या की और 54 लोगों को घायल किया। … (व्यवधान) भारत सरकार ने टीआरएफ को आतंकवादी संगठन का दर्जा कब दिया? क्या वर्ष 2020 में दिया? क्या वर्ष 2021 में दिया? क्या वर्ष 2022 में दिया? वर्ष 2023 में दिया यानी तीन साल बाद दिया। तीन सालों से ये आतंकवादी गतिविधियां कर रहे थे और आप इनको आतंकवादी संगठन वर्ष 2023 में कहते हैं। इसकी क्या वजह थी जबकि यह सब सरकार के संज्ञान में था।

मुझे सत्ता पक्ष के नेता बताना चाहते हैं जबकि यह सब संज्ञान में था। क्या हमारी सरकार की कोई भी एक एजेंसी नहीं है, जिसे पता चला हो कि हमारे देश में ऐसा भयानक हमला होने जा रहा है? पाकिस्तान में बैठकर इस हमले की योजना बन रही थी कि भारत जाकर हैवानियत करेंगे और 26 लोगों को मार डालेंगे, लेकिन हमें इसके बारे में पता ही नहीं है। यह हमारी एजेंसियों की विफलता है या नहीं? यह बहुत बड़ी विफलता है। ये लोग जानते थे कि यह गुट है, ये जानते थे कि पांच सालों से यह गुट आतंकवादी हमले कर रहा है। इसने अध्यापकों को मारा, आर्मी के बड़े-बड़े अफसरों को मारा, आम जनता को मार डाला, पुलिस वालों को मार डाला और आप इन पर निगरानी नहीं रख रहे थे? इन एजेंसियों की जिम्मेदारी कौन लेगा?

(1435/VVK/SM)

क्या आईबी चीफ ने अपना इस्तीफा दिया? क्या किसी ने इस्तीफा दिया? इंटेलीजेंस ब्यूरो गृह मंत्री जी के कार्यक्षेत्र में आता है, तो क्या गृहमंत्री जी ने इस्तीफा दिया? इस्तीफा छोडिए, क्या उन्होंने जिम्मेदारी ली? साहब देखिए, आप इतिहास की बात कीजिए, मैं वर्तमान की बात करना चाहती हूँ। आपको तो एक बहाना चाहिए, आप पूरे परिवार का नाम गिनवा देते हैं। अरे, अपनी जिम्मेदारी खुद लीजिए। आप 11 सालों से सत्ता में हैं। कल माननीय गौरव गोगोई जी ने अपने भाषण में गृह मंत्री जी से पूछा कि क्या आपकी जिम्मेदारी नहीं थी। मैं देख रही थी, रक्षा मंत्री राजनाथ जी अपना सिर हिला रहे थे। वे कुछ बोले नहीं, लेकिन अंदर से यह महसूस हुआ होगा कि हाँ, कुछ जिम्मेदारी थी, लेकिन माननीय गृह मंत्री महोदय जी हँस रहे थे।

अध्यक्ष महोदय, सत्ता पक्ष के नेताओं ने, कल और आज भी, वर्ष 2008 के मुंबई हमले का जिक्र किया। उन्होंने बार-बार यह कहा कि मनमोहन सिंह जी की सरकार ने कुछ नहीं किया। यह जानकारी तो होगी कि जब वह आतंकवादी हमला हो रहा था, तभी उन आतंकवादियों को मार डाला गया था। एक बचा था, उसे भी वर्ष 2012 में फाँसी दी गई थी। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री ने इस्तीफा दिया, देश के गृह मंत्री ने जिम्मेदारी लेकर इस्तीफा दिया। इस देश की जनता के प्रति, इस देश की धरती के प्रति एक जवाबदेही थी। राजनाथ जी पुलवामा, उरी और पठानकोट के हमले के

समय गृह मंत्री रहे थे, आज वे रक्षा मंत्री हैं। हमारे गृह मंत्री महोदय श्री अमित शाह जी की नाक के नीचे पूरा मणिपुर जल गया, दिल्ली में दंगे हुए, पहलगाम में हमला हुआ और आज भी वे उसी पद पर बैठे हैं, क्यों?

अध्यक्ष महोदय, बमबारी से अख़बारों की हेडलाइन्स बनती हैं, मगर कहानी सुरक्षा की चूक में भी है। आज देश खोखले भाषण नहीं सुनना चाहता है, देश जवाब चाहता है, तसल्ली चाहता है कि सच उससे छिपाया नहीं जाएगा। देश जानना चाहता है कि उस दिन 22 अप्रैल, 2025 को क्या हुआ और क्यों हुआ? आप तो खुद अपनी पीठ थपथपाने में लगे रहते हैं। सेना, देश और संसद से सच छिपाते हैं।

'ऑपरेशन सिंदूर' जब शुरू हुआ, तब हम सभी ने समर्थन किया। सभी एकजुट होकर इस देश के लिए खड़े हो गए। अगर दोबारा होगा, तो दोबारा खड़े हो जाएँगे। अगर हमारे देश पर हमला होता है, तो यहाँ इस सदन में, कोई किसी भी पार्टी का हो, सभी आपका समर्थन करेंगे। हमें अपनी सेना पर गर्व है कि उन्होंने इस बार भी दृढ़ता से लड़ाई लड़ी, धैर्य से लड़ाई लड़ी और वीरता से लड़ाई लड़ी, लेकिन इस 'ऑपरेशन सिंदूर' का श्रेय तो हमारे प्रधान मंत्री जी चाहते हैं। यह सही भी है। ठीक है, श्रेय लें। ओलम्पिक्स में जो मैडल्स आते हैं, वे उनका भी श्रेय लेते हैं, तो लें, लेकिन नेतृत्व सिर्फ श्रेय लेने से नहीं होता है, जिम्मेदारी भी लेनी पड़ती है।

(1440/VB/GM)

देश के इतिहास में यह पहली बार हुआ कि जंग होते-होते ही रुक गई। इस रुकावट का एलान हमारी सेना नहीं करती, बल्कि अमेरिका के प्रेसीडेंट करते हैं। इसका एलान अमेरिका के राष्ट्रपति करते हैं। यह हमारे प्रधानमंत्री महोदय की गैर-जिम्मेदारी का सबसे बड़ा प्रतीक है।

आज गृह मंत्री जी ने इस बात का उल्लेख किया। उन्होंने कहा- "पाकिस्तान के पास शरण में आने की बजाए कोई चारा नहीं था।" मैं कहना चाहती हूँ कि आपने शरण दिया क्यों? वे देश के अन्दर आते हैं, लोगों को मार डालते हैं और आप उनको शरण दे रहे हैं, आपने क्यों दिया शरण? आपने एक भी भाषण में इसका जवाब क्यों नहीं दिया? जैसे ही हमारे गृह मंत्री जी ने शरण की बात की, तो वे इतिहास में चले गए। नेहरू ने क्या किया, इंदिरा गांधी ने क्या किया, यहाँ तक कि मेरी माँ के आँसुओं तक चले गए। लेकिन इस सवाल का जवाब नहीं दिया कि सीज़फायर हुआ क्यों, यह जंग रुकी क्यों और तब क्यों रुकी जब दुश्मन के पास हमारी शरण में आने की बजाए कोई चारा नहीं था? यह जंग क्यों रुकी? उन्होंने इसका जवाब नहीं दिया।... (व्यवधान) धन्यवाद, आप जवाब देंगे? ... (व्यवधान)

महोदय, मेरी माँ के आँसुओं की बात की गई। मैं इसका जवाब देना चाहती हूँ। मेरी माँ के आँसू तब गिरे, जब उनके पति को आतंकवादियों ने शहीद किया। तब वे मात्र 44 साल की थीं। अगर आज मैं इस सदन में खड़ी हूँ और उन 26 लोगों की बात इसलिए कर रही हूँ क्योंकि मैं उनका दर्द जानती हूँ, उनके दर्द को महसूस करती हूँ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने कहा कि देश का नेतृत्व सिर्फ उपलब्धियों का श्रेय लेने से मजबूत नहीं होता है। वह सफलता और विफलता दोनों की जिम्मेदारी लेने से बुलंद होता है। यह सोने का ताज नहीं है, यह काँटों का ताज है।

महोदय, जब सरकार झूठी और कायर हो, तो वह बहादुर से बहादुर सेना के साहस और पराक्रम को भी कमजोर कर देती है। देश को प्रतिशोध के साथ-साथ सबके प्राणों की रक्षा का प्रण चाहिए। सेना की शक्ति के साथ सरकार की सच्चाई भी चाहिए।

महान देशभक्त शहीद इंदिरा गांधी जी, जिन्होंने सफल कूटनीति के बल पर अमेरिका के राष्ट्रपति निक्सन का मुकाबला करके पाकिस्तान का विभाजन करवाया और बांग्लादेश बनाया। एक लाख पाकिस्तानी सैनिकों को आत्म-समर्पण करने पर मजबूर किया। उन्होंने कभी भी इसका श्रेय लेने की कोशिश नहीं की।

'ऑपरेशन सिन्दूर' का मकसद अगर पाकिस्तान को सबक सिखाना था, तो शायद यह मकसद अभी अधूरा है क्योंकि हमारी कूटनीति विफल रही है। इसका प्रमाण यही है कि 'ऑपरेशन सिन्दूर' के बाद एक पाकिस्तानी जनरल, जिसके हाथ खून से रंगे थे, वे अमेरिका के राष्ट्रपति के साथ बैठकर लंच खा रहे थे। अगर 'ऑपरेशन सिन्दूर' का मकसद आतंकवाद को खत्म करना था, तो पाकिस्तान को संयुक्त राष्ट्र के आतंकवाद विरोधी समिति का अध्यक्ष चुने जाने से इस मकसद को धक्का लगा है। इसकी जिम्मेदारी कौन लेगा? क्या हमारे प्रधानमंत्री जिम्मेदारी लेंगे? क्या उनमें यह हिम्मत है?

अगर इस ऑपरेशन के दौरान हमारे देश के जहाजों का नुकसान नहीं हुआ, तो सदन में इसे साफ-साफ कहने से क्या डर है? इसे क्यों नहीं कहा? कल भी रक्षा मंत्री जी ने कहा कि हमारे इंफ्रास्ट्रक्चर का नुकसान नहीं हुआ, तो वे जहाजों के बारे में भी साफ-साफ बता दें। इसमें क्या हर्ज़ है? यह सच्चाई ही तो है।

(1445/SJN/RCP)

यह सरकार सवालों से बचने का हमेशा प्रयास करती है। इनकी राजनीतिक कायरता बेमिसाल है। इनको देशवासियों के प्रति जवाबदेही का अहसास ही नहीं है। सच्चाई तो यह है कि इनके दिल में जनता के लिए कोई जगह ही नहीं है। सब राजनीति है, सब पीआर है, सब प्रचार है और सब पब्लिसिटी है। आपके हृदय में देश की जनता के लिए कुछ भी नहीं है। बहुत समय हो गया है, लेकिन आप इस प्रचार में ही लिप्त हैं। आप जनता को देख नहीं पा रहे हैं। पहलगाम में जो हुआ है, उससे हरेक देशवासी के दिल पर चोट पहुंची है। हिमांशी नरवाल की गुहार ने हम सबको शर्मिंदा किया है।

इसीलिए मैं आज यहां खड़े होकर एक आखिरी बात बोलना चाहती हूं। इस सदन में लगभग सभी के पास सुरक्षा है, सुरक्षा की व्यवस्था है। हम जहां कहीं भी जाते हैं, हमारे साथ सुरक्षाकर्मी चलते हैं। … (व्यवधान) जब आप मंत्री बन जाएंगे, तब आपको भी सुरक्षा मिल जाएगी। मैं मजाक की बात नहीं कर रही हूं। आप थोड़ा-सा धैर्य रखिए। उस दिन पहलगाम में 26 परिवार उजड़ गए।

26 लोगों को अपने परिवार के सदस्यों के सामने मारा गया था। 26 बेटे, पति और पिता गुजर गए। उनमें से 25 भारतीय थे।

वस्त्र मंत्री (श्री गिरिराज सिंह) : उनमें हिन्दू भी थे। … (व्यवधान)

श्रीमती प्रियंका गांधी वाड्रा (वायनाड) : वे भारतीय थे। … (व्यवधान) उस दिन बैसरन घाटी में जितने भी लोग थे और जो 25 भारतीय मारे गए थे, उनके लिए कोई सुरक्षा की व्यवस्था नहीं थी। आप कितने भी ऑपरेशन कर लीजिए, लेकिन आप इस सच्चाई के पीछे छुप नहीं सकते हैं, आप इसे नकार नहीं सकते हैं। आपने उनको सुरक्षित नहीं किया था। कोई शर्म नहीं है। … (व्यवधान) और न ही कभी होगी, आप सुन लीजिए। मैं सुबह ही शिव मंत्र बोलकर यहां आई हूं। … (व्यवधान) मैं अपना भाषण पूरा कर लूं?

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य, आप चुप हो जाइए।

… (व्यवधान)

श्रीमती प्रियंका गांधी वाड्रा (वायनाड) : महोदय, मैं इस सदन में एक बार उन 25 भारतीयों के नाम पढ़ना चाहता हूं, ताकि यहां बैठे हुए हरेक सदस्य को यह अहसास हो कि वे भी हमारी तरह इंसान थे। वे किसी राजनीतिक बिसात के मोहरे नहीं थे। वे भी इस देश के बेटे थे। वे भी इस देश के शहीद हैं। उनके परिजनों के प्रति हम सबकी जवाबदेही बनती है। उन्हें सच्चाई जानने का हक है। … (व्यवधान)

समीर गुहा … (व्यवधान) वे भारतीय थे। बितान अधिकारी, मनीष रंजन, हेमंत सुहास जोशी, विनय नरवाल, … (व्यवधान) सुशील नथानिएल, अतुल श्रीकांत मोने, सैयद आदिल हुसैन शाह, नीरज उधवानी … (व्यवधान) एन. रामचंद्रन, संजय लक्ष्मण लाली … (व्यवधान) सुमित परमार, दिनेश अग्रवाल, दिलीप दासली, प्रशांत कुमार सतपथी, जे. सच्चंद्रा मौली, … (व्यवधान) यतेश परमार, मधुसूदन सोमिसेट्टी। … (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य, यह सदन नारेबाजी के लिए नहीं है।

… (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आपका यह तरीका ठीक नहीं है।

… (व्यवधान)

श्रीमती प्रियंका गांधी वाड्रा (वायनाड) : संतोष जगधा, … (व्यवधान) शैलेष कालाथिया, भारत भूषण, मंजू नाथ राव, कस्तूबा गनवोटाय और शुभम द्विवेदी। जय हिन्द। … (व्यवधान)

(इति)

माननीय अध्यक्ष : आप इनको समझाइए।

… (व्यवधान)

(1450/DPK/PS)

1450 बजे

डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे (कल्याण) : धन्यवाद अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे इस महत्वपूर्ण विषय पर बोलने का अवसर दिया है। आज यहां पर 'ऑपरेशन सिंदूर' की कामयाबी पर चर्चा हो रही है। मैं अपनी पार्टी शिवसेना और अपने नेता एकनाथ शिंदे जी को धन्यवाद देता हूं। मैं आज यहां पर सेना को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं कि आज सेना ने 'ऑपरेशन सिंदूर' … (व्यवधान)

श्री अब्दुल रशीद शेख (बारामूला) : अध्यक्ष महोदय, यह मेरा समय है। मैं एक दिन के 1,50,000 रुपये देकर आया हूं। क्या आपकी अंतरात्मा … (अध्यक्षपीठ के आदेशानुसार कार्यवाही-वृत्तान्त में सम्मिलित नहीं किया गया।) चुकी है? कोई भी नहीं बोल रहा है। मैं जेल से यहां तक एक दिन के लिए 1,50,000 रुपये देकर आया हूं। … (व्यवधान) मुझे बोलने दीजिए। मैं कश्मीरी हूं। 'ऑपरेशन सिंदूर' मेरे इलाके में लड़ा गया है, लाशें मेरे लोगों की गिरी हैं। … (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : शिंदे जी, आप बोलिए।

… (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : प्लीज़, आप सब बैठ जाइए।

… (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : शिंदे जी, आप बोलिए।

1451 बजे (श्री दिलीप शइकीया पीठासीन हुए)

डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे (कल्याण) : सभापति जी, आज मैं सेना के जवानों का भी बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूं। आज 'ऑपरेशन महादेव' के माध्यम से उन 26 परिवारों को न्याय देने का काम हमारी सेना के जवानों ने किया है। आज मैं यहां पर सेना के उन जवानों के लिए कुछ पंक्तियां बोलना चाहूंगा।

दुनिया को इस नए भारत का यशगान सुनाया है हमने,
दुश्मन के घर में घुसकर आतंकवादियों को मार गिराया है हमने,
धर्म पूछकर बहनों का सिंदूर मिटाया था तुमने,
उसी सिंदूर को बारूद बनाया है हमने,
हर देशवासी के दिल में देशभक्ति की ज्वाला जलती है,
यहां व्योमिका और सोफ़िया जैसी भारत की बेटियां लड़ती हैं,
पहलगाम का बदला लेकर दुनिया को यह बता दिया,
भारत पर हमला करने की कीमत कितनी भारी पड़ती है।

मैं आज हमारी सेना के जवानों का त्रिवार अभिनंदन करता हूं, उनको धन्यवाद देता हूं।

… (व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: Hon. Members, please be seated.

… (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Hon. Members, please be seated.

… (*Interruptions*)

माननीय सभापति : माननीय सदस्यगण, मैं आप सभी से बोल रहा हूं। Please be seated.

… (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Hon. Member, please speak.

डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे (कल्याण) : सभापति जी, मैं यहां पर पहलगाम आतंकवादी हमले में मारे गए लोगों को भी श्रद्धांजलि व्यक्त करता हूं। यहां पर विपक्ष के सभी लोग इंटेलिजेंस फेल्योर के बारे में बात कर रहे हैं। वे पूछ रहे थे कि आतंकवादी कैसे आए? कहां से आए? उन आतंकवादियों का क्या हुआ? … (व्यवधान)

[1](Now, you must behave like a matured person and you should overcome it. You are a Member of Parliament now, not a councillor.)

आज यहां इंटेलिजेंस फेल्योर के बारे में बहुत बातें हो रही हैं। … (व्यवधान) मुझे इनसे सवाल पूछना है कि वर्ष 2006 में जो बम ब्लास्ट्स हुए थे, उन बम ब्लास्ट्स के आरोपी कहां से आए थे? वर्ष 2006 में इनकी सरकार केन्द्र में भी थी और राज्य में भी थी, उन बम ब्लास्ट्स में 127 लोग मारे गए थे। … (व्यवधान) उन 127 लोगों को जिन्होंने मारा था, उन्हें बॉम्बे हाईकोर्ट ने परसों ही बाइज्जत बरी कर दिया।

(1455/PC/SMN)

मतलब, एक इनवेस्टिगेशन भी ये लोग सीधे तौर पर नहीं कर पाए। इसका जिम्मेदार कौन है? यहां ये उठकर पूछ रहे हैं कि पहलगाम में आतंकवादी कहां से आए? अरे, आतंकवादी आए, उनका पता लगाया और आतंकवादियों को आज मार गिराने का काम भी किया। … (व्यवधान) लेकिन, 2006 में जो 127 लोग मारे गए, वे परिवार आज भी न्याय की गुहार लगा रहे हैं। … (व्यवधान) उनको न्याय कौन देगा? उनको न्याय कब मिलेगा? … (व्यवधान)

वर्ष 2006 का इंसीडेंट हुआ। आपको शाहिद लतीफ याद होगा। आपने यहां टीआरएफ के बारे में कहा। टीआरएफ ऑर्गनाइजेशन ने कितने आतंकी हमले किए, लेकिन, मैं इनसे पूछना चाहूंगा कि शाहिद लतीफ और उसके साथ 25 आतंकवादियों को, जो एलईटी, जैश-ए-मोहम्मद, हिजबुल मुजाहिद्दीन के लिस्टेड टेररिस्ट्स थे, उनको छोड़ने का काम किसने किया? … (व्यवधान) फिर जिसने पठानकोट पर हमला किया। … (व्यवधान) इस शाहिद लतीफ को क्यों छोड़ा? … (व्यवधान)

[1] ()Original in Marathi.

हमारे गृह मंत्री ने यहां कहा कि पोटा का कायदा हमारी सरकार लेकर आई, लेकिन उस पोटा के कायदे को रद्द करने का काम, रिपील करने का काम किसने किया? कांग्रेस ने किया। … (व्यवधान) इसलिए, देश पर जो इतने आतंकवादी हमले हुए, वे इस पोटा के कायदे के रद्द होने के कारण ही हुए हैं। … (व्यवधान)

पहलगाम में जो लोग मारे गए, उनमें से तीन लोग मेरी कांस्टिट्यूएंसी के थे। … (व्यवधान) जब मैं उनको श्रद्धांजलि देने गया, तब मैंने उनके परिवारों की आंखों में अपनों को खोने का दर्द देखा। … (व्यवधान) तीन परिवार पूरी तरह से उजड़ चुके थे। … (व्यवधान) वे सवाल पूछ रहे थे कि हमें न्याय कब मिलेगा? … (व्यवधान) लेकिन, आज उनके परिवारों को लग रहा होगा कि हमारी सरकार और हमारी सेना के माध्यम से उनको न्याय देने का काम यहां हुआ है। … (व्यवधान)

सभापति महोदय, इसी तरह वर्ष 1993 के बम ब्लास्ट में, वर्ष 2006 के ट्रेन ब्लास्ट में, 26/11 के आतंकी हमले में और दिल्ली ब्लास्ट में जिन-जिन परिवारों ने अपने सदस्यों को खोया, वे आज भी न्याय की पुकार कर रहे हैं। … (व्यवधान) वे आज तक इंतज़ार कर रहे हैं कि उनको न्याय कब मिलेगा? … (व्यवधान) यह क्यों हुआ? यह कांग्रेस की विफलता और फॉरेन पॉलिसी फेल्योर के कारण हुआ। … (व्यवधान)

मैंने आपसे वर्ष 2006 के बारे में कहा। कोर्ट ने कहा – 'lack of evidence'. मतलब, आप वहां प्रूव नहीं कर पाए कि वर्ष 2006 का ट्रेन ब्लास्ट किसने कराया। इसलिए, आज तक उन लोगों के परिवार न्याय की गुहार लगा रहे हैं। … (व्यवधान) हमारे सदस्य साथी श्री अरविंद गणपत सावंत जी कल पूछ रहे थे कि वर्ष 2006 में ट्रेन ब्लास्ट में मारे गए लोगों को न्याय कब मिलेगा? मुझे उनसे कहना है कि अगर वे बगल में पूछ लेते, तो उनको पता चल जाता। … (व्यवधान) कल कुछ लोग यहां बोल रहे थे कि 'ऑपरेशन सिंदूर' एक*… (Not recorded)* है।

मुझे यहां उन लोगों से कहना है कि जब वर्ष 2008 में मुंबई में बम ब्लास्ट हुआ, तब इनके ही मुख्यमंत्री ने बॉलीवुड के एक डायरेक्टर को ताज में लेकर जाने का काम किया। … (व्यवधान) फिर बाद में इनके ही गृह मंत्री ने कहा कि बड़े-बड़े देशों में छोटी-छोटी बातें होती रहती हैं। … (व्यवधान) इनके जो गृह मंत्री थे, वे तीन-तीन बार कपड़े बदलते थे। … (व्यवधान) यह *… (Not recorded)* तब होता था, लेकिन आज फैसला ऑन-दि-स्पॉट होता है। … (व्यवधान) मैं आपके गृह मंत्री के बारे में बात कर रहा हूं। … (व्यवधान)

(1500/SPS/RP)

मैं यहां पर कुछ सवाल पूछना चाहता हूं। आतंकवादी इकबाल मूसा, जो 1993 के ब्लास्ट में दोषी पाया गया था, वह इकबाल मूसा जब मुंबई में लोकसभा के चुनाव शुरू हुए थे, तब यूबीटी के प्रत्याशी के प्रचार के लिए आया था। वह वर्ष 1993 के बम ब्लास्ट का कन्विक्ट वहां पर उनका प्रचार करने आया था, लेकिन आज वही पूछ रहे हैं कि जो आतंकवादी आए हैं, वे कहां से आए हैं? वह इकबाल मूसा कहां से आया था? वह इकबाल मूसा किसके प्रचार में आया था? वह इकबाल मूसा किस पार्टी के प्रचार में आया, यह भी अरविंद सावंत जी को बताना होगा। आज यहां पर कुछ लोग कह रहे हैं कि यूएस के सामने घुटने टेक दिए। मैं इनको भोपाल गैस त्रासदी की याद दिलाना चाहता हूं, जहां 3,500 लोगों की मौत हो गई थी। उनका हत्यारा एंडरसन था। उस एंडरसन को अमेरिका भगाने का काम किसने किया? इनकी कांग्रेस सरकार ने किया। उसको सरकारी विमान में बैठाकर भेजा गया। बोफोर्स घोटाले के क्वात्रोच्ची को देश से बाहर भगाने का काम किसने किया? इनकी कांग्रेस सरकार ने किया।

महोदय, आज इनके अलग-अलग नेता यहां पर अलग-अलग बातें कह रहे हैं। परसों इन्होंने होम-ग्राउन टेररिज्म पर बात की थी कि आपके पास क्या सबूत है कि पहलगाम में जो टेररिस्ट आए थे, वे पाकिस्तान से आए थे। इसका मतलब है कि आज इनका सवाल सीधे-सीधे भारतीयों पर है, मतलब भारत में आज आतंकवाद पैदा हो रहा है - ऐसा इनके कहने का अर्थ है। इन्होंने पहले सैफरन टेररिज्म कहा था। इसका मतलब है कि टेररिस्ट को भी धर्म के भेद पर डिस्टिंग्विश करने का काम भी इनके ही नेता ने किया। आज उनके ही नेता यहां पर पाकिस्तान को क्लीन चिट देने का काम कर रहे हैं। इनके एक नेता मणि शंकर जी थे। वर्ष 1993 के बम ब्लास्ट धमाकों में याकूब मैमन ने सैकड़ों लोगों की जान ली थी। उसकी मर्सी पिटीशन पर साइन करने का काम इनके नेता ने किया, जिसका नाम मणि शंकर अय्यर था। उन्होंने कहा कि हमें पाकिस्तान का सम्मान करना चाहिए, क्योंकि वह न्यूक्लियर पावर है।

इसके बाद यासीन मलिक था, जिसने कश्मीर में आतंकवाद फैलाने का काम किया। उसको गेस्ट ऑफ ऑनर बनाकर प्रधानमंत्री के बगल में बैठाने का काम भी इनकी सरकार ने किया। मैंने यहां पर शाहिद लतीफ़ के बारे में कहा है। जब शाहिद लतीफ को 25 आतंकवादियों के साथ छोड़ा गया, उसी शाहिद लतीफ़ ने फिर से आकर पठानकोट पर हमला करने का काम किया। ये तो ड्रेडेड टेररिस्ट थे। कोई लश्कर-ए-तैयबा का था, कोई मुजाहिदीन का था, कोई जैश-ए-मोहम्मद का था। यह जानते हुए भी आपको पाकिस्तान के साथ दोस्ती बढ़ानी थी, इसीलिए इतने टेररिस्ट को खुलेआम छोड़ने का काम आपने किया। अगर आप उन्हें नहीं छोड़ते तो ये हमले नहीं होते। कांग्रेस ने उस समय दोस्ती के नाम पर चीन को अकसाई चिन में भेंट कर दिया और दोस्ती के नाम पर कोको द्वीप समूह म्यांमार को दे दिया। वर्ष 1948 में जब हमारी सेना ने पाकिस्तानी कबालियों और ट्राइबल आर्मी को खदेड़ दिया था, तब भी दोस्ती के नाम पर आपने युद्ध विराम लगाने का काम किया। जो बायलेट्रल इशू था, उसको इंटरनेशनल बनाने का काम भी आपने किया था।

(1505/KN/UB)

आज आप ही पूछ रहे हैं कि पीओके कब लोगे? अरे, पीओके देने का काम तो आपने किया। यह पाप आपने किया। मैं आपको बता दूं कि जिस तरीके से अनुच्छेद 370 हटाने का काम किया, राम मंदिर बनाने का काम किया, वक्फ बिल का निर्णय लेने का काम किया और पीओके को भी जरूर हिन्दुस्तान का हिस्सा बनाने का काम भी हमारी ही सरकार में होगा।

जिस अफजल गुरु ने इस लोकतंत्र के मंदिर पर हमला किया, उसके लिए भी इनके तब के गृह मंत्री को बहुत ज्यादा सहानुभूति थी। उन्होंने कहा था, “There were grave doubts about his involvement. He could have been imprisoned for life without parole”. जिसने इस लोकतंत्र के मंदिर पर हमला किया, उसकी सजा कम करने की मांग भी इनकी ही सरकार और इनके ही नेता ने किया। यह सब ये भूल गए। लेकिन जब प्रणव मुखर्जी जी राष्ट्रपति बने तब बाला साहेब ठाकरे ने उनको कहा कि आप पहला काम यह कीजिए कि जो अफजल गुरु है, उसको फांसी की सजा देने का काम कीजिए। लेकिन इन्होंने हर एक आतंकवादी को बरी करने का काम, हिन्दुस्तान से बाहर भेजने का काम किया।

मैं एक डेलिगेशन का भाग भी था। मैंने एक डेलिगेशन को लीड भी किया। मैं इस डेलिगेशन को लीड करने वाला सबसे युवा सांसद था। मैं इसके लिए प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी, अमित शाह जी और एक्सटर्नल अफेयर्स मिनिस्टर जी को भी धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने एक डेलिगेशन लीड करने का मौका मुझे दिया। यहां पर सब लोग कह रहे थे कि ये जो डेलिगेशन्स भेजे गए, उन डेलिगेशन्स को क्या मिला? किस प्रकार से लोगों का रिस्पोंस मिला? आपको वहां पर कौन मिला? मैं आपको बताना चाहूंगा कि हमारा डेलिगेशन यूएई गया और बाकी तीन अफ्रीकी देशों में गया। … (व्यवधान) सर, मैं अकेला स्पीकर हूं। हमें वहां पर उस देश के प्राइम मिनिस्टर, प्रेजीडेंट और फॉरेन अफेयर्स मिनिस्टर मिले। सभी ने भारत के साथ संवदेना प्रकट करने का काम भी किया। उसमें से दो देशों ने अपने सभागृह में पहलगाम में मारे गए लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित करने का काम भी किया। इस हमले को कंडेम करने का काम भी दो सभागृह और दो देशों ने किया। यह भारत की फॉरेन पॉलिसी की सफलता है। हम सभी जगह पर गए और सभी देशों ने कहा कि भारत एक ऐसा इनीशिएटिव ले रहा है, जो टेररिज्म के खिलाफ सारी दुनिया को सेंसिटाइज करने का काम कर रहा है। क्योंकि यह टेररिज्म सिर्फ भारत तक सीमित नहीं है, यह टेररिज्म सिर्फ क्रॉस-बॉर्डर टेररिज्म नहीं है, बल्कि यह टेररिज्म पूरी दुनिया में फेल चुका है। … (व्यवधान)

माननीय सभापति (श्री दिलीप शइकीया) : माननीय सदस्य, आप अपनी बात समाप्त कीजिए।

डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे (कल्याण) : इस टेररिज्म के खिलाफ पूरे देश को एक साथ एक प्लेटफार्म पर लाने का काम, एक इनीशिएटिव लेने का काम भारत ने किया और वहां पर सराहना करने का काम प्रत्येक देश ने किया। कुछ लोगों ने यहां पर कहा कि कुछ लोग हॉलिडे ट्रिप पर गए। मुझे इन लोगों को कहना है कि आपके भी सदस्य इस डेलिगेशन को लीड कर रहे थे। आप उनसे जाकर पूछिये कि आप हॉलिडे ट्रिप पर गए थे या देश का पक्ष रखने गए थे? हम जिन देशों में गए थे, उसमें से एक देश कांगो है, जो अफ्रीका में है और वहां पर सिविल वार चल रहा है। हमारे वहां पहुंचने के एक हफ्ते पहले ही एक जन की गोली मार कर हत्या कर दी गई थी। हम ऐसे देशों में भी गए, जहां पर येलो फीवर जैसी बीमारी थी, जहां पर मंकी पॉक्स जैसी बीमारी थी। हमारा डेलिगेशन वहां पर गया और उस डेलिगेशन में ईटी बशीर मोहम्मद जैसे 79 ईयर्स ओल्ड सांसद भी थे। वहां पर अहलुवालिया जैसे सीनियर मोस्ट डिप्लोमेट भी थे। ये वहां पर छुट्टियां मनाने नहीं गए थे, बल्कि वहां पर भारत का पक्ष रखने गए थे। इसलिए वहां पर मुझे दो-दो सभागृह में सम्बोधन करने का अवसर मिला और वे चारों देश भारत के साथ खड़े हुए। … (व्यवधान)

माननीय सभापति : आप अपनी बात समाप्त कीजिए।

(1510/RAJ/NKL)

डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे (कल्याण) : कुछ लोग यहां पर डिप्लोमैसी के बारे में बात कर रहे हैं। मैं उनसे कहना चाहता हूं कि diplomacy is not done over 'X'. कुछ लोग यहां पर कह रहे थे कि प्रधान मंत्री जी ने 'एक्स' पर भी व्यक्त नहीं किया। प्रधान मंत्री जी ने उनको उनके घर में घुस कर उनको पकड़ कर मारने का काम किया है। मैं उनके लिए कहना चाहूंगा कि diplomacy is not done over 'X'; it is done face-to-face with leaders of free world. Diplomacy is not done in comforts of Lutyens Delhi; it is done in high offices of foreign nations. Diplomacy is not shameful surrender at Sharm-el-Sheikh; it is the success of nations standing in solidarity with you on their soils. Diplomacy is not speaking against terror in one's home turf; it is getting others to stand up, condemn, and resolve support in their own constitutional Houses. जैसे हम जिन देशों में गए, वहां पर हुआ।

Finally, diplomacy is not asking Party Members of ruling alliance to represent India; it is bravely letting the hon. Members in the Opposition take India's stand to the world. इसलिए शशि थरूर जैसे लोगों को भी वहां पर डेलीगेशन लीड करने का अवसर मिला है।…(व्यवधान)

माननीय सभापति (श्री दिलीप शइकीया) : आप अपनी बात आधा मिनट में समाप्त कीजिए।

… (व्यवधान)

डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे (कल्याण) : सर, कुछ लोग यहां पर डिफेंस पर सवाल उठा रहे थे, लेकिन आज आत्मनिर्भर भारत के अंडर में हमारा डिफेंस प्रोडक्शन जो वर्ष 2013-14 में 46 हजार करोड़ रुपए का था, आज वह सवा लाख करोड़ रुपए का हो चुका है। इसमें 174 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। डिफेंस एक्सपोर्ट वर्ष 2013-14 में 600 करोड़ रुपए का था, यह वर्ष 2024-25 में 23 हजार करोड़ रुपए तक पहुंच चुका है।…(व्यवधान)

माननीय सभापति : ऑनरेबल मैम्बर, सुश्री सयानी घोष।

… (व्यवधान)

डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे (कल्याण) : सर, मैं अपनी बात समाप्त कर रहा हूं।

माननीय सभापति : ऐसा नहीं होता है। आपको बोलते हुए 21 मिनट हो गए हैं।

डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे (कल्याण) : हमारा देश 85 देशों से भी ज्यादा देशों में वेपन्स सप्लाई कर रहा है। आज हम हथियार खरीदने वाले नहीं बल्कि हथियार बनाने वाले और देने वाले भी बन चुके हैं।

अंत में सभी को यही कहूंगा कि आज टेररिज्म के खिलाफ सिर्फ सत्ताधारी ही नहीं बल्कि विपक्ष को भी साथ आकर लड़ाई लड़नी चाहिए। आज भारत की सेना जिस प्रकार से आतंकवाद खत्म करने के पीछे लगी है, हमें उनको प्रोत्साहित करने का काम यहां पर करना चाहिए।…(व्यवधान)

माननीय सभापति : ऑनरेबल मैम्बर, सुश्री सयानी घोष।

… (व्यवधान)

सुश्री सयानी घोष (जादवपुर) : सर, धन्यवाद।… (व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: Sayani Ghosh ji, you please start.

… (*Interruptions*)

माननीय सभापति : डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे, कृपया आप अपनी बात समाप्त कीजिए।

डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे (कल्याण) : मैं अपने जवानों का अभिनंदन भी करता हूं और उनके लिए कुछ पंक्तियां बोलकर अपना भाषण समाप्त करना चाहूंगा।

“राह के पत्थर को चकनाचूर होना चाहिए
वार चाहे एक हो, भरपूर होना चाहिए
सिर्फ इतना ही नहीं कि पाकिस्तान हार अपनी मान ले
वह हमारे सामने मजबूर होना चाहिए।
धन्यवाद, जयहिंद, जय महाराष्ट्र।”

(इति)

1513 बजे

SUSHRI SAYANI GHOSH (JADAVPUR) : *(Thank you, Honorable Chairperson Sir. First of all, I would like to take permission to speak from here, and to do so in a mix of Bengali, Hindi, and English. Thank you, Chairman Sir, for allowing me to speak today on a critical and sensitive issue of Operation Sindoor. After many years, the people of India witnessed a time when going beyond caste, religion, political differences and disagreements, and everyone came together for the sake of the country. Rich Indians or poor Indians, Hindus or Muslim Indians, Sikhs or Christian Indians, believers or atheist Indians, from Indians participating in mock drills ready for war footing, all sang in an absolute harmony.)

“तेरी मिट्टी में मिल जावां
गुल बनके मैं खिल जावां
है इतनी-सी दिल की आरजू।”

(Sir, we salute and congratulate the Indian Armed Forces. But alongside this, there are some questions for the Prime Minister of our country, which I ask not only as an MP or on behalf of my party, but on behalf of one hundred and forty crore Indians. For that, you can call me a critic of the government, you may call my statement politically motivated, but please do not label me a traitor. That is because I am a daughter of the country, an elected representative, a nationalist citizen, and also a Bengali.)

(1515/VR/NK)

Sir, I am a Bengali, and we all know that *Vande Mataram* is a war cry that originated from Bengal. Our forefathers have shed blood for this country and we continue to sacrifice our lives for the unity and sovereignty of this great nation.

(On April 22, 26 innocent Indian lives were lost in the Pakistan-sponsored terrorist attack in Pahalgam. Among them were Manish Ranjan and Sameer Guha from Bengal, and Bitan Adhikari from Jadabpur Lok Sabha constituency. I went to his residence. The devastated parents, aged 80-85, were standing in front of their son's coffin, a small child was running from one room to another crying, and the distraught wife was wailing.)

* () Original in Bengali

एक चुटकी सिंदूर की कीमत ये गद्दार पाकिस्तान और बुजदिल आतंकवादी क्या जाने, नरेन्द्र मोदी जी यह जानते थे और इसीलिए उन्होंने नाम रखा 'ऑपरेशन सिंदूर' जिसे सुनकर सबकी भावनाएं जाग उठी और प्रधानमंत्री जी से हमारी उम्मीदें बहुत ज्यादा बढ़ गईं।

(But is all truly well that ends well? Was the Prime Minister able to keep the country's dignity, influence, and glory intact until the end?)

सर, कहानी बहुत अच्छी बनी, पकौड़े बहुत अच्छे बने, लेकिन सरसों की जगह किरोसीन तेल डाल दिया, बस यही हो गया।

(The vermilion issue will come later. First, we need to know where all these militants came from. Today the home minister was saying: "आए तो क्या हुआ, आ गए तो आ गए।" It doesn't work that way. Where thousands of tourists could reach, where 4 militants could reach, why couldn't 10 policemen reach? We want to know this.)

सर, हम कहेंगे कि आपने घर में घुसकर मारा तो आप बोलेंगे देशप्रेमी, हम पूछेंगे कि आतंकवादी कहां से आए तो आप बोलेंगे देशद्रोही, हम बोलेंगे वाह मोदी जी, वाह तो आप बोलेंगे कि देशप्रेमी, हम बोलेंगे नरेन्द्र मोदी जी जवाब दो तो आप बोलेंगे देशद्रोही, ऐसा नहीं होता है। आपके और हमारे बोलने से कोई जाता भी नहीं, आता भी नहीं।

(Jammu and Kashmir Lieutenant Governor Manoj Sinha publicly said after the Pahalgram incident that this was a grave security lapse. If this was really a grave security failure, then why was the Intelligence Bureau chief not held accountable? Why was his tenure extended by a month, and was he rewarded? You should have removed him. By removing him, you would have sent a message to the people of the country. It is a grave security lapse.

But you did not do that. Yesterday Honorable Shri Jay Panda was saying that probably one militant was killed in Operation Mahadev. Today the Home Minister is saying that three persons have been killed. Fortunately we started the discussion two days ago. Had we started two months ago, we might have been able to put more pressure and catch the terrorists earlier. We know what is happening. The Home Minister has said many times in Parliament and during the election campaigns and even today he has stated that Pakistan-occupied Jammu and Kashmir is ours, and we will anyhow reclaim it back. I want to know why didn't we do it even though we had such a golden opportunity? There is no place for intelligence failure and security lapse in this country.)

आपने ईंट का जवाब ईंट से दिया, देश चाहता था कि आप ईंट का जवाब पत्थर दो। पहले बोलते हैं कि पीओके हमारा है, इसे लेकर छोड़ेंगे। आज पहले दिन से बोल रहे हैं कि हम non-escalatory हैं। वे मारेंगे तो फिर हम मारेंगे, फिर वो मारेंगे, फिर हम मारेंगे, वो दो मारेंगे, हम दस मारेंगे, वो 26 मारेंगे हम 100 मारेंगे। उरी होगा, बालाकोट होगा, पुलवामा होगा और उसके बाद फिर कोई अटैक होगा, फिर पहलगाम होगा, फिर ऑपरेशन सिंदूर होगा, यह सिलसिला चलता रहेगा, लोगों की जान जाती रहेगी।

राजनाथ जी कल बोल रहे थे कि युद्ध उनके साथ होता है जो आपके बराबरी के हों, इसमें बराबरी की कोई बात नहीं है। क्या श्री राम और रावण बराबर थे, नहीं थे? धर्म पर अधर्म की बात होती है, न्याय पर अन्याय की बात होती है, ऐसे नहीं होता है। वह कल बोल रहे थे कि छोटी-छोटी चीजों को नजरअंदाज कीजिए। रिजल्ट क्या है, वह देखिए, पेन्सिल टूटी या नहीं, परीक्षा हॉल में लेट पहुंचे या नहीं, ये सब इम्पॉर्टेंट नहीं हैं। यहां चाचा चौधरी ने पेपर लीक कर दिया, अभी आप फर्स्ट आएं या लास्ट आएं, उससे क्या फर्क पड़ता है?

(1520/IND/SNT)

(Sir, no one wants war. Everyone wants peace. No one wants any bloodshed, no one wants destruction, every one desires harmony and progress.) हम भी सोचते हैं कि 'यदि जंग छिड़ी तो दुकानों का क्या होगा, बंदूकें तो बिक जाएंगी लेकिन गुलदस्तों का क्या होगा।' But was this not the right time and the right opportunity to give Pakistan a befitting reply and let them know कि वजीरेआजम आपके झंडे पर चांद है लेकिन हमारा झंडा चांद पर है? पाकिस्तान को पता चलने दो कि वहां के लोग एक किलो आटे के लिए आपस में लड़ते हैं और हम हर दिन गुरुद्वारे में पूरी और हलवा बांटा करते हैं। आपको फर्क पता चल रहा होगा, लेकिन जवाब नहीं दे पाए।

Despite being at an advantage, we surrendered to external interference in the internal matter of this country. Yes, Jammu & Kashmir is an internal matter of India. (Just as one militant stronghold after another was being destroyed, the enthusiasm of the people of the country was increasing. At that very moment, the people of India came to know from the message on social media of US President Donald Trump that Operation Sindoor had been suspended. With the intervention of America, India declared a ceasefire three days after the war started. Whereas on the 9^{th}, US Vice President JD Vance had said, 'It is fundamentally none of our business'. The US President is saying on 10^{th} May:) "After a long night of talks mediated by the United States, I am pleased to announce that India and Pakistan have agreed to a full and immediate ceasefire. Congratulations to both countries on using common sense and great intelligence."

(On 11th May, he is claiming that) "I will work with you both to see if after a thousand years a solution can be arrived at concerning Kashmir." (On 12th May, he is again claiming:) "My administration helped broker a full and immediate ceasefire, I think a permanent one, between Pakistan and India." (On 13th May, he is again saying:) "I used trade to a large extent to do it. And I said, 'Fellows, come on. Let us make a deal. Let us do some trading'."

महोदय, आप इनकी भाषा देखिए। (Since 10th May till yesterday, American President has made 28 such claims and sent a message across the entire world that Trump has stopped the war.) 28 बार अमरीका के प्रेजीडेंट ने पूरी दुनिया को मैसेज दिया कि ट्रम्प ने वार रुकवा दी, पापा। होम मिनिस्टर बोल रहे थे कि मॉनेकशाह जी ने कहा कि Bhutto made a ... (*Expunged as ordered by the Chair*) out of Indira Gandhi. पूरा देश बोल रहा है, पूरा विश्व बोल रहा है that Trump made a ... (*Expunged as ordered by the Chair*) of Narendra Modi. (Yesterday, the hon. Defence Minister did not utter a word on this. The hon. Foreign Minister mentioned this in a single line.) नहीं, नहीं हमारे साथ ट्रेड की कोई बात नहीं हुई है। मतलब रिस्क हम लें, ऑपरेशन हम करें और खीर चाचा चौधरी खाकर चला जाए। क्या इसके लिए हम यहां बैठे हैं? इस लड़ाई में शायद आप जीत गए, लेकिन नेरेटिव की लड़ाई में आप हार गए। आप देश को बता नहीं पाए कि अधर्म पर धर्म की जीत हुई है। पाकिस्तान पर फिर से हिंदुस्तान की जीत हुई है। आप देश को ठीक से बता नहीं पाए। प्रेस और मीडिया की शायद कुछ गैर जिम्मेदार भूमिका रही होगी। लोगों को बहकाने का काम किया गया। खबर ऐसी बना देते थे कि आज मैं कोलकाता में सोने जाऊंगी और कल मेरी नींद कराची में खुलेगी। आज लखनऊ में मैं डिनर करूंगी और कल लाहौर में ब्रेकफास्ट करूंगी। ऐसा नहीं चल सकता है।

(Sir, we would not ask how many fighter jets were shot down.) हमें इस सबसे कोई मतलब नहीं है। हाँ, वार हुई। हमारे दो गिरे, आपके दस गिरे होंगे। हमें पता है कि यह कोई पब्जी गेम नहीं है कि बेड रूम या बॉलकनी में बैठकर खेल रहे हैं। ऐसा नहीं होता है। हम जिम्मेदार लोग हैं लेकिन आपको यह भी समझना पड़ेगा कि Indians need transparency and accountability. They need their leader, their Prime Minister, to stand up and speak. मन की बात 124 बार हुई थी, यह 125 बार हो जाती। इसमें कौन-सी बड़ी बात है। आप बोल रहे हैं कि हम आपसे सवाल न करें। यह पाकिस्तान नहीं है, जहां सरकारें कम चलती हैं लेकिन तानाशाही ज्यादा चलती है। यह भारत है। यहां रूलिंग पार्टी यदि देश चलाती है तो ये सत्ता विपक्ष से चलती है। यह पाकिस्तान की संसद नहीं है, जहां 26 लोग मारे जाने पर उनकी मौत का जशन मनाया जाता है और जहां पालिटिशियन्स और आर्मी चीफ के यहां टेरेरिस्ट्स को जन्मदिन, शादी या मय्यत में बुलाते हैं। ऐसा नहीं होता है। होम मिनिस्टर ने आज कहा कि हमने दुनिया के सामने पाकिस्तान को बेनकाब कर दिया। (See, even after having so much evidence,

soon after the attacks, Pakistan managed to get monetary sanctions of 1 billion and 40 billion from the IMF and the World Bank, respectively. It got a long-term investment opportunity. And a terror manufacturing country like Pakistan became the Vice-chairman of the Counter-Terrorism Committee of the United Nations Security Council.)

(1525/KDS/SNT)

Of course, everybody will condemn and criticise terrorism but there was no diplomatic isolation for Pakistan from any country of the world.

मोदी जी, आपके 56 इंच का दबदबा कहां गया?

(You call yourselves the friends of the world- the "Viswaguru". You visited 33 countries during this difficult time to earn their support, but how many countries directly showed their solidarity towards you? We have read their feedback. Some of them have thanked America, some stayed neutral, and some remained silent. The Prime Minister has travelled abroad 8 times since the Pahalgam incident. What is the use of travelling the world when everyone is also indulging in discussions with you and no one is there to help in the time of crisis?)

कल अनुराग जी बोल रहे थे कि हम किसी के पास सहयोग मांगने नहीं गए। हम केवल विवरण देने गए थे कि हम कैसे जीते? खुद का ढिंढोरा क्या पीटना? पूरा देश, पूरा विश्व देख रहा है। आप पराक्रमी बने, विजयी बने, ये तो लोग बोलेंगे न, आपको इतनी सारी जगहों पर जाने की क्या जरूरत है?

(You could neither be a friend of the world nor a friend of the country. Such a massive incident happened in Pahalgam, and you did not go there. 27 people died in cross-border shelling in Poonch, Rajaouri, Uri; but you did not go there. The All India Trinamool Congress delegation reached 4 kilometres near the Pakistan border, but you could not reach there either. The countrymen wanted you to go there just once and stand there. An all-party meeting was held, but you did not come there.)

सर, आप हमेशा बोलते हैं कि हमने किया है, हमने किया है, आपने केवल अकेले नहीं किया है। इंडियन आर्म्ड फोर्स ने किया है, 140 करोड़ देशवासियों ने किया है। किसी का कुछ नहीं आता। सबका वक्त आता है और जिसका वक्त आता है, उसके पास सब आता है। यह हमारा वक्त है।

(I only want to say that across party lines, everybody stood united behind you. Year after year, you have deprived Bengal. You have disrespected

the Bengali language and its people. Still, the people of our state, our Honorable Chief Minister, and our Party didn't play any political games in this tumultuous time. They showed unconditional and unquestioned support. Our leader, Abhishek Banerjee, travelled with the delegation you sent, and sang praises of our country in foreign lands. He has established himself as a nationalist and a dedicated Indian. But what have we got in return, sir? We need to hear this. Your leader, one Union Minister of State, was standing in the heart of West Bengal and saying that Operation Sindoor has been done, and then Operation West Bengal will be carried out.)

आप बोलते हैं न, कि ममता दीदी बांग्लादेशियों को बंगाल में घुसवाती हैं, तो बॉर्डर में आतंकवादियों को कौन घुसा रहा है, इसका जवाब भी आपको देना पड़ेगा कि यह काम भी बंगाल की दीदी कर रही हैं। सामने इलेक्शन है, तो वह भी आप बोल सकते हैं।

Conduct the election tomorrow. Do it tomorrow. On one side is you and your money, your central agency, unlimited power; on the other side, Honorable Mamata Banerjee- the Bengali woman who wears sandals.

सर, मैं और ज्यादा नहीं बोलना चाहती। मैं केवल एक ही शब्द बोलूंगी। ... (व्यवधान) We are the world's largest democracy. We are proud of our democratic practices. We are proud of our Army, our naval and our air defence machinery. We are proud of the professionalism and the precision with which the air strikes were carried out against Pak terror bases and air bases – a roaring success story of India's strengthening military capabilities over decades. We are proud of our daughters – Colonel Sofiya Qureshi and Wing Commander Vyomika Singh. It is a shining example of secularism and women empowerment in the country.

सर, अब मैं अंतिम लाइन बोलना चाहूंगी। हमें गर्व है कि आपने एक सौ आतंकवादियों को मार गिराया, पर हम तो चाहते थे कि ऐसा एक भी न बचे, जिससे भविष्य में भारत की बहनों-बेटियों के सिंदूर को खतरा हो। चाहे वे आतंकवादी हों, पाकिस्तान हो या पाकिस्तान को ऑक्सीजन देने वाला चीन हो, India has to give out the message loud and clear.

(We will not fear. We will not be afraid. Before death beckons us, we don't die.)

"हम डरेंगे नहीं, डरेंगे नहीं।
मरने से पहले मरेंगे नहीं, मरेंगे नहीं।।
हम अमन चाहते हैं, मगर ज़ुल्म के खिलाफ।
अगर जंग लाज़िमी है, तो फिर जंग ही सही।।"

थैंक्यू सर।

(इति)

(1530/CS/AK)

1530 बजे

डॉ. निशिकान्त दुबे (गोड्डा) : महोदय, धन्यवाद।… (व्यवधान)

THIRU DAYANIDHI MARAN (CHENNAI CENTRAL): Sir, I have a Point of Order. … (*Interruptions*) There is no translation. … (*Interruptions*) We need translation to understand him. … (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON (SHRI DILIP SAIKIA): Please confirm that translation is going on.

… (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: There is some technical issue.

… (*Interruptions*)

THIRU DAYANIDHI MARAN (CHENNAI CENTRAL): You can speak in English. … (*Interruptions*) You speak good English. … (*Interruptions*)

डॉ. निशिकान्त दुबे (गोड्डा) : महोदय, मैं भारत की सेना और इस देश के प्रधानमंत्री जी को धन्यवाद देना चाहता हूँ, जिन्होंने पहलगाम की घटना के बाद 'ऑपरेशन सिंदूर' करके पाकिस्तान को मुँहतोड़ जवाब दिया।… (व्यवधान) मैं उन लोगों को भी श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहता हूँ, जिन निहत्थे लोगों को धर्म के नाम पर मारा गया।… (व्यवधान)

SHRI D. M. KATHIR ANAND (VELLORE): Sir, it is our right to know what he is speaking. … (*Interruptions*) How do we know what he is speaking? … (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Hon. Members, please sit down.

… (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: There is some technical issue.

… (*Interruptions*)

SHRI D. M. KATHIR ANAND (VELLORE): Sir, we need to know what he is speaking. … (*Interruptions*) It is our right. … (*Interruptions*) How will we know what he is speaking? … (*Interruptions*)

डॉ. निशिकान्त दुबे (गोड्डा) : यह प्रॉब्लम लोक सभा की है, यह प्रॉब्लम मेरी नहीं है। मुझे हिन्दी आती है तो मैं हिन्दी ही बोलूँगा ना।… (व्यवधान)

SHRI D. M. KATHIR ANAND (VELLORE): Speak in English. … (*Interruptions*)

डॉ. निशिकान्त दुबे (गोड्डा) : आपके कहने से मैं अंग्रेजी नहीं बोलूँगा और अंग्रेजी विदेशी भाषा है। यदि आप मुझे तमिल बोलने के लिए कहते तो मुझे प्रसन्नता होती।... (व्यवधान) आप इंग्लिश बोलने के लिए कहते हो, वह विदेशी भाषा है।... (व्यवधान) यही आप लोगों की मानसिकता है।... (व्यवधान) कोई तमिल बोलने के लिए कहे, कोई बांग्ला बोलने के लिए कहे तो मुझे गर्व होगा, क्योंकि वह हमारी भाषा है, भारतीय भाषा है।... (व्यवधान) आप अंग्रेजी बोलने के लिए कह रहे हो।... (व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: Please be seated. Work is going on. Kindly have some patience.

… (*Interruptions*)

डॉ. निशिकान्त दुबे (गोड्डा) : वणक्कम से शुरू करते हैं।

माननीय सभापति : आप वणक्कम से शुरू कीजिए।

डॉ. निशिकान्त दुबे (गोड्डा) : वणक्कम से ही शुरू करते हैं या भालोबाशी से शुरू करते हैं, किसी से शुरू करते हैं, बांग्ला से, तमिल से शुरू करते हैं।... (व्यवधान)

महोदय, मैं दो दिन से डिबेट सुन रहा हूँ।... (व्यवधान)

माननीय सभापति : मैं वही तो बोल रहा हूँ कि आप थोड़ा सा पेशेंस रखिए।

THIRU DAYANIDHI MARAN (CHENNAI CENTRAL): He always talks controversial issues. … (*Interruptions*)

SHRI D. M. KATHIR ANAND (VELLORE): We need to have translation. … (*Interruptions*)

THIRU DAYANIDHI MARAN (CHENNAI CENTRAL): We need to counter him. … (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: There is some technical issue. We are working on it.

… (*Interruptions*)

SHRI D. M. KATHIR ANAND (VELLORE): Sir, you can suspend the House for some time. … (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: I am repeatedly telling you that there is some technical issue. They are working on it.

… (*Interruptions*)

THIRU DAYANIDHI MARAN (CHENNAI CENTRAL): Sir, adjourn the House. … (*Interruptions*)

डॉ. निशिकान्त दुबे (गोड्डा) : महोदय, आप यह देखिए कि अभी 20 मिनट तक बंगाली में भाषण होता रहा, किसी भी तमिलनाडु के सांसद ने इतना चिल्लाकर बात नहीं की। उनको हिन्दी से क्या प्रॉब्लम है?… (व्यवधान) हमको तमिल से प्रॉब्लम नहीं है।… (व्यवधान) तमिल महान भाषा है।… (व्यवधान) हम तमिल का रिगार्ड करते हैं, आदर करते हैं, सम्मान करते हैं।… (व्यवधान) उनको हिन्दी से क्या प्रॉब्लम है?… (व्यवधान) यही कांग्रेस की मानसिकता है।… (व्यवधान) यही कांग्रेस की सभी सहयोगी पार्टियों की मानसिकता है।… (व्यवधान)

SHRI D. M. KATHIR ANAND (VELLORE): Translation is the problem. … (*Interruptions*)

डॉ. निशिकान्त दुबे (गोड्डा) : सर, उनको नॉर्थ इंडियन से प्रॉब्लम है।… (व्यवधान) सर, हिन्दी बोलना इस देश में गुनाह हो गया है।… (व्यवधान) एक दिन ऐसा होगा कि पूरा का पूरा देश इंग्लैंड हो जायेगा, अंग्रेजों के गुलाम हो जाएंगे।… (व्यवधान)

SHRI D. M. KATHIR ANAND (VELLORE): Sir, we want translation. … (*Interruptions*) Kindly ask him to speak in English. … (*Interruptions*) How can he speak? … (*Interruptions*) You cannot allow this. … (*Interruptions*) Adjourn the House. … (*Interruptions*)

डॉ. निशिकान्त दुबे (गोड्डा) : महोदय, मेरा समय बर्बाद हो रहा है और वह समय इसमें इनक्लूड होगा।… (व्यवधान)

(1535/SRG/RV)

HON. CHAIRPERSON (SHRI DILIP SAIKIA): Please be seated.

… (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Translation has started in Tamil language. English translation is also coming. Please hear in Tamil language.

… (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Tamil is the oldest language. Tamil language is pride of India. Please listen in Tamil language.

… (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Please be seated.

… (*Interruptions*)

डॉ. निशिकान्त दुबे (गोड्डा) : सभापति महोदय, अभी कांग्रेस की महासचिव और सांसद प्रियंका जी काफी कुल बोलकर गयीं और उन्होंने कहा कि इतिहास से कोई मतलब नहीं है, वर्तमान में जीएं। जो व्यक्ति, जो देश, जो समाज इतिहास को भूलता है, वह अपने आपको मिट्टी में मिला लेता है। इतिहास से सीखना चाहिए, वर्तमान में जीना चाहिए।… (व्यवधान)

सभापति महोदय, इस पार्लियामेंट में और इस देश में दो चीजों पर बात होती है। हम लोग किस चीज पर चर्चा करते हैं? हम लोग या तो कश्मीर पर चर्चा करते हैं या चीन पर चर्चा करते हैं। इन्हीं दो चीजों पर चर्चा करते हैं। प्रियंका गांधी और राहुल गांधी जी को यह लगता है कि नेहरू जी पर उनका एक स्टाम्प है। नेहरू जी आपके नाना हो सकते हैं, दादा हो सकते हैं, लेकिन इस देश के वे पहले प्रधान मंत्री थे और उनके किए हुए कारनामे पर प्रश्न उठाने का मुझे पूरा अधिकार है।… (व्यवधान) आपकी कोई गारंटी नहीं है, आपकी उन पर कोई यू.एस.पी. नहीं है। वे इस देश के प्रधान मंत्री थे।… (व्यवधान) यदि 'लम्हों ने खता की, सदियों ने सजा पायी', तो हम जो सजा पा रहे हैं, उसके बारे में प्रश्न उठाने का मुझे पूरा अधिकार है।… (व्यवधान)

सर, एक किताब है, जो नेहरू जी ने लिखी और उसके बारे में समाज को और इस देश को जानने का अधिकार है। उनकी किताब है – 'ग्लिम्पसेज ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री।' कांग्रेस और विपक्षी पार्टियों की मानसिकता वहीं से निकलती है।

सभापति महोदय, 'ग्लिम्पसेज़ ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री' में नेहरू जी ने लिखा कि महमूद गज़नी, मोहम्मद गोरी, जिसको कि हम लुटेरा मानते हैं, जैसे आज जिसे टेररिस्ट कहते हैं, वह उस जमाने का टेररिस्ट हुआ करता था। उसके बारे में वे कहते हैं कि वह 'वॉरियर' था। उसके बारे में वे कहते हैं कि 'वह केवल अपने एम्पायर को एक्सपैंड करने के लिए आया था और उसने हिन्दुओं पर कोई जुल्म नहीं किया।' यह 'ग्लिम्पसेज़ ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री' में खुद मिस्टर नेहरू लिखते हैं और यही आज की मानसिकता है।… (व्यवधान) दूसरी मानसिकता वह है कि नेहरू जी के किए हुए कामों पर यह परिवार क्वैश्चन उठाता है।… (व्यवधान)

मैं आपको बताऊं कि पाकिस्तान, जिसके बारे में माननीय गृह मंत्री जी ने बोला, मैं उसी बात को आगे बढ़ाना चाहता हूं कि आखिर पाकिस्तान क्यों बना? यह मैं सभी को बताना चाहता हूं कि पाकिस्तान क्यों बना? पाकिस्तान दो लोगों ने बनवाया। एक का नाम था मिस्टर जिन्ना, दूसरे का नाम था लियाक़त अली।… (व्यवधान) लियाक़त अली इस देश का कट्टर नागरिक होना चाहता था। लियाक़त अली पश्चिमी उत्तर प्रदेश का था और वह यहीं बैठकर राजनीति करना चाहता था।… (व्यवधान) लियाक़त ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि जब वर्ष 1946 में संविद सरकार बनी, तो मिस्टर नेहरू ने अपनी बहन विजयलक्ष्मी पण्डित को वर्ष 1946 में रूस का राजदूत बनाया, तो उस चीज़ से, परिवारवाद से लियाक़त इतना दु:खी हुआ कि उसने उसी दिन यह तय कर लिया कि जिस दिन भारत का विभाजन होगा, मैं पाकिस्तान चला जाऊंगा और फिर पाकिस्तान और हिन्दुस्तान का बंटवारा हो गया।

(1540/MY/SRG)

सर, वही परिवारवाद आज कांग्रेस को यहां तक ले आई है, इस देश को यहां तक ले आई है। अब मैं आपको बता रहा हूं कि हम लोग कश्मीर और धारा 370 पर क्यों बात करते हैं।... (व्यवधान)

माननीय सभापति (श्री दिलीप शइकीया): प्लीज, आप बैठिए।

... (व्यवधान)

डॉ. निशिकान्त दुबे (गोड्डा) : सर, यह कांग्रेसियों की आदत है। ये मुझे बोलने नहीं देते हैं।... (व्यवधान)

सर, मैं आपको बताऊं कि अभी भारत से सात डेलीगेशन्स बाहर गए। संयोग से मैं भी उस डेलीगेशन का पार्ट था। हमने यह कहा कि धारा 370 विशेष तौर पर ऐसी परिस्थिति में लगाया गया, जिसके लिए वह हकदार नहीं था। आप इसकी कहानी समझिए कि आखिर धारा 370 क्यों लगा और यह कश्मीर की प्रॉब्लम क्यों है। इसके कारण पूरे देश में लड़ाई है। जब वर्ष 1942 में 'भारत छोड़ो आंदोलन' हुआ, पूरे देश की जनता 'भारत छोड़ो आंदोलन' कर रही थी। हम अंग्रेजों के विरूद्ध 'भारत छोड़ो' का आंदोलन कर रहे थे। कश्मीर एक ऐसी जगह थी, वहां शेख अब्दुल्ला साहब 'राजा कश्मीर छोड़ो' का आंदोलन चला रहे थे।... (व्यवधान)

सर, ये यदि ऐसा करेंगे तो कभी भी कांग्रेस वाले नहीं बोल पाएंगे।... (व्यवधान) यह जो रनिंग कमेंट्री है, आप समझिए कि वर्षा गायकवाड़ को इतना भी नहीं पता है कि जब कोई लॉबी में चलता है तो हँसी-मजाक होता है और यह न्यूज बनाती है। इनको इतना भी पता नहीं है।... (व्यवधान)

सभापति महोदय, मैं विषय पर आना चाहता हूं। जब शेख अब्दुल्ला का 'राजा कश्मीर छोड़ो' आंदोलन चल रहा था तो जिन्ना बहुत तेज थे।... (व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON : Please be seated.

... (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON : Please be seated. Please do not talk.

... (*Interruptions*)

माननीय सभापति : माननीय सदस्य, आप बैठे-बैठे टिप्पणी नहीं कर सकते हैं। आपको अलाऊ नहीं किया गया है।

... (व्यवधान)

डॉ. निशिकान्त दुबे (गोड्डा) : सभापति महोदय, शेख अब्दुल्ला साहब 'राजा कश्मीर छोड़ो' आंदोलन चलाए हुए थे। ... (व्यवधान) जिन्ना ने उस वक्त राजा का साथ दिया था। जिन्ना ने जब राजा का साथ दिया और वर्ष 1947 में भारत का विभाजन हुआ, उस वक्त राजा को यह लगा कि नेहरू मेरे खिलाफ है। नेहरू मुझे किसी तरह से भारत के साथ नहीं रहने देना चाहते

हैं। जिन्ना मेरा समर्थन करता है, लेकिन मैं जिन्ना के साथ नहीं जाऊंगा, नेहरू के ऊपर मुझे विश्वास नहीं है। इस कारण उन्होंने अपने डिसीजन को डैफर किया। फिर उन्होंने एग्रीमेंट साइन किया। वह वही एग्रीमेंट था, जो 600 राज्यों ने अलग-अलग इंस्ट्रूमेंट ऑफ अक्सेशन साइन किया। जब मणिपुर के साथ वही लागू हो गया, कच्छ के साथ वही लागू हो गया, उत्तर प्रदेश के साथ वही लागू हो गया, तो कश्मीर में ऐसी कौन सी बात थी कि आपने उसको धारा 370 दे दिया? जिनको लगता है कि टू नेशन थ्योरी के आधार पर वह साइन नहीं हुआ तो जब सिक्किम वर्ष 1975 में भारत में मिला, जब गोवा वर्ष 1962 में भारत में मिला तो उसको आपने धारा 370 क्यों नहीं दे दिया? आज कश्मीर के जो हालात है, उस हालात के पीछे यदि नेहरू-गांधी परिवार जिम्मेवार है तो हम नेहरू जी को जिम्मेवार ठहराएंगे या नहीं ठहराएंगे? इसमें प्रियंका गांधी और राहुल गांधी को परेशानी क्यों है?

मैं आपको एक दूसरी बात कह रहा हूं। अखिलेश यादव जी चीन के बारे में बोलें, कनिमोझी जी चीन के बारे में बोलीं, सुप्रिया जी चीन के बारे में बोलीं। अपोजिशन के जितने आदमी हैं, सब चीन के बारे में बोल रहे हैं।

(1545/MLC/SM)

सर, मैं अब आपको बताऊं कि इस देश में क्या-क्या हुआ? वर्ष 1985 का एक सीआईए का डॉक्यूमेंट हमने रिलीज किया, खुद ही ट्वीट किया और उसमें यह कहा कि कांग्रेस पार्टी के 40 प्रतिशत सांसद सोवियत रूस के लिए उनसे पैसा लेकर मुखबिरी करते थे, उनसे पैसा लेकर चुनाव लड़ते थे। आज तक कांग्रेस के किसी आदमी ने उसके ऊपर डिफेमेशन नहीं किया। वर्ष 1962 के युद्ध के पहले वर्ष 1961 में बेलग्रेड सम्मेलन हुआ। अब मैं आपको बता रहा हूं कि पड़ोसी देश ने क्या किया? … (व्यवधान)

वर्ष 1961 में नेहरू जी ने तिब्बत देने के बाद क्या कहा? मैं तिब्बत पर भी आना चाहूंगा कि तिब्बत क्या है? वर्ष 1886 में भारत, नेपाल और तिब्बत का एक समझौता हुआ। आपको पता है कि वर्ष 1954 तक तिब्बत, नेपाल को प्रत्येक साल एक हर्जाना दिया करता था। वह कभी भी चाइना का पार्ट नहीं था। तिब्बत, नेपाल का हिस्सा हुआ करता था और इसी नेहरू की गलती के कारण तिब्बत चला गया और आज चाइना हमारे माथे पर खड़ा है। वर्ष 1961 में जब नॉन अलाइनमेंट मूवमेंट (नैम) का बेलग्रेड में सम्मेलन हुआ, मैं आपको बताऊं कि उस समय हमारी सिग्नेटरी कंट्री नेपाल, अल्जीरिया, भूटान और यूगोस्लाविया थी। जब 1962 का युद्ध हुआ, तो ये सभी के सभी देश चाइना के साथ चले गये। इतना छोड़िये, आप पड़ोसी देशों की बात कर रहे हैं, वर्ष 1962 में हमारे हारने के बाद नेपाल ने अपना बाउंड्री एग्रीमेंट चाइना के साथ साइन किया, मंगोलिया ने साइन किया, वियतनाम ने साइन किया, कोरिया ने साइन किया। कौन सा देश आपके साथ खड़ा था? सर, वर्ष 1962 में क्या हुआ? ये सैनिकों की बात कर रहे हैं। मैं आपको एक और कहानी बताना चाहूंगा कि आप सैनिकों का

क्या सम्मान और असम्मान करते हैं। वर्ष 1971 का आप जो ढिंढोरा पीट रहे हैं कि वर्ष 1971 में इतनी बड़ी विक्ट्री कर ली, एक और देश को हमारे माथे पर खड़ा कर दिया। यदि बनाना था, तो टू नेशन थ्योरी में हिन्दू बांग्लादेश बनाना था और मुस्लिम बांग्लादेश बनाना था। लेकिन फील्ड मार्शल जनरल मानेक शॉ, जिनके कारण हम युद्ध जीते। आप सैनिकों की बात कर रहे हो। आपको पता है कि वर्ष 1972 में जब उन्हें फील्ड मार्शल की उपाधि मिली। फील्ड मार्शल वो होता है, जो जनरल को मिलता है, आर्मी चीफ को जितना पैसा मिलता है, जिसे दरमाहा कहते हैं, उतना पैसा उसे मिलेगा इसलिए वह फील्ड मार्शल है। उतनी सुविधा उसको मिलेगी इसलिए वह फील्ड मार्शल है।

सभापति महोदय, आपको आश्चर्य होगा कि वर्ष 1972 से लेकर वर्ष 2007 तक इस कांग्रेस सरकार ने उनको पेंशन तक नहीं दी। फील्ड मार्शल का पैसा तो छोड़िये, जब कलाम साहब राष्ट्रपति हुए और उन्होंने इंटरवीन किया, तो वर्ष 2008 में फाइनली उनको पेंशन मिली। आप आर्मी चीफ की इज्जत नहीं करते हो। सन् 1971 के वार के हीरो की इज्जत नहीं करते हो और आप कहते हो कि आप सेना के बारे में सम्मान करते हो।

मैं आपको वर्ष 1962 के युद्ध की बात बता रहा हूं। इन्होंने अपने रिश्तेदार को, भाई भतीजावाद केवल पॉलिटिक्स में नहीं, वर्ष 1962 के चाइना युद्ध के समय इन्होंने मिस्टर कौल को असम, नेफा का हेड बनाया। कौल कौन था? कौल, नेहरू जी का चचेरा भाई था। 18 सेनापतियों को बाईपास करके उन्होंने उसे हैड बनाया।

सर, आपको पता है कि उस युद्ध में हमारे खिलाफ चीन के साथ अमेरिका और ब्रिटेन भी थे, लेकिन आपको आश्चर्य लगेगा कि आकाशवाणी में जब नेहरू जी ने अनाउंस किया कि असम हमारे हाथ से चला गया, तो मिस्टर कौल भागकर आ गए और धौला कुआँ के रिसर्च और रेफरल अस्पताल में आकर भर्ती हो गए।

(1550/GG/GM)

आप किस तरह की बात कर रहे हैं? उन्होंने अपनी किताब 'अनटोल्ड स्टोरी' में लिखा, उन्हीं बी.एन. कौल ने लिखा कि यदि इंडियन एयरफोर्स हमारा साथ देती तो हम बच सकते थे, लेकिन नेहरू ने एयरफोर्स का कोई भी उपयोग नहीं किया, जिसके कारण भारत की हार हुई। … (व्यवधान) यह सब उन्होंने अपनी स्टोरी में लिखा। … (व्यवधान) सर, मैं इसके बाद एक और कहानी बताना चाहता हूँ। … (व्यवधान) जो 'अनटोल्ड स्टोरी' में हुई कि एक रिटायर्ड आर्मी चीफ ने जयंती शिपिंग कंपनी बनाई। … (व्यवधान)

गिरिराज जी, यह बड़ा महत्वपूर्ण है। … (व्यवधान) सर, जयंती शिपिंग कंपनी बनाई। … (व्यवधान) उस वक्त एक हज़ार करोड़ रुपये का बैंक लोन जयंती शिपिंग कंपनी ने ले लिया। … (व्यवधान) उस कंपनी का मालिक रवि तेजा था, जिसने लंदन में मकान लिया। … (व्यवधान) आपको पता है कि मधु लिमये जी ने इसी हाउस में कहा कि राजीव गांधी और

संजय गांधी के रहने का खर्चा और पूरी पढ़ाई का खर्चा उस जयंती शिपिंग का मालिक, वह तेजा देता था। ... (व्यवधान) आप इस तरह की बातें कर रहे हैं? ... (व्यवधान) आप हमसे एयरक्राफ्ट का हिसाब लेते हैं।

सन् 1962 के युद्ध में, 1965 के युद्ध में, 1971 के युद्ध में कितने एयरक्राफ्ट्स गिरे? यह आपको पता है? यह पार्लियामेंट में आज-तक डिस्कस नहीं हुआ। हमने इसका कभी हिसाब नहीं मांगा। सन् 1948 से ले कर वर्ष 2010 तक आईएमएफ का लोन, यदि मुझे बताओगे तो मैं यह कहूंगा कि पाकिस्तान को सन् 1948 से ले कर वर्ष 2010 तक आईएमएफ और वर्ल्ड बैंक लोन देता रहा और आपने एक बार भी उसके ऊपर क्वेश्चन नहीं किया। ... (व्यवधान) लेकिन, जब ऑपरेशन सिंदूर के बाद आईएमएफ और वर्ल्ड बैंक लोन देना चाहती थी तब हमने विरोध किया, भारत ने पहली बार विरोध किया। ... (व्यवधान)

आप सुनना चाहते हैं तो सुनिए कि सन् 1965 के युद्ध में 45 एयरक्राफ्ट्स आपने लूज़ किए। सन् 1971 के युद्ध में 71 एयरक्राफ्ट्स आपने लूज़ किए। ... (व्यवधान) आपसे कभी किसी ने हिसाब पूछा? हम देशभक्त नागरिक हैं। ... (व्यवधान) भारतीय जनता पार्टी का जन्म ही उसी से हुआ है। ... (व्यवधान) श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने इस कश्मीर को बचाने के लिए अपना बलिदान दिया है। ... (व्यवधान)

माननीय नरेंद्र मोदी जी ने वर्ष 1992-93 में झंडा फहराने के लिए अपनी जान की परवाह नहीं की। हमारे लिए एक-एक नागरिक महत्वपूर्ण है। आतंकवादी को मिट्टी में मिलाएंगे। पाकिस्तान ऑक्युपाइड कश्मीर को भारत का अंग बनाएंगे। ... (व्यवधान) यही हमारा संकल्प है। ... (व्यवधान) यही हमारा न्यू नॉर्मल है। ... (व्यवधान) जिस दिन यह बनेगा, उस दिन भारत एक होगा। ... (व्यवधान)

सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने का मौका दिया, उसके लिए धन्यवाद। इन्हीं शब्दों के साथ जय हिन्द, जय भारत।

(इति)

1554 hours

SHRI A. RAJA (NILGIRIS): Mr. Chairman, Sir, in addition to the points that have been made in this House by my colleagues Ms. Kanimozhi on behalf of the DMK, I want to bring a few facts before this House, and out of the facts, I want to ask some questions. … (*Interruptions*) Sir, when we are having some reservations that have been placed before House, as other Members from the regional parties put it, they should not be branded as anti-national. … (*Interruptions*) हिंदी नहीं मालूम, हिंदी नहीं मालूम, हिंदी नहीं मालूम**…** still, I am Indian. You are accepting it. Otherwise, we are ready to go.

… (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON (SHRI DILIP SAIKIA): Please be seated. Mr. Raja, please continue.

… (*Interruptions*)

(1555/RCP/YSH)

HON. CHAIRPERSON (SHRI DILIP SAIKIA): Please be seated.

… (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Please carry on.

SHRI A. RAJA (NILGIRIS): Sir, the DMK is known for national integration. Yes, there was a time when we wanted to have a separate State in the name of Dravida Nadu. In 1962 when the Chinese aggression took place in this country, we gave up the desire of having a separate State. In 1971, when the India-Pakistan war came into existence, our then Chief Minister Kalaignar Karunanidhi gave Rs.5 crore which was matched by none. In 1999, the Kargil War was imposed on us. At that time, Rs.100 crore was given on behalf of the Tamil Nadu Government by Kalaignar Karunanidhi, our beloved leader, which was matched by none. Now, as my colleague has put it, the first rally to support the Indian Army with lakhs and lakhs of people was organised by my leader Mr. M.K. Stalin, Chief Minister of Tamil Nadu for which the entire country is indebted and has followed it.

With this background, I want to reveal some reservations. I passionately heard the Defence Minister, the External Affairs Minister and the Home Minister. Unfortunately, I have to submit that all these voices are having a high sound but no content. I will come to it one by one. It has become a habitual culture of the BJP that whenever they are discussing any topic, they want to hit Nehru, Indira, Rajiv, and Congress. What is this? Comparison is always not correct. …

(*Interruptions*) Wait; be patient. Any decision would have been taken by the then Prime Minister and leaders in the context of the circumstances and the situations prevailing over there. That decision must be viewed and that decision must be weighed. In 1962, there was a setback to India. But was it suppressed by Nehru, concealed by Nehru? He was the only Prime Minister who used to write letters every month. He apprised how the defeat happened. What were all the reasons? It was because of the climate, the terrain which was faced by our Army and the quality of the arms which was not able to pair with those of China. He honestly admitted it. Then, the Army Chief at that time tendered his resignation and it was accepted. Past is past. Come to the present. What are we doing? The Pahalgam attack took place. So far, are you speaking with conscience? None of you right from the Prime Minister up to the Member of Parliament, in spite of the so-called strength, have expressed any regret. Not at all. Today, four persons have been shot down. You are claiming pride. How can you take pride for shooting down four persons?

Machiavelli was a philosopher in the 16th century. He is a philosopher for them. He said that the ends justify the means. You can do anything to achieve the ends. That is your philosophy. You are telling that whatever happened in Pahalgam, the culprits were shot down. So, we got the victory. Is it correct?

"EenraaL pasi KaanbaaN aayinum seyyarkka saanRoR pazhikkum vinai"

That is our philosophy. Even the mother suffering starvation does not do wrong. So, means is very important. Please tell me whether your means are correct.

The internal report of IB and RAW put before the Government said that Pahalgam must be brought under the high resolution satellite monitor. Is it not true? Can the Defence Minister deny it? I challenge it. Can the Home Minister challenge it? Can the Prime Minister challenge it? In spite of the internal report which was given by IB and RAW, there was no personnel either from police side or from security side. You said that after repealing Article 370, there will be no shooting, there will be no bullet sound. But surgical strike is going in Pakistan. Is it correct for you? Everywhere you are telling that Nehru is wrong, Indira is wrong. Wrong will happen according to one's view. What happened on 24th December, 1999, just one day before Christmas?

(1600/PS/MM)

The Indian Airlines Flight 814 was hijacked and was taken to Kandahar. It was hijacked to seek the release of Masood Azhar. A bargaining was done. Who was the Prime Minister at that time? At that time, the Prime Minister was Atal Bihari Vajpayee. After diplomatic consultations with the Congress and everybody, who was opposing at that time? It was Ajit Doval who is now the National Security Advisor. He wrote note after note. He was a police officer then. He described it as a diplomatic failure. In spite of that, we took a conscious decision, and as an international diplomatic measure, we released him. Not only was he released, he was taken very carefully, with aristocratic treatment, along with the then External Affairs Minister, Shri Jaswant Singh, and he was placed in Karachi. … (*Interruptions*) No, I cannot say 'Shame' 'Shame'. That was the need of the hour. So, it should be justified. Similarly, whatever be the context, can you justify yourself now? With pain, I would say 'no'.

Sir, there are two issues before us. Today, the Home Minister has said like this. I am telling that what happened yesterday was very childish. I am sorry to say this. The Defence Minister of India says, 'Do not ask me about pencils -- how many were broken -- and rubbers'. Was the exam conducted properly? Sir, we are not concerned about the pencils and rubbers but there should not be any malpractice in the examination for the results. You are always doing malpractice. You wanted to harvest wrong results, bogus results. That is why, we are bothered about the means.

Sir, I am not able to understand one thing. What is the problem with you in regretting. I want to make one thing clear for the nation. Today, the Home Minister says that the entire world -- barring three countries -- all the countries backed us and they targeted Pakistan as a nation which sponsors terrorism. I can challenge it. None of the countries and none of the Organisations -- G20, G7, BRICS, QUAD -- officially passed any resolution supporting India and condemning Pakistan. They are condemning the terrorist attacks but not Pakistan. They are not even saying that the terrorism is being supported by Pakistan. But you are travelling with them and getting pride in telling that we are right.

I can read another joke. It is another joke. When we are saying that Trump has announced a ceasefire, they are denying it. I feel very ashamed personally as an Indian in the Parliament because of them. Why? What did the External Affairs Minister say? The External Affairs Minister said that the Vice President of the United States of America J.D. Vance called the Prime Minister warning of a massive Pakistani attack in the next few hours. Who was that person? It was the Vice President of the United States of America. Are you sleeping? Is it not a *… (Not recorded)* on your part? The Vice President of America called the Prime Minister of India saying, 'You are going to be attacked'. You are having military. You are having RAW. You are having IB. What are you doing? The External Affairs Minister had said it yesterday. … (*Interruptions*) Move a Privilege Motion. … (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON (SHRI DILIP SAIKIA): Hon. Member, I was there when the External Affairs Minister was speaking. On 22nd April, the Vice President of the USA called the Prime Minister after the incident. He called after the incident.

… (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: What had he told?

… (*Interruptions*)

SHRI A. RAJA (NILGIRIS): Sorry, Sir. I am quoting yesterday's speech of the External Affairs Minister in the Parliament. I quote:

"Sir, I would like to inform this House that on the 9th May…"

Anurag, please, I am quoting your Minister's stand. … (*Interruptions*)

(1605/SMN/MK)

HON. CHAIRPERSON (SHRI DILIP SAIKIA): If there is anything wrong in the quote, it should be expunged from the record.

… (*Interruptions*)

SHRI A. RAJA (NILGIRIS): I am having an official document. … (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: You continue it.

… (*Interruptions*)

SHRI A. RAJA (NILGIRIS): Sir, I would like to inform the House that on 9th May Vice President J D Vance called the Prime Minister warning of a massive Pakistani attack in the next few hours. Our Prime Minister in his response made it very clear if such an attack happens, it would meet with an appropriate response from our side. That is correct. But the question is: where is your intelligence?

American Vice President called to inform that 'Pakistani forces are going to attack'. Still, International Monetary Fund, is going to give bail out package to Pakistan, which was being controlled by America. … (*Interruptions*)

I am not yielding. … (*Interruptions*) I am not yielding. … (*Interruptions*) I am not yielding. … (*Interruptions*)

These are all the confusions. Let us divide it into two parts. Pahalgam incident took place. It is a complete intelligence failure. If it was an intelligence failure, then you must admit that it was ... (*Expunged as ordered by the Chair*) of your administration. It was the ... (*Expunged as ordered by the Chair*) of the administration. You are ... (*Expunged as ordered by the Chair*) to rule this country. People are not having faith upon you.

How were your diplomatic relations? You sent all delegations. Do not follow Nehruvian ideology. You cannot and you are competent. But please follow at least your leader Atal Behari Vajpayee. What happened in the Kargil? Kargil war was conducted in a sensible manner with collaborative measures. All stakeholders including the Opposition were taken into consideration by Vajpayee Ji. After the Kargil war, he appointed a Commission and the Commission's report was placed before the Parliament. This Parliament deliberated the Commission and also about the dos and don'ts and also the actions and inactions. Such a fair Prime Minister was your predecessor. Now, you want to reap the legacy of the BJP but you are completely concealing everything from the Parliament. Parliament was completely set aside. Hundred and odd people's will is being reflected in this House but you are avoiding the Parliament. Are you a democrat? Am I not

entitled to say about your ... (*Expunged as ordered by the Chair*)? Am I not entitled to say about ... (*Expunged as ordered by the Chair*)?

Sir, that is what I am telling. I do not want to take more time. I have only one thing. Pahalgam incident is the classic example of the administrative ... (*Expunged as ordered by the Chair*) to deal with terrorism. Operation Sindoor is nothing but an incomplete exercise ended with Trump's ceasefire. Just I want to show one thing. Still, I am confused. Today, there are two newspapers. One says 'Target met, no more ceasefire'. It was said by *Indian Express*.

Another newspaper says, 'Operation Sindoor is not over, only on pause'. Ceasefire was announced by Trump. That itself is a shock to the country. Still, you are saying this ceasefire is on pause, it will continue. It is said by one Minister. Another Minister says that our target is over, so no more war. No discussion in Parliament took place prior to that. What was the result?

I will go to the last thing. You are claiming that all the nations are with us but Pakistan is getting membership and getting elected as Vice Chairman in the United Nations Security Council to control the terrorism.

Sir, are you not ... (*Expunged as ordered by the Chair*) that Pakistan is getting a berth in the United Nations Security Council to control terrorism? But you want to label the Pakistan as the sponsor of the terrorism.

HON. CHAIRPERSON: Please conclude.

… (*Interruptions*)

SHRI A. RAJA (NILGIRIS): On behalf of DMK, I appeal to everyone, notwithstanding the political affinity, to compel this Government, and take the confidence of this Government, to come for a democratic process, discuss everything and stop this ... (*Expunged as ordered by the Chair*) in the future at least.

(ends)

(1610/RP/SK)

1610 hours

SHRI E. T. MOHAMMED BASHEER (MALAPPURAM): Sir, thank you very much for giving me this opportunity to speak in this very important Session.

1610 hours (Shri A. Raja *in the Chair*)

Sir, as far as April 22nd incident of Pahalgam is concerned, the entire country is worried about this.

SHRI ANURAG SINGH THAKUR (HAMIRPUR): Sir, kindly look into the unparliamentary words. … (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON (SHRI A. RAJA): I will look into it. Definitely, I will look into it. Do not worry. This Chair is impartial. We all know that.

… (*Interruptions*)

SHRI E. T. MOHAMMED BASHEER (MALAPPURAM): Sir, killing of these 26 persons would remain as a wound. This incident of Pahalgam, that can be called as a tragedy, is considered the deadliest civilian massacre in India since 2008 Mumbai attack. My learned friends have narrated the entire thing.

Sir, there are certain questions that remain unanswered. The first thing is with regard to the culprits. This morning, the Home Minister said certain thing. Let us hope that it is true. Anyhow, that was a very, very difficult kind of question we were all asking. Now, there are some more questions to be asked. How did these terrorists manage to reach a tourist place like Pahalgam, that too at the mid-day time? We are claiming our efficiency, our technological know-how, and all kind of things. In such a situation, what have you secured in that? What measures the police and the security personnel did for the safety of the tourists? That is a very important tourist centre. What action have they taken to prevent this kind of a calamity?

Similarly, Sir, we have to strictly verify, and do a threadbare analysis in this regard. I would like to know whether we have intelligence lapse and security failure. There is no meaning in saying so many things. Ask your inner heart whether there is any lapse. If you ask whether there is lapse, I would like to say, yes, there is lapse on your part. You are bound to reply for the lapse.

Sir, we appealed to the Government to convene a Special Session of the Parliament. You ignored it at that time. Why have you done that? You could have convened that Session. Let the entire world know the truth. You had

something to hide at that time. That was the reason you refused our request to have this, Session. Even many persons have said about the lapse in our activities.

Sir, it is also to be examined whether strategic planning was there or not. If it is true, if your claims are true, explain them. You have not explained them. You are just saying that everything is okay. That is your regular kind of thing. I would like to say with all the politeness, we must have an introspection. What is that? That is about international diplomacy of India. How bad is the situation in India now? We had a very good relation with many countries. Our international relation was best in the world. We all know that. As and when there were some crises, even at the wars, people were waiting for the voice of India. India had such a high regard. The whole world leaders had a very effective and cordial relations with India. That was our position. If I ask whether India is having the same status today, I would like to say that it is not there. It is diminishing like anything. You are responsible for that.

You are talking about the former Prime Ministers – Nehru, India Gandhi, and all other leaders. I would like to ask you one thing. Do you have any moral right? You have no moral right even to raise your voice by citing them.

(1615/UB/VB)

You have no moral responsibility. What was their position? What did they do it for? We have to realize that.

Let us take the example of Gandhi ji and Pandit Jawaharlal Nehru. He mentioned Gandhi ji and Pandit Jawaharlal Nehru. I would like to ask you, do you believe in Gandhian philosophy? The main crux of the Gandhian philosophy is 'non-violence'. You are motivating all kinds of violence within the country. You have no moral right to speak about him. Similarly, what did Pandit Jawaharlal Nehru, Shrimati Indira Gandhi, and Vajpayee ji stand for? What was their performance? Nehru ji was a key architect of Non-Aligned Movement advocating for peaceful coexistence and non-interference in the matters of our country. He believed in Panchsheel, the five principles. What were those five principles? Those principles were about co-existence. Nehru ji stood for that. Gandhi ji stood for that. But what are you standing for? You are standing to create confusion and unrest in this country and make capital out of it. You want to fish in the troubled waters.

During Shrimati Indira Gandhi's tenure, she stood for the Non-Aligned Movement. She had a position in the world. Whenever there was crisis in any country, people were waiting for the voice of Shrimati Indira Gandhi. That was her position. Similarly, all these kinds of things will tell you that the position of Indian Government today is quite contrary to the facts and tradition of the other leaders.

Sir, there is a paradoxical situation. What is that? India stood strongly with the Government during this crisis. I was also on the delegation team. We went there. We explained. We are confident that we did the work assigned to us in a marvellous way. That was for India. Our voice was for India. But what is happening now? Do you realise that? We stand for peace. Our country's greatness and nobility lie in 'peace'. What is happening?

HON. CHAIRPERSON (SHRI A. RAJA): Please conclude.

SHRI E. T. MOHAMMED BASHEER (MALAPPURAM): When there is some trouble in Parliament, hon. Members say that the House is not in order. I am of the opinion that that same phrase will have to be repeated in all the situations. The House is not in order. This situation has been made like this. What is happening? People are dying. They are going to be Stateless people. People are crying. It is 45-degree temperature and they are staying without any roof. They have been evacuated. They have been forcibly removed. The Chief Minister has given instructions to delete them from the Voters' List. They want to make them Stateless people or refugees. If the Government is keeping silence, the Government will be committing a sin. When you are talking about cordiality, you have to think of these issues.

Sir, I urge upon the Government to send a delegation and make an inquiry into what is happening in Assam. That kind of situation you cannot repeat in this country. This country is a country for peace and prosperity. You have made all kinds of difficulties, hurdles and obstacles for people.

The pride of India is 'solidarity'. The pride of India is our asset. We are saying to the world that ours is the biggest democracy. Unfortunately, you have spoiled the image of the country. You have to correct yourself. I hope that wisdom will prevail upon you.

Thank you.

(ends)

(1620/SJN/NKL)

1620 hours

SHRI ABDUL RASHID SHEIKH (BARAMULLA): Sir, my humble submission is this. For God's sake, please do not stop me before 10 to 12 minutes. I am from Kashmir. I am coming from Tihar Jail.

HON. CHAIRPERSON (SHRI A. RAJA): I know that. Please proceed.

SHRI ABDUL RASHID SHEIKH (BARAMULLA): Thank you, sir. Please give me some time. मैं कुछ पंक्तियों के साथ अपनी बात शुरू करूंगा।

"दीप जिसका महल्लात में ही जले,
चंद लोगों की ख़ुशियों को लेकर चले,
वो जो साए में हर मस्लहत के पले,
ऐसे दस्तूर को सुब्ह-ए-बे-नूर को,
मैं नहीं मानता, मैं नहीं जानता।
मैं भी ख़ाइफ़ नहीं तख़्ता-ए-दार से,
मैं भी मंसूर हूं, कह दो अग़्यार से,
क्यों डराते हो, ज़िंदा की दीवार से,
ज़ुल्म की बात को, जहल की रात को,
मैं नहीं मानता, मैं नहीं जानता।
फूल शाख़ों पे खिलने लगे तुम कहो,
जाम रिंदों को मिलने लगे तुम कहो,
चाक सीनों के सिलने लगे, तुम कहो,
इस खुले झूठ को, ज़ेहन की लूट को,
मैं नहीं मानता, मैं नहीं जानता।
तुमने लूटा है सदियों हमारा सुकूं,
अब न हम पर चलेगा तुम्हारा फ़ुसूं,
चारागर दर्दमंदों के बनते हो क्यूं,
तुम नहीं चारागर कोई माने मगर,
मैं नहीं मानता, मैं नहीं जानता"।

माननीय सभापति महोदय, मेरे पैगंबर का फ़रमान है कि जिसने एक बेगुनाह शहरी का कत्ल किया है, उसने सारी इंसानियत का कत्ल किया है। पहलगाम में जो भी हुआ है, वह पूरी इंसानियत का कत्ल था। जब निंदा की बात आए, पहलगाम में मारे गए उन परिवारों का दर्द हम कश्मीरियों से ज्यादा और कौन समझ सकता है, क्योंकि हम लोगों ने सन् 1989 से आज तक 80,000 लोग खो दिए हैं। कश्मीर ने जितनी तबाही देखी है, हमने कब्रिस्तान देखें हैं और हम लाशें उठाते-उठाते थक गए हैं।

सभापति महोदय, मैं यह कहना चाहता हूं, आज हर कोई यह कहता है कि वे आतंकवादी कहां गए? एलजी साहब क्या कर रहे थे? मैं किसी की वकालत नहीं कर रहा हूं। I am not taking anybody's side. I come from a place which is situated at the LoC. जब सीमाओं की तरफ देखते हैं, तो आपकी नज़र थक जाती है, क्योंकि सीमाएं बहुत दूर तक फैली हैं। अगर किसी को आना-जाना हो, तो उतना ज्यादा मुश्किल नहीं है। शायद फोर्सेज़ उतना कंट्रोल नहीं कर सकती हैं।

इसी तरह से आप एलजी साहब पर इल्जाम लगाते हैं। I am not defending him. I have nothing to do with him. आपकी संसद में तो दो बंदे अंदर तक घुस आए थे। कहना यह है कि आप आतंकवाद कैसे खत्म करेंगे? आप आतंकवादियों से कैसे लड़ेंगे? उसके लिए आपको कश्मीरियों के दिल जीतने होंगे, लेकिन मैं कल से सुन रहा हूं कि आपमें से किसी एक ने भी कश्मीरियों की बात नहीं की है। आपको कश्मीर की जमीन चाहिए या कश्मीर के लोग चाहिए? आज रूलिंग पार्टी और विपक्ष के लोगों को यह तय करना होगा।

मैं कांग्रेस पार्टी से गुजारिश करना चाहूंगा कि यहां नेहरू जी के बारे में बहुत बातें की गई हैं। Of course, he was our first Prime Minister. दुबे जी ने बिल्कुल सही कहा है। इसीलिए मैं भी कहता हूं कि things are done in continuity. उन्होंने जो कमिटमेंट्स की थीं, आप वे चीजें ज़हन में रखिए। वे संयुक्त राष्ट्र में मसला लेकर गए थे, तब हम तो पैदा भी नहीं हुए थे। देश 15 अगस्त, 1947 को आज़ाद हुआ था। फॉल्ट आपका है, चाहे जिन्ना साहब हों, नेहरू साहब हों, गांधी जी हों, सरदार पटेल जी हों, लियाकल अली खान हों, आप भारत को एक नहीं रख सके हैं। आपने बदक़िस्मती से अपने देश के तीन हिस्से कर दिए हैं। आपने भारत बनाया, पाकिस्तान बनाया और बांग्लादेश बनाया। आप कश्मीरियों को क्यों मार रहे हैं? आपको आजादी मिलने के 15 सालों के बाद मेरा जन्म हुआ था।

मैं पूछना चाहता हूं कि आप हमें क्यों मार रहे हैं? हमारा कसूर क्या है? मैं पूछना चाहता हूं कि हमारे खून का जवाब कौन देगा? आप कहते हैं कि वहां सब कुछ ठीक है, लेकिन आप हमें सोशल मीडिया पर कुछ लिखने नहीं देते हैं। लोग जेलों में मर रहे हैं। ऐसे तीन हजार लोग हैं। मैं आज आपसे पूछना चाहता हूं, मैं फिर कहता हूं कि हमें आतंकवाद खत्म करना है। यहां हर कोई ट्रंप-ट्रंप-ट्रंप-ट्रंप कह रहा है। ट्रंप के पास इस मसले का हल नहीं है। कश्मीर मसले का हल जम्मू-कश्मीर के लोगों के पास है। वहां के हिन्दुओं के पास है, वहां के मुसलमानों के पास है, वहां के हर समुदाय के पास है। It is not a communal issue; it is a political issue. You need to give a political resolution.

मैं आपसे यह पूछना चाहता हूं, इसलिए नहीं कि मैं आज डेढ़ लाख रुपये देकर यहां आया हूं। जब आप मेरे लिए नहीं बोल सकें, तो आप कश्मीरियों के लिए क्या बोलेंगे? मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि सबसे बड़ा अलगाववादी नेता सैयद अली शाह गिलानी हुआ करता था, लेकिन वह भी तीन बार एमएलए रहा है। मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि वह क्यों तीन बार संविधान की शपथ लेने के बाद सबसे बड़ा अलगाववादी नेता बना? मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि आपको हिन्दू राष्ट्र

बनाने की बहुत जल्दी है। शौक से बनाओ, मजे से बनाओ, अगर आपको लगता है, लेकिन मेरे जम्मू-कश्मीर की डेमोग्राफी को टच मत कीजिए। मेरे जम्मू-कश्मीर के कल्चर के साथ छेड़छाड़ मत कीजिए। आप जम्मू-कश्मीर को जम्मू-कश्मीर ही रहने दीजिए।

(1625/PC/VR)

आपको पाकिस्तान के साथ जो करना है, वह करो, हमें क्या लेना-देना। आपका उनसे झगड़ा है, हम बीच में मारे जा रहे हैं। आप याद कीजिए … (व्यवधान) सर, प्लीज़, मुझे बोलने दीजिए। … (व्यवधान) मैं आज इनसे अपने लिए टाइम मांगता हूं, सारी पार्टियां मुझे अपने दो-दो मिनट दें। … (व्यवधान) मैं यूनाइटेड नेशन्स सिक्योरिटी काउंसिल के बारे में कहना चाहता हूं। मुझे इसके बारे में जेल में अखबार पढ़कर पता है। … (व्यवधान) मुझे बाहर की दुनिया का कुछ पता नहीं है। … (व्यवधान) अभी तो मुझे उरी की भी बात करनी है, इसलिए, मुझे थोड़ा टाइम और दीजिए। … (व्यवधान) यूनाइटेड नेशन्स सिक्योरिटी काउंसिल में जब तालिबान के कन्डेमनेशन की बात आई, तो हमारी यही सरकार, जो यूपी में कहती थी कि तालिबानी शासन वहां लाया जा रहा है। You supported Taliban there and stayed away from voting. आज इतने बुरे दिन क्यों आ गए कि आज आपको तालिबान का सपोर्ट लेना पड़ता है? … (व्यवधान) अगर 'ऑपरेशन सिंदूर' की बात करें, तो पाकिस्तान को आज मुझे कुछ जरूरी बातें कहनी हैं। मैं दरख्वास्त करूंगा कि आप मुझे कहने दें। … (व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON (SHRI A. RAJA): Please conclude now.

… (*Interruptions*)

श्री अब्दुल रशीद शेख (बारामूला) : सर, मैं यह कहना चाहता हूं कि जो जंग लड़ी गई, वह उरी में लड़ी गई, कुपवाड़ा में लड़ी गई, करनाह में लड़ी गई, रजौरी पुलिस से लड़ी गई। आपके इलाकों में जंग नहीं लड़ी गई। वहां कितने लोग मरे, वह आपको पता है। मीडिया के लिए करनाह, उरी और बॉर्डर इलाके तब हैडलाइंस बनते हैं, जब वहां गोलियां चलती हैं। वहां कोई इन्फ्रास्ट्रक्चर नहीं है। उन लोगों के लिए एक पैकेज चाहिए है। गुरेज़ के लोगों से मोदी साहब ने कमिटमेंट की है कि पांच-पांच मरला जमीन उनको देंगे। वह पांच मरला जमीन आपको उन्हें देनी पड़ेगी। … (व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: Please conclude; otherwise I will have to call the name of the next hon. Member to speak.

SHRI ABDUL RASHID SHEIKH (BARAMULLA): Sir, I am concluding. मुझे बस एक मिनट दे दीजिए। … (व्यवधान) सर, मैं दिलजला हूं, मुझे अपनी बात कहने दीजिए। मैं शायद आज के बाद यहां नहीं आ पाऊंगा, मैं कहां से डेढ़ लाख रुपए रोज लाऊं? आपने 60 एमपीज़ बाहर के देशों में भेजे। मैं पूछना चाहता हूं कि उनमें से कश्मीर के कितने एमपीज़ थे? आपका तो एक जेल में है, बाकी दो का उमर साहब के साथ चलता है। उनमें कोई नहीं था। मैं लास्ट में फिर से यह गुज़ारिश करूंगा कि आपने कल स्टेटहुड की बात की थी। स्टेटहुड ही हमारा मामला नहीं है। You will have to restore all that you have snatched away from us. *....(Interruptions)* You have to fulfil all those promises in accordance with the history. *....(Interruptions)* Thank you, Sir.

(ends)

1627 hours

SHRI K. C. VENUGOPAL (ALAPPUZHA): Thank you, hon. Chairperson, for giving me this opportunity to speak on this important subject of Pahalgam attack followed by Operation Sindoor. But as usual, the Treasury Benches took this discussion to period of Pandit Jawaharlal Nehru and Indira Gandhi.

Sir, why was this discussion called for? The discussion was called to discuss the Pahalgam incident and, of course, the Operation Sindoor which was later launched by our Armed Forces. Just like my other colleagues, I also salute the brave soldiers of our country who were part of Operation Sindoor.

But after hearing the speech of our hon. Home Minister, I got totally wondered. He talked about a lot many things. Yesterday, my colleague Gaurav initiated his speech with the issue of grave security failure. Everybody in the House raised this issue. But our Home Minister did not speak a single word on it. He spoke about everything but this.

Sir, the day this incident occurred in Pahalgam, I was there in Srinagar with regard to the field visit relating to the Public Accounts Committee. While I was sitting there along with my colleagues and having interaction with the officers of the Government of India, the Chief Secretary of Jammu and Kashmir was also there in that meeting.

(1630/SNT/SPS)

Suddenly he informed us that something bad has happened and he may be allowed to leave. We asked, and he narrated the whole thing. At that time, everyone felt the issue was very minor. But within hours, that minor issue turned into one of the major, terrible terrorist attacks in the news. Just before that day, we were in Gulmarg as part of the PAC delegation. One of my DCC Presidents, who lives 2 kilometres from Gulmarg, came to meet me. He invited me to his house, and I was ready to go since he is the DCC President. But the security officers told me we cannot allow you to go. I asked them the reason. They said, “Anytime, anything can happen in this area”. That was the situation in Jammu and Kashmir.

Priyanka ji mentioned very rightly who the real culprit was. You said Kashmir is very safe, and everybody should come. Everybody went there. But if you are inviting tourists to visit Kashmir, is it not your primary duty to provide security for them? Is it not your primary duty? I took a strategy – around one

crore tourists visited Jammu and Kashmir during that year. Daily, 1,000 to 2,000 people are going to this pleasant valley. Please think about it – if anywhere 50 people gather, there is security surveillance and a security cover. But here, thousands of people are going, in Kashmir, without any security cover. Who is responsible?

Amit Shah is speaking very loudly. Who is responsible? Obviously, the terrorists are responsible for this incident. We agree Pakistan is behind it. But who gave the lives of those 26 precious people in the terrorists' hands? Your ignorance gave it. Then you talk about the Mumbai incident. How can a Minister *… (Not recorded)* like this? His speech was a complete *… (Not recorded)* and baseless. He said terrorist attacks happened only during the UPA period. In NDA period, everything is peaceful, except some Kashmir incidents. I have the statistics. On 23rd December, 2014, in Assam violence 85 people were killed. On 28th December, 2014, Bengaluru bombing happened. On 20th March, 2015, in Jammu attack, six people were killed. On 4th June, 2015, there was the Manipur ambush, which we cannot ignore. In this country, Amit Shah says everything is safe. One State is burning even now. How *… (Not recorded)* he is telling, in our period, everything is safe! This list is very long: 18th September, 3rd October, 6th October, 2016, 29th November, 2016 Nagrota attack, 7th March, 2017 Bhopal-Ujjain train bombing, 24th April Sukma attack, 2017 Amarnath Yatra attack, 10th February, 2018 Sunjuwan attack. There are about 28 such attacks.

(1635/SNT/KN)

Therefore, I think, it is clearly a matter of privilege. While replying in the House, the hon. Home Minister is completely *… (Not recorded)*. Even in Kashmir, we have the statistics and we are sharing it. During this Lieutenant Governor's period alone, there were 608 incidents with 197 security personnel killed. Pahalgam was not an isolated incident. It was a part of a continuous series of attacks. That is why we are asking why do you not put sufficient security measures.

Giriraj ji is sitting there. Whenever Priyanka ji was putting the names of the victims, he was saying, "Hindu, Hindu, Hindu". Okay, they were Hindus. The terrorist design of this attack was very clear – asking the religion, asking the name, identifying the religion, and killing. This was first in the history of

terrorist attacks in this country. Why? It is because the conspirators behind it, the country behind it, have a clear design to divide the country in the name of religion. Their design is to divide the country in the name of religion. They are doing it from outside. But Giriraj ji, you people are doing the same job from inside.

Sir, I think you had also looked at the social media comments in those days. There was abusive language used. There were many attempts made to divide this country but this country stood together. I, along with Rahul ji, visited there. The Kashmiri people, including Muslims, stood firmly with India. One of the 26 victims was Shri Ramachandran. I went to his house. His daughter told me that during that night, in front of her eyes, her father was killed. Her two children were there along with her. She did not know what to do. Darkness was there everywhere in her eyes because her father was shot dead in front of her. She did not know the place. She was not familiar with that place. But from that moment until the next morning, she found two brothers in Kashmir from the Muslim community. That was the message of this country during this period. This country was united.

Yesterday, our External Affairs Minister said President Trump and Modiji did not talk for the last two months. It is a great discovery. The American Vice President talked to the Prime Minister of India. Was the American Vice President, without the knowledge of President Trump, speaking to the Prime Minister of India? Is he working alone? My point is this. The ceasefire happened. As I mentioned in the beginning, we also want to salute the soldiers involved in Operation Sindoor. On 10th May at 5:25 p.m., President Trump wrote on a social media platform: “After a long night of talks mediated by the United States, I am pleased to announce that India and Pakistan have agreed to a full and immediate ceasefire.”

(1640/AK/RAJ)

This is Trump’s Tweet. In a post on ‘X’ soon after 5.37 pm, US Secretary of State, Marco Rubio echoed Trump and said that the two countries have agreed to an immediate ceasefire. Shortly after Rubio’s post, Pakistan Foreign Minister, Ishaq Dar confirmed that a ceasefire had indeed been agreed to. It is only after that, at around 6 pm, our Foreign Secretary gave a statement about ceasefire. If the ceasefire happened without the intervention of Trump, then

why did they not inform the country earlier? It is a very clear intervention of a third-party, which has never happened in the history of Indian diplomacy. … (*Interruptions*)

Trump also told one more story that five fighter jets were lost. When we ask questions, Rajnath ji says not to ask silly questions. Is this a silly question that five fighter jets were lost?

HON. CHAIRPERSON (SHRI A. RAJA): Please conclude now. Your leader has to speak.

… (*Interruptions*)

SHRI K. C. VENUGOPAL (ALAPPUZHA): Sir, our question was a very sincere question. We want to believe you. Tell the truth to this country. Were the fighter jets lost or not? This is your duty to mention it to the nation.

I have to tell them one more thing. Now, the External Affairs Minister yesterday said that all countries except three countries have given certificates to us.

HON. CHAIRPERSON: Please conclude now.

… (*Interruptions*)

SHRI K. C. VENUGOPAL (ALAPPUZHA): Sir, I am going to conclude. … (*Interruptions*) They had also exceeded their time limit. We know the time allotted to us. … (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Give some time to your leader too.

… (*Interruptions*)

SHRI K. C. VENUGOPAL (ALAPPUZHA): CENTCOM Chief, General Michael Kurilla praised Pakistan as a phenomenal partner in countering terrorism. … (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Please conclude now.

… (*Interruptions*)

SHRI K. C. VENUGOPAL (ALAPPUZHA): Yesterday, he mentioned that America black-listed an organization. … (*Interruptions*) The US Secretary of State, Marco Rubio met Pakistan Deputy PM, Ishaq Dar and praised Pakistani partnership in countering terrorism and maintaining regional stability.

Where is your foreign policy? You made the foreign policy as a public relation of your Prime Minister and there lies the fault. Foreign policy is to deal

diplomatically with countries, but instead of that you made it partisan politics and that is why this is happening.

Sir, I am concluding. Whenever we are asking questions, you are saying that we are questioning India. … (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: If at all some questions are there, they can be asked by your leader.

… (*Interruptions*)

SHRI K. C. VENUGOPAL (ALAPPUZHA): We are not questioning India. We are very much proud of India. But we want to know about the mistakes that you people have made to put India down. This has to be mentioned in this House. You can blame Congress. … (*Interruptions*)

Sir, I will just mention one more thing. … (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Please conclude now.

… (*Interruptions*)

SHRI K. C. VENUGOPAL (ALAPPUZHA): Sir, one last point. … (*Interruptions*) The External Affairs Minister mentioned yesterday about Shri Rahul Gandhi's speech about Chinese intervention in the last Session. He mentioned it very clearly. What did he mention? He mentioned: “You have to be very careful about China joining Pakistan to fight against India”. He mentioned this point.

HON. CHAIRPERSON: It is well taken.

… (*Interruptions*)

SHRI K. C. VENUGOPAL (ALAPPUZHA): Sir, at that point of time they laughed at Shri Rahul Gandhi when he raised that issue. But yesterday, the External Affairs Minister was mentioning that it had happened earlier also.

HON. CHAIRPERSON: Thank you.

… (*Interruptions*)

SHRI K. C. VENUGOPAL (ALAPPUZHA): Is this the answer? … (*Interruptions*) I think that the country deserves valid answers. … (*Interruptions*) You are running away instead of giving answers. Whenever questions are raised, you are hiding the truth. This cannot happen. … (*Interruptions*) I humbly reiterate that the Government should provide answers to the nation on all these issues. Thank you.

(ends)

1644 hours

SHRIMATI HARSIMRAT KAUR BADAL (BATHINDA): On behalf of my Party, the Shiromani Akali Dal, I would like to start by condemning the racial and cowardly terror attack perpetrated by Pakistan in Pahalgam to fan communal hatred and destabilize our country.

(1645/SRG/NK)

I also bow my head in condolence to all those innocents who tragically lost their lives on that day. The entire nation stood with those families and felt their pain. I also salute the valour of those brave hearts and those civilians who bore the casualties during the course following these attacks.

Sir, like the rest of the country, I too take great pride in saluting our Armed Forces with the precision and the valour that they showed in targeting Pakistan's military areas and neutralizing all that Pakistan was wanting to do which is destroying their targets as well as their airbases and radar systems. The restraint and the responsibility that they showed in this precise targeting showed India's military might to our neighbours and to the rest of the country and I wholeheartedly congratulate our Armed Forces for this victory.

Throughout yesterday, I have been hearing both the sides. Everybody over here spoke about their view of what this whole 72 hour was about. While the Treasury Benches thumped their benches in victory, the Opposition said, ये क्या? In fact, they not only showed their approval, before me a leader from the Opposition party said, जंग रुकी क्यों?

I am shocked to hear in this House that there are MPs who say, जंग रुकी क्यों? What were we here for? Were we here to fight and demolish Pakistan or were we here to give them a befitting answer? जंग रुकी क्यों, उनसे पूछिए, जो लोग बार्डर पर बसते हैं, आज इस हाउस में कितने लोगों ने, अपोजिशन और रूलिंग पार्टी के लोगों ने, उन लोगों की बात की जो बार्डर पर बसते हैं। मेरे कश्मीर के भाइयों ने उनकी पीड़ा बतायी और मैं पंजाब के लोगों की पीड़ा बताना चाहती हूं, जो बार्डर पर बसते हैं। उनको दिन-रात इसका सामना करना पड़ता है। जिनके खेत उस तरफ थे, उनको

बोला गया कि अपनी फसल को काट दीजिए। किसी टाइम भी यहां आना बंद हो सकता है। फसल तैयार हो न हो, बेचारे, डर के मारे उसको काटना पड़ा।

तीन दिन तक वहां ब्लैक आउट हो रहे थे, ड्रोन चल रहे थे, फाइटर जेट चल रहे थे। लोग डर के मारे अपने बच्चों, बीबियों और परिवारों को ले जाना पड़ा, घर-द्वार छोड़ कर जाना पड़ा। कश्मीर और पुंछ में लगातार ऐसा होता है, आप उन गरीब लोगों से पूछिए जो बार्डर पर रहते हैं और रोज इसको झेलते हैं। बार्डर के इलाके के लोगों से पूछिए जो इसका निशाना बनते हैं। जिसकी वजह से बार्डर में कभी डेवलपमेंट नहीं होता है, हमेशा बैकवर्ड होता है क्योंकि देश की रक्षा के लिए वह सबसे आगे होते हैं।

मैं उनसे भी कहना चाहती हूं जो यह कहते हैं कि जंग क्यों रुकी? जंग इसलिए रोकना जरूरी था, आपके और हमारे बेटे बार्डर पर नहीं हैं। जो रोज मरते हैं वे आपके और हमारे घर के नहीं हैं। जहां बुलेट चलती है और सेलिंग होती है, उन गरीबों के बारे में सोचिए, जो इसका सामना करते हैं इसलिए जंग को रोकना बहुत जरूरी था। जब भी जंग होती है तो नुकसान लोगों का होता है। मैं यह जरूर मानती हूं कि बार्डर के लोगों के नुकसान की भरपाई होनी चाहिए, वह कभी होती नहीं है। उनके टूटे हुए घर सड़कें और न उनकी फसल को नुकसान के बारे में कोई बात नहीं करता।

पंजाब में ये सामचार चल रहा था, लोगों को 1947 के काले दिन याद आने लगे। वर्ष 1965 और 1971 के काले दिन याद आने लग गए कि अब हमारे भविष्य का क्या होगा? इन सारी चीजों में चाहे शहर हो या गांव हो, लेबर भी भाग गए, बिजनेस का भी कैंसिलेशन होने लगा, छोटे ट्रेडर और दुकानदार सभी का नुकसान हुआ।

(1650/IND/SM)

महोदय, जब भी ऐसी कोई घटना होती है, सरकार कहती है कि अटारी बार्डर बंद कर दो। आप अटारी बार्डर बंद कर देते हैं तो छोटे व्यापारी, छोटे दुकानदार और छोटे ट्रांसपोर्ट्स का नुकसान हो जाता है। अभी आपने कहा कि terror and talks will not go together लेकिन बड़े-बड़े उद्योगपति, जो बिजनेस करते हैं, उनका तो और दस दिनों तक व्यापार चलता रहा। इसी तरह से ड्रोन्स ने इसे न्यूट्रलाइजिंग करने में बहुत इम्पोर्टेंट रोल अदा किया लेकिन मेरे पंजाब में पिछले दस सालों से बार्डर के पास से ड्रोन्स द्वारा ड्रग्स, आर्म्स आदि भेजे जाते हैं जो पूरे देश में भेजे जाते हैं। इस बार आर्म्ड फोर्सेज ने ड्रोन्स को रोका, ताकि कोई नुकसान न हो। पिछले 10 सालों से क्यों उन ड्रोन्स को रोका नहीं जा रहा है।

आपको हैरानी होगी कि इस साल के पिछले छह महीनों में ही बीएसएफ ने 120 ड्रोन्स, 135 किलो नार्कोटिक्स और 79 वैपन्स सीज किए हैं। आप सोचिए जो वैपन्स सीज नहीं हुए हैं, उनसे देश के कोनों में क्या-क्या हालात पैदा हो रहे होंगे। सारे देश की लॉ एंड आर्डर बहुत खराब हो गया है। दिन दहाड़े लूट, एक्सटॉरशन्स, हत्या हो रही है। Gangsters are ruling Punjab. … (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON (SHRI A. RAJA): Please conclude now.

SHRIMATI HARSIMRAT KAUR BADAL (BATHINDA): The police and the State administration has totally failed. Be it a singer, be it a sportsperson, be it a politician, everyone is affected. हमारे पुलिस स्टेशंस पर ग्रेनेड से हमले हो रहे हैं। राकेट लांचर से विजिलेंस के दफ्तर पर हमले हो रहे हैं। आज पंजाब के ये हालात हैं कि गैंगस्टर जेल में बैठकर टीवी पर इंटरव्यू दे रहे हैं।

महोदय, गोल्डन टैम्पल में भी 10 बार धमकियां आ चुकी हैं कि हम इसे उड़ा देंगे। वहां की सरकार यदि नाकाम सिद्ध हो रही है तो आप ही कुछ कर दीजिए। You cannot deny that there has been security lapse and that there has been intelligence failure. Our agencies were called but they could not find out anything. The responsibility must be fixed. Otherwise, no one can stop this.

महोदय, मेरे सिर्फ दो पाइंट्स हैं। कैलाश मानसरोवर की यात्रा कर सकते हैं तो करतारपुर साहब का भी बार्डर खोलना चाहिए। इंडिया-पाक क्रिकेट मैच हो सकता है तो दलजीत दोसांझ की मूवी क्यों नहीं चल सकती है? आखिर में, मैं अपनी सिक्योरिटी फोर्सेज को एप्रिशिएट करती हूं। मैं उनका शुकराना करती हूं। मैं यह बात भी कहना चाहती हूं कि यह मैटर नहीं करता कि वार कैसे रुकी, लेकिन वार रुकनी जरूर चाहिए थी क्योंकि इससे जान-माल का बहुत नुकसान होता है।

(इति)

1652 बजे

श्रीमती डिम्पल यादव (मैनपुरी) : सभापति महोदय, आपने मुझे अत्यंत महत्वपूर्ण विषय पहलगाम हमला और 'ऑपरेशन सिंदूर' पर अपनी बात सदन में रखने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपकी आभारी हूं। मैं सबसे पहली बात यह कहना चाहती हूं कि हमें अपने देश की सेना पर गर्व है। हमारी सेना के शौर्य, सामर्थ्य, पुरुषार्थ, साहस, पराक्रम, वीरता और बलिदान को मेरा शत्-शत् नमन है। हमारी सेना ने हमेशा मातृभूमि की रक्षा की है और पूरी तरह से समर्पित होकर की है। इस समर्पण के भाव के लिए हम सदैव अपनी सेना के कृतज्ञ हैं और रहेंगे। सेना हमारा अभिमान भी है और सेना हमारा सम्मान भी है। सभी सैन्य और सुरक्षा बल जो वीरगति को प्राप्त हुए, उन्हें हमारी भावपूर्ण श्रद्धांजलि है। भारत के जिन नागरिकों ने अपनी जान गंवाई और जो घायल हुए, उन सभी परिवारों के साथ हमारी संवेदना है। पहलगाम पर 22 अप्रैल को जो आत्मघाती हमला हुआ, वह कहीं न कहीं भारत की सुरक्षा पर आघात था। सरकार यह कह रही थी कि कश्मीर में सब कुछ नार्मल है, और सरकार ने नेशनल सिक्योरिटी की कीमत पर कश्मीर में 'सब कुछ ठीक है' का नेरेटिव सेट करने की कोशिश की। यह पहलगाम की घटना कहीं न कहीं उसी का अंजाम है।

महोदय, हमारा सरकार से सीधे यह सवाल है कि आखिरकार यह घटना क्यों घटी? पहलगाम में बैरसन वैली में जहां हजारों पर्यटक रोज अपने परिवारों के साथ जा रहे थे, वहां सुरक्षा व्यवस्था क्यों नहीं थी? मैं सरकार से पूछना चाहती हूं कि आपके परिवार का या हमारे परिवार का कोई भी सदस्य कश्मीर जाता तो क्या आप बिना सिक्योरिटी या सुरक्षा के उन्हें भेज देते? क्या भारतीय लोगों की जान की कोई कीमत नहीं है? कहीं न कहीं यह जो घटना घटी है, इसके लिए पूरी तरह से सरकार जिम्मेदार है और इसकी जिम्मेदारी सरकार को लेनी पड़ेगी तथा एकाउंटेबिलिटी भी सैट करनी पड़ेगी। जिस समय यह घटना घटी, उस समय भारत में अमरीका के वाइस प्रेजीडेंट श्री जे.डी. वेंस मौजूद थे। जब भी इस तरह के वीआईपी गेस्ट भारत में होते हैं, उस समय कश्मीर घाटी में सुरक्षा बढ़ाई जाती है।

(1655/KDS/GM)

लेकिन इस बार जो यह चूक हुई, यह केवल बैसरन वैली की बात नहीं है, ऐसे 60 और टूरिस्ट डेस्टिनेशन्स थे, जहां पर कोई भी सुरक्षा नहीं थी। भारतीय जनता पार्टी की सरकार के कहने पर ही टूरिस्ट इस भरोसे और विश्वास के साथ कश्मीर जा रहे थे कि वे सुरक्षित हैं। अंततोगत्वा भारतीय जनता पार्टी के नेताओं ने कहा कि सुरक्षा की जिम्मेदारी टूर ऑपरेटर्स की थी। यह बहुत ही गैर-जिम्मेदाराना बयान है और साथ ही इनकी संवेदनहीनता को भी दर्शाता है। 'ऑपरेशन सिंदूर' के द्वारा भारतीय सेना ने सटीकता से पाकिस्तान और पीओके के अंदर 9 टेररिस्ट कैंप्स को तबाह किया, उनको निशाना बनाया और जब हमारा पलड़ा भारी दिख रहा था, तो सीज़ फायर का अनाउंसमेंट हो गया। बात यह नहीं है कि सीज़ फायर का अनाउंसमेंट हुआ, बात यह है कि सीज़ फायर की अनाउंसमेंट किसने की। भारत के किसी भी मंत्री अथवा भारत के ऑफिशियल हैंडल से यह अनाउंसमेंट क्यों नहीं की गई? आखिर क्यों भारत के देशवासियों को यह सूचना अमेरिका के राष्ट्रपति द्वारा मिली? सवाल इस बात का है। कहीं न कहीं भारत की फॉरेन

पॉलिसी पूरी तरह से फेल है। देश-विदेश में विश्व गुरु का जो माहौल बनाया जा रहा है, कहीं न कहीं यह भी पूरी तरह फेल है। 'ऑपरेशन सिंदूर' और सीज़फायर के तुरंत बाद आईएमएफ ने पाकिस्तान को 1 बिलियन डॉलर दिए। वहीं, वर्ल्ड बैंक ने 108 मिलियन डॉलर पाकिस्तान को दिए और एशियन डेवलपमेंट बैंक ने 8 सौ मिलियन डॉलर देने का काम किया। … (व्यवधान) Sir, I will finish in two minutes.

दूसरी ओर यूएन सिक्योरिटी काउंसिल ने पाकिस्तान को काउंटर टेररिज्म कमेटी का वाइस चेयरमैन बना दिया। यह दर्शाता है कि भारत की फॉरेन पॉलिसी पूरी तरह से विफल हुई है। यही नहीं, पहली बार पाकिस्तान के चीफ ऑफ आर्मी को अमेरिका के राष्ट्रपति के साथ लंच करने का न्यौता मिला और उसने उनके साथ लंच किया।

बात यहीं पर समाप्त नहीं होती है। जनरल माइकल कुरिला को पाकिस्तान के राष्ट्रपति ने 'प्रेस्टीजियस निशान-ए-इम्तियाज़' अवार्ड भी दिया। पाकिस्तान और अमेरिका के रिश्तों के बीच भारत कहां खड़ा है, सवाल इस बात का है। एक सवाल यह भी है कि अगर चीफ डिफेंस स्टाफ ने यह बात कही कि हमारे लड़ाकू विमान गिरे हैं, तो मैं कहना चाहूंगी कि लड़ाकू विमान तो गिनती के हैं। आज नहीं तो कल पता ही चल जाएगा कि कितने लड़ाकू विमान गिरे। … (व्यवधान) मैं केवल दो मिनट और लूंगी।

HON. CHAIRPERSON (SHRI A. RAJA): One minute only.

श्रीमती डिंपल यादव (मैनपुरी) : आखिर सरकार को बताने में क्या दिक्कत है कि कितने लड़ाकू विमान गिरे हैं? ये लड़ाकू विमान क्यों गिरे, यह भी सरकार को बताना पड़ेगा। यह पूरी तरह से सरकार का इंटेलिजेंस फेल्योर है। सरकार यह बात जानती ही नहीं थी कि जहां हम पाकिस्तान से लड़ रहे हैं, वहीं हमारा पड़ोसी देश चीन पूरी तरह से पाकिस्तान का समर्थन कर रहा था। क्या यह इंटेलिजेंस फेल्योर था या फिर ऐक्शनेबल इंटेलिजेंस को इग्नोर किया गया?

HON. CHAIRPERSON: Please conclude now.

श्रीमती डिंपल यादव (मैनपुरी) : सर, अंत में, मैं अपनी बात यहीं पर समाप्त करते हुए कहना चाहूंगी कि भारत का डिफेंस बजट, जो जीडीपी का का 1.9 परसेंट है, उसे बढ़ाकर 3 प्रतिशत किया जाए।

(1700/CS/GTJ)

अग्निवीर जैसी योजना को समाप्त किया जाए। जो लेटेस्ट टेक्नोलॉजी से आज लड़ाई हो रही है, वारफेयर चल रहा है, भारतीय जनता पार्टी की सरकार है, वह इसके प्रति जागरूक बने। धन्यवाद।

(इति)

1701 hours

*SHRI. SUBBARAYAN K. (TIRUPPUR): Hon. Chairman Sir, *Vanakkam*.

Our experience over the past 11 years has time and again proved that those who are in the ruling dispensation are not trustworthy. Even this Pahalgam attack and 'Operation Sindoor' which followed that attack were evident from the fact that the Government of the Day is not at all trustworthy. After the abrogation of the Article 370, they claimed that no act of terrorism or extremism was witnessed in the Kashmir valley. But Pahalgam attack has proved that this government was not saying the truth but only providing false information to the people. As many as 26 innocent people were killed in this attack. Intelligence sources have completely failed.

If all those in power truly follow the quote, 'Satyamave Jayate', hon. Minister of Home Affairs should have resigned from his post owing moral responsibility for the attack. He should have resigned. But he did not resign. Even today morning when he was addressing this House, he was speaking in a tone threatening the democracy. The Union Minister of Home Affairs has not come to this House to provide any clarification. He has just tried to argue. This was evident from the tone and tenor of his speech. This government is not capable of protecting the people of this country. Everything is evident from their words and actions. We can feel their wish that they want to woo whoever is weak among the Opposition parties. They have no concern to protect our nation.

Even our External Affairs Minister and our Defence Minister say that they are not operated by anyone from behind. But why did not they deny when Trump said it 25 times. Why our Prime Minister has not opened his mouth and said anything so far as rebuttal to President Trump. Why is this government afraid of? What is the reason? I want to accuse at this government for having made our administration as the slaves of the American dispensation. When the opposition raised questions against the attack on the some of the terrorist camps in Pakistan, this government raises serious doubt about the patriotism of such Opposition parties. They want to term that these Opposition parties are raising questions, as according to the ruling side, are seen as supporting the Pakistani side which is not correct.

---

* Original in Tamil

When the people in power today, were supporting the colonial rulers, only the Congressmen, Communist movements and Dravidian parties were against that Colonialism. You were at that point of time, against the interests of our nation. It is irony that now such people are talking about patriotism. They are talking about Mahatma Gandhi and Jawaharlal Nehru. It is irony. They do not have any moral responsibility to talk about this. Pandit Nehru was imprisoned for 9 years. Nehru made India to reach the pinnacle of glory in the international arena. But they try to defame and disregard Nehru with *mala fide* intention. This is nothing but a political vendetta.

I want to conclude by saying this firmly, and I am speaking here on behalf of the Communist Party of India. They are talking about patriotism. But when there was Chinese aggression on India, the Communist Party of India condemned this act of China, even though it was a Communist country. This is the patriotism of Communist Party of India. You do not try to teach us patriotism.

Thank you.

(ends)

(1705/MNS/RCP)

1705 बजे

श्री गुरमीत सिंह मीत हायेर (संगरूर) : सभापति जी, धन्यवाद। हमें सबसे पहले हमारी फौज पर गर्व है। जिस तरीके से सेना ने इस ऑपरेशन को अंजाम दिया, मैं उनको नमन करता हूं। कल रक्षा मंत्री जी के एक घंटा और आज गृह मंत्री जी के डेढ़ घंटे बोलने के बाद भी सरकार से जो सवाल है, वह आज भी वहीं के वहीं है।

सभापति जी, मैं पंजाब से हूं। लोगों ने तो बहुत सी चीजें न्यूज और व्हाट्सएप पर देखी, लेकिन किस तरह से ड्रोन्स आ रहे थे, किस तरह से रात को 'ब्लैक आउट' किया जा रहा था, सायरन बज रहे थे, वह सब कुछ पंजाब के लोगों ने आंखों से एक्सपीरियंस किया था। कल राजा जी ने भी कहा था कि सवाल यह नहीं है कि विमान गिरा या नहीं गिरा, वह हमें अच्छी तरह पता है। सवाल यह है कि विमान क्यों गिरा? कहीं उसका यह कारण तो नहीं कि हमारे विदेश मंत्री जी ने कहा था कि हमने पाकिस्तान को हमले से पहले इत्तिला कर दिया था। अगर इत्तिला कर दिया था, तो कहीं इसका यही कारण तो नहीं, जिसकी वजह से विमान गिरा।

सभापति जी, दूसरा सवाल यह है कि हमारे देश की परंपरा थी कि अगर किसी ट्रेन का एक्सीडेंट भी हो जाता था, तो माननीय मंत्री जी रिजाइन कर देते थे, लेकिन आप देखिए कि 26 लोगों की जान चली गई, इतना बड़ा इंटेलीजेंस का फैल्योर हुआ, रिजाइन तो दूर की बात है, किसी ने सरकार की तरफ से एक बार माफी तक नहीं मांगी कि हमारी वजह से 26 लोगों की जान चली गई।

सभापति जी, तीसरी सबसे बड़ी बात हमारी विदेश नीति का फैल्योर है। हम पूरी दुनिया में कहते हैं और सदन में तो पता नहीं कितनी ही बार सुना है कि भारत विश्व गुरु बन गया। कैसा विश्व गुरु? लड़ाई चल रही थी और आईएमएफ पाकिस्तान को एक बिलियन डॉलर दे रहा है। कैसा विश्व गुरु? पाकिस्तान के साथ चीन ओपनली आ रहा है। हमारे लेफ्टिनेंट जनरल, राजीव घई ने भी कहा है कि हम सिर्फ पाकिस्तान के साथ लड़ाई नहीं लड़ रहे थे, बल्कि हम चाइना और तुर्किए के साथ भी लड़ाई लड़ रहे थे। 'विश्व गुरु' देश के साथ एक भी देश सपोर्ट में नहीं आ रहा। 'विश्व गुरु'के कैसे रक्षा मंत्री हैं, जिनको डोनाल्ड ट्रंप ने 27 बार कह दिया कि हमने सीजफायर करवाया था। हमारे 'विश्व गुरु' के रक्षा मंत्री जी अपने एक घंटे के भाषण में एक बार भी डोनाल्ड ट्रंप का नाम तक नहीं ले सके और ऐसे ही आज गृह मंत्री जी भी उनका नाम तक नहीं ले सके।

सभापति महोदय, तीसरी बात विदेश नीति की है। हम 'विश्व गुरु'के रूप में कहां स्टैंड कर रहे हैं? 30-30 देशों में जो अलग-अलग पार्टीज़ के प्रतिनिधि थे, सांसद थे, दो-चार देशों को छोड़कर वहां के कैबिनेट मंत्री भी हमारे प्रतिनिधियों से मिलने के लिए नहीं आए। मुझे लगता है कि सरकार को इस बारे में फिर से एनालिसिस करनी चाहिए कि हम विदेश नीति पर कहा स्टैंड कर पा रहे हैं। इसमें कहां कमी है कि आज भारत इस पोजीशन पर पहुंच गया। कल रक्षा मंत्री जी ने कहा था कि भारत शेर है और मेंढक से क्या लड़ाई लड़ेगा। मान लिया कि पाकिस्तान तो मेंढक है, लेकिन जो 27 बार कह चुका है कि भारत और पाकिस्तान की लड़ाई हमने खत्म करवायी, तो फिर अमेरिका क्या है और चाइना क्या है? उसके बारे में रक्षा मंत्री जी क्या कहेंगे कि वे कौन से जानवर हैं? ये सवाल आज भी वहीं के वहीं है। इन सवालों के जवाब देश की सरकार को, रक्षा मंत्री जी को और गृह मंत्री जी को देना पड़ेगा। उन पर देश के 140 करोड़ लोगों की उम्मीद है। धन्यवाद। (इति)

1708 बजे

श्री विजय कुमार हाँसदाक (राजमहल) : चेयरमैन सर, धन्यवाद। मैं जेएमएम पार्टी की तरफ से बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। मैं सबसे पहले शहीदों को नमन करूंगा। सेना ने जिस तरह से लड़ाई लड़ी, उसके लिए मैं साधुवाद दूंगा। पूरा देश कहीं न कहीं इस पूरे प्रकरण में और जो अटैक्स हुए थे और उसके बाद हमारी तरफ से जो एक्शंस लिए गए, उसमें पूरा देश और तमाम पार्टियां एक साथ खड़ी थीं, लेकिन सक्सेस की जो बात कही जा रही है, उसमें कहीं न कहीं खटास तब आयी कि किसी दूसरे देश के प्रेसिडेंट ये बता रहे हैं कि उन्होंने सीजफायर करवाया।

1709 बजे (माननीय अध्यक्ष पीठासीन हुए)

इसमें कहीं न कहीं हमारी पोजीशन कमजोर दिखी। कोई दूसरा देश हमारे मामलों में बोलने वाला होता कौन है? यह सबसे बड़ा सवाल है। अगर हमारे नेताओं द्वारा, हमारे देश की एजेंसीज़ के द्वारा यह बात कही गई होती तो हमें समझ में आता। देश में कुछ बिजनेस हाउसेज़ को आप फायदा पहुंचाए, वह घर के अंदर का मसला है।

(1710/RV/HDK)

लेकिन, देश के मसले में बाहर का कोई नेता हमारे लोगों से पहले बोले, वह गलत है और हमें कमजोर दिखाने वाला काम हो रहा है। मैं तहे-दिल से सुझाव देना चाहूंगा कि आप 'अग्निवीर' जैसी योजनाओं को बंद करें। हमारे देश की आर्मी को कमजोर करना बंद करें। बिजनेस हाउसेज को टैक्स की जो माफी दी जा रही है, इन सभी चीजों को बंद करें और उस पैसे को आप आर्मी को मजबूत करने के लिए लगाएं और उस पैसे को आप रिसर्च में लगाएं, ताकि हमारी आर्मी मजबूत हो सके। ये घटनाएं जो हुई हैं, ये आगे भी हुई हैं और अभी भी हुई हैं, तो इनको हम पहले से रोक पाएं।

'ऑपरेशन सिन्दूर' के बाद प्रधान मंत्री भाषण देने के लिए बिहार जाते हैं। मैं कह सकता हूं कि इलेक्शन लड़ना और भाषण देना, इन सबमें आप लोगों ने महारत हासिल कर ली है, लेकिन देश चलाने में आपको अभी और एक्सपर्टीज़ की आवश्यकता है। जिस तरह से आप लोग करते हैं, चाहे वह 'ईवीएम' का मामला हो या एस.आई.आर. की बात हो, इलेक्शन किस तरह से जीतना है, उसके लिए हर एक हथकंडा अपनाने के लिए आप लोग तैयार हैं, लेकिन देश में अगर इंटेलिजेंस फेल्योर हो रही है, तो उसे किस तरह से रोकना है, इसमें आपको अभी और एक्सपर्टीज़ लाने की जरूरत है।… (व्यवधान) रक्षा मंत्री जी अपनी तरफ से बोलते हैं कि यह कांग्रेस पार्टी नहीं है कि यहां पर इस्तीफा होगा। आप जिम्मेदारी भी नहीं लेना चाहते हैं। आपने पूरे देश को जाति, धर्म और भाषा में बांट कर रख दिया है। अगर हम अपनी फॉरेन पॉलिसी को देखें तो हमारे जो पड़ोसी देश हैं, हमारे जो पुराने मित्र रहे हैं, उनके साथ हमारे संबंध खराब हुए हैं। मेरा इस सरकार को सुझाव है कि सदन के अन्दर उस पक्ष के नेता लोग लगातार जय-जयकार करके कह रहे हैं कि हमारे यहां के नेता अपने आपको 'बॉयोलॉजिकल' नहीं समझते हैं।… (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आप अपना भाषण समाप्त कर दीजिए।

श्री विजय कुमार हाँसदाक (राजमहल) : महोदय, मुझे बहुत कम समय दिया गया है। जितना समय मिलना था, उससे भी कम समय दिया गया है।… (व्यवधान)

सर, मैं यह कहना चाहूंगा कि जिस तरह से हमारे देश के लोग सवाल पूछ रहे हैं, पूरे विश्व में जिस तरह से हमारी कमजोरी दिख रही है, आने वाले समय में आपसे विनती है कि इन सब चीजों में कहीं न कहीं सुधार लाने की जरूरत है और जिम्मेदारी लेने की जरूरत है। जहां आपसे गलती हुई है, वहां आप आगे सुधार करें, क्योंकि अगर देश का कोई मसला है, तो वहां पर हम सभी लोग एक साथ हैं।

बहुत-बहुत धन्यवाद। (इति)

1713 बजे

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय में राज्य मंत्री; तथा रसायन और उर्वरक मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्रीमती अनुप्रिया पटेल) : अध्यक्ष महोदय, धन्यवाद।

'ऑपरेशन सिन्दूर' की इस चर्चा में मैं सबसे पहले इस अभियान को उसके अंजाम तक पहुंचाने वाले हमारे भारतीय सेना के वीर जवानों के शौर्य और पराक्रम को नमन करते हुए अपनी बात को प्रारम्भ करना चाहती हूं।

अध्यक्ष महोदय, 22 अप्रैल को पहलगाम में हम सबने आतंक का जो वीभत्स और क्रूर रूप देखा, उसने पूरे देश की आत्मा को झकझोरने का काम किया और पूरा देश एक स्वर में उठ कर खड़ा हुआ कि इस आतंकी घटना के विरुद्ध कड़ी से कड़ी कार्रवाई हो। पाकिस्तान ने भारत की सम्प्रभुता को चुनौती देने वाला जो दुस्साहस किया, भारत की सेना ने उसे बहुत ही कड़े शब्दों में मुँहतोड़ जवाब देने का काम भी किया। विश्व के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ कि केवल 22 मिनट के अन्दर 9 हाई वैल्यू आतंकी लॉन्च पैड्स को ध्वस्त कर दिया गया।

अध्यक्ष महोदय, आतंकियों ने कभी कल्पना भी नहीं की होगी कि भारत इतनी कड़ी कार्रवाई करेगा। 100 से अधिक आतंकी मौत के घाट उतर गए और दशकों से जो आतंकी पाकिस्तान में रहकर भारत के खिलाफ साजिश करने का दुस्साहस करते थे, वे सब अल्लाह को प्यारे हो गए और जो बची कसर थी, जिसको लेकर हमारे विपक्ष के हमारे साथी सवाल उठा रहे थे कि जो बैसरन घाटी में आए, उनका क्या हुआ तो 'ऑपरेशन महादेव' ने उनका भी हिसाब-किताब चुकता कर दिया।

अध्यक्ष महोदय, विपक्ष के हमारे साथियों को मैंने कहते हुए सुना कि जब पहलगाम की घटना हुई तो प्रधान मंत्री जी पटना में रैली को संबोधित कर रहे थे। मैं उनको कहना चाहती हूं कि प्रधान मंत्री जी पूरी दुनिया को संदेश दे रहे थे कि भारत किसी कीमत पर आतंक के आगे घुटने टेकने वाला देश नहीं है। संकट की इस घड़ी में हमारे प्रधान मंत्री जी ने पूरे धैर्य और संयम के साथ काम करते हुए सही समय पर सही कदम उठाने की एक फुलप्रुफ योजना बनाई और 'ऑपरेशन सिन्दूर' को उसके अंजाम तक पहुंचाया।

(1715/MY/PS)

भारत आतंकवाद के प्रति जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाता है। हमने जब पाकिस्तान पर हमला किया तो केवल आतंकी ठिकानों को निशाने पर लिया। भारत की कार्रवाई से बौखलाए हुए पाकिस्तान ने हमारे नागरिक क्षेत्रों और सैन्य ठिकानों पर हमला करते हुए पूरी दुनिया के सामने अपने आप को एक्पोज करने काम किया। भारत की कार्रवाई से डरे हुए पाकिस्तान ने घुटने टेक कर भारत से संघर्ष विराम की भीख मांगने का काम किया है। तब हमारी सरकार ने संघर्ष विराम की घोषणा की है। उन्होंने यह भी कहा है कि अभी 'ऑपरेशन सिन्दूर' सिर्फ एक विराम है, पूर्ण विराम नहीं है। भविष्य में अगर पाकिस्तान अपनी हरकतों से बाज नहीं आया तो इस बार आतंकियों के जनाजे पर रोने के लिए कुछ लोग बच गए थे, अगली बार उन जनाजों पर आँसू बहाने वाला भी कोई नहीं बचेगा।

अध्यक्ष महोदय, मैं बार-बार एक ही बात सुन रही हूं। हमारे विपक्ष के मित्र कह रहे हैं कि अमेरिका के राष्ट्रपति ने ऐसा कहा, वैसा कहा। मुझे बहुत ताज्जुब होता है कि मेरे विपक्ष के मित्रों को अपने देश के प्रधानमंत्री क्या कह रहे हैं, उस पर भरोसा नहीं है, बल्कि उनको दूसरे देश के राष्ट्रपति क्या कह रहे हैं, उस पर भरोसा है। प्रधानमंत्री जी ने फोन पर दो टूक कहा कि भारत ने अपनी शर्तों पर संघर्ष विराम किया है, लेकिन इन्हें उस पर यकीन नहीं है।… (व्यवधान)

अध्यक्ष जी, कल अगर अमेरिका के राष्ट्रपति जी कहेंगे कि भारत में सूरज पश्चिम से उगता है तो हमारे विपक्ष के मित्र यह भी मान जाएंगे। मैं विपक्ष के साथियों को कहना चाहती हूं कि भारत ने अपनी रक्षा की क्षमता को अपग्रेड किया। इस ऑपरेशन सिन्दूर के दौरान हमने एडवान्स्ड सुपर टेक्नोलॉजी नॉन-कॉन्टैक्ट वार एक्विपमेंट्स को यूज किया, जिसमें एक एक्विपमेंट एस-400 मिसाइल इंटरसेप्टर था।

अध्यक्ष जी, इसका सप्लायर रूस है। मैं विपक्ष के मित्रों से कहना चाहती हूं कि अमेरिका ने हमें टेक्नोलॉजिकल सैंक्शन्स की धमकी भी दे डाली और कहा कि भारत इसको न खरीदे। लेकिन, इस देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी है, जिन्होंने कहा कि देश की रक्षा के साथ किसी भी प्रकार का कोई समझौता नहीं होगा। किसी के दबाव में आने वाली यह सरकार नहीं है। हमने एस-400 को खरीदा। ऑपरेशन सिन्दूर को उसके अंजाम तक पहुंचाने में इसने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का काम किया है।

अध्यक्ष जी, मैं बार-बार अपने विपक्ष के मित्रों से सुन रही हूं। वे कह रहे हैं कि विदेश नीति फेल हो गई। यह किसकी भाषा है? यह भाषा पाकिस्तान की है। वह बार-बार यह बात कह रहा है कि भारत की विदेश नीति फेल हो गई। मुझे ताज्जुब होता है कि मेरे विपक्ष के मित्र भी वही बात कहते हैं। जब वे हमारे भारत विरोधी ताकतों की भाषा बोलते हैं तो मैं कहती हूं कि यह रिश्ता क्या कहलाता है?… (व्यवधान)

अध्यक्ष जी, अभी मुझे थोड़ा बोलने दीजिए। वे कहते हैं कि आपने सर्वदलीय डेलीगेशन भेजा, उसका क्या हुआ। उन डेलीगेशन्स में तमाम दलों के हमारे एमपीज गए थे। मैं कहना चाहती हूं कि कांग्रेस पार्टी से तीन वरिष्ठ नेता और दो सांसद उसमें गए। मैं उनका नाम नहीं लेना चाहती हूं। उन्होंने कौन-सा गुनाह किया? उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय मंच पर केवल पाकिस्तान को कठघरे में खड़ा करने का काम किया। भारत की टेररिज्म के खिलाफ जो नीति है, उससे दुनिया को अवगत कराया। इन्होंने अपने उन तीनों नेताओं की लानत-मलामत करके रख दी। आज इन्होंने उनको किनारे लगा दिया। इनके एक नेता मौन हो गए। एक नेता कहते हैं कि 'भारत का रहने वाला हूं, भारत की बात सुनाता हूं' और एक नेता कहते हैं कि 'Is it so difficult to be patriotic in this country?' यह हालात इस कांग्रेस पार्टी की है। मैं इनको याद दिलाना चाहती हूं कि जब संयुक्त राष्ट्र में कश्मीर का मसला उठा था, तब भी भारत की सरकार ने, माननीय नरसिम्हा राव जी की सरकार ने एक डेलीगेशन भेजा था, जिसका नेतृत्व वाजपेयी जी ने किया था।… (व्यवधान) वहां उन्होंने भारत का साथ दिया था, भारत की आवाज को रखा था और उनकी पार्टी ने उनके साथ किनारा नहीं किया था। यह हमारी विदेश नीति है।

अध्यक्ष जी, मैं अपने विपक्ष के साथियों से कहना चाहती हूं कि जिस विदेश नीति के फेल होने की बात आप कर रहे हैं, उसी के चलते टीआरएफ जैसी संस्था को प्रतिबंधित किया गया है। उसे ग्लोबल टेररिस्ट ऑर्गनाइजेशन घोषित किया गया है।… (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: माननीय मंत्री जी, आप अपनी बात समाप्त कीजिए।

… (व्यवधान)

(1720/SNL/MLC)

श्रीमती अनुप्रिया पटेल : अध्यक्ष जी, पांच मिनट का समय और दे दीजिए। … (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : नहीं, पांच मिनट नहीं।

… (व्यवधान)

श्रीमती अनुप्रिया पटेल : अध्यक्ष जी, पांच मिनट का समय और दे दीजिए। मैं जरूरी बात कह रही हूं। … (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आपको समापन करना है, तो कीजिए, नहीं तो मैं अगले वक्ता का नाम बुलाता हूं।

… (व्यवधान)

श्रीमती अनुप्रिया पटेल : अध्यक्ष जी, पांच मिनट नहीं तो तीन मिनिट का समय और दे दीजिए। … (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आप एक मिनट में समापन कर दीजिए।

… (व्यवधान)

श्रीमती अनुप्रिया पटेल : अध्यक्ष जी, मैं यह कहना चाहती हूं कि आज विदेश नीति पर सवाल उठाते हुए हमारे विपक्ष के नेता ने कहा कि वर्ष 2008 में मुम्बई में आतंकी हमला हुआ। उन्होंने तमाम तरीके की बातें कीं, लेकिन उन्होंने यह नहीं कहा कि इस हमले के बाद दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों ने ज्वाइंट स्टेटमेंट जारी किया और पाकिस्तान को आतंकवाद का पीड़ित देश घोषित करने का काम इन्होंने किया, इनकी सरकार ने किया। विदेश नीति पर सवाल उठाने वाले लोग आज यह भी कहते हैं कि भारत और बांग्लादेश की सीमा पर फेंसिंग नहीं होनी चाहिए, क्योंकि फेन्सिंग हो गई, तो दोनों देशों के बीच के रिश्ते खराब हो जाएंगे। मुझे नहीं मालूम कि मेरे विपक्ष के साथी कौन सी विदेश नीति इस देश के अंदर लागू करना चाहते हैं।

अध्यक्ष महोदय, हमारे देश के प्रधानमंत्री जी ने 73 देशों की यात्राएं करके भारत की जो ब्रांडिंग की है, यह उसका नतीजा है कि दुनिया के तमाम देश आज भारत के साथ खड़े हुए हैं। … (व्यवधान) भारत आज केवल सुनने वाला देश नहीं है, भारत आज बोलने और नेतृत्व करने वाला देश है। … (व्यवधान) यह आपकी विदेश नीति थी, जिसके कारण पीओके का एक बड़ा हिस्सा चीन के पास चला गया, लेकिन यह हमारी सरकार है, जिसने ऑपरेशन सिंदूर को चलाकर पाकिस्तान और पूरी दुनिया को आतंकवाद के खिलाफ भारत की जीरो टॉलरेंस की नीति से अवगत कराने का काम किया है। … (व्यवधान) (इति)

माननीय अध्यक्ष : श्री राहुल गांधी जी। आप बोलिए।

1722 hours

THE LEADER OF THE OPPOSITION (SHRI RAHUL GANDHI): Thank you, Sir, for letting me speak on a very important and painful subject.

I start with the attack in Pahalgam, a brutal and heartless attack, organised and orchestrated clearly by the Pakistani stint. “Merciless” - young people, old people murdered in cold blood mercilessly. We have together, every single person in this House has, condemned Pakistan.

The moment “Operation Sindoor” began, in fact, before it began, the Opposition committed itself. All the Parties committed that we will stand like a rock with the Forces and with the elected Government of India.

(1725/SMN/GG)

We heard the odd jibe, the sarcastic remarks from some of their leaders but we said absolutely nothing. And this was something that was agreed among all the senior leadership of the I.N.D.I.A and we are very proud that as an Opposition, we stood united as we should have.

स्पीकर सर, पहलगाम के बाद मैं करनाल में नारवाल जी के घर गया था। उनके बेटे नेवी में थे। वे खुद सीआरपीएफ में थे। मुझे ऐसा लगा कि मैं अपने परिवार के साथ बैठा हूँ। मैं उनके साथ दो घंटे मैं बैठा था। उन्होंने अपने बेटे की फोटोग्राफिक एलबम दिखायी, जब वह छोटा सा बच्चा था, उस समय की फोटोज़ दिखायीं। उसके बारे में बताया, मज़ाक करता था, जोक्स करता था और एक प्रकार से परिवार के बारे में मुझे बताया। उनके परिवार से मेरी दो घंटे बात हुई। बहन ने कहा कि मैं दरवाज़े की ओर देखती हूँ, तो मेरा भाई नहीं आता है, कभी आता ही नहीं है और कभी नहीं आएगा। मैं उसके बाद, यूपी में दूसरे परिवार से मिला, जिसके एक सदस्य की हत्या हुई। वह काउंटर पर कुछ खरीद रहा था, उसको बीवी के सामने गोली मारी। इस सबसे दर्द होता है। हर हिन्दुस्तानी को दु:ख होता है, दर्द होता है। जो हुआ गलत हुआ। सबने कंडेम किया।

स्पीकर सर, राजनैतिक काम करते हुए हम पूरे देश में जाते हैं, घूमते हैं, लोगों से मिलते हैं, दु:ख में, सुख में जाते हैं। जब भी मैं फोर्सेज़ के किसी भी व्यक्ति से मिलता हूँ, जैसे ही मैं हाथ मिलता हूँ, यह आपको भी फील हुआ होगा, जैसे ही मैं हाथ मिलाता हूँ, मुझे पता लगता है कि यह हिन्दुस्तान की फोर्सेज़ का, सेना का आदमी है। जैसे ही वह हाथ मिलाता है, मुझे पता लग जाता है कि यह टाइगर है। इसको हिलाया नहीं जा सकता है। यह देश के लिए मर जाएगा, सीधा खड़ा रहता है। इसको कहीं भी भेज दो। यह देश के लिए लड़ने के लिए, मरने के लिए तैयार रहता है। सर, टाइगर को पूरी फ्रीडम देनी पड़ती है। टाइगर को आप बांध नहीं सकते हो। अगर आपने टाइगर से सच्चा काम लेना है, पूरा काम लेना है तो आपको टाइगर को पूरी छूट देनी पड़ेगी।

सर, दो शब्द हैं। एक पॉलिटिकल विल और दूसरा फ्रीडम ऑफ ऑपरेशन। मतलब अगर आप हिंदुस्तान की सेना, एयरफोर्स, नेवी आदि का प्रयोग करना चाहते हैं, आपके पास सबसे पहले 100 पर्सेंट पॉलिटिकल विल होनी चाहिए। दूसरा, अगर आप सेना का प्रयोग करना चाहते हो तो आपको फुल फ्रीडम ऑफ ऑपरेशन देना पड़ेगा।

सर, राज नाथ सिंह जी ने अपने भाषण में कल सन् 1971 और ऑपरेशन सिंदूर का कम्पैरिज़न किया।

(1730/YSH/RP)

मैं उनको याद दिलाना चाहता हूँ कि सन् 1971 में पॉलिटिकल विल थी। तब हिंद महासागर में सातवां बेड़ा आ रहा था। वह हिंदुस्तान की ओर आ रहा था और उस समय के प्रधान मंत्री ने कहा था कि हमें बांग्लादेश में जो करना है, वह हम करेंगे। आपको जितना आना है, आ जाइए, लेकिन हमें जो करना है, वह हम करेंगे। वह पॉलिटिकल विल थी without any confusion. A super power of the world was coming with its aircraft carriers, hundreds of aircraft, but with a political will, the then Prime Minister of India said: “We do not care, come.” उन्होंने कहा कि हमारा जो काम है, हम उसे पूरा करेंगे। जनरल मॉनेक शॉ ने इंदिरा गांधी जी से कहा कि मैं गर्मी में ऑपरेशन नहीं कर सकता हूँ और मैं नहीं करूंगा। उन्होंने कहा कि मुझे छह महीने चाहिए। इंदिरा गांधी जी ने उन्हें कहा कि आपको छह महीने, एक साल या जितना भी समय चाहिए, उतना समय ले लीजिए, क्योंकि आपको फ्रीडम होनी चाहिए। आपके पास फ्रीडम ऑफ एक्शन होना चाहिए। आपको फ्रीडम ऑफ मनूवर होना चाहिए। उस समय एक लाख पाकिस्तानी सोल्जर्स ने सरेंडर किया था। उस समय एक नया देश बना था।

Sir, let us now move to Operation Sindoor. मैं राजनाथ जी का भाषण सुन रहा था। I listen quite carefully when people speak. Raj Nath Singh ji said that Operation Sindoor began at 1:05 in the morning. He said that Operation Sindoor lasted 22 minutes, and then he said the most shocking thing. He said, at 1:35 we called Pakistan and told them that we have hit non-military targets and we do not want escalation. These are the words of the Defence Minister of India. Maybe he does not understand what he revealed. The DGMO of India was told by the Government of India to ask for a ceasefire at 1:35 at night itself on the night of Operation Sindoor. You told the Pakistanis exactly what you would do. You told them that we will not hit military targets. You told them that we do not want escalation.

Speaker, Sir, please imagine, दो लोगों के बीच में लड़ाई हो रही है। एक आदमी जाकर दूसरे को घूंसा मारता है और फिर कहता है कि देखिए, मैंने घूंसा मार दिया, अब आप एस्केलेशन मत कीजिए। मतलब, आपने पाकिस्तान को डायरेक्टली अपनी पॉलिटिकल विल बता दी कि आपके पास लड़ने की पॉलिटिकल विल है ही नहीं। आप लड़ना ही नहीं चाहते हैं। यह डिफेंस मिनिस्टर ने कहा है। डिफेंस मिनिस्टर हाउस में कह रहे हैं कि हमने पाकिस्तान से जाकर कहा कि हमने आपको एक थप्पड़ मारा है, लेकिन हम आपको और थप्पड़ नहीं मारेंगे। हम एस्केलेशन नहीं चाहते हैं। आप रिस्पॉन्ड मत कीजिए और हम मिलिट्री को टारगेट नहीं करेंगे। The Government of India informed the Government of Pakistan that we have no political will; we do not want to fight; and we have just done this action. … (*Interruptions*) It is an immediate surrender at 30 minutes.

(1735/RTU/STS)

Now, there is a second very important thing that Rajnath Singh ji said. Maybe he did not mean to say this. He said that he told the Pakistanis that we are not going to hit any of your military infrastructure. Now, this is a very interesting fact. I want you to listen to it carefully. I said that freedom of manoeuvre means freedom to the Air Force. Now, listen to this quote very carefully. Captain Shiv Kumar, our Defence Attache in Indonesia says, “I may not agree with him that India lost so many aircraft but I do agree that we did lose some aircraft and that happened only because of the constraint given by the political leadership to not attack the military establishment and their Air Defence. It means that you went to Pakistan, you attacked Pakistan and you told our pilots not to attack their Air Defence system. It means that you told our pilots to go, attack and face the Air Defence system of Pakistan. It means that you tied their hands behind their back. The Defence Minister has said this in Parliament House itself that we told the Pakistanis that we are not going to attack their infrastructure. इन्होंने पब्लिकली हाउस में बोला कि भैया आपका जो मिलिट्री इंफ्रास्ट्रक्चर हैं, एयर डिफेंस सिस्टम हैं, हम उस पर अटैक नहीं करेंगे और दूसरी साइड से आप हमारे पायलट्स भेज रहे हैं। इसका नतीजा क्या होगा? हवाई जहाज गिरेंगे।

So, the point is aircraft was lost as this gentleman Shiv Kumar says, “They were lost because of the constraint given by the political leadership not to attack the military and Air Defence infrastructure of the Pakistan.” मतलब आपने शुरू किया और शुरूआत में ही आपने उनको कह दिया कि भैया न हमारे पास पॉलिटिकल विल है और न हम आपके मिलिट्री इंफ्रास्ट्रक्चर पर अटैक करेंगे। उसके बाद आपने हमारे पायलट्स से कहा कि जाकर लड़ाई करो। उसका नतीजा सभी को मालूम है। आप जवाब नहीं देना चाहते हैं, लेकिन नतीजा सभी को मालूम है। अनिल चौहान जी कहते हैं, “What was important was not the jet being downed but why they were being downed.” मतलब, वह यह कह रहे हैं कि जरूरी सवाल यह है कि जेट गिरे क्यों? वह यह कह रहे हैं कि जेट गिरे, यह ठीक है। सवाल यह है कि गिरे क्यों? फिर उसके बाद कहते हैं, “What mistakes were made?” The good part is that we were able to understand the tactical mistake which we made, remedy, rectify and implement after two days and we flew all our jets again targeting at long range.” I want to tell CDS Anil Chauhan Ji that you made no tactical mistake. The Indian Air Force made no mistake. The mistake was made by the political leadership which said that you cannot attack the military infrastructure and Anil Chauhan Ji must have the guts to say, “My hands were tied behind my back and I was sent into a war and my enemy was told by my own Government that we will not attack your Air Defence system.” So, the Air Force

is not to blame at all. In the 21st century, if you send aircraft into a zone protected by Air Defence, they will come down.

Now, why was the Pakistani Government told at 01:35 that हम न आपके इंफ्रास्ट्रक्चर को अटैक करेंगे, न आपके एयर डिफेंस को अटैक करेंगे और हम एस्केलेशन भी नहीं चाहते हैं? मतलब हमने आपको थप्पड़ मारा है, लेकिन दूसरा थप्पड़ नहीं मारेंगे। That is what it means.

(1740/UB/MM)

When we say that we do not want escalation, it means मैंने एक थप्पड़ मारा, दूसरा नहीं मारूंगा, तीसरा नहीं मारूंगा, चौथा नहीं मारूंगा। Why? It is because the goal of this exercise was to protect the Prime Minister's image. ... (*Expunged as ordered by the Chair*), the goal of the exercise was to make sure that he uses the Air Force to protect his image.

After that, Donald Trump said 29 times कि मैंने सीज़फायर करवाया है। अच्छा! अगर वह झूठ बोल रहे हैं तो अपने भाषण में यहां प्रधान मंत्री कह दें कि वह झूठ बोल रहे हैं। अगर दम है तो यहां पर प्रधान मंत्री बोल दें कि ट्रंप झूठ बोल रहे हैं। If he has the courage, if he has the courage of Indira Gandhi, let him say here, "Donald Trump, you are a liar. You did not make a ceasefire. We did not lose any planes". Let him say it here if he has the courage. इंदिरा गांधी का 50 परसेंट भी है तो यहां बोल दें। 50 परसेंट होगा तो बोल देंगे। … (व्यवधान) सर, मुझे बोलने दीजिए। … (व्यवधान) मजा आ रहा है। … (व्यवधान) अभी तो मैंने ओपनिंग नहीं की है। … (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य, आपके भाषण का समय कम है।

श्री राहुल गांधी : सर, अभी तो सेट हो रहा हूं, थोड़ी ढील दीजिए। अगर सच में दम है तो आज शाम यहां प्रधान मंत्री को कह देना चाहिए "Donald Trump is a liar. डॉनल्ड ट्रंप झूठ बोल रहा है।"

सर, एक नई चीज चली है, एक नया शब्द चला है – न्यू नॉर्मल। एक्सटर्नल अफेयर्स मिनिस्टर नहीं हैं, लेकिन वह यूज़ करते हैं। उन्होंने अपने भाषण में कहा कि सारे के सारे देशों ने टेररिज्म को कंडैम किया है। It is absolutely, 100 per cent, correct. मगर, उन्होंने यह नहीं बताया कि पहलगाम के बाद एक भी देश ने पाकिस्तान को कंडैम नहीं किया। Not a single country has condemned Pakistan. Everybody has condemned terrorism. What does it mean? It means that the world is equating us with Pakistan. Earlier, when the UPA Government was there, it was very clear Pakistan is promoting terrorism and they used to condemn Pakistan for promoting terrorism. Now not a single country has condemned. Sometimes, the hon. External Affairs Minister amazes me. The hon. External Affairs Minister and the hon. Defence Minister said that we have deterred Pakistan. You have deterred Pakistan? Fine. The man behind Pahalgam is a Pakistani General called General Munir, the Chief of Army Staff. That man is having lunch with the President of the United States. He is sitting there. Our Prime Minister cannot go there. Mr. Trump is breaking the protocol and he is inviting the man who

has done terrorism in India to have lunch with him. The hon. Prime Minister has not said anything. The hon. Prime Minister has not said, “How dare Mr. Trump invite Mr. Munir to his office.”

(1745/NKL/MK)

Hon. Speaker Sir, now, let me say what Donald Trump has to say. … (*Interruptions*) Let me say what Donald Trump has to say. … (*Interruptions*)

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य, यह सदन की संपत्ति है। इसको मत तोड़िए।

… (व्यवधान)

श्री राहुल गांधी : सॉरी सर, गलती हो गई।

According to this Government, they have deterred Pakistan. And, the mastermind of the whole operation is having lunch with the President. After that, the President of the United States says, ‘The reason I had him here was I wanted to thank him.’ For what did he want to thank him? He said, ‘I wanted to thank him for not going into the war and ending it.’ Let me repeat it. The reason he had him there for lunch was he wanted to thank him, the man who carried out Pahalgam attack. He said, ‘I wanted to thank him for not going into the war and ending it.’ … (*Interruptions*)

Currently, General Munir; U.S. General, Michael Kurilla; Head of their command structure; and Generals from four Central Asian countries are having a conference on how to prevent terrorism. … (*Interruptions*) They are having it right now. While these people are running around telling the world that Pakistan has done terrorism, the United States is having lunch with that man and organizing and trying to figure out how he can help them fight terrorism. Which planet is the Foreign Minister sitting on? … (*Interruptions*) Please come down. I do not know whether you have come down. … (*Interruptions*) You have flown off somewhere.

The second thing I would like to mention is about the new normal. The chief architect of the Pahalgam attack is having lunch with the President of the United States. This is a new normal. … (*Interruptions*) Now, there is another new normal. … (*Interruptions*) That is a fantastic idea. I do not know whose idea it was. At the end of the Operation, what they said is this. By the way, the operation is still going on. They have declared victory, but it is still going on. At the end of the exercise, the Government of India says: ‘Any act of terror is an act of war.’ Now, do you understand what this statement means? This statement means that any terrorist now who wants to make India fight a war has just got to do one attack in India. मतलब आपने पूरी की पूरी पावर आतंकवादियों को उठाकर दे दी कि आपको युद्ध चाहिए न, आप एक अटैक कर दो, यद्ध हो जाएगा। It is craziness. You have taken the entire idea of

deterrence and turned it upside down. … (*Interruptions*) You are laughing. … (*Interruptions*) Just tell me, when the next terror attack happens, what will you do? … (*Interruptions*) Will you attack Pakistan again? … (*Interruptions*) So now, the moment, they know that you are going to attack Pakistan, they just have to do a terror attack and they know you are going. … (*Interruptions*) So, this Government is clueless even about what deterrence means. … (*Interruptions*) This Government is clueless about what political will means. This Government is clueless about what it means to let the Army, Air Force, and Navy fight. … (*Interruptions*) That is the reality of the situation.

Now, let me tell you what I said in this House, standing right here, about three-four months back, and they laughed at me. I said, 'Please understand that India's biggest foreign policy challenge has been to keep Pakistan and China separate.' And, I also said here, 'I am sad to say that you have destroyed the single biggest, most important goal of Indian foreign policy.' China and Pakistan are fused like this. … (*Interruptions*)

(1750/VR/SK)

Now, let me tell you what that means. *....(Interruptions)* Sir, if you want to understand, I will explain it to you later. अगर आप समझाना चाहते हैं तो मैं थोड़ी देर बाद आपको समझा दूंगा। *....(व्यवधान)* अगर मैं इनको समझा दूंगा, तो ये बैठ जाएंगे। *....(व्यवधान)* Do not worry. I am ready to do it. *....(Interruptions)*

So, what happened actually? I have to tell the truth. What happened is that the Government of India thought that they were fighting with Pakistan, and when they arrived, they suddenly realized that they were not fighting with Pakistan, they were fighting with China and Pakistan, meaning that the Pakistani Army and the Pakistani Air Force were attached to the Chinese Air Force. Not only that, the doctrine of the Pakistani Air Force was completely changed. The information available to the Pakistani Air Force was completely changed. The Chinese were feeding information, critical battlefield information, satellite information, targeting information to the Pakistanis. If you do not believe me, Lt. General Rahul Singh, during an event organized by FICCI on July 14th, mentioned it. When the DGMO level talks were going on, Pakistan actually was mentioning, "We know that your such and such important vector is primed and ready for action. I would request you to perhaps pull it back." And, he says, "So, it is very clear that they were getting live battlefield inputs from China." If you had listened to me here, you would not have lost those five planes. *....(Interruptions)* You had said that yes, the Chinese and the Pakistanis are fused. *....(Interruptions)*

Sir, yesterday, the External Affairs Minister in his speech said that the two-front war concept is a very old concept. I do not know what he is talking about. The two-front war concept is gone, and it does not exist anymore. There is now a Unified Front concept, where there is only one unified single front and war is going to be held on multiple domains – space, electromagnetic, cyber, undersea, air and land. So, he does not even understand the basics of warfare. He is talking about the two-front war. That ship has sailed long ago.

Speaker, Sir, how did this integration between Pakistan and China take place? I want to make it clear. There is a centre called CENTAIC, Centre for Artificial Intelligence and Computing, that was built in Pakistan with Chinese help. The aim of the centre is to integrate the Pakistani Air Force with the Chinese Air Force, and make and transform the Pakistani Air Force into a network-centric Air Force.

Speaker, Sir, as I speak, and since 2021, Pakistani strategic officers have been embedded in the PLA's Western and Northern Theatre Commands. They are sitting there and coordinating. So, it is important to understand that you did not have the political will and that you did not give freedom of manoeuvre. But there is another problem. The problem that we are now facing is not just China, not just Pakistan, but China and Pakistan fused as one militarily. It is dangerous in this time for the Prime Minister to use the Forces to protect his image. It is dangerous for the country. The Forces should only be used in the national interest. The Forces should be used with freedom. If you want them to be used, you want to open it, unleash the tiger and free it.

(1755/PBT/VVK)

Do not tie his hands behind his back, do not go to the Pakistanis and say, “Listen, do not escalate.” Then, go all the way. Then fight properly and defeat them once and for all. Do not have President Trump tell you 29 times that he has stopped the war. Have the courage to tell him, “No, to hell with you, you cannot stop any war, we are going to fight.”

Speaker Sir, there is also this. I do not mean to keep mentioning the External Affairs Minister, but it comes up because he is central to this discussion. I want to finish by telling you about something he said that shows the complete bankruptcy of the foreign policy of this Government. Please remember that not a single neighbouring country, not a single country condemned Pakistan, not one. They condemned terrorism but they did not condemn Pakistan. This is something that he did not say. Now listen to what he has to say and this shows you the mindset of

these people. … (*Interruptions*) This explains why in his entire speech yesterday of one hour, the Defence Minister did not say the word 'China'. This explains it and let me read the quote from the External Affairs Minister: "Look, they, China, are the bigger economy, what am I going to do? As a smaller economy, am I going to pick a fight with a bigger economy? It is not a question of being reactionary, it is a question of common sense." This means that he is scared and this is the point. The point is that we are now facing in front of us Chinese and Pakistani fusion and it is a very dangerous time. As you can see, it is a very dangerous time and we cannot afford a Prime Minister who does not have the courage to use the Army, the way it has to be used. We cannot afford a Prime Minister who does not have the guts to say from here that Donald Trump is a liar, he did not stop India from fighting, he is lying about the planes.

HON. SPEAKER: Okay.

SHRI RAHUL GANDHI: We need a Prime Minister who frees, who completely frees the Army, frees the Air Force, frees the Navy and says, "Go, खत्म करो काम को", like Indira Gandhi did. Thank you, Speaker Sir.

I would like to end by saying that this entire discussion is about the people who died in Pahalgam. It is a tragedy and it was very disturbing to me. Again, yesterday, where they were talking about everything, they were talking about Pakistan and they were talking about everything, but they did not mention the people who died in Pahalgam.

Let me finish. … (*Interruptions*) Sir, do not allow India to be reduced to a battlefield where large powers are fighting. We have to navigate. We have to protect our interest. Second, hon. Prime Minister, the nation is above your image, above your politics, and above your PR. The forces are above your PR, your image, and your politics. Have the humility to understand that. Have the dignity to understand that and do not sacrifice the armed forces and national interest for your own petty political gains. Thank you, Sir.

(ends)

माननीय अध्यक्ष : यदि सदन की सहमति हो, तो सभा की कार्यवाही इस विषय की समाप्ति तक बढ़ा दी जाती है।

अनेक माननीय सदस्य : ठीक है।

(1800/VB/SNT)

1800 बजे

डॉ. संबित पात्रा (पुरी) : माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे अपने वक्तव्य को इस महत्वपूर्ण विषय पर रखने की आज्ञा प्रदान की है, इसके लिए मैं आपका बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूँ।

आज मैं एक बहुत ही महत्वपूर्ण श्लोक से अपने वक्तव्य को आरम्भ करूँगा।

“कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि।।”

आज मैं, माँ भवानी के सिन्दूर को और महादेव के त्रिशूल को नमन करता हूँ। माँ भवानी का सिन्दूर और महादेव का त्रिशूल जब तक भारतवर्ष को बचाएगा, तब तक इस देवभूमि भारतवर्ष को कोई स्पर्श नहीं कर पाएगा।

मैं अभी माननीय राहुल गांधी जी को सुन रहा था। He said: “This country cannot afford a Prime Minister like Narendra Modi, who did not untie the tiger.”
मैं उन्हें स्पष्ट रूप से कहना चाहूँगा कि Mr. Rahul Gandhi, this country cannot afford a leader who partied after 26/11. 26/11 की रात्रि में, जिसने पार्टी की थी, जो अखबारों में छपा था, उसे लीडर के रूप में यह देश कभी स्वीकार नहीं कर सकता है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं यहाँ पर अनुभव में सबसे कनिष्ठ हूँ, छोटा हूँ। मगर आज मुझे इस बात से तकलीफ होती है कि आज यह सदन क्यों बैठा है? दो दिन से इस सदन में क्या चर्चा हो रही है? सदन में एक ही विषय पर चर्चा हो रही है कि ऑपरेशन सिन्दूर सफल रहा या असफल रहा। आप मुझे बताइए कि यह किस देश के सदन में होता है, पूरे विश्व में किस देश के सदन में ऐसा होता है कि सदन के सारे सदस्य बैठकर चर्चा करें कि देश जीता या हारा, देश ने सरेंडर किया या देश सफल रहा? मुझे दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि जब 140 करोड़ लोग टीवी पर देख रहे होंगे, तो “सरेंडर”, “कायर”, “धिक्कार है”, “भारत पीछे रह गया”, “भारत हार गया” जैसे शब्दों का प्रयोग आज यहाँ एक नेता ने किया है। ये कैसे शब्द हैं? मैं सीने को चौड़ा करते हुए और अपनी छाती पर हाथ पीटते हुए कहता हूँ कि भारत जीता है और ऑपरेशन सिन्दूर राजनैतिक इच्छा शक्ति और अपनी आर्मी के अदम्य साहस के कारण भारत जीता है और ऑपरेशन सिन्दूर कंटिन्यू भी कर रहा है। याद रहे, सर्जिकल स्ट्राइक हुई, एयर स्ट्राइक हुआ, ‘ऑपरेशन सिन्दूर’ हुआ और आगे “तांडव” भी होगा। इसे छोड़ा नहीं जाएगा। आज राहुल जी के एक-एक प्रश्न का उत्तर दिया जाएगा। मैं यहाँ भाजपा के सदस्य के नाते नहीं, बल्कि एक आम हिन्दुस्तानी के नाते कहना चाहता हूँ, अभी राहुल जी ने यहाँ कहा कि हम सब आपके साथ खड़े थे। Everyone was against Pakistan. हम सबने पाकिस्तान की तरफ अंगुली दिखाई। किसने दिखाई? मैं कल के एक हेडलाइन को पढ़ना चाहूँगा। कल “द ट्रिब्यून” में एक हेडलाइन छपी है कि “Pakistan’s narrative was right. Chidambaram, the man of Congress, pokes hole into India’s narrative. जो पाकिस्तान का मुख्य अखबार है, उसका हेडलाइन है कि कांग्रेस पार्टी सही कह रही है, आतंकवादी हमले में पाकिस्तान का कोई हाथ नहीं है और भारत की सरकार झूठ बोल रही है।” ऐसा हमेशा क्यों होता है? दोनों टीवी चलते हैं।

भारत की टीवी पर नरेन्द्र मोदी हीरो हैं और पाकिस्तान की टेलीविज़न पर राहुल गांधी हीरो हैं। ऐसा क्यों होता है?

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं एक डोज़ियर लेकर आया हूँ। आप जानते हैं कि जिस समय यूपीए की सरकार थी, तो उस समय डोज़ियर-डोज़ियर खेला जाता था। यह बात अलग है कि अब हम डोज़ देते हैं। लेकिन मैं जो डोज़ियर लेकर आया हूँ, यह डोज़ियर पाकिस्तान ने यूनाइटेड नेशन में यूएनएचआरसी को सबमिट किया था। वहाँ के ह्युमैन राइट्स काउंसिल को सबमिट किया था। उसमें उसने किसको कोट किया है? डोज़ियर में बतौर एविडेंस विटनेस कोट किया गया है, वह किसी पाकिस्तानी को नहीं, बल्कि उसमें कोट किया गया है हमारे एलओपी राहुल गांधी को। मैं उस कोट को पढ़ रहा हूँ।

> "It has been 20 days since the people of Jammu & Kashmir had their freedom and civil liberties curtailed. Leaders of the Opposition and the Press got a taste of the draconian administration and brute force unleashed on the people of Jammu & Kashmir when we tried to visit Srinagar "

(1805/SJN/VPN)

पाकिस्तान लिखता है कि संयुक्त राष्ट्र देखे। यह हम नहीं कह रहे हैं, उस समय के नेता और अभी के एलओपी, राहुल गांधी जी कह रहे हैं कि भारत में इस प्रकार की परिस्थिति हो गई है। आप बताइए। ये लोग हमें बताएंगे कि ये पाकिस्तान के खिलाफ है। कब सुबूत नहीं मांगा गया? जब सर्जिकल स्ट्राइक हुई थी, यही वो राहुल गांधी है, मैं दुख के साथ कहता हूं, जिन शब्दों का प्रयोग किया गया था, वह था – 'खून की दलाली'। क्या सर्जिकल स्ट्राइक खून की दलाली थी?

मेरे पास यह भी दस्तावेज है कि जब कांग्रेस पार्टी के एक बड़े नेता ने 'ऑपरेशन सिंदूर' के बाद इसे सिंदूर का सौदा कहा था। मैं उसे अनदेखा कर देता, मगर अगले दिन डीजीएमओ, पाकिस्तान ने उसे क्वोट किया था। डीजीएमओ, पाकिस्तान ने कांग्रेस पार्टी के तीन वीडियोज़ चलाए थे। एक वीडियो खरगे साहब का था, दूसरा वीडियो राहुल गांधी का था और तीसरे वीडियो में कांग्रेस पार्टी का नेता 'ऑपरेशन सिंदूर' को सिंदूर का सौदा कह रहा है। हमें बाहर से दुश्मन नहीं चाहिए, हमारे घर के अंदर ही दुश्मन बैठे हैं।

अध्यक्ष महोदय, अंत में, मैं यह कहना चाहता हूं कि माननीय रक्षा मंत्री जी, माननीय गृह मंत्री जी और माननीय विदेश मंत्री जी ने सारी बातें बहुत स्पष्ट रूप से कही हैं। आज पूरा देश बहुत ही तल्लीनता के साथ सारे आंकड़ों के बारे में जानता है। मगर इस हाउस के समक्ष जो बात नहीं आई है, मैं उसके बारे में कहना चाहता हूं। वह भी एक गृह मंत्री का वक्तव्य है। यह राहुल गांधी जी की कांग्रेस पार्टी के तत्कालीन गृह मंत्री का वक्तव्य है। वे कह रहे हैं कि मैं विजय भाई से सलाह लेता था। यह सुशील कुमार शिंदे जी ने कहा है। मैं ऑन रिकॉर्ड कह रहा हूं। अगर आप कहेंगे, तो मैं इसको सत्यापित भी कर दूंगा।

"जब मैं गृह मंत्री थी, तब मैं विजय भाई के पास कभी-कभी जाता था और उनसे सलाह मांगता था। उन्होंने मुझे एक बार ऐसा कहा कि मैं असली सलाह दे रहा हूं। सुशील, तू इधर-उधर मत भटक, तू कश्मीर में जा, वहां लाल चौक पर भाषण कर और लोगों से मिल तथा डल झील की ओर जाकर वहां पर सैर कर"। उन्होंने यह सलाह तो दे दी, मगर मैं कैसे बताऊं कि मेरी..., मैं उस शब्द का इस्तेमाल नहीं कर सकता हूं, क्योंकि वह शब्द ठीक नहीं है। इसलिए मैं वह शब्द बीप कर रहा हूं। मेरी..., ऐसी थी। आप सोचिए कि उनके गृह मंत्री के मन में डर का माहौल था। उनके गृह मंत्री कह रहे हैं कि मैं कश्मीर नहीं जा सकता हूं। दोनों भाई-बहन जम्मू-कश्मीर गए थे और बर्फ में खेलकर आ रहे थे। मैं इतना ही कहना चाहूंगा।

माननीय अध्यक्ष जी, मुझे सिर्फ 50 सेकेंड्स और दीजिए, क्योंकि मैं अटल बिहारी वाजपेयी जी को याद करना चाहता हूं।

"एक नहीं, दो नहीं, करो बीसों समझौते,
पर स्वतंत्र भारत का मस्तक नहीं झुकेगा,
अगणित बलिदानों से अर्जित यह स्वतंत्रता,
त्याग, तेज, तप, बल से रक्षित यह स्वतंत्रता,
प्राणों से भी प्रियतर यह स्वतंत्रता,
इसे मिटाने वालों की साजिश करने वालों से कह दो,
चिंगारी का खेल बुरा होता है,
औरों के घर आग लगाने का जो सपना,
वह अपने ही घर में सदा खड़ा होता है,
अपने ही हाथों तुम अपनी कब्र न खोदो,
अपने पैरों आप कुल्हाडी नहीं चलाओ,
ओ नादान पड़ोसी, अपनी आंखें खोलो,
आजादी अनमोल, न इसका मोल लगाओ,
पर तुम क्या जानो, आजादी क्या होती है,
तुम्हें मुफ्त में मिली, न कीमत गई चुकाई,
अंग्रेजों के बल पर दो टुकड़े पाए,
मां को खंडित करके, तुमको लाज न आई"।

मुझे लगता है कि हम आपस में बात करें, उससे ज्यादा आवश्यक है कि हम पाकिस्तान को कड़ा जवाब दें।

(इति)

1809 बजे

डॉ. संजय जायसवाल (पश्चिम चम्पारण) : अध्यक्ष महोदय, माननीय विपक्ष के नेता पूछ रहे थे कि क्यों हम लोगों ने डीजीएमओ को खबर की थी? यह अच्छा होता कि वे अपने पिताजी से पूछते या अपने पिताजी के बारे में जानते। सन् 1986 में राजीव गांधी जी ने जिया उल हक के साथ यह समझौता किया था कि अगर हम सेना को सीमाओं की तरफ मूव कराएंगे, तो पहले हम डीजीएमओ को खबर करेंगे और पाकिस्तान को खबर करेंगे। अगर वे यहां पर इतना बोल रहे थे, अगर उन्होंने अपने पिताजी के बारे में भी पढ़ लिया होता, तो ज्यादा अच्छा होता।

(1810/DPK/AK)

अध्यक्ष महोदय, हमारा देश एक शांतिप्रिय देश है। वर्ष 2014 में जब माननीय श्री नरेंद्र मोदी जी प्रधानमंत्री बने, तो सबसे पहले उन्होंने पाकिस्तान के प्रधानमंत्री को इनवाइट किया। उनकी इतनी बदमाशियों के बावजूद हम चाहते थे कि हम अच्छी तरह से काम करें। लेकिन उन्होंने क्या किया? उन्होंने 2 जनवरी, 2016 को पठानकोट एयरबेस पर हमला कर दिया। जब हमने उन्हें इसके सारे सबूत दिए, तो उन्होंने इस पर कोई कार्रवाई नहीं की। उसके बाद जब 19 सितम्बर, 2016 को उरी की घटना हुई, तब भारतीय सेना ने सर्जिकल स्ट्राइक करके उन्हें घर में घुसकर मारने का काम किया। जब 14 फरवरी, 2019 को पुलवामा की घटना हुई थी, तब हमने उनके घर में घुसकर, बालाकोट में हवाई हमला करके उनके आतंकवादी अड्डे को नेस्तनाबूद करने का काम किया था। जब हमारे पायलट को गिरफ्तार किया गया, तब हम पाकिस्तान को धमकी देकर दो दिनों के अन्दर अपने पायलट को सही सलामत भारत ले आए। यह माननीय नरेंद्र मोदी जी की जीत है।

पहलगाम में जो हमला हुआ, वह आखिरी अटैक था। माननीय प्रधानमंत्री जी ने सार्वजनिक मंच से यह स्पष्ट कर दिया था कि आतंकियों और उनके आकाओं को इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी। इसके 14 दिनों के बाद 23 मिनट में न केवल नौ आतंकी अड्डे ध्वस्त किए गए, बल्कि हमने नूर खान अड्डे पर भी अटैक किया। नूर खान एयरबेस पर अटैक करने का मतलब था कि यदि हम चाहते तो कैराना हिल्स पर भी अटैक कर सकते थे, यदि हम चाहते तो पाकिस्तान के प्रधानमंत्री के घर पर भी अटैक कर सकते थे। … (व्यवधान) विपक्ष को यह बात समझ में नहीं आती है, क्योंकि उनको यह समझ में ही नहीं आता है कि भारत की शक्ति क्या है। … (व्यवधान) जब वर्ष 2006 में ट्रेन ब्लास्ट हुआ था और उसमें 189 लोग मारे गए थे, तो भारत ने पाकिस्तान के साथ मिलकर आतंकवादी घटनाओं की निंदा की थी। जब मुंबई में 26/11 की घटना हुई थी, तब भी भारत ने इसकी कड़ी निंदा की थी। जब यूपीए सरकार के समय अहमदाबाद में बम ब्लास्ट हुआ था, तब हमने उसकी भी कड़ी निंदा की थी। दिल्ली सीरियल ब्लास्ट्स पर कड़ी निंदा की गई, वाराणसी बम विस्फोट पर भी कड़ी निंदा की गई और बेंगलुरु के इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस में आतंकवादियों ने हमला करके हमारे साइंटिस्ट को मारा गया, तब भी हमने कड़ी निंदा की थी।

अध्यक्ष महोदय, हम लोगों ने इतनी कड़ी निंदा की थी कि बेचारी कड़ी निंदा भी सुसाइड कर ले। एक बात और भी है। अभी राहुल गांधी जी बोल रहे थे कि इंदिरा गांधी जी जैसा बनो। जब भारत

की सेना ने अपने अदम्य साहस और शौर्य से पाकिस्तान के 93,000 सैनिकों को पकड़ा था, तब पाकिस्तान ने भी 618 भारतीय सैनिकों को पकड़ा था। उस समय माननीय इंदिरा गांधी जी ने 93,000 पाकिस्तानी सैनिकों को तो छोड़ दिया था, परन्तु उन 618 भारतीय सैनिकों में से 54 सैनिक हम आज भी वापस नहीं ला सके हैं। इसकी जिम्मेदार इंदिरा गांधी जी हैं या नहीं, यह बाताया जाना चाहिए। 7 दिसम्बर, 1974 को मेजर अशोक सूरी के पिता को हाथ से लिखी हुई चिट्ठी मिलती है। सेना कंफर्म करती है कि हां, यह मेजर सूरी की चिट्ठी है, जो पाकिस्तानी जेल से आई थी। उसके बाद भी हम अपने उन सभी 54 सैनिकों को भारत नहीं ला सके हैं। यह हम सबके लिए बहुत शर्मिंदगी की बात है। इसके लिए राहुल गांधी जी और पूरी कांग्रेस को शर्मिंदा होना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय, हम लोगों ने वर्ष 1965 में पीओके में हाजी पीर दर्रे को कैप्चर कर लिया था, अगर उसे हम लोगों ने नहीं छोड़ा होता, तो कभी पीओके से कोई नहीं आ सकता। इंदिरा गांधी जी ने वर्ष 1971 में 13,000 वर्ग किलोमीटर जमीन पाकिस्तान को वापस कर दी थी। हम लोगों ने अक्साई चीन में जमीन को कैप्चर किया था, लेकिन माननीय नेहरू जी कुछ नहीं बोले। वर्ष 1948 में ऑल इंडिया रेडियो में जाकर उन्होंने रोक दिया कि भाई, इसके आगे मत बढ़ो।

अध्यक्ष महोदय, आज हम लोगों पर टिप्पणियां हो रही थीं, मैं कांग्रेस से उस पर एक ही बात कहना चाहूंगा –

‘वे एक समंदर खंगालने में लगे हुए हैं,
हमारी कमियां निकालने में लगे हुए हैं,
जिनकी खुद की लंगोटियां तक हैं फटी हुई,
वे हमारी पगड़ी उछालने में लगे हुए हैं।’

आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।… (व्यवधान)

(इति)

माननीय अध्यक्ष : माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी।

… (व्यवधान)

(1815/PC/SRG)

1815 बजे

प्रधानमंत्री (श्री नरेन्द्र मोदी) : आदरणीय अध्यक्ष जी, इस सत्र के प्रारंभ में ही मैं जब मीडिया के साथियों से बात कर रहा था, तब मैंने सभी माननीय सांसदों से अपील करते हुए एक बात का उल्लेख किया था। मैंने कहा था कि यह सत्र भारत के विजयोत्सव का सत्र है। … (व्यवधान) संसद का यह सत्र भारत के गौरवगान का सत्र है। … (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, जब मैं विजयोत्सव की बात कर रहा हूं, तब मैं कहना चाहूंगा कि यह विजयोत्सव आतंकी हैडक्वॉर्टर्स को मिट्टी में मिलाने का है। … (व्यवधान) जब मैं विजयोत्सव कहता हूं, तो यह विजयोत्सव सिंदूर की सौगंध पूरा करने का है। … (व्यवधान) जब मैं यह विजयोत्सव कहता हूं, तो यह भारत की सेना के शौर्य और सामर्थ्य की विजय गाथा कह रहा है। … (व्यवधान) जब मैं विजयोत्सव कह रहा हूं, तो 140 करोड़ भारतीयों की एकता, इच्छाशक्ति उसकी एक अप्रतिम जीत के विजयोत्सव की बात करता हूं। … (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं इसी विजय भाव से इस सदन में भारत का पक्ष रखने के लिए खड़ा हुआ हूं। … (व्यवधान) जिन्हें भारत का पक्ष नहीं दिखता है, उन्हें मैं आईना दिखाने के लिए खड़ा हुआ हूं। … (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं 140 करोड़ देशवासियों की भावना में अपना स्वर मिलाने के लिए उपस्थित हुआ हूं। … (व्यवधान) 140 करोड़ देशवासियों की भावना की जो यह गूंज है, जो सदन में सुनाई दी है, मैं उसमें अपना स्वर मिलाने के लिए खड़ा हुआ हूं। … (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, 'ऑपरेशन सिंदूर' के दरम्यान जिस प्रकार से देश के लोगों ने मेरा साथ दिया, मुझे आशीर्वाद दिया, देश की जनता का यह मुझ पर कर्ज है। … (व्यवधान) मैं देशवासियों का आभार व्यक्त करता हूं। … (व्यवधान) मैं देशवासियों का अभिनंदन करता हूं। … (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, 22 अप्रैल को पहलगाम में जिस प्रकार की क्रूर घटना घटी, जिस प्रकार आतंकवादियों ने निर्दोष लोगों को उनका धर्म पूछ-पूछकर गोलियां मारीं, यह क्रूरता की पराकाष्ठा थी। भारत को हिंसा की आग में झोंकने का यह सुविचारित प्रयास था। भारत में दंगे फैलाने की यह साजिश थी।

(1820/SPS/SM)

मैं आज देशवासियों को धन्यवाद देता हूं कि देश ने एकता के साथ उस साज़िश को नाकाम कर दिया। 22 अप्रैल के बाद मैंने सार्वजनिक रूप से और विश्व को भी समझ में आए, इसलिए अंग्रेज़ी में भी कुछ वाक्यों का प्रयोग किया था। मैंने कहा था कि हमारा संकल्प है कि हम आतंकियों को मिट्टी में मिला देंगे। मैंने यह सार्वजनिक रूप से कहा था कि सज़ा उनके आकाओं को भी होगी और उनकी कल्पना से भी बड़ी सज़ा मिलेगी। मैं 22 अप्रैल को विदेश में था। मैं तुरंत लौटकर आया और आते ही मैंने एक बैठक बुलाई। उस बैठक में हमने साफ-साफ निर्देश दिए कि आतंकवाद को करारा जवाब देना होगा। यह हमारा राष्ट्रीय संकल्प है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, हमें हमारे सैन्य बलों की क्षमता पर पूरा विश्वास है तथा पूरा भरोसा उनकी क्षमता, उनकी सामर्थ्य और उनके साहस पर है। सेना को कार्रवाई की खुली छूट दे दी गई। यह भी कहा गया कि सेना तय करे कि कब, कहां, कैसे और किस प्रकार से कार्रवाई करनी है। ये सारी बातें उस मीटिंग में साफ-साफ कह दी गईं और शायद उनमें से कुछ बातें मीडिया में भी रिपोर्ट हुई हैं। हमें गर्व है कि आतंकियों को वह सज़ा दी और सजा ऐसी है कि आज भी आतंक के उन आकाओं की नींद उड़ी हुई है। मैं हमारी सेना की सफलता और उससे जुड़े भारत के उस पक्ष को सदन के माध्यम से देशवासियों के सामने रखना चाहता हूँ। पहला पक्ष, पहलगाम हमले के बाद से ही पाकिस्तानी सेना को अंदाज़ा लग चुका था कि भारत कोई बड़ी कार्रवाई करेगा। उनकी तरफ से न्यूक्लियर की धमकियों के बयान भी आने शुरू चुके थे। भारत ने 6 मई की रात और 7 मई की सुबह, जैसा तय किया था, वैसी कार्रवाई की और पाकिस्तान कुछ नहीं कर पाया। 22 मिनट में 22 अप्रैल का बदला निर्धारित लक्ष्य के साथ हमारी सेना ने ले लिया।

(1825/RHL/GM)

दूसरा पक्ष, आदरणीय अध्यक्ष जी, पाकिस्तान के साथ लड़ाई तो कई बार हुई, लेकिन यह भारत की पहली ऐसी रणनीति बनी, जहां पहले कभी नहीं गए थे वहां हम पहुंचे और पाकिस्तान के कोने-कोने में आतंकी अड्डों को धुआँ-धुआँ कर दिया गया। आतंक के गढ़, कोई सोच नहीं सकता कि वहां तक कोई जा सकता है, बहावलपुर और मुरीदके को भी जमींदोज कर दिया गया।

आदरणीय अध्यक्ष जी, हमारी सेनाओं ने आतंकी अड्डों को तबाह कर दिया। तीसरा पक्ष, हमने पाकिस्तान की न्यूक्लियर धमकी को झूठा साबित कर दिया। भारत ने सिद्ध कर दिया कि न्यूक्लियर ब्लैकमेलिंग अब नहीं चलेगी और न ही न्यूक्लियर ब्लैकमेलिंग के सामने भारत झुकेगा। चौथा पक्ष, भारत ने अपनी तकनीकी क्षमता दिखाई। पाकिस्तान के सीने पर सटीक प्रहार किया। पाकिस्तान के एयरबेस एसेट्स को भारी नुकसान हुआ और उनके कई एयरबेस आज तक आईसीयू में पड़े हैं। आज टेक्नोलॉजी आधारित युद्ध का युग है। 'ऑपरेशन सिंदूर' इस महारत में भी सफल सिद्ध हुआ है। पिछले दस सालों में हमने जो तैयारियां की हैं, अगर वह न की होती, तो इस तकनीक के युग में हमारा कितना नुकसान हो सकता था, हम इसका अंदाजा लगा सकते हैं। पांचवा पक्ष, 'ऑपरेशन सिंदूर' के दरमियान पहली बार ऐसा हुआ, जब आत्मनिर्भर भारत की ताकत को दुनिया ने पहचाना। मेड इन इंडिया ड्रोन्स, मेड इन इंडिया मिसाइलों ने पाकिस्तान के हथियारों की पोल खोल कर रख दी थी।

आदणीय अध्यक्ष जी, जो एक और महत्वपूर्ण काम हुआ है, वैसे जब राजीव गांधी जी थे, उस समय डिफेंस का काम देखने वाले उनके जो एमओएस थे, जब मैंने सीडीएस की घोषणा की, तो वह बहुत प्रसन्न होकर मुझसे मिलने आये थे। वे बहुत प्रसन्न थे। यह ऑपरेशन नेवी, आर्मी और एयरफोर्स, तीनों सेनाओं का ज्वाइंट एक्शन था। इसके बीच की सिनर्जी ने पाकिस्तान के छक्के छुड़ा दिए।

(1830/KN/RCP)

आदरणीय अध्यक्ष जी, आतंक की घटनाएं पहले भी देश में होती थीं, लेकिन पहले आतंकवादियों के मास्टर माइंड निश्चिंत होते थे और वे आगे की तैयारी में लगे रहते थे। उनको पता था कि कुछ नहीं होगा, लेकिन अब स्थिति बदल गई है। अब हमले के बाद मास्टर माइंड को नींद नहीं आती है। उनको पता है कि भारत आएगा और मार कर जाएगा। यह न्यू नॉर्मल भारत ने सेट कर दिया है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, दुनिया ने देख लिया है कि हमारी कार्रवाई का दायरा कितना बड़ा है, स्केल कितना बड़ा है? … (व्यवधान) सिंदूर से लेकर सिंधु तक पाकिस्तान पर कार्रवाई की है। 'ऑपरेशन सिंदूर' ने तय कर दिया है कि भारत में आतंकी हमले, उसके आकाओं को और पाकिस्तान को भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। अब ऐसे ही नहीं जा सकते हैं।

आदरणीय अध्यक्ष जी, 'ऑपरेशन सिंदूर' से स्पष्ट होता है कि भारत ने तीन सूत्र तय किए हैं। अगर भारत पर आतंकी हमला हुआ तो हम अपने तरीके से, अपनी शर्तों पर, अपने समय पर जवाब देकर रहेंगे। दूसरा, कोई भी न्यूक्लियर ब्लैकमेल अब नहीं चलेगा। तीसरा, हम आतंक की सरपरस्त सरकार और आतंक के आकाओं को अलग-अलग नहीं देखेंगे।

आदरणीय अध्यक्ष जी, यहां पर विदेश नीति को लेकर भी काफी बातें कही गई हैं। दुनिया के समर्थन को लेकर भी काफी बातें कही गई हैं। मैं आज सदन में कुछ बातें पूरी स्पष्टता से कह रहा हूं। दुनिया में किसी भी देश के द्वारा भारत को अपनी सुरक्षा में कार्रवाई करने से रोका नहीं जा रहा है। … (व्यवधान) संयुक्त राष्ट्र की 193 कंट्रीज़ में से सिर्फ तीन देशों ने 'ऑपरेशन सिंदूर' के दौरान पाकिस्तान के समर्थन में बयान दिया था। ओनली थ्री कंट्रीज़ … (व्यवधान) चाहे क्वाड हो, ब्रिक्स हो, फ्रांस, रूस, जर्मनी कोई भी देश का नाम ले लीजिए, तमाम देशों से, दुनिया भर से भारत को समर्थन मिला है।… (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, दुनिया का समर्थन तो मिला, दुनिया के देशों का समर्थन मिला, लेकिन यह दुर्भाग्य है कि मेरे देश के वीरों के पराक्रम को कांग्रेस का समर्थन नहीं मिला।… (व्यवधान)

(1835/ANK/PS)

22 अप्रैल के आतंकी हमले के बाद 3-4 दिनों में ही ये उछल रहे थे। इन्होंने कहना शुरू कर दिया कि 56 इंच की छाती कहां गई। मोदी कहां खो गया? मोदी तो फेल हो गया। ये बहुत मजा ले रहे थे। उनको लगता था कि हमने बाजी मार ली। वे पहलगाम के निर्दोष लोगों की हत्या में भी अपनी राजनीति तराशते थे। वे अपनी स्वार्थी राजनीति के लिए मुझ पर निशाना साध रहे थे, लेकिन उनकी यह बयानबाजी, उनका छिछोरापन देश के सुरक्षा बलों का मनोबल गिरा रहा था। …(व्यवधान)

विपक्ष के नेता (श्री राहुल गांधी): सर, हमने पूरा सपोर्ट किया। हमने 100 प्रतिशत सपोर्ट किया।…(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : माननीय प्रतिपक्ष के नेता, आपकी बात सभी ने ध्यान से सुनी। आप बैठे-बैठे टिप्पणी कर रहे हैं। यह आपके लिए उचित नहीं है।

…(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी : कांग्रेस के नेताओं को न भारत के सामर्थ्य पर भरोसा है और न ही भारत की सेनाओं पर, इसलिए वे लगातार 'ऑपरेशन सिंदूर' पर सवाल उठा रहे हैं। ऐसा करके आप लोग मीडिया में हेडलाइंस तो ले सकते हैं, लेकिन देशवासियों के दिलों में जगह नहीं बना सकते।

आदरणीय अध्यक्ष जी, 10 मई को भारत ने ऑपरेशन सिंदूर के तहत हो रहे एक्शन को रोकने की घोषणा की। इसको लेकर यहां भांति-भांति की बातें कही गईं। ये वही प्रोपेगेंडा है, जो सीमा पार से फैलाया गया है। कुछ लोग सेना द्वारा दिए गए तथ्यों की जगह पाकिस्तान के झूठ प्रचार को आगे बढ़ाने में जुटे हुए हैं, जबकि भारत का रुख हमेशा स्पष्ट रहा है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं कुछ चीजें स्मरण कराना चाहता हूं। जब सर्जिकल स्ट्राइक हुई, उस समय हमने हमारे जवानों को तैयार करके यह लक्ष्य तय किया था कि हम उनके इलाके में जा करके आतंकियों के जो लॉचिंग पैड हैं, उनको नष्ट करेंगे। एक रात के उस ऑपरेशन में हमारे लोग सूर्योदय होते-होते काम पूरा करके वापस आ गए।

(1840/RAJ/SMN)

लक्ष्य निर्धारित था कि यह करना है। जब बालाकोट एयर स्ट्राइक किया, तो हमारा लक्ष्य तय था कि आतंकियों के जो ट्रेनिंग सेंटर्स हैं, इस बार हम उनको तबाह करेंगे और हमने वह भी करके दिखाया।

'ऑपरेशन सिंदूर' के समय हमारा लक्ष्य तय था और हमारा लक्ष्य था कि आतंक का जो एपिसेंटर है एवं पहलगाम के आतंकियों के लिए जहां से पुरजोश योजना बनी, ट्रेनिंग मिली, व्यवस्था मिली, उस पर हमला करेंगे। हमने उनकी नाभि पर हमला कर दिया। जहां पहलगाम के आतंकियों की रिक्रूटमेंट हुई, ट्रेनिंग होती थी, फंडिंग होता था, उन्हें टेक्निकल सपोर्ट मिलता था, शस्त्र-सरंजाम होता था, उस जगह को आइडेंटिफाई किया और हमने सटीक तरीके से 'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत आतंकियों की नाभि पर प्रहार किया।

आदरणीय अध्यक्ष जी, इस बार भी हमारी सेना ने शत-प्रतिशत लक्ष्यों को हासिल करके देश के सामर्थ्य का परिचय दिया। कुछ लोग जान-बूझकर भूलने में इंट्रेस्टेड होते हैं। देश भूलता नहीं है, देश को याद है। 6 मई की रात और 7 मई की सुबह ऑपरेशन हुआ था और 7 मई को सुबह भारत ने, हमारी सेना ने प्रेस कॉंफ्रेंस की और इस प्रेस कॉंफ्रेंस में भारत ने स्पष्ट कर दिया था एवं पहले दिन से क्लियर था कि हमारा लक्ष्य है – आतंकी, आतंकियों के आका, आतंकियों के लिए जहां से व्यवस्थाएं होती थीं – वो और उनके अड्डों को हम ध्वस्त करना चाहते हैं। हमने प्रेस कॉंफ्रेंस में कह दिया था। हमने हमारा काम कर दिया है। हमने जो तय किया था, वह पूरा कर दिया है। इसलिए 6-7 मई को हमारा ऑपरेशन संतोषजनक होने के तुरंत बाद, कल जो राजनाथ जी ने कहा था, मैं डंके की चोट पर दोबारा दोहराता हूं। भारत की सेना ने पाकिस्तान की सेना को चंद मिनटों में बता दिया कि हमारा यह लक्ष्य था, हमने यह लक्ष्य पूरा कर दिया है, ताकि उनको पता चले और हमें भी पता चले कि उनके दिल-दिमाग में क्या चलता है? हमने अपना लक्ष्य शत-प्रतिशत हासिल कर लिया। अगर पाकिस्तान में समझदारी होती तो आतंकियों के साथ खुलेआम खड़े रहने की गलती न करता। उसने निर्लज्ज होकर आतंकवादियों के साथ खड़े रहने का फैसला किया। हम पूरी तरह तैयार थे।

हम भी मौके की तलाश में थे, लेकिन हमने दुनिया को बताया था कि हमारा लक्ष्य आतंकवाद है, आतंकवादी आका हैं और आतंकवादी ठिकाने हैं। हमने वह पूरा कर दिया लेकिन जब पाकिस्तान ने आतंकियों की मदद में आने का फैसला किया और मैदान में उतरने की हरकत की, तो भारत की सेना ने सालों तक याद रह जाए, ऐसा करारा जवाब दिया।

(1845/NK/RP)

9 मई की मध्य रात्रि और 10 मई की सुबह हमारी मिसाइलों ने पाकिस्तान के हर कोने में प्रचंड प्रहार किया, जिसकी कल्पना पाकिस्तान ने कभी नहीं की थी और पाकिस्तान को घुटनों पर आने के लिए मजबूर कर दिया। आपने टीवी में भी देखा है, वहां से क्या बयान आते हैं। पाकिस्तान के लोग कह रहे थे कि मैं स्विमिंग पूल में नहा रहा था, कोई कह रहा था कि मैं दफ्तर जाने की तैयारी कर रहा था, हम कुछ सोचे, इससे पहले ही भारत ने हमला कर दिया। ये पाकिस्तान के लोगों के बयान हैं। देश ने देखा है, लोग स्विमिंग पूल में नहा रहे थे। जब इतना कड़ा प्रहार हुआ, जिसके बारे में पाकिस्तान ने कभी सोचा तक नहीं था, तब जाकर पाकिस्तान के डीजीएमओ ने फोन करके गुहार लगायी कि बस करो, बहुत मारा, अब ज्यादा मार झेलने की ताकत नहीं है। प्लीज हमला रोक दो। पाकिस्तान के डीजीएमओ का फोन था। भारत ने पहले दिन ही कह दिया था, 7 तारीख की सुबह की प्रेस रिलीज देख लीजिए कि हमने हमारा लक्ष्य पूरा कर लिया है। अगर आप कुछ करोगे तो महंगा पड़ेगा।

श्री राहुल गांधी (रायबरेली) : सर, आप कह दीजिए कि ट्रम्प साहब ने झूठ बोला।

श्री नरेन्द्र मोदी: अध्यक्ष महोदय, आज मैं दोबारा कह रहा हूं कि भारत की स्पष्ट नीति थी, सुविचारित नीति थी, सेना के साथ मिलकर तय की हुई नीति थी। आतंकवादी और उनके आका के ठिकाने हमारा लक्ष्य है। हमने पहले दिन प्रेस कान्फ्रेंस में कहा है कि हमारा एक्शन नॉन-एक्सलेटरी है, यह हमने कहकर किया है, इसलिए हमने हमला रोका।

अध्यक्ष जी, दुनिया के किसी भी नेता ने भारत को ऑपरेशन रोकने के लिए नहीं कहा। उसी दौरान 9 तारीख को रात में अमेरिका के उप-राष्ट्रपति जी ने मुझसे बात करने का प्रयास किया। वे घंटे भर से कोशिश कर रहे थे, लेकिन मेरी सेना के साथ मीटिंग चल रही थी। मैं उनका फोन नहीं उठा पाया। बाद में मैंने कॉल बैक किया, मैंने कहा कि आपका फोन था, तीन-चार बार आपका फोन आ गया। अमेरिका के उप-राष्ट्रपति जी ने मुझे फोन पर बताया कि पाकिस्तान बहुत बड़ा हमला करने वाला है। उन्होंने मुझे बताया तो मेरा जो जवाब था, जिनको समझ नहीं आता है उनको तो समझ नहीं आएगा, मेरा जवाब था, अगर पाकिस्तान का यही इरादा है तो उसे बहुत महंगा पड़ेगा।

(1850/IND/UB)

अध्यक्ष जी, यह मैंने अमरीका के उपराष्ट्रपति जी को कहा था। अगर पाकिस्तान हमला करेगा, तो हम बड़ा हमला करके जवाब देंगे। यह मेरा जवाब था और मेरा एक वाक्य आगे यह था कि 'हम गोली का जवाब गोले से देंगे।' यह 9 तारीख की रात की बात है। 9 तारीख की रात और 10 तारीख सुबह हमने पाकिस्तान की सैन्य शक्ति को तहस-नहस कर दिया था। यही हमारा जवाब था और यही हमारा जज्बा था। आज पाकिस्तान भी भली-भांति जान गया है कि भारत का हर जवाब

पहले से ज्यादा तगड़ा होता है। पाकिस्तान को यह भी पता है कि यदि भविष्य में नौबत आई, तो भारत आगे कुछ भी कर सकता है और इसलिए मैं फिर से लोकतंत्र के इस मंदिर में दोहराना चाहता हूं कि 'ऑपरेशन सिंदूर' जारी है। पाकिस्तान ने दुस्साहस की यदि कल्पना की, तो उसे करारा जवाब दिया जाएगा।

आदरणीय अध्यक्ष जी, आज का भारत आत्मविश्वास से भरा हुआ है। आज का भारत आत्मनिर्भरता के मंत्र को लेकर पूरी शक्ति के साथ तेज गति से आगे बढ़ रहा है। देश देख रहा है कि भारत आत्मनिर्भर बनता जा रहा है लेकिन देश यह भी देख रहा है कि एक तरफ तो भारत आत्मनिर्भरता की ओर तेज गति से आगे बढ़ रहा है लेकिन कांग्रेस मुद्दों के लिए पाकिस्तान पर निर्भर होती जा रही है। 16 घंटों से जो चर्चा चल रही है, मैं आज पूरे दिन देख रहा था।... (व्यवधान) दुर्भाग्य से कांग्रेस को पाकिस्तान के मुद्दे इम्पोर्ट करने पड़ रहे हैं। आज के वारफेयर में इंफोर्मेशन और नेरेटिव्स की बहुत बड़ी भूमिका है। नेरेटिव गढ़ कर, एआई का भी भरपूर प्रयोग करके सेनाओं के मनोबल को कमजोर करने के खेल भी खेले जाते हैं। जनता के अंदर अविश्वास पैदा करने के भी भरपूर प्रयास होते हैं। दुर्भाग्य से कांग्रेस और उसके सहयोगी पाकिस्तान के ऐसे ही प्रपंच के प्रवक्ता बन चुके हैं।

(1855/KDS/NKL)

आदरणीय अध्यक्ष जी, देश की सेना ने सफलतापूर्वक सर्जिकल स्ट्राइक की, तो कांग्रेस वालों ने तुरंत सेना से सबूत मांगे थे। ... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, क्या यह कोई तरीका है? कृपया बैठिए।

... (व्यवधान)

श्री नरेंद्र मोदी : जब कांग्रेस वालों ने देश का मूड देखा, देश का मिजाज देखा, तो उनके सुर बदलने लगे और अपने सुर बदलकर वे कहने लगे कि सर्जिकल स्ट्राइक क्या बड़ी बात है? यह तो हमने भी की थी। एक ने कहा कि 3 सर्जिकल स्ट्राइक्स की थीं, दूसरे ने कहा कि 6 सर्जिकल स्ट्राइक्स की थीं और तीसरे ने कहा कि 15 सर्जिकल स्ट्राइक्स की थीं। ... (व्यवधान) जो जितना बड़ा नेता था, उतना बड़ा हांक रहा था। ... (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, इसके बाद बालाकोट में सेना ने एयर स्ट्राइक की। एयर स्ट्राइक तो ऐसी थी कि वे इस बारे में कुछ कह ही नहीं कह सकते थे, इसलिए कांग्रेस वालों ने यह नहीं कहा कि हमने भी एयर स्ट्राइक की थी। उस वक्त इन्होंने समझदारी दिखाई, लेकिन फोटो मांगने लगे और कहने लगे कि एयर स्ट्राइक हुई, तो फोटो दिखाओ। कहां पर क्या गिरा, कितना तोड़ा, क्या तोड़ा, कितने मरे? वे बस यही पूछते रहे। पाकिस्तान भी यही पूछता था और ये भी यही पूछते थे। ... (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, इतना ही नहीं, जब पायलट अभिनन्दन पकड़े गए, तो पाकिस्तान में खुशी का माहौल होना स्वाभाविक था कि उनके हाथ में भारतीय सेना का एक पायलट फंस चुका था, लेकिन यहां पर भी कुछ लोग थे, जो कानों-कानों में कह रहे थे कि अब मोदी फंसा। ... (व्यवधान) अब अभिनन्दन को मोदी लाकर दिखा दे। अब देखते हैं कि मोदी क्या करता है?

आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं बताना चाहता हूं कि डंके की चोट पर अभिनन्दन वापस लाए गए। ... (व्यवधान) हम अभिनन्दन को ले आए तो इनकी बोलती बंद हो गई। इनको लगा यार! ये तो नसीब वाला आदमी है। हमारा हथियार हाथ से निकल गया।

आदरणीय अध्यक्ष जी, पहलगाम हमले के बाद बीएसएफ का एक जवान पाकिस्तान के कब्जे में आ गया, तो इनको फिर लगा कि वाह! बड़ा मुद्दा हाथ में आ गया है। अब मोदी फंस जाएगा। … (व्यवधान) अब तो मोदी की फजीहत जरूर होगी और इनके इको सिस्टम ने सोशल मीडिया में बहुत सारी कथाएं वायरल कीं कि बीएसएफ के जवान का क्या होगा, उसके परिवार का क्या होगा? वह वापस कब आएगा, कैसे आएगा? इन्होंने सोशल मीडिया पर न जाने क्या-क्या चला दिया? बीएसएफ का वह जवान भी आन-बान-शान के साथ वापस आ गया।

(1900/CS/VR)

आतंकवादी रो रहे हैं, आतंकवादियों के आका रो रहे हैं और उनको रोते देखकर यहाँ भी कुछ लोग रो रहे हैं। अब देखिए सर्जिकल स्ट्राइक चल रही थी, उसके बाद उन्होंने एक खेल खेलने की कोशिश की, लेकिन बात जमी नहीं। एयर स्ट्राइक हुई तो दूसरा खेल खेलने की कोशिश की, वह भी जमा नहीं। जब यह ऑपरेशन सिंदूर हुआ तो उन्होंने नया पैंतरा शुरू किया और क्या शुरू किया कि रोक क्यों दिया? पहले तो मानने को ही तैयार नहीं थे, कोई कुछ कर दे, अब कहते हैं कि रोक क्यों दिया? वाह रे बयान बहादुरों, आपको विरोध का कोई न कोई बहाना चाहिए और इसलिए सिर्फ मैं नहीं, पूरा देश आप पर हँस रहा है।… (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, सेना का विरोध, सेना के प्रति एक पता नहीं नेगेटिविटी, यह कांग्रेस का पुराना रवैया रहा है।… (व्यवधान) देश ने अभी-अभी कारगिल विजय दिवस मनाया है, लेकिन देश पूरी तरह जानता है कि उनके कार्यकाल में और आज तक कारगिल की विजय को कांग्रेस ने अपनाया नहीं है। न कारगिल विजय दिवस मनाया है, न कारगिल विजय का गौरव किया है।… (व्यवधान)

अध्यक्ष जी, इतिहास साक्षी है कि जब डोकलाम में हमारा सैन्य बल शौर्य दिखा रहा था तब कांग्रेस के नेता चुपके-चुपके किससे ब्रीफिंग लेते थे, वह सारी दुनिया अब जान गई है।… (व्यवधान) आप पाकिस्तान के सारे बयान निकाल दीजिए और यहाँ हमारा विरोध करने वाले लोगों के बयान, फुलस्टॉप, कोमा के साथ एक हैं।… (व्यवधान) इसको क्या कहेंगे और सच बोलते हैं तो बुरा लगता है।… (व्यवधान) पाकिस्तान के साथ सुर में सुर मिला दिया जाता है।… (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, देश हैरान है कि कांग्रेस ने पाकिस्तान को क्लीन चिट दे दी है।… (व्यवधान) इनकी यह हिम्मत और इनकी आदत जाती नहीं है। इनकी यह हिम्मत कि पहलगाम के आतंकी पाकिस्तानी थे, इसका सबूत दो। तुम लोग क्या कह रहे हो?… (व्यवधान) यह कौन सा तरीका है? यही माँग पाकिस्तान कर रहा है, जो कांग्रेस कर रही है।… (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, आज जब सबूतों की कोई कमी नहीं है, सब कुछ आँखों के सामने दिखता है तब यह हालत है। अगर ये सबूत न होते तो ये लोग क्या करते, आप बताइए।

आदरणीय अध्यक्ष जी, ऑपरेशन सिंदूर के एक पार्ट की तरफ तो चर्चा भी बहुत होती है, ध्यान भी जाता है, लेकिन देश के लिए कुछ गौरव के क्षण होते हैं, ताकत के परिचायक होते हैं। उनकी तरफ भी ध्यान जाना बहुत आवश्यक है। हमारे एयर डिफेंस सिस्टम की दुनिया में चर्चा है। हमारे एयर डिफेंस सिस्टम ने पाकिस्तान की मिसाइलों और ड्रोन्स को तिनके की तरह बिखेर दिया था।

(1905/RV/SNT)

आदरणीय अध्यक्ष जी, आज मैं एक आंकड़ा बताना चाहता हूं। पूरा देश गर्व से भर जाएगा। कुछ लोगों का क्या होगा, यह मैं नहीं जानता, पर पूरा देश गर्व से भर जाएगा। 9 मई को पाकिस्तान ने करीब एक हजार मिसाइल्स और आर्म्ड ड्रोन्स से भारत पर बहुत बड़ा हमला करने की कोशिश की। अगर ये मिसाइल्स भारत के किसी भी हिस्से पर गिरतीं, तो वहां भयंकर तबाही मचती, लेकिन एक हजार मिसाइल्स और ड्रोन्स को भारत ने आसमान में ही चूर-चूर कर दिया। हर देशवासी को इससे गर्व हो रहा था, लेकिन जैसे कांग्रेस के लोग इंतज़ार कर रहे थे कि 'कुछ तो गड़बड़ होगी यार, मोदी मरेगा, कहीं तो फँसेगा।'... (व्यवधान)

पाकिस्तान ने आदमपुर एयरबेस पर हमले का झूठ फैलाया। उस झूठ को बेचने की भरपूर कोशिश की, पूरी ताकत भी लगा दी। मैं अगले ही दिन आदमपुर पहुंचा और खुद जाकर उनके झूठ को बेनकाब कर दिया। तब जाकर उनकी अक्ल ठिकाने लगी कि अब यह झूठ चलने वाला नहीं है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, छोटे दलों से हमारे जो साथी हैं, जो राजनीति में नए हैं, उनको कभी शासन में रहने का अवसर नहीं मिला, उनसे कुछ ऐसी बातें निकलती हैं, तो यह मैं समझ सकता हूं, लेकिन कांग्रेस पार्टी ने इस देश में लम्बे समय तक राज किया। उसको शासन की व्यवस्थाओं के बारे में पूरा पता है, उन चीजों से वे निकले हुए लोग हैं। शासन व्यवस्था क्या होती है, उन्हें इसकी पूरी समझ है, उनके पास अनुभव है। उसके बाद भी विदेश मंत्रालय ने तुरन्त जवाब दिया, उसको स्वीकार नहीं किया, विदेश मंत्री ने जवाब दिया, इंटरव्यू दिया, बार-बार उन्होंने बोला, उसको स्वीकार नहीं किया। गृह मंत्री बोले, रक्षा मंत्री बोले, किसी पर भरोसा नहीं! जिसने इतने सालों तक राज किया, अगर उन्हें देश की व्यवस्थाओं पर भरोसा नहीं है, तब शक उठता है कि क्या हालत हो गयी है इनकी! अब कांग्रेस का भरोसा पाकिस्तान के रिमोट कंट्रोल से बनता है और बदलता है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, कांग्रेस के बिल्कुल एक नए सदस्य, उनको तो क्षमा करनी चाहिए, नए सदस्य को क्या कहेंगे, लेकिन कांग्रेस के आका, उन्हें जो लिख कर देते हैं, और उनसे बुलवाते हैं, खुद में हिम्मत नहीं हैं, उनसे बुलवाते हैं कि 'ऑपरेशन सिन्दूर' तो तमाशा था। आतंकवादियों ने जिन 26 लोगों को मौत के घाट उतारा था, उस भयंकर क्रूर घटना पर यह तेज़ाब छिड़कने वाला पाप है। आप तमाशा कहते हैं? आपकी असहमति हो सकती है। यह कांग्रेस के नेता बुलवाते हैं।

(1910/MY/AK)

आदरणीय अध्यक्ष जी, पहलगाम के हमलावरों को कल हमारे सुरक्षा बलों ने 'ऑपरेशन महादेव' करके अपने अंजाम तक पहुंचाया था। लेकिन मैं हैरान हूं कि यहां ठहाके लगा कर पूछा गया कि आखिरकार यह कल ही क्यों हुआ? आखिर इनको क्या हो गया है, यह मुझे समझ में नहीं आ रहा है। इस ऑपरेशन के लिए कोई सावन महीने का सोमवार ढूंढा गया था क्या? इन लोगों को क्या हो गया है? हताशा, निराशा, इस हद तक और मजा देखिए, पिछले कई सप्ताह से कहा जा रहा है कि 'ऑपरेशन सिन्दूर' हो गया तो ठीक है, लेकिन पहलगाम के आतंकवादियों का क्या हुआ? अब जब हुआ तो कल ही क्यों हुआ! अध्यक्ष जी, क्या हाल है इनका?

आदरणीय अध्यक्ष जी, हमारे शास्त्रों में कहा गया है –

'शस्त्रेण रक्षिते राष्ट्रे शास्त्र चर्चा प्रवर्तते'

अर्थात् जब राष्ट्र शस्त्र से सुरक्षित होते हैं, तभी वहां शास्त्र व ज्ञान की चर्चाएं जन्म ले पाती हैं। जब सीमा पर सेनाएं मजबूत होती हैं, तभी लोकतंत्र प्रखर होता है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, 'ऑपरेशन सिन्दूर' बीते दशक में भारत की सेना सशक्तिकरण का एक साक्षात प्रमाण है। यह ऐसे ही नहीं हुआ है। कांग्रेस के शासन के दौरान सेनाओं को आत्मनिर्भर बनाने के संबंध में सोचा तक नहीं जाता था। आज भी 'आत्मनिर्भर' शब्द का मजाक उड़ाया गया, जबकि वह महात्मा गांधी से आया हुआ है। लेकिन, आज भी इसकी मजाक उड़ायी जाती है। हर रक्षा सौदे में कांग्रेस अपने मौके खोजती रहती है। छोटे-छोटे हथियारों के लिए विदेशों पर निर्भरता, यह इनका कार्यकाल रहा है। बुलेट प्रूफ जैकेट्स, नाइट विजन कैमरा तक नहीं होते थे। अब लंबी लिस्ट है, जीप से शुरू होती है, बोफोर्स, हेलीकॉप्टर, हर चीज के साथ घोटाला जुड़ा हुआ है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, हमारी सेनाओं को आधुनिक हथियारों के लिए दशकों तक इंतजार करना पड़ा। आजादी के पहले, इतिहास गवाह है, एक जमाना था, जब डिफेंस मैन्युफैक्चरिंग में भारत की आवाज सुनाई देती थी। जिस समय तलवारों से लड़ा जाता था न, तब भी तलवारें भारत की श्रेष्ठ मानी जाती थीं। हम डिफेंस के एक्विपमेंट में आगे थे, लेकिन आजादी के बाद एक मजबूत डिफेंस एक्विपमेंट मैन्युफैक्चरिंग का हमारा दायरा था। हमारा जो पूरा इको-सिस्टम था, उसको सोच-समझ कर तबाह कर दिया गया।

(1915/GG/SRG)

हमारा जो पूरा इको-सिस्टम था, उसको सोच-समझ कर तबाह कर दिया गया, उसको दुर्बल किया गया। रिसर्च और मैन्युफैक्चरिंग के लिए रास्ते बंद कर दिए गए थे। अगर इसी नीति पर हम चलते तो भारत इस 21वीं सदी में ऑपरेशन सिंदूर के संबंध में सोच भी नहीं सकता था। यह हालत कर के रखी हुई थी। भारत को सोचना पड़ता कि अगर कोई एक्शन लेना है तो शस्त्र कहां से मिलेंगे, साधन कहां से मिलेंगे, बारूद कहां से मिलेगा, समय पर मिलेगा या नहीं मिलेगा, बीच-बचाव में रुक तो नहीं जाएगा। यह टेंशन पालनी पड़ती थी।

आदरणीय अध्यक्ष जी, मेक इन इंडिया हथियार सेना को मिले। उन्होंने इस ऑपरेशन में बहुत निर्णायक भूमिका निभाई।

आदरणीय अध्यक्ष जी, एक दशक पहले भारत के लोगों ने संकल्प लिया कि हमारा देश सशक्त, आत्मनिर्भर और आधुनिक राष्ट्र बने। रक्षा, सुरक्षा आदि हर क्षेत्र में बदलाव के लिए एक के बाद एक ठोस कदम उठाए गए। सीरीज़ ऑफ रिफॉर्म्स किए गए। देश में सेना के क्षेत्र में कई रिफॉर्म्स हुए हैं, जो आजादी के बाद पहली बार हुए हैं। चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ की नियुक्ति, यह विचार कोई नया नहीं था। दुनिया में प्रयोग भी चलते हैं। भारत में निर्णय नहीं होते थे। यह बहुत बड़ा रिफॉर्म था, जो हमने किया। मैं अपनी तीनों सेनाओं का अभिनन्दन करता हूँ कि इस व्यवस्था को उन्होंने दिल से सहयोग किया है, दिल से स्वीकार किया है। सबसे बड़ी ताकत जॉइंटनेस और इंटिग्रेशन की है। इस समय नेवी हो, एयरफोर्स हो, आर्मी हो, इनकी इंटीग्रेशन और जॉइंटनेस ने हमारी ताकत को अनेक गुना बढ़ा दिया और उसका परिणाम भी हमें नज़र में आया है, जो हमने कर के दिखाया है।

सरकार की जो डिफेंस प्रोडक्शन की कंपनियां थीं, उनमें हमने रिफॉर्म्स किए। शुरूआत में वहां पर आग लगाना, आंदोलन करवाना, हड़तालें करवाने के खेल चल रहे थे, जो अभी भी बंद नहीं हुए हैं, लेकिन देशहित को सर्वोपरि मान कर उन डिफेंस इंडस्ट्रीज़ के हमारे जो लोग थे, सरकारी व्यवस्था में, उन्होंने इसको मन से लिया, रिफॉर्म को स्वीकार किया और वे भी आज बहुत प्रोडक्टिव बन गए हैं। इतना ही नहीं, हमने प्राइवेट सैक्टर के लिए भी डिफेंस के दरवाजे खोल दिए हैं और आज भारत का प्राइवेट सैक्टर आगे आ रहा है। आज डिफेंस के क्षेत्र में स्टार्ट-अप्स आगे बढ़ रहे हैं। हमारे 27-30 साल के नौजवान, टीयर-टू और थ्री सिटीज़ के नौजवान, कहीं कुछ जगहों पर तो बेटियां डिफेंस के सैक्टर में स्टार्ट-अप्स का नेतृत्व कर रही हैं। सैंकड़ों की तादाद में आज स्टार्ट-अप्स काम कर रहे हैं। एक प्रकार से मैं कह सकता हूँ कि ड्रोन्स की जितनी भी एक्टिविटीज़ हमारे देश में हो रही है, शायद एवरेज 30-35 की उम्र होगी, जो ये सारे लोग कर रहे हैं और सैंकड़ों की तादाद में कर रहे हैं। उसकी ताकत, क्योंकि इनका भी इसमें योगदान था, जिन्होंने इस प्रकार के प्रोडक्शन किए हैं। वे हमें ऑपरेशन सिंदूर में बहुत काम आए। मैं उन सबके प्रयासों को बहुत साधुवाद करता हूँ और मैं उनको विश्वास दिलाता हूँ कि आगे बढ़िए। अब देश रुकने वाला नहीं है।

(1920/YSH/SM)

आदरणीय अध्यक्ष जी, डिफेंस सेक्टर में 'मेक इन इंडिया', सिर्फ एक नारा नहीं था। हमने इसके लिए बजट बढ़ाया, पॉलिसी में जो परिवर्तन करने थे, जो नए इनिशिएटिव्स लेने थे, वे हमने लिए और सबसे बड़ी बात यह है कि क्लियर कट विजन के साथ हम देश के डिफेंस सेक्टर में मेक इन इंडिया को लेकर तेज गति से आगे बढ़ रहे हैं।

आदरणीय अध्यक्ष जी, एक दशक में डिफेंस का बजट लगभग पहले से तीन गुना हुआ है। डिफेंस प्रोडक्शन में करीब-करीब 250 प्रतिशत वृद्धि हुई है। 11 वर्षों में डिफेंस एक्सपोर्ट 30 गुना से भी ज्यादा बढ़ा है। डिफेंस एक्सपोर्ट में आज दुनिया के करीब 100 देशों तक हम पहुंचे हैं।

आदरणीय अध्यक्ष जी, कुछ चीजें ऐसी होती हैं, जो इतिहास में बहुत बड़ा प्रभाव छोड़ती है। 'ऑपरेशन सिंदूर' ने डिफेंस का जो मार्केट है, उसमें भारत का झंडा गाड़ दिया है। भारत के हथियारों की डिमांड आज बढ़ती चली जा रही है। मांग बढ़ रही है। यह भारत में उद्योगों को भी बल देगी और एमएसएमईज़ को भी बल देगी। हमारे नौजवानों को रोजगार देगी और हमारे नौजवान अपनी बनाई हुई चीजों से दुनिया में अपनी ताकत का प्रदर्शन कर पाएंगे। यह आज हमें दिख रहा है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं देख रहा हूँ कि डिफेंस के क्षेत्र में आत्मनिर्भर भारत की दिशा में हम जो कदम उठा रहे हैं, उसमें मैं हैरान हूँ कि कुछ लोगों को आज भी तकलीफ हो रही है जैसे तो उनका खजाना लूट लिया गया हो। यह कौन सी मानसिकता है? देश को ऐसे लोगों को पहचानना होगा। मैं स्पष्ट करना चाहता हूँ कि डिफेंस में भारत का आत्मनिर्भर होना यह आज के शस्त्रों की स्पर्धा के काल में विश्व शांति के लिए भी जरूरी है। मैं पहले भी स्पष्ट कर चुका हूँ कि भारत युद्ध का नहीं, बुद्ध का देश है। हम समृद्धि, शांति चाहते हैं, लेकिन हम यह कभी न भूलें कि समृद्धि का और शांति का रास्ता शक्ति से ही गुजरता है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, हमारा भारत छत्रपति शिवाजी महाराज, महाराजा रणजीत सिंह, राजेंद्र चोला, महाराणा प्रताप, लचित बोरफुकन और महाराजा सुहेलदेव का देश है। हम विकास और शांति के लिए सामरिक सामर्थ्य पर भी फोकस करते हैं।

आदरणीय अध्यक्ष जी, कांग्रेस के पास नेशनल सिक्योरिटी का विजन न पहले था और आज तो सवाल ही नहीं उठता है। कांग्रेस ने हमेशा नेशनल सिक्योरिटी पर समझौता किया है। आज जो लोग पूछ रहे हैं कि पीओके को वापस क्यों नहीं लिया, वैसे यह सवाल मुझे ही पूछ सकते हैं और किसको पूछ सकते हैं?

(1925/MM/GM)

लेकिन इसके पहले पूछने वालों को जवाब देना होगा कि किसकी सरकार पीओके पर पाकिस्तान को कब्जा करने का अवसर दिया था। जवाब साफ है!

कई माननीय सदस्य : कांग्रेस।

श्री नरेन्द्र मोदी : जब भी मैं नेहरू जी की चर्चा करता हूं तो कांग्रेस और उसका पूरा इको सिस्टम बिलबिला जाता है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, हम एक शेर सुना करते थे, मुझे इसका ज्यादा ज्ञान तो नहीं है, लेकिन सुनते थे - 'लम्हों ने खता की और सदियों ने सज़ा पायी।' आजादी के बाद से ही जो फैसले लिए गए, उनकी सज़ा आज तक देश भुगत रहा है। यहां बार-बार एक बात का जिक्र हुआ और मैं फिर से करना चाहूंगा, अक्साई चिन के पूरे क्षेत्र को बंजर जमीन करार दिया गया, यह कहकर कि यह बंजर जमीन है। देश की 38 हजार वर्ग किलोमीटर जमीन हमें खोनी पड़ी।

आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं जानता हूं कि मेरी कुछ बातें चुभने वाली हैं। वर्ष 1962 और 1963 के बीच कांग्रेस के नेता जम्मू-कश्मीर के पुंछ, उरी, नीलम घाटी और किशन गंगा को छोड़ देने का प्रस्ताव रख रहे थे। भारत की भूमि को और वह भी लाइन ऑफ पीस के नाम पर दिया जा रहा था। वर्ष 1966, रण ऑफ कच्छ पर इन्हीं लोगों ने मध्यस्थता स्वीकार की थी। यह था, उनका राष्ट्रीय सुरक्षा का विजन। एक बार फिर उन्होंने भारत का करीब 800 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र पाकिस्तान को सौंप दिया, जिसमें छड़ बेग भी शामिल है। इसको कहीं-कहीं छड़ा बेग भी कहते हैं। वर्ष 1965 की जंग में हाजीपीर पास को हमारी सेना ने वापस जीत लिया था, लेकिन कांग्रेस ने उसे फिर लौटा दिया। वर्ष 1971 – पाकिस्तान के 93 हजार फौजी हमारे पास बंदी थे। पाकिस्तान का हजारों वर्ग किलोमीटर एरिया को हमारी सेना ने कब्जा किया था। हम बहुत कुछ कर सकते थे, विजय की स्थिति में थे, उस दौरान अगर थोड़ा-सा विज़न होता, थोड़ी सी समझ होती तो पीओके वापस लेने का निर्णय हो सकता था। वह मौका था। वह मौका भी छोड़ दिया गया। इतना ही नहीं, जब इतना सारा टेबल पर था, कम से कम करतारपुर साहिब को तो ले सकते थे, वह भी आप नहीं कर पाए। वर्ष 1974 – श्रीलंका को कच्चातिवू द्वीप गिफ्ट कर दिया गया। आज तक हमारे मछुआरे भाई-बहनों को इससे परेशानी होती है।

(1930/MK/RCP)

उनकी जान पर आफत आती है। क्या गुनाह था तमिलनाडु के मेरे फिशरमैन भाई-बहनों का? आपने उनका हक छीन लिया और दूसरों को गिफ्ट कर दिया। कांग्रेस दशकों से यह इरादा लेकर चल रही थी कि सियाचिन से सेना हटा दी जाए।

आदरणीय अध्यक्ष जी, वर्ष 2014 में देश ने इनको मौका नहीं दिया, वरना आज सियाचिन भी हमारे पास नहीं होता। … (व्यवधान) आजकल कांग्रेस के जो लोग हमें डिप्लोमेसी का पाठ पढ़ा रहे हैं, मैं उन्हें उनकी डिप्लोमेसी याद दिलाना चाहता हूं, ताकि उनको भी कुछ याद रहे और पता चले। 26/11 जैसे भयंकर हमले के बाद, वह बहुत बड़ा आतंकी हमला था, कांग्रेस का पाकिस्तान से प्रेम नहीं रूका। इतनी बड़ी 26/11 की घटना हुई थी। विदेशी दबाव में हमले के कुछ हफ्तों के भीतर ही कांग्रेस सरकार ने पाकिस्तान से बातचीत शुरू कर दी। … (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, कांग्रेस सरकार ने 26/11 की इतनी बड़ी घटना के बाद भी एक भी डिप्लोमेट को भारत से बाहर निकालने की हिम्मत नहीं की। इसको छोड़िए, एक वीजा तक कैंसिल नहीं किया। देश पर पाकिस्तानी स्पांसर्ड बड़े-बड़े हमले होते गए, लेकिन यूपीए सरकार ने पाकिस्तान को मोस्ट फेवर्ड नेशन का दर्जा देकर रखा था। वह कभी वापस नहीं लिया था। एक तरफ देश मुम्बई के हमले का न्याय मांग रहा था, दूसरी तरफ कांग्रेस पाकिस्तान के साथ व्यापार करने में लगी थी। पाकिस्तान वहां से खून की होली खेलने वाले आतंकियों को भेजते रहे हैं और कांग्रेस यहां अमन की आस के मुशायरे किया करती थी। मुशायरे होते थे। हमने आतंकवाद और अमन की आस का वन-वे ट्रैफिक बंद कर दिया। हमने पाकिस्तान का एमएफएन दर्जा रद्द किया। हमने वीजा बंद किया। हमने अटारी बाघा बॉर्डर को बंद कर दिया।

आदरणीय अध्यक्ष जी, भारत के हितों को गिरवी रख देना, यह कांग्रेस पार्टी की पुरानी आदत है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण 'सिंधु जल समझौता' है। 'सिंधु जल समझौता' किसने किया? नेहरू जी ने किया। मामला किससे जुड़ा था? भारत से निकलने वाली नदियां, हमारे यहां से निकली हुई नदियां, उसका वह पानी था। वह नदियां हजारों सालों से भारत की सांस्कृतिक विरासत रही हैं। भारत की चैतन्य शक्ति रही हैं। भारत को सुजलाम, सुफलाम बनाने में उन नदियों का बहुत बड़ा योगदान रहा है।

(1935/ALK/PS)

सिंधु नदी जो सदियों से भारत की पहचान हुआ करती थी, उसी से भारत जाना जाता था लेकिन नेहरू जी और कांग्रेस ने सिंधु और झेलम जैसी नदियों पर विवाद के लिए पंचायत किसको दी, वर्ल्ड बैंक को दी। वर्ल्ड बैंक फैसला करे, क्या कर रहा है? नदी हमारी, पानी हमारा, सिंधु जल समझौता सीधा-सीधा भारत की अस्मिता और भारत के स्वाभिमान के साथ किया गया बहुत बड़ा धोखा था।

आदरणीय अध्यक्ष जी, आज के देश के युवा यह बात सुनते होंगे तो उनको भी आश्चर्य होगा कि ऐसे लोग हमारे देश का काम करते थे। नेहरू ने ट्रीटी की और जो पानी था, जो नदियां भारत से निकल रही थीं, उसका 80 प्रतिशत पानी पाकिस्तान को देने के लिए वह राजी हो गए और इतने बड़े हिंदुस्तान को सिर्फ 20 प्रतिशत पानी। मुझे कोई समझाए कि यह कौन सी बुद्धिमानी थी? कौन सा

देशहित था? कौन सी डिप्लोमेसी थी? आप लोगों ने क्या हालत बना करके रखी थी? इतनी बड़ी आबादी वाला हमारा देश, हमारे यहां से निकलती हुई ये नदियां और सिर्फ 20 पर्सेंट पानी और 80 पर्सेंट पानी उन्होंने उसको दे दिया, जो देश खुलेआम भारत को अपना दुश्मन कहता रहा है। इस पानी पर किसका हक था? हमारे देश के किसानों का, हमारे देश के नागरिकों का, हमारे पंजाब और हमारे जम्मू कश्मीर का। इस एक कारण से इन्होंने देश के एक बहुत बड़े हिस्से को पानी के संकट में ढकेल दिया और राज्यों के भीतर भी पानी को लेकर के आपस में संघर्ष पैदा हुआ है, प्रतिस्पर्धा पैदा हुई है और जिस पर उनका हक था, उस पर पाकिस्तान मौज करता रहा है और ये दुनिया में अपनी डिप्लोमेसी का पाठ पढ़ाते रहते हैं।

आदरणीय अध्यक्ष जी, अगर यह ट्रीटी न होती तो पश्चिचमी नदियों पर कई बड़ी परियोजनाएं बनती। पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और दिल्ली के किसानों को भरपूर पानी मिलता। पीने के पानी की कोई समस्या नहीं रहती। औद्योगिक प्रगति के लिए भारत बिजली बना पाता। इतना ही नहीं नेहरू जी ने इसके उपरांत करोड़ों रुपये भी दिए, ताकि पाकिस्तान नहर बना सके। इससे भी बड़ी बात है, जिससे देश चौक जाएगा। ये चीजें छिपाई गई हैं, दबा दी गई हैं। कहीं भी बांध बनता है तो उसमें एक मैकेनिज्म होता है, उसकी सफाई का, डिसिल्टिंग का। उसमें जो मिट्टी भर जाती है, घास वगैरह आकर भर जाती है तो उसकी कैपेसिटी कम हो जाती है। उसकी सफाई के लिए इनबिल्ट व्यवस्था होती है। नेहरू जी ने पाकिस्तान के कहने पर यह शर्त स्वीकार की है कि इन बांधों में जो मिट्टी आएगी, कूड़ा-कचरा आएगा और बांध भर जाएगा इसकी सफाई नहीं कर सकते।

(1940/SK/SMN)

डिसिल्टिंग नहीं कर सकते हैं। बांध हमारे यहां है, पानी हमारा लेकिन निर्णय पाकिस्तान का था कि आप डिसिल्टिंग नहीं कर सकते। इतना ही नहीं, इस बार मैं डिटेल में गया, एक बांध तो ऐसा है, जहां डिसिल्टिंग के लिए जो गेट होता है, उसे वैल्डिंग कर दिया गया ताकि कोई गलती से खोलकर मिट्टी का निकाल न दे। पाकिस्तान ने नेहरू जी से लिखवा लिया था कि भारत बिना पाकिस्तान की मर्जी से अपने बांधों में जमा होने वाली मिट्टी साफ नहीं करेगा, डिसिल्टिंग नहीं करेगा। यह समझौता देश के खिलाफ था और बाद में नेहरू जी को यह गलती माननी पड़ी। निरंजन दास गुलाटी एक सज्जन हैं जो इस समझौते से जुड़े हुए थे। उन्होंने एक किताब लिखी थी। उस किताब में उन्होंने लिखा, फरवरी, 1961 में नेहरू जी ने उनसे कहा था – गुलाटी, मुझे उम्मीद थी कि यह समझौता अन्य समस्याओं के समाधान का रास्ता खोलेगा, लेकिन हम वहीं हैं जहां पहले थे। यह नेहरू जी ने कहा था। नेहरू जी केवल तात्कालिक प्रभाव देख पा रहे थे, इसलिए उन्होंने कहा कि हम वहीं के वहीं हैं। सच्चाई यह है कि इस एग्रीमेंट के कारण देश बहुत पिछड़ गया, देश बहुत पीछे चला गया, देश का बहुत नुकसान हुआ, किसानों का नुकसान हुआ, खेती का नुकसान हुआ। नेहरू जी उस डिप्लोमेसी को जानते थे, जिसमें किसान का कोई वजूद ही नहीं था। उन्होंने यह हाल करके रखा था।

आदरणीय अध्यक्ष जी, पाकिस्तान आगे के दशकों तक भारत के साथ युद्ध और छद्म युद्ध, प्रॉक्सी वार करता ही रहा है लेकिन कांग्रेस की सरकारों ने बाद में भी सिंधु जल समझौते की तरफ देखा तक नहीं, नेहरू जी की गलती को सुधारा तक नहीं। अब भारत ने पुरानी गलती को सुधारा है

और ठोस निर्णय लिया है। भारत ने नेहरू जी द्वारा किया गया बहुत बड़ा बलंडर सिंधु जल समझौते को देश हित में, किसानों के हित में अबायंस में रख दिया। देश का अहित करने वाला यह समझौता अब इस रूप में आगे नहीं चल सकता। भारत ने तय कर दिया है कि खून और पानी साथ-साथ नहीं बह सकते।... (व्यवधान)

श्री गौरव गोगोई (जोरहाट) : आप नेहरू जी की इमेज कभी-भी धूमिल नहीं कर सकते। ... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्य, आपको बैठकर बोलते हुए बहुत देर हो गई है। आप उपनेता है। क्या यह तरीका ठीक है कि आप बैठे-बैठे टोक रहे हैं? आपको यह शोभा नहीं देता है।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: आप बैठिए। आप उपनेता है, अपनी मर्यादा बनाकर रखिए।

... (व्यवधान)

श्री के. सी. वेणुगोपाल (अलप्पुझा) : माननीय अध्यक्ष जी, क्या यह डिसकशन नेहरू जी के बारे में है? ... (व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी : वहां बैठे साथी आतंकवाद पर लंबी-लंबी बातें करते हैं। ... (व्यवधान) जब सत्ता में थे, जब इनको राज करने का अवसर मिला था, तब देश का हाल क्या रहा था, आज भी देश भूला नहीं है। ... (व्यवधान)

(1945/VVK/RP)

वर्ष 2014 से पहले देश में असुरक्षा का जो माहौल था, अगर उसे आज याद भी करें, तो लोग सिहर जाते हैं।

आदरणीय अध्यक्ष जी, हम सब को याद है, जो नई पीढ़ी के बच्चे हैं, उनको पता नहीं है, लेकिन हम सब को पता है। रेलवे स्टेशन पर, बस-स्टेशन पर, एयरपोर्ट पर, बाजार में, मन्दिर में, जहाँ भी भीड़ होती है, हर जगह पर अनाउंसमेंट होती थी कि कोई भी लावारिस चीज दिखे, छूना मत, पुलिस को तुरन्त जानकारी देना, वह बम हो सकता है। हम वर्ष 2014 तक यही सुनते आए थे, ये हाल कर रखा था। देश के कोने-कोने में यही हाल था। माहौल यह था कि जैसे कदम-कदम पर बम बिछे हैं और नागरिकों को खुद को खुद ही बचाना था। यह अनाउंस करके उन्होंने हाथ ऊपर कर दिए।

आदरणीय अध्यक्ष जी, कांग्रेस की कमजोर सरकारों के कारण देश को बहुत-सी जानें गँवानी पड़ीं, हमें अपनों को खोना पड़ा।

आदरणीय अध्यक्ष जी, आतंकवाद पर लगाम लगाई जा सकती थी। हमारी सरकार ने 11 वर्षों में यह करके दिखाया है, जिसका बहुत बड़ा सबूत है। वर्ष 2004 से 2014 के बीच जो आतंकी घटनाएँ होती थीं, उन घटनाओं में बहुत बड़ी कमी आई है। इसलिए देश भी जानना चाहता है कि अगर हमारी सरकार आतंकवाद पर नकेल कस सकती है, तो कांग्रेस सरकारों की ऐसी कौन-सी मजबूरी थी कि आतंकवाद को फलने-फूलने दिया गया।

आदरणीय अध्यक्ष जी, कांग्रेस के राज में आतंकवाद अगर फला-फूला है, तो उसका एक बड़ा कारण इनकी तुष्टिकरण की राजनीति है, वोट-बैंक की राजनीति है। जब दिल्ली में बाटला हाउस एनकाउंटर हुआ, तो उसमें मारे गए आतंकवादियों के कारण कांग्रेस की एक बड़ी नेता की आँखों में आँसू थे। वोट पाने के लिए इस बात को हिन्दुस्तान के कोने-कोने में पहुँचाया गया।

आदरणीय अध्यक्ष जी, वर्ष 2001 में देश की संसद पर हमला हुआ था, तब कांग्रेस के एक नेता ने अफजल गुरु को 'बेनिफिट ऑफ डाउट' देने की बात कही थी। आदरणीय अध्यक्ष जी, मुम्बई में 26/11 का इतना बड़ा आतंकी हमला हुआ, उसमें एक पाकिस्तानी आतंकी जिंदा पकड़ा गया। पाकिस्तान की मीडिया ने और दुनिया ने यह स्वीकार किया कि यह पाकिस्तानी है। लेकिन कांग्रेस पार्टी इतना बड़ा पाप, इतना बड़ा पाकिस्तानी आतंकी हमला होने पर भी क्या खेल खेल रही थी, वोट-बैंक की राजनीति के लिए क्या कर रही थी? कांग्रेस पार्टी इसे भगवा आतंक सिद्ध करने में जुटी थी। कांग्रेस दुनिया को हिन्दू आतंकवाद की थ्योरी बेचने में लगी हुई थी। कांग्रेस के एक नेता ने अमेरिका के एक बड़े राजनयिक को यहाँ तक कह दिया था कि लश्कर-ए-तैयबा से भी बड़ा खतरा भारत के हिंदू ग्रुप का है।

(1950/VB/UB)

यह कहा गया था। तुष्टिकरण के लिए कांग्रेस ने जम्मू-कश्मीर में भारत के संविधान, बाबा साहब अम्बेडकर जी के संविधान को पैर नहीं रखने दिया था, वहाँ घुसने नहीं दिया था। उसे बाहर रखा था। तुष्टिकरण और वोट बैंक की राजनीति के लिए कांग्रेस हमेशा देश की सुरक्षा की बलि चढ़ाती रही है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, तुष्टिकरण के लिए ही कांग्रेस ने आतंकवाद से जुड़े कानूनों को कमजोर किया है। गृह मंत्री जी ने आज विस्तार से सदन में कहा है, इसलिए मैं उसे रिपीट करना नहीं चाहता हूँ।

आदरणीय अध्यक्ष जी, मैंने इस सत्र की शुरुआत में आग्रह किया था, मैंने कहा था कि दलहित में हमारे मत मिलें या न मिलें, लेकिन देशहित में हमारे मन जरूर मिलने चाहिए। पहलगाम की विभीषिका ने हमें गहरे घाव दिये हैं। उसने देश को झकझोर दिया है। इसके जवाब में, हमने 'ऑपरेशन सिन्दूर' किया। सेनाओं के पराक्रम ने, हमारे आत्मनिर्भर अभियान ने देश में एक 'सिन्दूर स्पिरिट' पैदा की है। यह 'सिन्दूर स्पिरिट' हमने तब भी देखी, जब दुनिया भर में हमारे प्रतिनिधिमंडल भारत की बात बताने गये। मैं उन सभी साथियों को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। आपने बहुत ही प्रभावी ढंग से, भारत की बात को डंके की चोट पर दुनिया के सामने रखी। लेकिन मुझे दुख इस बात का है और हैरानी भी है कि जो खुद को कांग्रेस के बड़े नेता समझते हैं, उनके पेट में दर्द हो रहा है कि भारत का पक्ष दुनिया के सामने क्यों रखा गया है। शायद कुछ नेताओं को सदन में बोलने पर भी पाबंदी लगा दी गई है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, इस मानसिकता से बाहर निकलने की जरूरत है। मेरे मन में कुछ पंक्तियाँ आती हैं, जिनके माध्यम से, मैं अपने भाव व्यक्त करना चाहता हूँ।

“करो चर्चा और इतनी करो,
कि दुश्मन दहशत से दहल उठे,
रहे ध्यान बस इतना ही,
मान सिन्दूर और सेना का प्रश्नों में भी अटल रहे,
हमला माँ भारती पर हुआ अगर,
तो प्रचण्ड प्रहार करना होगा,
वह दुश्मन जहाँ भी बैठा हो,
हमें भारत के लिए ही जीना होगा।”

(1955/SJN/NKL)

मेरा कांग्रेस पार्टी के साथियों से आग्रह है कि वे एक परिवार के दबाव में पाकिस्तान को क्लीन चिट देना बंद कर दें। जो देश की विजय का क्षण है, कांग्रेस उसे देश के उपहास का क्षण न बनाए। कांग्रेस अपनी गलती सुधारे।

मैं आज इस सदन में फिर से स्पष्ट करना चाहता हूं कि अब भारत आतंकी नर्सरी में ही आतंकियों को मिट्टी में मिलाएगा। हम पाकिस्तान को भारत के भविष्य से खेलने नहीं देंगे। इसलिए ‘ऑपरेशन सिंदूर’ खत्म नहीं हुआ है, बल्कि ‘ऑपरेशन सिंदूर’ जारी है। यह पाकिस्तान के लिए भी नोटिस है। जब तक वह भारत के खिलाफ आतंक का रास्ता रोकेगा नहीं, तब तक भारत एक्शन लेता रहेगा। भारत का भविष्य सुरक्षित और समृद्ध होगा। यही हमारा संकल्प है। इसी भाव के साथ, मैं फिर से सभी सदस्यों को सार्थक चर्चा के लिए धन्यवाद देता हूं।

आदरणीय अध्यक्ष जी, मैंने भारत का पक्ष रखा है, भारत के लोगों की भावनाओं को व्यक्त किया है। मैं इस सदन का फिर से आभार व्यक्त करता हूं।

बहुत-बहुत धन्यवाद।

(इति)

माननीय अध्यक्ष : सभा की कार्यवाही बुधवार, दिनांक 30 जुलाई, 2025 को प्रात: 11 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

1957 बजे

<u>तत्पश्चात् लोक सभा बुधवार, 30 जुलाई 2025 / 8 श्रावण 1947 (शक)
के ग्यारह बजे तक के लिए स्थगित हुई।</u>